JAYAVANTASIJRI'S SRNGĀRA MANJARĪ

[STLAVATICARIT RA RASA]

• L. D. SERIES 65
GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

EDITED BY
KANUBHAI V. SHETH
RESEARCH OFFICER
L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD 9.



JAYAVANTASŪRI'S SŖNGĀRAMAÑJARĪ

[S'ĪLAVATĪCARITRA RĀSA]

L. D. SERIES 65

GENERAL EDITORS

DALSUKH MALVANIA

NAGIN J. SHAH

EDITED BY

KANUBHAI V. SHETH
RESEARCH OFFICER
L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD-9



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD 9

Printed by

K. Bhikhalal Bhavsar
Proprietor
Shri Swaminarayana Mudrana Mandira
46, Bhavsar Society, Nava Vadaj,
Ahmedabad-380013

Published by

Nagin J. Shah
Director
L. D. Institute of
Ahmedabad-380009

FIRST EDITION
January, 1978

"Published with the Financial Assistance from the Government of India, Ministry of Education and Social Welfare [Department of Culture]."

PRICE RUPEES 3 0

जयवंतसूरिकृत

शृंगारमंजरी

[शीलवतीचरित रास]

संपादक

कनुभाई व्र. शेठ



प्रकाशक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर अमदावाद–३८०००९

प्रधान संपादकीय

संत्तरमी शताब्दीना जयवंतसूरिनी एक अप्रकाशित रासकृति 'शृंगारमंजरी'ने प्रकाशित करतां आनंद थाय छे. आ प्रकाशनथी मध्यकालीन गुजराती साहित्यनी प्रकाशित कृतिओमां क्षेक महत्त्वनी कृतिनो उमेरा थाय छे. आ ज कर्तानी बीजी क्षेक अप्रकाशित रासकृति 'ऋषिदत्तारास'नुं प्रकाशन अमे आ पहेलां सने १९७५मां कर्युं हतुं. परिणामे, मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां जयवंत-सूरिनुं प्रदान शुं अने केनुं छे तेनो ख्याल हुवे आवी शकशे.

हांगारमंजरीनी समीक्षित वाचना तैयार करी, अभ्यासपूर्ण प्रस्तावना लखो आपवा बदल हो. श्री कनुभाई होठनो हुं आभार मानुं हुं. आ संहो।धनकार्ये तेमने गुजरात युनिवर्सिटीनी पीक्षेच.डी.नी उपाधि प्राप्त करावी आपी छे.

आ कृतिना प्रकाशनमां आर्थिक सहाय करवा बदल भारत सरकारना शिक्षण अने समाज-कल्याण(सांस्कृतिक विभाग)नो हुं हार्दिक आभार मानुं हुं.

ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर, अमदावाद-३८०००९ १, जान्युआरी १९७८

नगीन जी. शाह अध्यक्ष

संपादकीय निवेदन

प्राचीन-मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां प्राप्त रास साहित्य अत्यंत विशाल छे. पण आ साहित्यना घणा मेाटा भागनुं मूल्य साहित्यकृति छेखे नहीं पण अतिहासिक—सांस्कृतिक के छेाककथासामग्रीनी दृष्टिओ छे. आधी मध्यकालीन पद्यकथाओनी जेम रासमां पण छेाककथातत्त्वना अभ्यास माटे सारा प्रमाणमां सामग्री सांपडे छे. ओ दृष्टिए अन्ने जैन किव जयवंतस्रिकृत 'शृंगारमंजरी' के 'शीलवतीचरित्ररास' नामनी कृतिनी समीक्षित वाचना अने अभ्यास रज्जू कर्या छे.

प्रस्तुत कृति आ कविनी सर्वोत्तमकृति छे. क्षेटल ज नहीं पण जैन गूर्जर साहित्यना सर्वोत्तम काव्यमां पण क्षेतुं स्थान छे. मध्यकालीन गुजराती भाषा, साहित्य, समाज अने संस्कृति अंगे मूल्यवान सामग्री एमांथी प्राप्त थाय छे, ते दृष्टिए पण ते नेांधपात्र छे.

प्रस्तावनामां प्रत परिचय, संगदन पद्धति, किवनुं जीवन अने कवन, कृतिनो कथासार, कथा-परंपरा, शुंगारमंजरी कथानो लोककथा तरीके अभ्यास, रास तरीके मूल्यांकन अने भाषासामग्रीनो अभ्यास वगेरे विषयोनो समावेश कर्यो छे. पण मुख्य लक्ष्य शुंगारमंजरी कथानो लोकतात्विक [Folkloric] दृष्टिओ अभ्यास परत्वेनुं छे. आ संदर्भमां शुंगारमंजरीनी कथा-सामग्रीमांशी प्राप्त कथाश्कृति के कथाघटकनी तारवणी करी, ते अंगेनी भारत अने भारतबाह्यप्रदेशनी कथापरंपरामांशी जे तुलनात्मक सामग्री मळी आवी छे ते प्रस्तुत करी छे. प्रत्येक कथाघटकनो तथा एना कथारूपांतरानो अतिहासिक—भौगोलिक पद्धतिओ तुलनात्मक अभ्यास पण रजू कर्यो छे. (आ अंगेनी सामग्री विस्तारपूर्वक हवे पछी प्रगट थनार पुस्तकमां रजू करवामां आवशे).

प्रस्तुत कृतिनी विविधकालनी उपलब्ध पांचेक हस्तप्रतोनो उपयोग करी एनी समीक्षित वाचना अत्रे रज् करी छे पण प्रतो अशुद्धि होवाने कारणे केटलाक स्थाने पाठो संदिग्ध रह्या छे, ते नेांधवुं घटे.

गुजरात वुनिवर्सिटीनी पीक्षेच.डी.नी उपाधि अंगे रजु करेला आ महानिबंध हवे थाडाक फेरफार साथे प्रगट थाय छे.

मारा महानिबंध अंगे जरूरी मार्गदर्शन अने विविध ग्रंथमंडारनी अमूल्य हस्तप्रतो मारा उययोग अर्थे सुलम करी आपवा बदल हुं स्व. परम पूज्य आगम प्रभाकर मुनिश्री पुण्यविजयजी महाराज साहेबनो अत्यंत ऋणी हुं.

महानिबंध तेयार करवामां मार्गदर्शन आपवा माटे हुं मारा मार्गदर्शक हैंा. बिपिनचंद्र जी. झबेरो साहेबनो अंत:करणपूर्वक आभार मानुं छुं. विद्यावाचस्पित श्री. के. का. शास्त्रीजी तथा हैं। हिरवल्लभ भाषाणी साहेब ए बे विद्वानोए सहदयता अने आत्मीयताथी मने मारा शोध-कार्यमां, मार्गदर्शन तथा सदर्भ-सामग्री अंगे सहाय आपी उपकृत कर्यो छे ते माटे हुं कृतज्ञतानी लागणी व्यक्त कर्र छुं. ला. द, भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावादना अध्यक्ष

(निवृत्त) आदरणीय श्री. दलसुखभाईए मारा शोध-कार्यमां सतत प्रेरणा, मार्गदर्शन अने सहाय आप्या छे ते बदल हुं आभारनी लागणी न्यक्त कहं छुं. शब्दकोश अंगे उपयोगी सूचन करवा बदल हुं वयोवृद्ध पंडित श्री वेचरदास देशिनो ऋणी छुं.

प्रस्तुत कृतिनी अधिकृत वाचना तैयार करवा माटे मारा उपयोग अर्थे हस्तप्रतो सुलभ करी आपवा माटे वाडी पार्थानाथना मंडार (पाटण), डेहला अभासरा प्रथमंडार (अमदावाद), वीरविजय उपाश्रय प्रथमंडार (अमदावाद), तपगच्छ ज्न शाळा प्रथमंडार (खंपात) तथा ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, (अमदावाद)ना ट्रस्टीओं के संवालकोनो हार्दिक आभार मानुं छुं.

मारा शोध-कार्य दरम्यान शोध-वृत्ति आपवा बदल ला. द. भारतीय संस्कृतिना संचालक मंडळनो हुं आभार मानुं कुं.

अंते, महानिबंधना प्रकाशन-खर्च अंगे आर्थिक सहाय आपवा माटे हुं भारत सरकारना शिक्षा विभागनो आभार मानुं छुं.

१, जान्युआरी १९७८ ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर अमदावाद-९. कनुभाई व्र. शेठ

विषयानुक्रम

विषय	पृष्टांक
प्रस्तावना	969
१ प्रत परिचय अने संपादन पद्धति	9-६
२ कवि जयवंतस्रि : जीवन अने कवन	६-२७
३. "होगारमंजरी" कथानी रूपरेखा	` २८ —३६
इ. शुंगारमंजरी : बीलवती कथा-परंपरा	30-3 0
५. शुंगारमंजरी कथा : अंक त्याककथा तरीके	३८-३९
६. 'र्ह्यगरमंजरी ': एक रास तरीके मूल्यांकन	39-80
७. हंगारमंजरी : भाषासामग्री	8८−६०
८. संदर्भग्रंथस्ची :	\$ 9 \$ C
ह्यंगारमंजरी-मूळ	9-992
पाठान्तर	909-220
शब्दकोश	२२१ — २ २९
परिशिष्ट	२३०-२३२

शुद्धिपत्रक

911

अस्तावन	l .	•	
पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
8	છ	दशम्यां	दशभ्यां
8	3 3	ल<u>दु</u>या	ल ञ्य।
4	હ	सांडड्ड	सांडडडु
Ę	4	नथी	छे
Ę	6	छे	न थी
90	२०	ज य लब्ध	<i>उस</i> रु•्ध
96	93	सीसंघर	सी मंघः
રહ	3	लोहित्य	लौ हित्य
२८	99	संयगला	मयंगला
३ २	२७	संगे	अगे
३२	4	त्यीना	स्त्रीम
38	3 3	राजीओं	राजाओं 🎺
₹ €	२८	साध्त्रीजीक्षे	साध्वीजीक्षे
89	3 9	स्वरूप	स्वरूपना
४२	9	दृष्टिक्षे कथ ा.	इंडिटए अनकारा नथी पण कथा.
४३	9	लाणी	लाळी
88	१६	हस्ती तलिन	हस्तीतोलन
87	9	ढंढरिजि	ढं ढण िख
40	३१	दुगाइं	दुर्गाइ '
uy	9 ६	वाहलकेरा	व।हलकेरो (२३०३)
§ 9	98	वेगिरि	वेगिकरि
प्रंथपाठ		•	
9,	3	मो	मोरु
9 ६	34	सिंघ	्सिंह
३२	२	गो्मुत्रिता	गो्मुत्रिका
€ 8	95	होह	ह ोइ
६७	9 2	नवन 	नयन—
८३	8	सरणां कार्णक	मर् णां कालंबी
९२	50	अ खं टी •	अखं डी >
લ્પ	43	वंदन	वेदन
१०३	२ २	अत्रनरी	अवतरी
6.05	२१	খার্ ∸= ====	न थाई
999	93	कंच~कुसण	कंचु —कसण
185	9 6	पभ काम	शुभ
980	8	लागु विसई	भागु विदेसई ं
9 68	३१ ५	प्रवश् प्र हे वसी	प्र हिवसी
900	૨ ૪	गगनाठगेने	गगना <u>ङ</u> ्गने
२२३ ⁻ २३ १	₹. 3.3	डाङ्	डा ढ
५२ ।	~ ~	- · ×	-14

प्रस्तावना

१. प्रत परिचय अने संपादन पद्धति

प्रास्ताविक

किव जयवंतसूरि सत्तरमी सदीना अंक गणन।पात्र किव छे. अमणे रचेली नानी-मोटी बारेक कृतिओ हाल उपलब्ध थाय छे. अमांनी 'स्थूलिभद्रकेाशा प्रेमविलास फाग' है', 'नेमिनाथ राजीमती बारमास रे, 'नेमिजीन स्तवन' अने 'ऋषिदत्तारास है' नामनी चार कृतिओ प्रगट थओली छे. पण ते सिवायनी सर्व कृतिओ हजी अपगट छे 'शू गारमंजरी' अथवा 'शीलवतीचरित्ररास' से आ किवनी सर्वोत्तम कृति छे, अटेखं ज नहीं पण जैन गूर्जर साहित्यना सर्वोत्तम काटचामां पण अनु स्थान छे. मध्यकाकीन गुजराती भाषा, साहित्य, सपाज अने संस्कृति अंगे मूल्यवान सामग्री अमांथी प्राप्त थाय छे, ते हिट्छे पण ते नेंछपात्र छे.

प्रत परिचय

जयवंतस्रि कृत 'शृंगारमंजरी' नामनी कृतिनी कुल्ले पांच हस्ताती प्राप्त थई छे. 'जैन गूर्जर किवओ' मां नेांधायेली हस्तपतीनो तथा क्षेमां न नोंधायेली अन्य भंडारमांथी प्राप्त थती हस्तप्रतीनो आ संगदनमां उपयोग कर्यो छे.

'जैन गूर्जर कविओ'मां नीचे मुजव पांच हस्तप्रता अंगे नेांघ छे.

- (१) डहेजाना अगासराने। ग्रंथमं डार, अमदाव।दनी प्रत.
- (२) वाडी पार्श्वनाथने। भंडार, पाटणनी प्रत.
- (३) खेडा भंडार, खेडानी प्रत.
- (४) वीरविजय उगाश्रय प्रथमं डार, अमदावादनी प्रत
- (५) तपगच्छ जैन शाळा प्रथमंडार, खंभातनी प्रत.
- प्राचीन फागु संप्रह, संगा. डा. भागीलाल ज. सांडेसरा अने सामाभाई पारेख, वहादरा, १९५५, पृ. १२६-३३.
- २. प्राचीन-मध्यकालीन बारमासा-संप्रह, संपा. डा. शिवलाल जेसलपुरा, अमदावाद, १९७४, खंड १, पृ. ४०-६२.
- ३. शमासतम्-नेमिजीन स्तवन, संशो. धर्मविजयजी, भावनगर, १९२३, पु. ११-१४.
- ४. जयवंतसूरि रचित ऋषिदत्ता रास, संपा. निषुणा अ. दलाल, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७५.
- ५. जैन गुर्जर कित्रओ, संगा. मेाहनलाल द. देसाई, १९४४, भाग ३, खंड १, पृ. ६९९.

"जैन गुर्जर कविओं"मां नेांधायेल आ सर्व प्रताना प्रस्तुत संपादनमां उपयोग करी शकायो नथी, केमके प्रयत्न कर्या छतां खेडा मंडारनी प्रत मळी शकी नथी. तपास करतां ते मंडारमांथी गुम थयेली जणाई छे. आ उपरान्त अमदावादमां आवेल लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्याम दिरना ग्रंथम डारमांथी केक हस्तप्रत मळी आवी छे, जेना प्रस्तुत संपादनमां उपयोग कर्यों छे. आ पांचे प्रती माटे नीचे प्रमाणे संकेती योज्या छे.

अ=श्री डद्देलाना उपाश्रय, अमदावादनी प्रत.
क=श्री नीतिविजयजी, जैन ज्ञानभंडार, खंभातनी प्रत.
ख=श्री वाडी पार्श्वनाथ प्रंथभंडार, पाटणनी प्रत.
ग=लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावादनी प्रत.
घ=पंडित वीरविजयना उपाश्रय, अमदावादनी प्रत.
आ प्रतानु वर्णन नीचे सुजब छे.

प्रव 'अ'

आ हस्तप्रत अमदाबादना डद्देलाना उपाश्रयना प्रंथमंडारनी छे, जेमां ते दाबडा नं. ४२ प्रेथी—५ तरीके नेष्ठायेली छे. अमां कुल्ले ७६ पानां छे. प्रत्येक पृष्ठनुं मान ९-८''×४-४'' छे. दरेक पत्रमां सामान्यतः १५ पंक्ति अने प्रत्येक पंक्तिमां ४५-४७ अक्षरे। छे. पत्रनी पाछली बाजु पर जमणी बाजुओ हांसियामां नीचे पत्रांक काळी शाहीमां लखेल छे. दरेक पत्रनी डावी अने जमणी बाजुओ लाल शाहीयो ०-४''यी ०-६'' सुधीना हांसिया अंकित करवामां आव्यो छे.

आखीय प्रत अक ज हाथे देवनागरी लिपिमां लखायेली छे. तेमज अंखड अने सुवाच्य छे. अक्षरी काळी शाहीमां लखायेला छे. पण दंड अने राग के डालनां नाम के प्रथम पंक्ति लाल शाहीमां छे. प्रत संवत १६३९ना मागशर वद बीजने शनिवारे पानसर नगरमां हारीज गच्छना म. महेश्वरे लखी छे.

आरंभ : श्री गुरुभ्या नमः

अंत : ग्रंथाग्र २८०० संवत १६३९ वर्ष मागशीर्ष मासे कृष्णपक्षे द्वितीयां शनिवारे पानसर नगरे श्री हारीज गच्छे भ. श्रीश्रीश्री मद्देश्वरस्रिमि: ॥श्रीः॥छ:॥श्रीरस्तु॥ ॥१॥७४॥२

हेखननी विशिष्टताओ :--

- "य" कारनी विशेषताओ.— नहीय, मोडीय, भोज्य.
- २. नांमजी, घांम, वांणी, पांणींड, डांवा, कांमिजी.
- ३. सानुनासिक शब्दा-तुसिउं तिजिडं, छसिउं, कहिडं
- ४. पदान्ते दीर्घ "उ" कार-पणमू, नलहू, तेहवू, हैअडद.
- ५. मूडाअनइ, वंछिअ, हैअडल,

प्रत 'क'

प्रस्तुत हस्तत्रत पू. श्री नीतिविजयजी जैन ज्ञानभंडार, जैनशाळा, खंभातमांथी प्राप्त थई छे. क्षेनो क्रमांक १८२२ छे. क्षेमां कुळे १५० पानां छे. पत्रनुं सामान्य माप १०''×४.४''तुं छे. देरेक पत्रमां पाछली बाजुके जमणा ख्णामां स्पन्ट रीते प्रष्ट संख्या लखनामां आती छे. दरेक प्रष्टनी डाबी अने जमणी बाजुके १"ने। हांसियो अंकित करनामां आव्यो छे. पानानी उपर अने नीचेनी बाजुके ०.६" जग्या खुल्ली मूकवामां आवी छे. बाजुना बन्ने हांसियामां लाल टपकुं आवेडं छे.

आखीय प्रत क्षेक हाथे देवनागरी लिपिमां लखायेली छे. अक्षरे। कंडक मेाटा अने सुवाच्य छे. अक्षरे। सामान्यतः कालो शाहीमां लखायेल छे. ढाल के रागना प्रारंभने लालरंगथी दर्शाववामां आव्या छे. पदच्छेर माटे शब्दनी उपर नानी काली शाहीनी लीटी छे. प्रत संवत १६८५मा वर्षे पेष सुदी बीजने बुधवारे हबदपुरमां प्रेमसागरे लखी छे.

आ प्रतने प्रस्तुत संपादनमां मुख्य गणी छे.

आरंभ : श्री सरस्वतत्ये नमः ।

अंत : इतिश्री शीलवतीचरित्र गर्मिता छुंगारमंजरी नाम्ना सुभाषितावली समान्ता, संवत १६८५ वर्षे पो. सुदि २ बुधे लखितं, हबदपुरे मध्ये प्रेमसागर लिप्ति कृताः, श्रीरस्तुः, श्रुमं भवतु, कल्याणमस्तु, श्री, छ, ठ, छ, श्री कहुआमती गछे श्राविका बाई मटु पठनार्थे श्रुभम भवतु छ.

लेखननी विशिष्टताओ :

- 'य''ने स्थाने ''इ''कारवाळा रूपो के। इंलि, होइ, थाइ, के। इ,
- २. सानुनासिक रूपे।-करंति, मरंति, हसंति, हरंति,
- ३. सम्म, जिम्म, पिम्म, किन्म, किध्ध
- ४. नारीअ, निवारीअ, पाणीअ, अणसरीअ, पहिलीअ
- ५. "ख" बदले सर्वत्र "ष"-खेद (षेद), खलति (षलति)

प्रत 'ख'

आ प्रत पाटणना वाडी पार्श्वनाथ भंडारमांथी मळी आवी छे. ते आ भंडारमां दावडा १८७ नं. ७३२२ तरीके नेांधायेल छे. कुल पानां ५८ छे. पत्रनु माप ९.४''×४.४'' छे. दरेक पत्रमां सामान्यत: १७ पंक्ति छे. पत्रनी पाछली बाजुओ जमणी तरफ हांसियामां पृद्धांक लखवामां आब्यो छे. पत्रनी अबी अने जमणी बाजुओ ०.५''नो हांसियो लाल रेखाथी अकित करवामां आब्यो छे. पत्रनी उपर अने नीचेनी बाजु पर ०.४'' जग्या कारी मूकवामां आवी छे. पत्रनी जमणी बाजु परना मथाळे हांसियामां ''शुंगारमंजरी'' लखेलुं मळे छे काव्यना आरंभ, ढाल के रागनां नाम लाल शाहीथी लखवामां आव्या छे बाकीनी आखी कृति काली शाहीमां छे.

आंखीय कृति देवनागरी लिपिमां मध्यमकदना अक्षरमां लखायेली छे. के।ई के।ई जग्याओ हांसियामां अर्थ दर्शावता शब्द लखेला मळे छे. प्रत संवत १७०३ना फागण महिनामां कृष्णपक्षनी १२मी तिथिओ सागरगणीओ लखी छे.

आरंभ : सकलवाचकसमामामिनीभालस्थलमूषणायमान महोपाध्याय थ्री. प. श्री शांतिसागरगणि गुरूभ्यो नमे।नमः,

अंत : वहन्याकाशमुनिक्षपाकरिमते १७०३ संवत्सरे वैकमे मासे फाल्गुनिके शशांकविशादे पक्षे दशम्यां तिथौ । पुष्पाके विनयादिसागरगणि विद्योजजनानदिनीम् शृंगारादिममंजरी समिलिखत् स्वश्रेयसे सादरात् ।

लेखननी विशिष्टताओ :

- सामान्यतः सर्वत्र "झ"ने स्थाने "ज".
 जमकार, जलह, जूरइ, जांजर.
- २. सर्वत्र "ख'ने बदले ''ष''. षलक (खलक), मेषला (मेखला), दीपशिषा (दीपशिखा)
- ३. सुवन्नमय, अनुदिन्नि, वन्नि, मन्नि.
- ४. सरसतित, गजगतित, जित्त.

प्रत-ग

प्रस्तुत प्रत लालभाई दलगतभाइ भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावादना प्. सुनिश्री पुण्यविजयजीना भंडारमांथी प्राप्त थई छे. आ प्रतमां कुछे ७७-३ पाना छे. प्रत्येक पृष्टनुं माप ९.५''×४.३''नुं छे. पत्रनी डाबी अने जमणी बाजुओ ०.८''ना हांसियो छे. उपर अने नीचे ०.४'' जग्या कारी मूकेली छे. प्रत्येक पाना पर सामान्यत: १७ पंक्ति छे.

आखी कृत देवनागरी लिपिमा सुवाच्य अक्षरे लखायेली छे. दंड, ढाल, राग तथा देशीनां नाम अने आरंभने लाल शाहो वडे लखवामां आव्यां छे. श्लोकनां अंका पण लाल शाही वडे दर्शाववामां आव्या छे. पत्रनी उलटी बाजुओ डाबी बाजुना खूणा पर काळी शाही वडे कमांक स्पष्टपणे लह्या छे. प्रथम पृष्ठ पर सुंदर रंगीन भात छे. अंतिम पृष्ठ पर पण आवुं ज रेखांकन छे. प्रत संवत १७४०मां कान्तिसीभाग्ये लखी छे.

आरंभ : सकलवाचकसभाभामिनीभालस्थलभूषणायमान महोपाध्याय श्री २१ श्री सत्त्यसौभाग्यगणि गुरुभ्यो नमः

अंत : इति श्री शीलावतीचरित्रगर्भिता शुंगारमंजरी नाम्ना ग्रंथ संपूर्णमिति ।। मंगलमालिकाबालिका-वदार्लिग(गी)तु ॥ संवत १७४० वर्षे मधुमासे सीतेतरपक्षे चतुदर्शा कर्मवाद्यामिति भद्रं भूयात् । श्रमणसंघस्य । सकलवाचकगगनांगणनभे।मणि वाचक श्री १९ श्रीसत्यसौभाग्य शिष्य पंडितश्री प० श्री अमरसौभाग्यगणिशिष्यविनेयाणुं कांतिसौभाग्येन लिखिता पुस्तिका स्वपरोपकाराय श्रीत्यर्थं वा । शुभं भवतु ॥ कल्याणस्तु: ॥ श्रीरस्तु: ॥

लेखननी विशिष्टताओ :

- १. पदान्ते अनुनासिक-पुहचईं, कीज ईं, वधारईं, वखाणईं, बारमई
- २. आरांम, कांमिनी, वेदपुरांणि, अभिरांमजी.
- ३. ''य' कारवाला शब्दां-करीय, मोहय, वाहणीय, वारीय, सारीय, लावीय.
- ४. हुओ, छांवीओ, हिलहुओ, बहुओ.
- ५. सांडडहु, निनिदंति, द डिदीण.

प्रत-घ

प्रस्तुत प्रत पंडित वीरविजय उपाश्रय, अमदावादना मंडारमांथी प्राप्त थई छे. जेमां ते डाबडा १७. प्रतक्रमांक ४८९ तरीके नेांधायेली छे. आ प्रत अधूरी छे. क्षेमां कुले ७३–१५ पानां मळे छे. पानानुं सामान्य मार ९.९.''×४.४' 'तुं पत्रनी डाबी अने जमणी बाजुओ १''नेा हांसिया छे. पत्रनी उपर नीचे ०.५'' जग्या कारी राखवामां आवी छे. पानानी उलटी बाजुओ डाबी बाजु पर काळी शाही वडे पृष्टांक दर्शाव्या छे.

आखीय कृति देवनागरी लिपिसां मध्यम करना अक्षरे।मां काळी शाहीथी लखायेली छे. पंक्ति भेद माटे दंडना प्रयोग कर्या नयी. सीधा ज श्लेकांक मूक्या छे. अने तेने लाल बनाव्या छे. राग के ढालनी प्रथम पंक्तिने लाल बनाव्यामां आवी छे. कर्राचत बाजु पर हांसियामां अर्थ दशांवता शब्दे। लखेला मळे छे. प्रथम पृट्ट पर मथाळे ''शुंगारमंजरी चुपइ'' क्षेम लखेलं छे. आ प्रतना छेल्ला चारेक पुष्ठ खेावाइ गयेलां लागे छे. क्षेटले क्षेना लेखनसमय अंगे केाई माहिती मली नथी.

आरंभ : दुद्दा • चंदवदिन चं विवत्ती.

लेखननी विशिष्टताओ :

- पदान्ते ''इ''कार सानुनासिक –
 सोभागि, दिसिं, कमलर्नि, अनुभावि, आकासि.
- २. ''झ''ने बदले घणुं खरुं ''ज'' जीणड, जमकार, जिलहल.
- ३. घणुंअ, नीअम, निअमनि, रसिअ, नहींअ.

संपाद्न पद्धति

उपर्युक्त उपलब्ध हस्तप्रतोमांथी भाषा, समय के लखावटनी प्राचीनताना घेरणे प्राचीनतम ठरावी शकाय अवी प्रत 'क'ने अहीं मुख्य प्रत गणी छे, अने संपादित ग्रंथपाठ अने आधारे तैयार कर्यो छे. आ सिवायनी अन्य प्रतनां पाठांतरे। नेांध्या छे. आ पाठांतरे। नेांधणी मुख्य प्रत 'क' नी कडी अने पंकितना क्रमानुसार करी छे. संदर्भ माटे आवश्यक हीय अवा अपवादा सिवाय अन्य प्रतामां मळता वधाराना शब्दो पंक्ति के कडीने संपादित ग्रंथपाठमां स्थान आपवामां आव्यु नथी. मुख्ज प्रत 'क'नी, अंदर मळती कडीओ. अन्य कोई पण प्रतमां न मळी आवती

है। बा छतां तेने ग्रंथपांठमां कायम राखी छे. संदर्भ, जोडणी के भाषानी प्राचीनता, अर्थांना औं चित्यनी दृष्टिओ संपादित ग्रंथपाठ स्पष्ट रीते योग्य लाग्यो नथी, त्यां तेने बदले अन्य प्रते।ना योग्य अने उत्कृष्ट लाग्यो होय ओवा पाठ स्वीकार्यो छे. अने मुख्य प्रतना पाठनी नेांघ लीधी छे. सामान्यत: ओक नियम तरीके प्रमाण, क्रम, भाषा अने जोडणी ओम प्रत्येक बाबतमां मुख्य प्रतने ज आधार तरीके लीधी छे.

हंकमां प्रस्तुत कृतिनुं संपादन सामन्यतः नीचेना मुद्दाओ लक्षमां राखी कर्युं छे.

- (१) अहीं प्रत 'क'ने मुख्य प्रत गणी छे, अने सामान्याः तेना ज पाठने। स्वीकार कर्यो छे. अन्य प्रताना महत्त्वना पाठान्तरा नेाध्या नथी.
 - (२) पर्यायात्मक के पारपूरक अंगेना पाठान्तरे। नेांध्या छे.
 - (३) पाठ वधते। के ओछा हाय ते दरेक रथळनी नेांध करी छे.
 - (४) भाषा, अर्थ के अन्य कोई दृष्टिओ महत्त्वनां जणातां पाठान्तरानी खास नेांध लीघी छे.
 - (र) केाई प्रतमां न होय तेवा अकेय कल्पित पाठने ग्रंथपाठनां छेवामां आब्या नथी.
- (६) आ संपादनमां जोडणी मुख्य प्रतने अनुसरीने ज आपवामां आवी छे. से जोडणीमां विसंगतता होय ते। पण मूळ जोडणीने वफादार रहीने तेमां फेरफार कर्यो नथी. पण
 - (अ) जयारे स्वीकारेल घेारणथी भिन्न अेवा पाठ मुख्य प्रामां हाय, पण अन्य प्रतमां आ स्वीकारेल घेारणनो पाठ हेाय ते। तेवी जग्याओ आ बीजी प्रतना पाठने स्थान आप्युं छे.
 - (आ) मुख्य प्रत करता अर्वाचीन समयनो पाठ जो ते अन्य कारणे उत्कृष्ट लाग्यो है।य ते। स्वीकार्यो छे, अने तेनी जोडणी पण यथातथ जाळवी छे.
 - (इ) तत्सम शब्दोमां पण पाठने शुद्ध करवामां आव्यो नथी के अन्य प्रतमां शुद्ध पाठ मळी आव्यो होय ते छतां तेने आ प्रयपाठमां स्वीकारवामां आव्यो नथी.

२. कवि जयवंतसूरि: जीवन अने कवन

प्रास्ताविक

प्राचीन—मध्यकालीन गुजराती कृतिओना कर्ताना जीवन अंगेनी माहिती सामान्यतः अमनी पातानी कृतिओनांथी के अमना शिष्य समुदायनी कृतिओमांथी के कवित समकालीन—अनुगामी किविओनी कृतिओमांथी सांपडे छे. जे अल्प प्रमाणमां ज द्दीय छे. अहीं जेनी अधिकृत वाचना रज् करवामां आवी छे ते "शुंगारमंजरी" अथवा 'शीलवती चरित्रराम ना कर्ता 'जयवंतसूरि'ना जीवन विषेनी अमनी कृतिमांथी के अन्य स्थळेथी प्राप्त थती माहिती पण प्रमाणमां बहु अल्प छे.

कवि जयवंतस्रिना जीवन सबंधेना उल्लेखनो आधार बहुधा क्षेमना ग्रथे। मांथी माळी आवतां आंतर प्रमाणा ज छे, अने केाई किंबदंतीओ नथी. आथी क्षेमना केटलाक काव्याना अंत भागमां जे कांई थोडी घणी हकीकत माळे छे. ते परथी जयवंतस्रिना चरित्रनी रजुआत करवामां आवी छे.

जीवन *

'शृंगारमंजरी'' अथवा 'शीलवतीचरित्ररास'ना कर्ता जयव तस्रि के जयवंत पंडितनु, अमनी कृतिओने अंते प्राप्त थती प्रशस्तिओमांथी, अगर नाम 'गुणसौमाग्यस्रि' मळे छे. श आम जयवत साथे ज 'गुणसौमाग्य' नाम सांपडे छे. ते परथी अटल ता चे।क्कसपणे कही शकाय के कविनुं अपरनाम 'गुणसौमाग्यस्रि' हतुं.

जयवंतस्रिना गुरु अने गच्छ विषेनी ओमनी कृतिमांथी प्राप्त थती माहिती अनुसार ते वडतपागच्छनी परंपरामां थई गयेला 'विनयमंडन' उपाध्याय'ना शिष्य रहता. पेाताना गुरुनी परंपरानो

* अत्रे नेांधवुं जोइओ के आ किवनी अन्य कृति 'ऋषिदत्ता रास' परनाे हां. निपुणा अ. दलालनो महानिबंध आ पूर्व प्रगट थओलो छे ओ संदर्भमां किवना जीवन अने कवन अंगे केटलीक माहितीनुं पुनरावर्तन थवा संभव छे. पण अत्रे ते निवारवानो प्रयास कर्यो छे. जुओ, 'जयवंतसूरि रचित ऋषिदत्ता रास' सं. निपुणा अ. दलाल, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७५.

- १ (अ) जे जिंग धर्मसहाय गुणाकार, सुविहितनइ धुरि किछ, तस सीस गुणसौभाग सुनामि जयवंतस्रि प्रसिद्धः ५४६ —ऋषिदत्ता रास, लींबडीनो हस्तप्रत ग्रंथभंडार, लींबडी पृ. १९,
- (ब) गुणसे।भागइं त्रिभ्वन दीगइ, केवलन्यानिइ कुमत ज जीपइ...१

 × × ×

 जथवंतस्रि वयण रसाला, भगतिइं गाइ जिनगुणमाला...२७
 सोमंघरा चंद्रांडला, ला. द. भा. सं. विद्यामदिर, अमदावाद
 हुस्त व्रत कमांक ३५०१, पृ. ३-७
 - (क) . . स्रि श्री जयवंत केष गुणसौभाग्यो पराहुवोऽस्ति य...
 जैन गुर्जार कविओ, संपा. मेाहनलाल द देसाई, मुंबई, त्रीजो भाग,
 संब १ प्र ६७२.

ेर अमनी जुदी जुदी कृतिमां आ अंगे नीचे प्रमाणे उल्लेखा मळे छे:

(क) वडतपगछि अति महिमावंत, श्री विनयमंडन उवझाय महंत. *)शांलि थूलिभद्र सरसति बुद्धि, गौतमनी परि लिब्ध प्रसिद्ध. ते सहिगुरुना प्रणमी पाय, जयव तसूरि अकिचितई थाई, करं धंगारमंजरी, बाल् शीलवतीन चरी. પ્રંથ श्री विनयमंडन उवजझाय, गुण गणतां न लहुं पार विद्याइ सुरगुरु समा, रूपई मयण अवतार, २४११ े ं नामहं श्रंगारमं जरी, शीलवतीनुं 🚋 😳 🦠 श्री विनयमंडन गणि सीस कीउ, जयवंत लघु सीस तास. २४९९ अने काव्यान्ते श्री विनयमंडन गणींद्रनुं, लघु सीस भूमि प्रसिद्ध, अभिनवी शृंगारमंजरी किंद्ध. २४२२ जयवंत पंडित ---शृंगारमंजरी

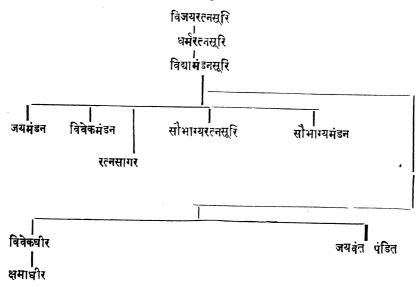
उल्लेख किविशे क्षेमनी दोई कृति 'शृंगारमं जरी'मां आप्यो छे. १ ते अनुसार ते वृद्ध तपापक्षना 'रत्नाकर गच्छ'मां थइ गया है।य क्षेत्र जगाय छे 'रत्नाकर गच्छ'ना उद्योतकर तरीके ते 'विजय-रत्नस्रिं'ने गणावे छे. आ विजयरत्नस्रिं'ना शिष्य ते ख्यात 'धर्मरत्नस्रिं'. आ 'धर्मरत्नस्रिं'ना बे शिष्योना ते 'विद्यामंडनस्रिं' अने ' विनयमंडन उपाध्याय '. आ 'विनयमंडन'ना बे शिष्योना

- (ख) वडतपगच्छ से।हाकरु हो, श्रीविनयमंडन गुरु राय. रतनत्रय आराधका हो जे जिंग घर्मसहाय ५४५ जे जिंग धर्मसहाय गुणाकर, सुविहितिनइ धुरी कीध्घ, तस सीस गुणसोभग सुनार्मि जयवंतसूरि प्रसिद्ध ५४६ —ऋषिदत्ता रास, लींबडी हस्तप्रत, पृ. १९, ५४५–५४६
- ्र (ग) श्री विनयमंडन उवझाय अनोपम, तपगच्छ गयणइ चंद तसु सीस जयवंतसूरि, वरवाणी सुणतां हुइ आणंद. ७५ —पुण्यविजय हस्तप्रत ग्रंथभंडार, ला द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद. प्रत कमांक २६५६.
- ्र (घ) गुरु विनयमंडन उवज्झायो, जिन के नरवर सेवइ पाय,
 लघु सीस जयवंतस्रि गुण गाइ, थूलभद्ग...सुख सिव थाइ. ६८
 —स्थूलिभद्र चंदायणि ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर, हस्तप्रत ग्रंथभंडार,
 प्रत क्रमांक ३२६०, पृ. ३,६८

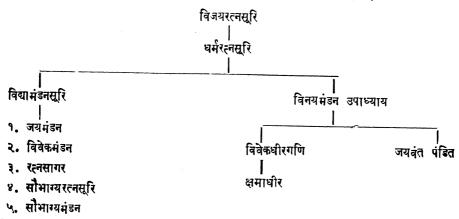
साधु शिरोमणी जणीउ तु, श्री विनयमंडन उवझाय रे, तास सीस गुण आगछ तु, बहु पंडित राय रे. ३६ आसी सुदि पुनिम दिनइ तु, शुक्रवार क्षेकान्तह रे, कागल जयवंत पंडितइ तु, लिखीउ माझिम रातिइ रे. ३७ —सीमंघर स्वामि लेख, ला द. भा. सं. विद्यामंदिर ग्रंथभंडार, प्रत क्रमांक १००८

- (ङ) वडतपगच्छि अति महिमा मंदिर, श्री विनयमंडन उवजाय, तस सीस जयवंत पंडित वीनवइ सुख संपद थिर थाइ. ३९ — बारभावना सज्झाय, पुण्यविजयजी हस्तप्रत ग्रंथमंडार, प्रतक्रमांक ६६८०
- (च) विनयमंडन गुरु सीसवर, जयवंतस्रि सुखदायो रे ४० राज० ——शमामृतम्—नेमिनाथ स्तवन, संशोधक, मुनि धर्मविजयजी, भावनगर, १९२३
- (इ) श्री विनयमंडन गुरोर्गिरि शिशुत्वे प्यवाप्तचारित्रा
 —काव्यप्रकाश टीका, जैन गूर्जर कविओ संपा. मेाहनलाल द. देसाई, मुंबई, त्रीजो खंड १, पृ. ६७२
- बृद्धतपापक्ष जाणीइ, श्री रत्नाकर गछ
 कल्पलता जिम वाघती. दीसइ जिहां गुण गच्छ. २४०५ वगेरे...
 —जुओ, हांगारमंजरी ग्रंथपाठ प्र १७६-१७७, २४१८-२४१८

नाम जाणवा मळ्या छे. क्षेक 'विवेकधरगणि' अने बीजा ते 'जयवंतसूरि'. आ परंपराने क्षेमणे संस्कृत भाषामां रचेली 'काव्यप्रकाशनी टीका ^१''ने अंते मळती प्रशस्तिमांथी समर्थन मळे छे. सुनिश्री जिनविजयजीना 'शज्जुं नय तीर्थोद्धार प्रबंघ'नीर प्रस्तावनामांथी आपेल वंशवृक्षमां कवि जयवेंत पंडितना स्पट्ट उल्लेख मळे छे. ते आ मुजब छे :



आ वंशनृक्षमां शरतचूकथी विनयमंडन उगाध्यायनुं नाम रही गयु छे, क्षेम जगावी श्री मोहनलाल द, देसाई जयवंतसुरिनी गच्छ परंपरा आपणने आ प्रमाणे आपे छे. 3



आ बंने वंशवृक्ष परथी कवि जयवंतसूरिनी गच्छ परंपरा वधु स्पष्ट थाय छे.

१ जुओ, जैन गूर्जर कविओ, भाग त्रीजो, खंड १, पृ. ६७२.

२ शत्रुंजय तीर्थोदार प्रबंध, संपादक, मुनि जिनविजयजी, १९१७, प्रस्तावना पृ. ६९.

३ श्री जयवंतसूरि छे॰ मोहनलाल, द. देसाई, आत्मप्रकाश, १९२४ [वीरात् २४५०, अंक १०] पृ. १२.

जयवंतस्रिना अंगत जीवन अंगे कोई विशेष माहिती सांपडती नथी. एमनुं अपर नाम 'गुणसोमाग्यस्रि'. अमना गुरु ते विनयमंडन. आ विनयमंडने 'शत्रुंजयतीर्थ'ना 'उद्वार'मां सारो रस लोघो छे. आ विनयमंडनना वे शिष्यो ते 'विवेकमंडन' अने 'जयवंत'. अटळे आ प्रसंगे ते बन्मे हाजर हुशे अम अनुमान करी शकाय. आ सिवाय अमनी कृतिओमांशी सांपडता उल्छेखो परणी 'पंडित जयवंत ने पाछळथी 'स्रि'नी पदवी मळी हती, अम कही शकाय.

समय

जयवंतस्रिन। जन्म के मरण अंगे कोई चोक्कस माहिती मळती नथी. पण क्षेमनी उपलब्ध कृतिओमांथी प्राप्त थती रचनासाल परथी केमना जीवन कवन काळ विशे अनुमान करी शकाय केम छे. क्षेमणे रचेली कृति 'सीमंधर स्तवन'नी प्रशस्तिमां प्राप्त थती विगता परथी तेनी रचना साल संवत १५९९ निर्णित करी शकाय केम छे. आ स्वीकारता ते किवनी रचना साल आपेली पहेल प्रथम कृति ठरे छे. जेथी संवत १५९९ ते क्षेमना कवननी पूर्व मर्यादा गणावी शकाय. क्षेमणे रचेली कृतिमांथी माडामां माडी कृति ते 'ऋषिदत्ता रास' छे. जेनी रचनासाल संवव १६४३ छे. तेने आपणे क्षेमनी उत्तर मर्यादा तरीके मूकी शकीके. [हाल प्राप्त कृतिओना संदर्भमां आ अनुमानो छे, ते नेांधवुं जोईके]. आम एमनो क्ष्यनकाळ संवत १५९९ थी संवत १६४३ नेा [ई.स. १५४३ थी १५८७ नो] गणावी शकाय.

आ परथी एमना जीवनकाल विषे पण अनुमान करी शकाय छे. श्री. मेाहनलाल द. देसाई रे पण संवत १६४३ ने कविना कवननी उत्तर मर्यादा तरीके स्वीकारे छे. अने जणावे छे के ''आपणा किविए [जयवंतस्रिए] पाछळथी 'स्रि'नी पदवी प्राप्त करेली जणाय छे. संवत १५८७मां [ई.स. १५३१मां] 'शंत्रुंजयोद्धार' वखते २० वर्षनी उमर ओछामां ओछी गणीए अने संवत १६४३ [ई.स १५८७]नी एमनी कृति मळी आवे छे ते परथी ते ओछामां ओछुं ७६ वर्ष जीव्या जणाय छेरे, उपरनी हकीकत स्वीकारी शकाय तेम छे. एमनी उपलब्ध कृतिओमांथी तेमने क्यारे स्रुरिपद प्राप्त थयुं हशे, ते अंगे अनुमान करी शकाय तेम छे. एमनी उपलब्ध कृतिमांथी 'नेमिनाथ-राजीमती बारमास वेलप्रबंध' के जेनी रचना संवत १६१४ निर्णीत करवामां आवी छे. तेमां सर्वप्रथम तेमने

भासे। सुदि पूनिम दीनइ तु, शुक्रवार एकांति रे, कागल जहवंत पंडिततइ तु, लिखीड माझिम रांतइ रे. ३९

—ला. द. हस्तप्रत प्रंथभंडार, प्रत क्रमांक १००८.

आ परथी ज्यातिषतास्त्र प्रमाणे गणतरी करता 'आसाे' मासमां 'सुदि पूनम'ने दिवसे 'शुक्रवार' होय क्षेत्रो याग विकम संवत १५९९मां आवे छे.

- २. जैन गूर्जर कविओं संपा. मा. ह. देसाई, मुंबई. १९२६, प्रथम भाग. पादनेांध, पृ. १९६.
- ३. इंगारमंजरी'नी प्रशस्ति आ प्रमाणे मळे छे.

संवत साल चौदातरइ, आसा सुदि गुरु बीज, कवि कीधी शुंगारमंजरी, जयवंत पंडित हेज २४२४.

१. 'सीमंघर स्तवन'नी प्रशस्ति आ प्रमाणे मळे छे:

'स्रि' तरीके उल्लेख मळे छे. वळी आ ज सालमां संवत १६१४मां रचायेली 'शृंगारमंजरी' नामनी एमनी कृतिमां एमनो उल्लेख पंडित तरीके छे. एटळे आ परथी अनुमान करी शकाय के 'शृंगारमंजरी' जेवी उत्कृष्ट रचना पछी तरत ज एमने संवत १६१४ना अंतमां 'स्रि' पद मळयुं हशे.

मोहनलाल द. देसाईनी उपरोल्लेखित तक सरणी स्वीकारीए ते। एमनो जन्म रथुलमामे संवत १५६५-७० [ई. स. १५०९-१५१४) ना अरसामां थया हुदो; एम अनुमान करी शकाय. वक्षी एमनी संवत १६४३ [ई. स १५८७) नी 'ऋषिदत्तारास' नामनी कृति मळे छे एटले तेओ संवत १६४३ (ई. स. १५८७) सुधी तो अवश्य विद्यमान हुदो ज. आ बधा परथी एमनो जीवनकाळ संवत १५६७ थी १६४३ (ई. स. १५५१ थी १५८७) सुधी लगभग ७६ वर्षना आंकी शकाय.

कवन

उपर नेांच्युं तेम संवत् १५९९ थी १६४३ (ई. स. १५४६ थी १५८७) सुधीना लगभग ४४ वर्षना दीर्घ काळ पर्यन्त छेखन-कार्य करनार आ कविए अनेक प्रांथो लख्या हको. पण हाल ते। आपणने एमनी मात्र बारेक कृतिओ उपलब्ध थाय छे. संभवित छे के केटलीक कृतिओ अमुक ग्रंथमंडारमां ज हुजी अज्ञात रीते पड़ी रही होय. किवनी अमुक ग्रंथमंनी संख्या-बंध हस्तप्रते। जुदा जुदा स्थळ अने काळनी मळी आवी छे. ए बतावे छे के ए समये किव ख्व लोकिप्रय हरो. एमनी काव्य कळानी दिष्टिए सर्वोत्तम गणी शकाय एवी 'शृंगारमंजरी" अथवा "शीलवती चरित्ररास' नामनी कृतिनी पांच-छ हस्तप्रतो संवत १६३९ थी (ई. स. १५८३ थी] आरंभीने संवत् १७४० [ई. स. १६८४] सुधीना लांबा काळ पर पथरायेली मळी आवे छे. जे किवनी पछीना काळनी लोकिप्रयतानुं द्योतक छे "रूषिदत्तारास" नामनी बीजी एक कृतिनी लगभग सत्तरथी वधु जुदां जुदां स्थळ अने काळनी हस्तप्रते। मळी आवी छे आ पण किवनी लेकिप्रयता दर्शावनार लक्षण छे.

कृतिओ

१. शंगारमंजरी-शीलवतीचरित्ररास

'शृंगारमंजिंग' अथवा 'शीलवतीचरित्ररास' ए किंव जयवंतस्रिनी सर्वोत्तम कृति छे. मध्यकालीन गुजराती भाषा, साहित्य, समाज अने संस्कृति अंगे मूल्यवान सामग्री एमांथी प्राप्त थाय छे, ते दिख्ए पण ते नेांधपात्र छे. [आ कृतिनी अधिकृत वाचना अने अध्ययन अत्रे रज् कर्या हें।वाथी एनी समीक्षा अत्रे प्रस्तुत नथी.]

१ डा. भीगीलाल ज. सांडेसरा, वीरसिंहकृत 'उषाहरण'ना पाताना संपादनमां—'हरिवंश अने भागवत परथी रचायेला गुजराती काव्या''मां जयवंत पंडित कृत 'नेमी राजुल बारमास वेल प्रबंध'नी रचना साल संवत १६१४ होवानुं जाणावे छे.

[—] जुओ वीरसिंहकृत उषाहरण, संपा. श्री. भे। जे. सांडेसरा, मुंबई, १९३८, पृ. २७८.

५. ऋषिदत्तारास

आ रास कृतिना ५४८ कडीना विस्तारमां कविशे 'जैन साहित्य'मां प्रचलित 'सती ऋषिदत्ता'नी कथाने छटादार शैलीमां रज् करी छे. कवि काव्यमां सामान्यतः पंडित जयकीर्तिरचित शीलोपदेश-माला पर सोमितिलकस्रिए आपेल वृत्ति अन्तर्गत प्राप्त थती ऋषिदत्ता कथाने अनुसरे छे. पण किवशे पोतानी प्रतिभा अने सामर्थ्य अनुसार एना वस्तुसंकलना, पात्रालेखन, भावनिरूपण, वर्णना-लेखन, अलंकार योजना जेवां पासाओमां कुशळता दर्शावी एने क्षेक पद्यात्मक रासनुं स्वरूप आप्युं छे. [आ अंगे श्री निपुणा अ. दलालने महानिबंध जयवंतस्र्रि रचित ऋषिदत्तारास' प्रगट थयेलो होई अत्रे एनी समीक्षा प्रस्तुत करी नथी.) १

२. नेमिनाथ राजीमती बारमास वेलप्रब घ^र

आ कृतिनी रचना सं. १६१४^२ [ई. स. १५५८] थई होवानुं हो. भोगीलाल सांहेसरा अनुमान करे छे.३ 'बारमासा नो साहित्यिक परंपराने अनुसरी कवि बारे मासना ऋतुविहारने वर्णने छे

काव्यनुं शीर्षक दर्शावे छे तेम आ 'बारमासा' काव्य छे. १२९ कडीनी आ कृतिमां कविशे नेमिनाथ-राजीमतीना निमित्ते बारे मासनुं परंपरा अनुसार वर्णन कर्युं छे.

काव्यना प्रारंभमां कवि 'विहंगमवाहना '-सरस्वती माता पासे 'जिन-गुणगान ' अर्थे 'वरदान' याचतां कहे छे—-

विमल विहंगमवाहना, माता यउ वरदान, द्वादश मास सोहामणा, गाइसु जिन-गुणगान. १ वेधक-जन-मन रीझवइ, मानिनि मोह्रण-वेलि, गुण-सोभाग-सोहामणी, वाणी यउ रंग-रेलि. २४

वर्णननो प्रारंभ कवि श्रावण मासना वर्णनथी करे छे. अलंकारनी योजना रूढिगत छे, पण कविके क्षेमां क्षेक प्रकारनी चमत्कृति आणी छे

> महेकी आ रित आरित, आवइ मोरडी मोरडी रे आ रित सेज आरित, झूरड़ गोरडी गोरडी रे ८ खिन खिन तुहूंनी आरं(ित), बपीहाआ देतु हइ रे हइ रे, पाविस विरह प्रांण कि, दैआ लेतु हरइ रे हुरइ रे

१ जयवंतसूरि रचित ऋषिदत्तारास, सं. निपुणा अ. दलाल, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिर, अमदावाद. १९७५.

२ पुण्यविजयजी हस्तप्रत भंडार, प्रत कमांक २६५६, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद.

३ वीरसिंहकृत उषाहरण संपा. डा. भोगीलाल ज. सांडेसरा, मुंबई, ९९३८, परिशिष्ट पृ. २७९.

४ नेमि. राजी. बारमास वेल प्रबंध, पृ. १, १-२.

५ नेमि. राजी बारमास वेल प्रबंध, पृ. १. ८-९.

मागशरमां अनुभवाती असहा विरहनी व्याकुळतानुं कविए सुन्दर आलेखन कर्युं छे. निव गमई स्तां वलीय बइठा, विरह व्यापइ पापीड, खिणि माहि बाहरि सास सोसिइ, विलिप तन संतापीड. ३८ पीड पंथ जोतां व्रसिक रोतां, दीस दोहिलड् नीगमुं, निव जावइ (वइ)रणि रयणि किमहइ, कंत विण सूनि भमुं. ३९१

फागण मासमां प्रकृतिनी लीला सर्वत्र विस्तरी छे, तेनुं सुरेख शब्द—चित्र कविए अत्यंत कुशळताथी चितर्युं छे.

फागुणि केसु कुंपल्यां, दावानळ वींछड्याइ रे, केसु-रंग सुरंग विना, विरहि कां दैवि घडयाइ रे.

५५

त्रूटक

कूंपल्या केस्, लाल वेसु, कपुर-केसर-छांटणां गुलालि राति छीटि माती, कपरि आछां उढणां

५६

वैशाख मासमां विरह्यी व्याकुल बनेली विरहिणीनां हृदयनी उन्मा कवि आकर्षक रीते आछेखी शक्या छे.

तुझ साथि वार्लिंभ प्रीति कीधी, बैशाख जाणी चंग वैशाख मासि विरहलाइ, राइ म देइ मुझ अंगि. ६७ तुझ बिना अवर के। इ सुहुणइ, चिंत न देवइं साखि, मीठी ति गोरी नवल नेहइं, मीठी ज अंबा साख रे. ६८२

र्शुगार रसथी समर एवुं कामिनीनुं बर्णन पण एनी आंतरप्रास—योजना लीधे नेांधपात्र छे. बळी मनोहर अलंकार योजवानी कविनी शक्तिने लीधे आखुं वर्णन रसिक बन्युं छे.

र्कुच-कुंभ कंषू-किस कस्या हो, डेरा काम-निवेसि, जिह्दां पीउ सम। इपातल हो, नयन खल्यां तिणि दिसि. १०६

त्रूटव

नयन खल्यां तेणि देसि अनोपम, कई गोरे भूज-पासे.
जिणि भूजि कामिनी कंतनइ भीडइ, पंकजनाला-संकाशे. १०७3
काव्यना अंत भागमां किन कहे छे.
मुगति तणां गुण सांभली हो, जे कह्या श्री नेमिनार्थि,

ते सिख मिलवा कारणइ हो, राजिल घरइ रे उमाह. १२१

त्रुटक

राजिल घरइ उमाहु अधिकु, मुगति—सीरीनई मिलवा; श्री जिन पासई संयम याचइ, तेज मांहिइ तेज भलवा. १२२४

१. नेमि. राजी. बा. वे. प्र. पृ. २. ३८, ३९

२. एजन पृ. ३, ६७-६८

३. ने. रा. बा. वे. पृ. ४. १०६, १०७.

४. ने. रा. बा. वे. पृ. ४. १२१, १२२.

आम काव्यने अंते जैमा परंपरा अनुसार संयमश्रीने पामवाशी अने तेजमां तेज भळी जवानी वात छे. काव्यनी प्रशस्तिमां 'बारमास'मां 'जिन गुण' अंगे 'प्रमाद' न सेववानुं ते जणावे छे.

बारमास जिन-गुण तणा हो, गातां न करु प्रमाद, लाभ अनेतु आगमि हो सुणतां हुइ आल्हाद, १२७

<u>ब</u>ुटक

सुणतां हुइ आल्हाद सदाइ, जिन-गुण अतिहिं रसाल, मन-नइ रंगि तेह ज सुणतां, नितु नितु मंगल-माल. १२९ श्री विनयमंडन गुरु राज अनोपम, तपगल-गयणइ चंद, तास सीस जयवंतसूरि, वर वाणी सुणता हुइ आणंद. १ १२९ साचे ज काव्यना पठनथी आपणने पण आनंद थाम छे.

३. स्थूलिभद्र-कोशा प्रेमविलास फाग^२

आ संक्षिप्त छतां रसपूर्ण कृतिमां वसंतऋतुनुं वैभवी वर्णन प्राप्त थाय छे. काव्य 'मघु-मास'मां गवाता फाग छे, आरंभनी सर्व कडीमां सामान्य वसंत वर्णन मळे छे, जेथी ते सांसारिक प्रेमकाव्य हे।य क्षेत्रुं लागे छे मात्र छेल्ली छ—आठ पंक्तिमां ज कविए स्थूलिमद्र अने कोशानी कथाना स्पर्श करी, तेमां जैन फागु काव्यनी परंपरा जाळववाना प्रयास कर्यो छे. काव्यना प्रारंभमां कवि सरस्वतीनुं स्मरण करे छे.

सरसति सामिनि मनि धरी, समरी प्रेमविलास, थुलिमद्र कोश्या गायसिउं, जिम मनि पुरुच्य आस.³

ऋतु नसंतन्तं आगमन थाय छे. सर्वत्र तेनी असर पढे छे; तेनुं ताइश वर्णन किन करे छे. वनसपती सिव मेाहरी रे, पसरी मयणनी आण, विरहीनई कहंउ करह, कोविल मूंकइ बाण. प्रत्युअटुवेलि आर्लिंगन देखिय सील सलाय, भरयौवन प्रिय वेगल्ल, खिण न विसारिक्षा जाइ. ५ ५ विरहिणी पियुने विरह उपस्थित करवा अंगे उपालैंभ आपतां जणावे छे.

^{1.} ने. रा. बा. वे. प्र. g. ५ १२९.

२. प्राचीन फागु संब्रह, संपा. डो. भोगीलाल ज. सांडेसरा अने श्री. सोमाभाई पारेख, वडोदरा, १९५५, पृ. १२६-१३३.

३. प्राचीन फागु संप्रह, पृ. १२५,१.

४. क्षेजन. पृ. १२६, ४-५.

रे साजन जे तिइ करिडं, ते मिई कहिन्छं रे न जाइ, बइरीडा वेध विलाइनइ, इस कां अगलु श्राय. 90 वीज पड़यो ते छ।रि, जे करी छांडई नेह, विरहिइं बाल्यां माणस स्यं करइ वस्सी मेह. 99

बेनुं क्षेज 'मंदिर—घर' अने बेनी बेज 'दोरी' होवां छतां 'पियु'नी अनुपस्थितिथी बेमां केवुं परिवर्त न आवी जाय छे. ते विषम परिस्थितिनी व्यथानुं कवि उष्मायुक्त वर्णन करे छे.

तेह ज मंदिर ते ज सेरी, निव ठामइ सखी जोऊ फेरी, ओल्हाव्या विण जाइ वणजारा, गया चोरी चित्त छ टारा. २९

सखि मुझ न गमइ चंदन, चंद न करइ रे संतोष, केलि म वीझस ही सही, सही न समइ अम दोस. ^२

विरहनी व्याकुळता भोगवती नायिका, परदेश गयेला पियुनो संग करवा अंगे केवा केवा मनोरथो सेवे छे, से कविशे व्यंजनाथी दर्शाव्युं छे.

हुं सिइं न सरजी पंखिणी, जिम भमति प्रीउ पासि. हुं सिइ न सरजी चंदन, करती प्रिय-तनु वास. 3'9 हुं सि न सरजी फूलडां, छेती आलिंगन जाण. मुहि सुरंग ज शोभतां, हुं सिइं न सरकी पान, 3

अने आखरे विरद्दिणीनी केवी कर्ण दशा थाय छे.

भ्ख तरस सुख नींदृढी, देह तणी सान वान, जीव साखिइ मइ तुझ कही, थोडई घणु स्यु जाणि. 80 थे मुझ परि मइं तुझ कही, हुवई मुझ करि न संभाल, मेलि कइ ऊतर आंपिनइं, आलालुंबओ टालि.४

आम अनेक प्रकारे उपाल भ देती केाशा, गुरु आदेशशी ' मुनि स्थुलिमद्र ' पोताना गृहे आवतां कंत देखी कोश्या कूबडी हड्डा कमल विकास,

12

8.3

जिम बनराइ माधवओ, पामी अधिक उल्हास. भ

कोशा उल्लास अनुभवे छे. अने कवि काव्यनी उपक्षम करे छे. कवि काव्यनी अशस्तिमां जणावे हो तेम-

थ्लिभद्र कोश्या केरडो, गायु प्रेमविसास, फाग गाइ सिव गोरडी, जब आवड् मधुमास. ^६

१ प्राचीन फागु संग्रह, यू. १२७, १०–११

२ क्षेजन पृ. १२०, ४१ – ४२

३ क्षेजन पृ. १२२, ३१-३२

४ प्राचीन फागु संप्रह, पृ. १२४, ४०-४१

प्राचीन फागु संग्रह, पृ. १२४, ४२

प्राचीन फागु संग्रह, पृ. १२५, ४४

आ 'फाग' मधुमासमां गवातो हुशे के वस्तु अहीं स्पष्ट थाय छे. अत्री 'फागु' काब्य के गेय प्रकारनी रचना हती तेना स्पष्ट उल्लेख मळे छे. ते दृष्टिके आ 'फागु' नेांधनीय छे.

४. सीमंधर जिनवर [विनती] चंद्राउला १

२७ कडीनी आ रसिक कृतिमां कविए 'सीमंघर भगवान'ने आरझु अने आरतभरी प्रार्थना के विनंती करी छे. एना अन्तर्गत भावोर्मिना प्रबळ आछेखनने लीधे आस्वाद्य बनी छे.

काञ्यना प्रारंभमां ज कवि पोतानी विन ति सांभळवानी आग्रहभरी याचना करतां कहे छे-

विजयवंत पुकालावती रे, विजयापुन्व विदेहो, पुर पुंडरीकु पंडरिगणी, सुणतां हुइ संनेद्दो. सुणता हुई संनेह रे हैईइ, स्वामि सीमंघर वीनती कहीइ, गुणसौभागइ त्रिभुवन दीपइ, केवलन्यांनइ कुमती जीपई...र १

कवि 'सीमंधर भगवान'ना गुणनुं स्मरण करतां कहे छे—' हुं तारा गुणनी खाण 'मांथी थोडा ज गुणनुं स्मरण करुं छुं. ते। आ 'थोडा' 'ते घणा करीने जाणजो'—आ भावने कवि दृष्टांत द्वारा असरकारक रीते अभिव्यक्ति आपे छे.

हाथी समरइ विंझनइ रे, चातक समरइ मेहो, चकवा समर सूरनइ रे, पावसि पंथी गेहा, पावस पंथी गेहे संभारइ, भमरु मालतीनई वीसारइ, तिम समरुं हुं तुम गुण खांणो थोडाइ कहिणइ घणु करी जाण्यो. 3 9९

किव प्रभुना विरह्थी व्याकुळ बनी ऊठे छे अने कहे छे के जो एने पांख होय तो ते कड़ी क्षेनी पासे आवी जाय. आम अमनुं मन अनेक मनोरथ करे छे पण पातानुं मन अनेक 'रे।गे।'थी भरेख छे अंटळे छुं थाय.

विरहाकुल ऊडी मलिंड रे, जड हुइ पंख प्रमाणा... २० किव पाताना प्रीतिनी महत्ता वर्णवता कहे छे— सगपण हुइ तुं ढांकीइ रे, प्रीति न ढांकी जाया. विहाणिंड छावि न छाहीइ रे, लिहर न दोरि बांधाया, लहिर न दोरि बांधाया, लहिर न दोरि बांधाया, स्वाहा तु संभार्या साखी (अ)हिवहड रंग जसिउ छइ लाखा. ५ २२ जी.

१. ला. द. हस्तप्रत प्रथमंडार, हस्त प्रत क्रमांक ३५०१, पृ. ४–७, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद.

२. सीमंघर जिनवर चंद्राउला, पृ. ४, १

३. एजन, पृ. ६, १९.

४ एजन, पृ. ६, २०.

५ एजन, वृ. ६, २२,

प्रभुना अपार गुणतुं कथन करवाथी पोतानी अशक्तिने कविश्रे अंक पछी अंक सरस कल्पना को दर्शावों छे, तेमां कविनी नंची कल्पनाशक्ति देखाय छे.

आभमंडल कागल कहं रे, सायर जल मिस थाय, जड तुद्रा गुण सुरगुर लखह रे, तुहह पार न जाह, तुहह पारि ज जाइ घाती, हहडा भीतरी छह बाहु वाती, लेख लखतां पार न आवह, गुण संभारह विरह संतावह... १ २४जी.

भाम पोतानी अशक्तिना स्वीकार करी, काव्यना अंतमां कवि जणावे छे.
अतिशय सयिल अलंकरिया रे, सीमंधर जिन राजा,
केवलन्यांनइ सिव लहइ रे, सुर नर सेवित पाया,
सुर नर सेवित पाय जिणेसर, सिव सुखदायक अति अलवेसर,
जयवंतस्रि वर वयण रसाला, भगतिइ गाइ जिनगुणमाला. रे २७

काव्यांते आम 'स्व' नामने। उल्लेख करी कवि भक्तिपूर्ण रीते गवायेली आ 'माळा' पूर्ण करे छे.

५. सीमंधरस्वामि लेख-सीमंधर जिन स्तवनः

३९ कडीना आ नानकडा काव्यमां किन्ना सीमंघर स्वामि प्रत्येने। भक्तिभाव अनेक अभिराम अलंकारो द्वारा अभिव्यक्ति पाम्या छे. काव्यना प्रारंभमां किन प्रभुना 'गुणकमल 'थी वेधायेल पाताना 'मन-भमर'नी वात सुंदर रीते व्यक्त करे छे.

स्वस्ति श्रीपुंडरगणी, भारु सगण सीमंधर स्वामि,
मुहि बोलतां अमृत झरे, मने।हुर मेाहन नांम,
गुण-कमल तारइं वेधीउं, मन-भमर मुझ रिस पुरि,
तुझ भेटवा अलजड घणड, किम कहं थानिक दूरि रे.४...१ वाल्हा०
प्रमु बिना अकळामण अनुभवतां किवनी थयेली कहणदशानुं वर्णन जावा जेवुं छे.
मुझ दिवस वरसा सु समड, तुझ विना रयणी छ मास,
तारेइ वेधडइ सहु वीसरिं, सहुणा तणी सी आस,
गुण तारडई मन वेधीऊं, निव वलड वालड अेह,
मूख तरस कडी गयां, तारइ वेधडइ दाझइ मोरी देह रे.५ ७

किवि आम विरह वेदना अनुभवे छे. आ विरह दु:ख-विखनी उग्रताना उपशम अर्थे किविनुं मन केवी केवी कल्पना करे छे.

गृंथी तुझ गुण-फुलडे, नाम मंत्र तुझ ओह रे, विरह तणां विख टालिवा, हुं जपुं निसि-दीस रे, सुगुण सुल्रणा सीमंघरा तारी जीउं बलिहारि रे, सांहमुं जीउ नेह नयणले, करउ वेधडां सार रे. ... १७

१ सीमंघर जिनवर चंद्रउला, पृ. ६, २४. १ क्षेजन, पृ. ७, २७.

३ ला. द. हस्तप्रत ग्रंथभंडार, हस्तप्रत क्रमांक १००८.

४ सीमंधर स्वामि छेख, पृ. १,१. ५ अजन, पृ. १,७. ६ अजन, पृ. १,१७.

किंव आ असह्य दशामां प्रभुने संदेशों मोकलवा प्रेराय छे. किंव प्रेभुने क**हे छे—'आ** दशामां मारे तने संदेशों मोकलेबा छे. के माटे में चन्द्रने वार्ग्वार विनंती करी पण ते आ कार्य करती नथीं.' किंव आ अंगे प्रभु पासे फरियाद करतां जणावे छे—

चंद्रलंड वली वली वीनविंड, मारुं निव करेड काज रे, विरह विगाय वेदना, पापी निव लहड आज रे. १ २१

कवि सीमेधर स्वामिना गुणनुं वारंवार स्मरण करे छे, आ भावने धनीभूत करवा ते प्रभावक दृष्टान्तानी याजना करे छे,

क्षणि क्षणि समर्रं हुं गुण तारा, आसाढी मेह जिम स्मरइ मोरा, पुनिम दिन दिन जिम चंद चकोरा, फुल तणा गुण भमर भळेरा. २ २५ वक्षी कहे छे

किहां स्रिज किहां कमलणी रे, किहां मेहा किहां मारुं,
दूर गया किम वीसर्द रे, उत्तम नेह सु जो हुइ. 3 २९
किव सीसंघर स्वामिना अपार गुण गावानी पोतानी अशक्तिना भावने प्रबळताथी मृत्त करे छे
सायर मिस मेरु लेखणी तु, कागल अंबर सार रे,
तुहइ मननी वातडी तु, लखतां पार न आवि रे.४ ३४
वळो गुणनी अपारता अने तेनुं गान करवानी पोतानी असमर्थता दर्शावता जणावे छे.

अक्षर बावन गुण घणा तु, केता रुखीई रुख रे, थोडिंड घणई करी मांनय्यो, सुख होसिंइ तुह्म देखड्. ५ ३५ काव्यनी प्रशस्तिमां कवि कथे छे.

आसो सुदि पूनिम दीनइ तु, शुक्रवार एकांति रे, कागल जइवंत पंडितनइ तु, लिखीड माझिम रांतिइ रे. १ ३९

आम समग्र काव्यमां कविनो भक्तिभाव वाणीना माधुर्य अने ऊर्मिनी उत्कटताने परिणामे विशेष झळकी उटे छे.

६. बारभावना सज्झाय७

आ कृतिमां किन मुनि जयवंतस्रि जैन परंपराने अनुसरी जैन धर्मनी जुदी जुदी 'बार-भावना'ने सहष्टान्त समजावानो प्रयास करे छे, जेमां किन्नी हष्टान्तो वढे तत्त्वने स्फुट कर-वानी शक्तिनां दर्शन थाय छे.

कान्यना प्रारंभमां 'दुर्लभ' एवा मनुष्य जीवनमां 'बार भावनो'नुं स्मरण करे छे. आ 'बार-भावना' जिनशासनमां 'मुगतिना निधान' रूप लेखाय छे. एने 'सावधान' धई सांभळवानी कवि विनंति करे छे.

९ सीमंघरस्वामि छेख, पृ. २, २१ २ अंजन, पृ. २, २५ ३ अंजन, पृ. २, २९

४ क्षेजन, पृ. २, ३४ ५ क्षेजन पृ. २, ३५ ६ क्षेजन पृ. २, ३९

पुण्यविजयजी ग्रंथभंडार हुस्त प्रत कमांक ६६८०, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद.

सँरसति सरसति वाणी, आपु अमीअ समीणी, भावन बार वखाणी, बूझबु भवीयण प्राणी.

× × × × भावन मुगति निधान, श्री जिन्हशासनि प्रधान, ते सुणु थई सावधान, छंडी कुमत अज्ञान. १

आ संसारमां सर्व पदार्था अनित्य छे. अस्थिर छे—चंचळ छे. पण संसारना जीवो ते सर्वने नित्य मानी तेना मोहमां पडे छे. आ 'अनित्य'नी पहेली भावना किं लंकापित रावणना दृष्टांतथी समजावे छे.

दीपतु त्रिभुवन मांहि कटक, खाटि बांध्या नवप्रहे, विहि दलइ को दव अग्नि घोइ, वस्न वायु बाहारइ प्रहे. ५

× × × × × × ते ते नित्य न रहिङ भूप रावण, मुंज भोज गया सही, ते अथिर काया मूढ माया, अनित्य भावन ए कही. २ ७

चेश्वी 'एकत्त्र'नी भावना समजावतां किव जणावे छे के जीव अहीं एकलो ज आव्या छे. अने स्वजन-संबंधीओ इत्यादि सर्वने मूकीने जवानुं छे. अथी ओणे केाई पर ममता न राखता 'समता' राखवी जोईओ.

केणइ संसारि संयोगडा, सुहुणा सरिसा जाणि रे, अति सयोगि वियोगिनइं, मिन माया रे अली अस आणि कि १२ घडीअ न लगाइं विहेंडता, जिम कातीना मेहोरे, तनु धन सुजन अनेरडां, ते साथइ रे मंडिम चित्त स्नेंह कि ३ १३

'अशुचिभावना' समजावतां किव कहे छे के आ 'मानव काया' अशुचिथी भरेली छे. ते मळ अने मूत्रादिकथी सभर छे वळी आ किया निरंतर थया ज करे छे. ते माटे नव द्वार छे. आम तो आ श्रीर मांस, रुधिर, मेद, रस, हाडकां, मज्जा तथा वीर्यादि जेवी अनेक अशुचिथी भरेल छे. पण बहारथी चामडीरूपी 'केाथळी'थी ते मढेल छे. तेना ते रूपथी जीव क्षेना पर मोह पामेल छे.

मल मुत्रि भरी अति असारी, रुधिर वीर्य थकी घडी, आहार जल मल मुत्र थाइ, अचि न थाइ देहडी. वाधीअमा मुख अश्रचि अन्नइ, तुहि किम हिंदु निर्मली, ए अश्रची सात घाति बांधि, उत्परि चरमहं केाथली आभरणि सोहई सहु मोहइ, अश्रचि भावन भोवतांध...२९ अंते काव्यनं समापन करतां...

पामइ सुख अनंता प्राणी, भावन बार वखाणी, एक-मना जे भावन भावइ, ते सुख आणह ताणी, बडतपगच्छी अति महिमा मंदिर, श्री विनयमंडन उवझाय, तस सीस जयवंत पंडित वीनवइ, सुख संपद थिर थाई. ५ ३९

आम समग्र काव्यमां कविए जैन शासनने अभिप्रेत 'बार भावना' नुं परंपराप्राप्त स्वरूप वर्णव्युं छे. काई काई जग्याओ उचित दृष्टान्त के अलंकार योजना बड़े कविओ वक्तव्यने स्फुट कर्युं छे.

१ बारभावना सज्झाय, पृ. १, १, १.
 ३ बारभावना सज्झाय. पृ २, १२, १३. ४ क्षेजन पृ. ३, २९. ५ क्षेजन पृ. ४, ३९.

७. स्थूलिभद्र चंद्रायणि

'स्थूलिभद्र—केशा प्रेमविलास फाग' रचनार कवि जयवंतस्रिनी स्थ्लिभद्रना जीवन प्रसंगने निरूपती आ बीजी काव्य कृति छे. वस्तु, रचनाकौशल अने बानीमां जे पक्वता देखाय छे ते परथी लागे छे के कविके प्रस्तुत कृतिनी रचना उपर निर्देशल 'फाग' पछी करी हुशे.

आ कृतिनो रचनासंवत प्राप्त थतो नथी. १४७ कडीनी आ कृति वे खंडमां वहें चायेली छे.

अमना जीवनना महत्त्वना प्रसंगाने निरूपतुं आ नानकडुं काव्य अनी राजःथानी—हिन्दीमी छांट दर्शावती भाषा, अभिराम अलंकार मंडित होली अने रचनाकों शलने लीधे अने खी भात पाडे छे.

काव्यना आरंभमां कवि 'शारदामइ'ने नमस्कार करी, स्थूलिमद्रना गुण गाइ जीवन सफल बनाववाना मनारथ सेवे छे.

कवियन मा**६ शारदा,** ताके लागुं पाय, जीह सफल करुं आपनी, थूलभद्र के गणाय. ^२ १

स्थूलिभद्रना प्रथम दर्शने ज केशा तेन। प्रेममां पडी जाय छे. ते प्रसंगने वर्णवता किंवि कहें छे के अंक दिवस स्थूलिभद्र शिकार खेलवा जाय छे. शिकारथी पाछां फरतां 'जंबीखाना' आगळ ते केशिशानी नजरे पडे छे अना हृदयमां प्रेम जागे छे अने अनी केबी दशा थाय छे तेनुं किंव सफळ रीते आछेखन करे छे.

मयनह नवम दशा केाशि पाइ, पिउ पिउ जपतइ षवरि गमाइ, श्रीतल च्यंदन बुंद तिन लाइ, बींज्यत बींज्यत चेतन आइ³ ४

केशशाना रूपकाशी देहनुं वर्णन कवि विस्तारथी करे छे. प्रवाही छंद रचनामां कवि लय-माधुर्यनो आस्वाद करावतां उपमा-उत्प्रेक्षादि अलंकार द्वारा केशशाना अतीव रमणीय अने चारु-मनोहर सौन्दर्यने अहीं शब्दस्थ करे छे. मुखकमलथी आरंभी कवि नेत्र, अधर, कंठ, हस्त, कटी, नाभी, त्रंघा इत्यादि अनेक अंगोनी शोभा वर्णवे (कडी २५-५१) छे अने केशशानुं सुरेख चित्र उपसी आवे छे.

याकु रूप अनुरुप कीला, नवयावन मनमथ-लीला, तुम भी साहिब छयल छबीला, सकलकला गुण-जण रंगीला. २५ कुपुम सकर्बुर कबरी दंडा, गंगा यमुना संगा अखंडा, रतन खचित सिरि चाक जु सेाहहे, अनुपम गेाफणडह मन मेाहइ २६ नाग मुरंगा मंग अभंगा, कणय स्थण आभरण मुनंगा, निषध कनक वमुगिरि किर संगा, निरखति उलट रंग तरंगा. २७ × × × गौर कपोल शिविंब समान, पावइ नारिंग के उपमाना, उगटया मुकुर तणी परिं दीपहं, निरखति नयनां तरस न छीपह ३१

१ ला. द. हस्तप्रत ग्रंथभडार, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, हस्तप्रत क्रमांक ३३५८. २ स्थूलिभद्र चंद्रायणि पृ. १, १. उन्नत पीन पद्योधरा जारा, उन्नत श्याम सुचूचक गारा, त्रिण्य अंगुण थण अंतर सारा, करि कुंभ चलवा उपम बिच्चारा. १ ४०

पछी स्थ्लिभद्र सखीना संदेशा मळता, 'काशा'ना भवनमां जाय छे. केाशा क्षेत्रं स्वागत करे छे.

सुनड हो साहिब के घन गेहा, के भी तुम्हारा हइ मुझ देहा, भनकी मुरादि होवइ से। कीजड, केतना मांग्या मोहीकुं दीजड़. रे ६६ अने स्थूलिभद्र साथे के।शाना मिलनयागनुं किवके करेल शूंगारयुक्त वर्णन... (कडी ७१ —७९). भीडत च्याली कसण त्रदुकी, दुकुढे दुकुढे थणथी चूका, थणहर मदमत गजय कुंज सरिसा, अंकुश कर ज दीआ अति हरिसा. ७१ च्यारी च्यार करी कहां लीना, चिंत बिराणा हो छींनी लीना, इडं भूज-पासि बांधी कामराजइं, राख्या दे।इ थग डुगरमा जड़ उ

पण परंपरायुक्त होवा छतां मधुर उपमानथी रुचिर बन्युं छे. आम अनेक प्रकारे स्रीला करता स्थूलिभद्रे बार वर्ष पूर्ण कर्या.

अहीं प्रथम खंड पूरो थाय छे.

बीजा खंडना प्रारंभमां 'केाशा'नी विरहृब्यथानुं वर्णन करवामां आव्युं छे. शकटाल मंत्रीनुं मृत्यु पतां राजाओ मंत्रीपद लेवा स्थूलिभद्रने आमंत्रण आप्युं. आ प्रसंगने कवि लाघवथी आलेखे छे.

भारति भगती करुं भली, खउं मुझ वचन की सिद्धि, केशशा विरह वखाण स्यु, बीजइ खंडि विशुद्धि, १ बालिद भरण भए तार्थि राइं, थूलिभद्र केशशा धरथी बुला ए, एतना बोले सुणी केश जोई, ज्युं ज्यल विछ्युर्या माही परिहुद्द ४ २ उत्कट विरहृद्यथा अनुभवती केशशानुं वर्णन किव आ प्रमाणे करे छे. विरहानल ज्वरथी तनु ताती, सांइ प्रेमकथा हाडु नाहती, तार्थिइ विसम हुआ परिणाम, भींतिर तनकुं कतावइ काम. ५ २६ अने अंते केशशानी केवी करणाजनक स्थिति थाय छे.

केाशा विलपतिई यु मूरछाइ, सखी कहइ वृब दिखड सुतांइ, ए जायु भेज्या सयनडं हाथी, तनकी व्याधि समझगी उसघी. ^६ २८

वैशाग्य पामीने स्थूलिभद्र संभतिविजय गुरु पासे दीक्षा छे छे. पछी गुरुना आदेश थतां ते प्रथम 'चार्तुमास' गाळवा काशाना 'भवने' आवे छे. ए प्रसंगतुं किव स्वाभाविकताथी वर्णन करे छे.

गुरु फरमान लहीउ सवेळां, आओ यूलभंद्र मुनिवर लीलां, कोशि वधाइ करइ रे नेहाला, सांइ संदेसा जिउयो वाहाला. ६०

१ स्थूलिभद्र चंद्रायणि, पृ. १, २५, २६, २७, ३१, ४०. २ एजन, पृ. २, ६६.

३ क्षेजम, २, ७१, ७२.

४ क्षेजन, पृ. २.१,२

५ क्षेजम, पृ. २.२६

६ अजन, २.२८.

क्यां सांइ अंग मिन्हुइं अंग बाहु, कितनी विछर्या परिसिनाउ, तनकी खबरि सांइ देखी विसरी, तुरति च्याळी कसण सब बपरी. ६१

× >

थूलिभद्र मुनिवर रहे. च्यतु मासि, बूझवइ केाशा कुंरे उल्लासि, सुनि हो वचन रसाला, सब चचल हुइ दुनियां जंज्ला. ६३ केाशाने उपदेश आपतां स्थूलिभद्र कहे छे,

कोइ न किसका वहाला होवइ, सवास्थ साहमा सब कोइ योवइ, भमरा कुसुम परि सब देखड, जब बरस तब लगइं फिर ताप खड. र आ उपदेशथी प्रतिबोध पामी केश्शाए...

मुनि के वचन सुनी के।शियोइ, धरमह सेती राती हुइ, समिकत शील लीइ मुनि पासइ, मुनि भी च्याले पहुतइ चतुमासइ. ३ ६६ 'समिकत शील' अंगीकार कर्यु'.

गुरु श्री विनयमंडन उवज्झाय, जिनु के नरवर सेवइ पाय, लघु सीस जयवंतस्रि गुण गाइ, थूलमद्र तेवतई सुख सवि थाइ, ४ ६८

आम समग्र काव्य एना शब्दलालित्य, वर्णावेन्यास अने उचित अलंकार याजनाने लीघे नवी भात पाडे छे. राजस्थानी-हिन्दी भाषानी 'छांट ' घरावती आ कृति भाषाकीय दृष्टि पण उल्लेखनीय छे.

८. नेमिनाथ स्तवन

४० कडीनी आ संक्षिप्त छतां रसिक कृति जयवंतस्रिनी एक प्रकाशित थयेली कृति छे. प एना संगदक मुनिश्री धर्मविजयजी जणावे छे तेम "(आ) स्तवन एक खंडकाव्यनुं मान करावे तेवुं प्राचीन गुर्जर काव्य छे, साथे साथे कर्तानी गूर्जर भाषामां दरेक रसो पोषवानी कुश्चता देखाडी आपे छे."

किव काव्यना आरंभमां 'सरसित' देवीने नमस्कार करी काव्यनुं मंगलाचरण करे छे. पय प्रणमि सरसित तणी, नेमि गुण गाउं रसाल, संजोगी अनइ जोगिया, मन मेहिन सुविशाल. १

'सिव ऋतु भूप' क्षेवी वसंतऋतुना प्रारंभ थतां एनी मादक असर 'युवित जन' अने 'प्रकृति' पर पढे छे. एनुं वर्णन कवि उचित शब्द अने प्रासनी पसंदगी करी कुशळताथी आपे छे.

पसरिउ मलय महाबल, महाबिल करतु व्याप युवातेजन रत जलहर, लहुरि हरइ जन ताप. ४

१ स्थूलिभद्र चंद्रायणि, पृ. ३.६०, ६१, ६३. २ क्षेजन, पृ ३, ६५.

३ क्षेजन, पृ. ३, ६६. ४ क्षेजन, पृ. ३, ६८.

५ शमामृतम्--नेमिनाथ स्तवन, संशोधक, मुनि धर्मविजय, भावनगर, १९२३ पृ. ११-१४.

६ क्षेजन, पृ, ११ ७ क्षेजन, पृ. ११, १. ८ क्षेजन, पृ. ११, ४

वसंतऋतुने। श्रादुर्भाव विरही जनने माटे ता.. विरहि—जन—मन-दारण, दारूण करवत घार. १ बनी रहे छे.

आम सर्वत्र व्यापी गयेल वसंतनी मादक असरथी 'नेमिनाथ' पण अलिप्त रहेता नथी. ते पण वन मध्ये विविध प्रकारना खेल खेले छे. एनुं मने।हर वर्णनचित्र कवि कलमे योग्य लाघवथी सर्ज्युं छे.

वृंदावनमां वन वन तरू तरुइ, सरे।वर जरु सुविचार रे, राधा रुकमिणि भामा भामिनी, कीडई नेमिकुमार रे.^२ १९ शब्दानुप्रास अने आन्तर्थमकथी आ चित्र सुंदर बन्युं छे.

वसैंत विहारनुं कविनुं आछेखन संस्कृत ऋतुकाव्यनी याद आपे क्षेत्रुं छे.

केकर कमिं छांटि जल भरी, केवर केसर राल रे, के नेमि छेहडइ वलगइ आवती, केती करइ टकाल रे. १३ नयन मींचांवइ के। अक प्रिथी, केाइ छुपावइ बाल रे, केाइ करी माला नव नव कुसुमनी, कंठि ठवइ सुविमाल रे. 3 १४

नेमिनाथना राजीमती साथे विवाह थया. परणवा माटे नेमिनाथ ससरा उपसेनना द्वारे जाय छे त्यारे ते त्यां राजमतीने जुझे छे. झेनी देहचच्टिनुं सुंदर अलंकार वडे मने।हारी चित्र कवि कलमे सर्ज्युं छे, जेथी राजमतीनी मधुर—मृदल मृर्ति प्रत्यक्ष थाय छे.

वेणी काजल भूअंयम काली, आंखडली अतिहिं अणीयाली, झाली झबकइ झबकाली, ससिहर वयणी वर मटकाली. अधर जस्या रातडी रे प्रवाली, कुंद-कली दंताली. 1७ कंठि के।यण महेली टाली, उरि साहइ मातीसरि जाली, करि चूडी खलकि रणकाली, बाहडली अवली लटकाली. ४... १८

पशुना आर्तनाद सांभळी नेमिनाथ दु:खी थह पाताना घेर पाछा फरे छे अने चरित्र प्रहण करता, चापन दिवस बाद केवलज्ञान प्राप्त करे छे. आ बाजु नेमिनाथ वगर अेकली पहेली राजमती विलाप करे छे. प्रीत कर्या पछी छेह देनार प्रत्येनी अेनी उक्तिओ अेनी चाटने लीघे नेंधपात्र छे.

सज्जननीया तई ते करिडं, जे वयरि न करंति, प्रीति ढंढेरा जिंग दिआ, भीतिर जीव बलंति नेहा कीजइ तेतलें।, जेत्ता निरवहवाइ, ना ऊंपर संतापिइ मेहली आदरियाइ ४ २५

१ शमामृतम् — नेमिनाथ स्तवन, संशोधक, मुनि धर्मविजयजी, भावनगर, १९२३, पृ. ११, ७.

[🤏] अंजन, पृ. ११,११.

३ नेमिजन स्तवन पृ. १, १३, १४

४ एजन पृ. १७, १८

५ एजन पु. १३, २५

विलाप करती राजमतीनी हृदयोमिने किव ने वेधकताथी निरूपी छे. आंखरे राजमती भिरतास् पर नेमिनाथ पासे जाय छे. त्यां नेमनाथना उपदेशथी प्रतिबोध पामी राजमती पण संसारनो त्याग करी 'च।रित्र' प्रहण करी, अंते मुगति पामी. ने प्रसंगने अल्प शब्द द्वारा संक्षिप्तताथी कित आलेखे छे. जे किवनुं रचनाकौशल दाखवे छे.

बेह नथी संसारमां, नेह न सही रे विश्वाह,
छेह देइ जोड़ नेह करी, ते साथि सुं मोहो रे. ३५

× × ×

राग वइरागी वयणलां, राजलि सुणिय रसाल
चारित्र छेद जिन कहुइ पाणी पामी मुगति विशाला रे. १ ३९
काव्यना अंतमां नेमिनाथ पण 'बुझवी भवियण छाय' 'शिवपुरी: जाय छे,

९. प्रकीर्ण रचनाओ

भा उपरांत जयवंतस्रि से केटलांक गीतानी रचना करी छे. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिरना अंथभंडारमांथी सेक 'गीत संग्रह' मळी आब्या छे. जे 'नेमिनाथ आदि गीतसंग्रह'रे'से नामे नेांधायेल छे सेमां अन्य गीत साथे जयवंतस्रि कृत त्रण गीत संग्रायेला मळी आब्या छे.

- (१) करणेंद्रिय परवशे हरिणगीत
- (२) नेत्र परवशे पतंग गीत
- (३) स्थूलिभद्र गीत.

प्रथम गीतमां कविशे विरहनुं वर्णन 'हरिण'ना इष्टांत द्वारा निरूष्युं छे. विरहना स्वरूपने वर्णवता कवि कहे छे--

> दे। हिलुं रे विरद्द वाहाला तणड, वरि मरण दहुइ अेकवार, नितु बलण नीसासे करी, कुण जाणेइ रे विरहीयां सार. 3

कवि हरणने। साचा स्नेह आ प्रमाणे वर्णवे छे.

नेहि रे बाधां हरिणलां, अवगणी जीवित देहि, दे प्राण आवी दूरिथी, साचड साचड रे हरिण स्नेह. ४ ३

अने गीतना उपशममां कवि कहे छे-

मोकछं इंद्रिय काननूं, मृग लहइ दुख अपार, जइवंत पंडित बुझवइ, टालु टालु रे विषयं विकार. ७

१ नेमिजिन स्तवन, ष्ट. १४, ३९

२ नेमिनाथ आदि गीत संग्रह, पुण्यविजयजी हस्तप्रत ग्रंथभंडार, ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद, हस्तप्रत कमांक ३५५८.

३ नेमिनाथ आदि गीत संग्रह, पृ. २. २

४ एजन पृ. २, ३

५ एजन, ग्र. २, ७

न्य बीजा गीतमां 'दीप-पतंग'ना हब्टांत द्वारा क्षेत्रपक्षी प्रेम-विरहचुं वर्णन कर्युं छे. गीतना उपाड सचाट छे

> धिग् पड़ पापी नयणनइ, जस वेधि झूरि मरंति, जे सुपन मांहि निव मिलइ, ते देखी रे नेहडड धरंति. १

अने किन अकपक्षी नेह-निरहनुं नर्णन करता कहे छे.

झ्रि मरइ अंक अंक विना, मिन अवर न घरइ नेह, कां देव ति इम सरजीउ, दोहिल्जं दोहिल्जं रे अंक-पक्ष सनेह. २ ४ अने काव्यान्ते किह कहे हे.

> मोक्छ त्यन विकार जु, तु दीपि पडइ पतंग, जयबंत पंडित ब्झवड, मम करया विषयनुं संग. ३ ७

छेल्छा गीतमां स्थूलिमद्र के।शाना नेह-विरहृनुं वर्णन कर्युं छे. मुनि बनेला स्थुलिमद्र के।शाने कहें छे.

> थुलिभद्र कहि सुणि गोरडी, मनि ओक् आणइं कांइ रे, जेह सिउ बेालया बेालडा, वाहला ते किम किम वीसरियां जाइ कि.४ ६

जबबंतस्रिक्तं—'गीतसंग्रह'^भनी प्रारंभनी रचना 'पद्मावती गीत' माधुर्येयुक्त हेावाने लीधे उल्लेखनीय छे.

सक्छ सुखकारिणी, शुभ छता सारिणी, जन मनाहारिणी, विश्व महिता, अंकुश धारिणी विह्नविहारिणी, विप्रविज्ञारिणी महिम सहिता. श आइ जागि पद्मावती पास गुणगावती, कविजन भावती विश्वजननी, भक्तजन थापती विभ्वजन व्यापती, पूरि आशा सदा सुजझ मननी. \$

आ संसार भवनां उद्धिमां तरी जवा माटे घरमरुती प्रवहणनी अगत्यता निरूपतुं 'प्रवहण गीत' पण जोवा जेवुं छे.

> प्रवहण अभिनव धरमनुं, भवोदधि मांहि तरंति रे, अन्या प्रवहणि प्रिजी, अन्या प्रवहणिइं पुरीड. पुण्य-क्रियाण घरंतिजी⁹..द्भुपद.

ते। स्थूलिभद्रना विरहर्था व्याकुल बनेली काशा एमनी वाट जुवे छे. आबता जता जे पथिकाने स्थूलिभद्र विशे पुच्छ। करे छे. आबी विरह अवस्थामां वर्षेया विष्ठं फिरं करे छे. ए

१ नेमिनाथ आदि गीतसंग्रह, १ २, १

२ एजन पृ. २, ४

३ एजन पृ. ३, ७

४ एजन पृ. ३, ६

५ पुण्यविजयजो हस्तानत प्रथमेडार, ला. द. विद्यामंदिर, हस्तप्रप्रत क्रमांक ३०६७

६ गीतसंगृह, पृ. १, १

७ एजन पृ. ४ ५.

विरहानलथी दग्ध एवी एन। पर 'नमक' लगाडवानुं काम करे छे आ भाव कविए लाघवताथी निरूप्या छे. ते 'स्थुलिगीत' जोवा जेवुं छे.

टोडे रही जोई बाटडी, वाल्हा नयने तृपति न होई रे, धुलिमद्र तणउ रे संदेसडु रे, पंथीडा कहु मुझ के।ईके, धुलिमद्र कहु कुणि दीठडा रे, महारा बाधव बाधव चुनइ वधाइ के, के।श वेशा इम वीनवइ रे दु० विरहानिल दाधी देहडी, घडीयन बीसरइ गुण रे, बापीयडड पीड पीड करइ, दाघइ दाघइ लगाविइ ल्ंण के रे... २ थु.

आदि जिनेश्वर ऋषभदेव'तुं नानकडुं गीत पण एवा काव्यगुणे उल्लेखनीय छे.

तेरु मुख दिखत छिछिउं आनंद, ऋषभदेव विमलाचल—मंडन, नाभि कुला दिघ चंद दु० ते० सार सुधा मधुरि छुनि पीबत मोहइ सुर नर वृंद कहो बखान करु तन छिब की, मोहन वेलि सुकंद २ ते०२

भा प्रतमा बीजा अनेक नानकडां गीता छे. भावनी उत्कटता अने शब्दमां लालित्य तथा माधुर्यने लीधे ते आस्वादय बन्या छे;

आ उपरांत जयवंतसूरि कृत 'लोचन काजल संवाद' नामना अठार कडीना गीतने। उल्लेख 'जन गूर्जर कविओ '³मां छे तेमां कविओ 'लोचन ' अने 'काजल 'वच्चेना रसिक संवाद आप्यो छे.

काव्यने। आरंभ चाटदार छे.

ा नयणां रे गुण रयणां नयणां, ए अणघटती जोडि, काला कज्जल केरइ कारणि, तुझनइ मोटी खेाडि रे, असरिस सरसी संगति करतां, आवइ चतुरह लाज, जेहथी सुरजन मांहि हुइ हासुं, तस मि भणइ स्युं काज रे.४ दू० कान्यने अंते कवि प्रशस्तिमां जणावे छे.

मन मान्या स्युं सहो ए मिलतां, मनि जन बोल न धरह, जयवंत पंडित एणी परि बोलहं, मिलता साथइं मिलह रे, जो. भ

१ गीतसंग्रह, पृ. ९-१०, २

२ एजन पृ. १४, २

३ जैन गूर्जर किवओ, संपा. मीहनलाल द. देसाई, मुंबई, १ ४४, भाग ३, खंड १, g. ६७१.

४ अजन पृ. ६७१.

५ क्षेजन पृ ६७१,

१०. संस्कृत रचना : काव्य प्रकाश टीका

श्री मोहनलाल देसाईए 'जैन गुर्जर कविओ'मां आपेल उल्लेख उपरथी आ कविए साहित्य चक्रवित लोहित्य भट्ट गोपाल विरचित 'काव्यप्रकाश' पर संस्कृतमां टीका रची द्देशय क्षेम लागे छे. एनी प्रशस्ति आ प्रमाणे मळे छे.

टीका जयंतमुख्या विलोक्य तत संग्रहं च सासद्य ?
सह्दय मुदे प्रयत्नाच्छी गुणसौभाग्यस्रिवर:
—इति साहित्य चक्रवित्त लौहित्य भट्ट गोपाल विरचितयां
साहित्य चूडामणौ काव्यप्रकाश विमर्शिन्यां दशस् उल्लास: १

आ सर्व कृतिओ एक साथे अवलोकतां ए वस्तु सहुज रीते प्रतीत थाय छे के जबांतसूरि मात्र कश्वनकार के जोडकणां करनार नथी. क्षेमनी पासे किव उचित कला छे, कसब छे.
एमना समग्र सर्जनमांथी, तेओ जैन मुनि होवाने लीधे जैन धर्म अने संस्कारने अनुरूप शुचितानी सौरम फारे छे. सादी अने सरल रीते तेगे आ सर्व कृतिनुं सर्जन कर्युं छे. पण एमनी
आ सरळता मात्र भभक्षना अभावनी नथी, पण स्वमावसिद्ध छे सरळ शब्दो पासे धार्युं काम
लेनार ते कसबी कलाकार छे एमनी भाषामां गौरव, कर्मिलता, मार्मिकता, प्रसाद अने माध्र्यं
छे. एमनी वाणीना प्रवाह अनायस सरळताथी वह्या करे छे. अनुप्रासयुक्त एमनी पंक्तिओ राग
के देशीना योग्य मापमां सहज्ञत्या क्षेक पछी क्षेक आव्या करे छे. उपमा, रूपक, दृष्टान्त
इत्यादि अलकारोना उचित प्रयोग द्वारा तेओ सामान्य उक्तिने पण दीन्तिवंत बनावी मूके छे.
केमनी पासे क्षेक विशिष्ट प्रकारनी वर्णन शैलो छे. ते शक्ति वडे ते कोई गण पात्र, प्रसंग के
भावने—स्वमाविकत्यथी वाचकना चित्त समक्ष प्रत्यक्ष करी शके छे. आ सर्वंने कारणे एमनी
कृतिओ रुचिर अने आस्वाद्यय बनी छे.

जयवंतस्रि पासे प्रेरणानी जे कांई निर्सगदत्त मूडी छे. अमां अभ्यास अने नियुणता वहे वृद्धि करी एमणे गुजराती साहित्यने 'शुंगारमजरी' अने 'ऋषिदत्ता' जेवी उत्तम अने आकर्षक कृतिओ भेट धरी छे. ए भल्ले प्रतिभाशाळी कवि नथी पण एक सारा 'रासकवि' तो छे ज.

^{ी.} जैन गुर्जर कविओ, संपाट मोहनलाल द. देसाई, मुंबई, १९४४ भाग ३, खंड १, पृ. ६७२ परना उल्लेख.

३. ''शृंगारमंजरी'' कथानी रुपरेखा

खंड १ : मुख्य कथा

अजितसेन अने शीलवतीना विवाहनो प्रसंग तथा शीलवतीना शील पर आरोप-तेनुं निवारण—अजितसेन मुख्य प्रधानपरे—

शीलवतो अने अजितसेनना विवाह

नंदनगर नामना नगरमां अरिमर्दन नामे राजा छे, रत्नाकर नामे श्रेष्ठी छे अने तेनी 'श्री' नामे भार्या छे. सर्व वाते सुखी अंवां आ दंपती अपुत्रक छे. रत्नाकर निज भार्याना आग्रहने वत्त यई पुत्रमण्ति अर्थे 'अजीतबला देवी'नी आराधना करे छे. देवीनी कृपा रुपे 'श्री'ने एक पुत्र थया. जन्मना बारमा दिवसे महोत्सव करी तेनुं "अजीतसेन" नाम पाउथुं. अजितसेम युवान थतां, सर्व कलामां निपुण थया. हवे रत्नाकार एने अनुरुप कन्या खोळी काढवा अंगे संचित बन्या. आ समय दरम्यान रत्नाकरना देशाटन अगे 'संयगला नगरी' गयेला मित्र पाछो फर्या. तेणे त्यांना जिनदत्त श्रेष्ठीनी पुत्री—"शीलवती''ना रुप—गुणनी प्रशंसा करी, ते सर्वथा अजितसेन माटे येग्य छे अम जणाव्युं वळी अजितसेननी साथे शीलवतीना विवाह करवा माटे जिनदत्ते पाताना पुत्र जिनशेखरने पातानी साथे मोकल्या छे एम पण जणाव्युं. रत्नाकरे आ विवाह माटे पातानी संमति दर्शावी अने जिनशेखरना योग्य सत्कार कर्या. जिनशेखरे पातानी बहेन शीलवतीना विवाह अजितसेन साथे कर्या रत्नाकरे जिनशेखर साथे अजितसेनने लग्न अर्थे—'संयगला नगरी' मोकल्या. महोतसवपूर्वक शीलवतीने परणी अजितसेन नंदननगर पाछो फर्या. अने तेनो साथे आनंदपूर्वक पाछे। फर्या अने तेनो साथे आनंदपूर्वक पाछे। फर्या अने तेनो साथे आनंदपूर्वक पाछे। फर्या अने तेनी साथे आनंदपूर्वक रहेवा लाग्ये।

मध्यरात्रिओ शियाळ्नी लाळी अने रत्नप्राप्ति

एक वखत वे प्रहर राति वीत्या पछी शय्यामां स्तेली शीलवतीओ के ई 'प्शु'ना अवाज सांमळ्या के 'नदीना जठमां तणाइने जता एक 'शव' साथे पांच रत्ना बांधेलां छे. ते छोडी लहने 'शव' मने आपा." पशुनी भाषा समजनारी शीलवतीए ते रत्ना प्राप्त करवाना विचार कर्या. हाथमां जल भरवा मिषे घडे। धारण करी ते नदी किनारे आवी. जल मध्ये जई शीलवतीओ 'शव' परश्री पांच रत्नो प्रहण करी, ते 'शव' शियाळने भक्षण अर्थे आपी दीधु. पांच रत्नो लई शीलवतीओ पेशव' परश्री पांच रतनो प्रहण करी, ते 'शव' शियाळने भक्षण अर्थे आपी दीधु. पांच रत्नो लई शीलवती घेर आवी. तेने शय्या पर मूकी, "सर्व वृत्तान्त प्रभातमां पतिने जणावीश " एम विचारीने फरी स्ई गई, शीलवतीना आववा-जवाना अवाजश्री जागृत थयेला एना पति अजितसेनने आ सर्व व्यवहार जोइ, तेना शील अंगे शंका थई. प्रभातमां अजितसेने सर्व बीना पिताने जणावी शीलवतीने एना पियर मेाकली देवानो पाताना निर्णय जाहेर कर्या. त्यार बाद पिता अने पुत्रे ''तारा पिताए तने सत्वरे बोलावी छे' एवा कृत्रिम ' लेख ' बतावी एने पियर मेाकलवानी तजवीज करी. शीलवती पण ''आ मारा मध्यरात्रिना व्यवहारनु फळ छे पण मारु शील निर्मल

के ते। ते। वांधा के.'' एम विचारी पियर जवा तैयार थई. रत्नाकर रथमां शीलवतीने लई तेने वियर मूकी आववा नीकळये।.

रत्नाकर-शीलवतीना प्रवास-प्रसंग-विसंवाद अने निवारण

हुवे मार्गमां आगळ जतां क्षेत्र नदी आवी. स्ताकरे शीलवतीने कहुयुं ''तमे उपान उतासीने नदी पार करजो." छतां शीलवती उपान पहेरीने नदी उतरी. मार्गमां वळी आगळ जतां "जेना अंग पर इंढ प्रहार छे" एवा अंक सुभट देखाया. रत्नाकरे अने 'शूरवीर' कही बिरदाव्या. पण शीलबतीए एने 'कायर' तरीके ओळखाव्या. रत्नाकरने शीलवती अवछुं बेालनारी लागी. आगळ चालतां अक 'देवळ' आव्युं. रत्नाकरे क्षेना अनुपम सौन्दर्यनी प्रशंसा करी. ज्यारे शीस्त्रवतीए एने 'कंदर' सम गणाव्यु, बादमां मार्थमां क्षेक ''नगर' आव्युं. रतनाकरे क्षेने 'इन्द्रभवन' सम गणाव्युं. ज्यारे शीलवतीए एने 'कांनन' जेबुं गणाव्युः नगर छोडी जतां एक 'नेसडुं' आव्युः. एने रत्नाकरे ''गहनवन'' जेवुं गणाव्युं, त्यारे शीलवतीए एने 'उत्तम' गणाव्युं. नेसमांथी एटलामां त्यां शीलवतीमा मामा आवे हे. ते बन्नेने भाजनार्थे निज गृहे अ.मंत्री जाय हे. तेओने ते आदरपूर्वक भाजन करावी 'चादर' भेट आपी विदाय करे छे. हवे मार्गमां आगळ जुजां एक 'बटबृक्ष' आवे छे. रत्नाकर विश्राम माटे तेनी छायायां बेसे छे, ज्यारे शीलवती वटबृक्षनी छाया छोडी, रथनी छायामां बसे छे. वटबृक्ष पर बेठेला वायस अवाज करे छे. वारंवार अवाज करता बायसने सांमळीं—एनी भाषा समजी, शीलवती तेने प्रत्युत्तर आपतां जणावे छे— 'पूर्वनी अक भूलने परिणामे हुं मारा 'कंत'ने चूकी गई, हवे जी तारु मानु ती बळी सहान दु:ख पामु...'' आवा संवाद सांभळी जिज्ञासा वृत्तिथी प्रेरायेल रत्नाकरे पृच्छा करता प्रत्युत्तरमां शीलवतीए जणाव्युं, ''शियाळने। शब्द पारखीने रात्रे हुं पांच रत्ने। नदीमां तणाता 'शव' पासेथी छेवा गई हती, जेंक हुजी पण मनेरी सम्बामां दावेलां पड्यां छेः आ कारणे शीलना अपवाद पामी, आ दशा पामी. हुने आ कामके कहें छे-''आ वड़ानीचे 'दसकाडी' धन दाटेलुं छे. ते लई मने आहार आपे।' वर्छी आर्नी स्वना प्रसाणे करवा जाउं ता कदाच हुं पियर भेगी पण नहि थाउं एम विचार कुं.' शीरू बसीना क्वनमी सत्यासत्यनी परीक्षा करवा गाममां जई 'आयुध' लई आवी रत्नाकरे क्फ नीचे संबं**ण्युं. स्नोदतां 'दस**के।डी'ना धनमंडार तेने हाथ लाग्यो. धन प्राप्ति थतां हर्षित क्केंछः स्स्ताक्रः शींत्मक्तीमे शीलयुक्त' जाणी तेने घेर पाछा फरवानी विनंती करी. प्रथम थोडी आनाकानी पड़ी शीखनती रहनाकर साथे पाछी फरी.

मार्गमां रत्नाकरे शीलवतीने क्षेना सर्व पूर्व-कथन अंगे पृच्छ। करतां तेणे प्रत्युतरमां जनाम्युं के 'पूर्व में कहेला सर्व कथनो यथार्थ छे. चरणना रक्षण अर्थ उपान छे. नदीना तिक्रियम्मी भूमि कांटा-कांकरावाछी होय छे. ते प्रगट देखाती नथी तो क्षेवा स्थळमां उपान न पहेरीके तो पगके हानि थाय. उपान भींजाय ते। सुकाई जाय. माटे में उपान न उतार्या. वधि जे सुमेटने तमे 'सुरविर' तरीके बीरदाव्यो, तेने जे घा देखाता हता ते पीठे हता, खालीके न हता. माटे में तेने "कायर" कह्यो हतो. दहेराने "जंगलजाल" तरीके ओळखाव्युं, केमके त्यां नट, विट, जड अने जुगारीनो वास हता. 'नगर' ने में 'रान' जेवुं कह्युं केमके जे नगरमां आपणुं केाई सगुं-वहाछं के मित्र न होय ते वस्तीवाछं होवा छतां आपणा माटे 'रान' समान छे. वळी 'नेसडा'मां मारा मामाओ आपणने आदरपूर्वक जमाड्या ओटले ते

उत्तम आवासवाणुं बनी गयुं. वळी वडनी छाया छोडी हुं रथनी छायामां बेठी केमके जे स्त्रीना माथा पर वृक्ष परथी पक्षीनो विष्या पडे ते स्त्री '' छ मास ''मां विधवा थाय क्षेत्रुं ज ' ग्रुकन ' छे.

आ सर्व सांमळी रत्नाकरे विचार्युं "आ स्त्री शीलवती अने गुणवती छे." त्यारबाद तें शीलवतीने लई पोताना घेर पाछो फर्या. रत्नाकरे अजितसेनने सर्व वृत्तांत जणावतां तेने पण शीलवतीना शील अंगे खातरो थई, अने ते पूर्ववत अनी साथे आनंदपूर्वक रहेवा लाग्या.

अजितसेन मुख्य प्रधानपदे

शीलवितीनी सलाहशी अज्ञितसेन नित्य राजदरबारमां जाय छे. राजाना ते खूब आदर मेळवे छे. अरिमर्दन राजाने ४९९ प्रधान छे. ५०० मो मुख्य प्रधान पसंद करो तेने सगळो राजमार सेंापी निवृत्त थवाना राजा अरिमर्दन मनसुबो कर्या. आवा प्रधाननी पसंदगी माटे तेमणे जुदा जुदा 'कोयडा 'शोधी काड्या अने ते द्वारा अनी बुद्धिवातुर्यनी परीक्षा करवा विवायुं. तेना अनुसवानमां तेनणे सर्व समझ अक कोयडो रजू कर्या. "हाथीना तोल केवी रीते करशो ''? आ बाबत सर्व प्रधाना मुंझाया कोई आना उकेल आपी शक्यो नहीं. राजाओ आखरे अजि. सेनने अना उकेल पूज्यो. अजि. सेने शिलविती पासेथी आनो साचो उकेल जाणी राजा समझ रजू कर्यो. ''हाथीने प्रथम नावमां बेसाडो ते नाव जलमां मूक्यी. नाव जलमां केटली डुबे छे त्यां आप के निज्ञानीनी रेखा करवी. पछी हाथीने उतारी आ रेखा सुधी नाव इबे अटला पाषाण मरवा. त्यारबाद आ पाषाणमो तोल करवा. जेटलो तेलल थाय तेटलं हाथीनं बजन जाणतुं." उकेल जाणी राजा आनंद पाम्यो अने अजितसेनने 'देशपसाय' आण्या.

वली क्षेक वार राजाओ राजदरबारमां क्षेक प्रश्न मूक्यों के "मने काई चरणप्रहार करें तेने शो दंड करवो ?" सर्व प्रशानादिक्षे जणाव्युं के तेने सबळ दंड करवो जोईए. आखरे राजाओ अजितसेनने आ प्रश्न प्रक्ष्यो. अजितसेने शीलत्रतीनो सलाह—सूचना प्रमाणे राजाने आनो उत्तर आपतां कह्युं "आप राजाने जे चरणप्रहार करे तेनो सत्कार करवो जोईओ." आ उत्तरथी आश्चर्य पामेला राजाए एनो खुलासो मांगतां अजितसेने प्रत्युत्तर आपतां कह्युं, "आप राजाने आपनी राणी के पुत्र सिवाय अन्य काण चरणप्रहार करवाने शिकामान थई शके ? तो वन्ना सत्कार करवो जोईए.' योग्य उत्तरथो प्रभावित थयेला राजाए अजितसेनने मानपान आपो-पांचसोमो मुख्य प्रधान निम्यो.

एक समये राजसभामां राजा अने अजितसेन बेठा हता त्यारे एक—''दीन विणिक'' आवी आंसु सारतां फरियाद करी के—''में एक धूर्तने गुणवान जाणी तेनी साथे मैत्री करी. हवे एक वखते तेना विश्वासे मारुं धन अने स्त्री मळावी हुं परदेश गयो, परदेशयी पाछा फरीने में धन अने स्त्रीनी मागणी करी त्यारे मारी खबर—अंतर पूछ्या बाद ते धूर्ते कह्युं "देश-परदेश भमतां ते कोई आश्चर्य जोयु होय तो मने कहे.'' एटले में कह्युं "अकाळे फळेलुं एक मोटुं आश्चरफळ नजीकना वनना कृत्रामां तरतुं मे जोयुं छे. आश्चर्य छे के आ वखते आग्नफळ क्यांथी?'' ते धूर्ते आ अंगे शंका दर्शावतां जणाव्युं—"जो तारुं कथन सत्य होय तो मारा घरमांथी बे हाथे जे लेवाय ते लई जयुं अने जो तारुं कथन असत्य टरे तो हुं तारा घरमांथी बे हाथे

जे हेवाय तेटल रुई रुईश, एवी शरत करीए." में ते शरत मंजूर राखी अने बीजे दिवसे प्रभातमां आ अंगेनी खातरी करवा जवानुं नकी करी अमे छूटा पड़्या. पण रात्रे छाना वनमां जह पेळा धूर्ते कूबामांथी आप्रफळ दूर कर्यु. सवारे अमो बन्नेए वनमां जहने कूबामां मियुं तो फळ न मळयुं. हुं खोटो टर्या, निराश थयेलो हुं घेर आव्यो, तेटलामां मारा अक मित्रे मने चेतवणी आपी के "आ तो धूर्त छे. अंनी साथे शरत करवाथी हवे ते तारुं धन अने स्त्री बन्ने लई जशे" "मने पण हवे अंनी धूर्ततानी खातरी थई छे. तो हवे आ संकटमांथी आप मने छोडावो अंवी विनती छे" राजाओ आने। निकाल लाववानुं अजितसेनने सेांप्युं.

अजितसेने शीलवती पासेथी आ अंगे सलाह—सूचना लई उकेल सूचव्या के—''धन अने स्त्री माळ पर चडावो त्यां राखो नीचे निसरणी मूका. धूर्त धन अने स्त्रीने लेवाने माळ पर चडवा जतां जेवा बे हाथे निसरणी पकडे, ते ज वखते बे हाथे लेवायेली आ निसरणी लई जा अम कहें हुं. जेथी शरत पूरी थशे अने धन तथा स्त्री बची जशे.'' अजितसेने विणकने कहेली युक्ति करवाथी विणकनां धन अने स्त्री बन्ने उगर्या. राजाओ पण अजितसेननी बुद्धिनी प्रशंसा करी.

खंड २ : मुख्य कथा

शीलवतीए निज शीलनी खातरी अंगे आपेल कमल — कमलना दर्शनथी एना शीलनी खातरी अंगे राजाना चार प्रधानोए उपस्थित करेली शंका

शीलना प्रतीकरूपे "कमल" आपवुः

हवे अक बार शीलवतीओ अजितसेनने कह्युं, "मारुं शील खंडन करवा देव पण समर्थं नथी. तो अन्यनी शी बात करवी ? मारा मनमां तमारा सिवाय अन्य कोई नथी. पण दैववशात कदाच तमारा मनमां शंका थाय तो ? ' अम कही तेणे अक कमल हाथमां ग्रही अजितसेनने आगतां कह्युं, "मन, वचन अने कायाओ करीने जा में अन्य पुरुषने वांछ्यो होय तो आ काल करमाई जाव. जो हुं शीलवती होउं तो आ कमल सदा विकसित रहेजो " अजितसेने पण आनंदपूर्वक कमलना स्वोकार कर्यो अने सहा एने धारण करता आनंदथी रहेवा लाग्या.

शील अंगे चार प्रधानीए उपस्थित करेली शंका

हवे एक समये शत्रुराज्यनी सामे युद्ध करवा राजा साथे अजितसेनने पण जवानुं थयुं. शीलवतीथी विख्टा पडवाना विरहथी व्याकुल बनेल अजितसेन न क्टूटके राजा साथे प्रयाण करे छे. मार्गमां सैन्य एक महमूमिमां विश्राम करे छे. अहीं सर्वत्र बनस्पतिना अभाव होय छे, एवा संजोगोमां अजितसेन पासे स्वासित कमल जे।इ राजाए ते संगे तेने प्रच्छा करी. अजितसेने तेने पोतानी पत्नीना "शिलना प्रतीक" रूप गणावी सर्व वृत्तांत राजाने कह्यो. पण राजाने आ वातमां श्रद्धा न उपजी. तेणे पोताना चार प्रधानाने अकान्तमां बोलावी आ बाबतनी चर्चा करी. प्रधानाए कह्यु "स्त्रीओ मायावी होय छे. ते बहारथी माया-नेह देखाडे छे. पण ओना अंतरमां बोज ज कंइक होय छे. आ कल्युगंमां कोई स्त्री सती होती नथी. ओ सर्वे धूतारी होय छे." आ पछी तेओओ नारीना "धूर्तपणा" पर—"स्त्री चरित्र" पर पातालसुंदरीनी कथा कही.

खंड ३ : अवांतर कथा

''स्त्रीचरित्र पर पातालसुंदरी कथा''

राजा जयंतसेनना बाळकन्या साथे लग्न अने तेने पुरुष-परिचयथी वि**ग्रुख शास्त्रश** भेायरामां राखवी.

विशालनगरीना राजा जयंतसेन युवान खीना 'चरिश्न' अंगेनी अमेक वाताणी प्रेराईने निर्माल शीलवारी एक बालकन्याने परणवाना निर्णय करे छे. आ प्रमाणे ते अक तरतनी जनमेली स्वरुपंत कन्याने परण्या. पोताना महेलमां ज भेायक बनावी तेमां ते परणेली साव-कन्याने राखी, उछेरवा मांडी. मात्र "स्त्री''नी देखमाळ नीचे ते कन्या बखत जतां वौकनदक्षाणे पामी. पातालमां राखवाथी राजाओ एनं "भातालसुंदरी" एवं नाम राख्युं. राजा तेने इस शीलवती जाणीने तेना पर अपूर्व स्नेह राखतो. तेनी साथे आनंदपूर्वक विश्वयस्य मीन्यवा लाग्यो. एन। आकर्षणमां ते राजकाजना कार्यमां पण बेदरकार बनवा लाग्यो.

अनंगदेवनुं पातालसुंद्री साथे प्रेममां पडवुं तथा एना मिलन मांटे सुरंग खाद्वी

हवे कोई एकवार मणीद्वोपनो व्यापारी अनंगदेव अनेक जातनां रत्ना लई विशालपुर नगरीए आव्यो. तेणे आमळां जेवडां मोतीना एक महाकीमती हार राजने मेट आप्यो. प्रसाम थयेल राजाए तेनुं दाण माफ कर्युं. घणुं धन कमायेला अनंगदेवे पुष्कळ द्रव्य आणी राजानी 'कामपताका' नामनी गणिकाने वश करी, अने ते तेनी साथे रंगराग खेलवा लाग्यो. एक वार सार्थबाहे कामपताकाने पूछयुं "राजा राजकाजमां केन शिथिल देखाय छे ? राजसभामां पण मोडा आवी वहेलो चाल्यो जाय छे ?'' कामपताकाए जणाव्युं के ''अंत:पुरमां एवी वात प्रसिद्ध **छे के** राजः। जन्मश्री मेायरामां राखेली एक स्वरूपवंत कन्याना मो**हमां** पडयो **छे. तेथी राज**-काजमां शिथिलता दाखवे छे.'' आ वृत्तांत सांभळी अनगदेव ते सुंदरी तरफ असुगगी बमी गमो. अने तेने प्रत्यक्ष जोवा अंतुं हृदय अधीर बनी गयुं. तेना प्रत्यक्ष दर्शन माटे तेणे राजा साथे वधु प्रेम केळववा मांडवा. वखत जतां तेणे राजाना पूण विश्वास संगदन कवी. अन्तः धुरमां पण ते बिना संकेाचे आवजा करवा लाग्यो धीरे धीरे तेणे भेांयरानुं स्थान वगेरे **सर्व बराबर** जाणी लीखं. घेर जई तेणे छुनी रीते पोताना घरथी भाषारा सुधी सुरंग स्तादावी. त्यार बाद अवसर जाणीने राजा पातालमुंदरी पासेथी गया बाद मुरंगमां थईने अनंगदेव भेांयरामां आब्यो. निद्राधीन थयेली पातालसुंदरीनु अपूर्व सौन्दर्य जोई ते मुग्ध थयो. पछी तेणे अने प्रेमवक्तार्यी जागृत करी. पाताल मुंदरी पण प्रथम परिचयमां ज तेना प्रेममां पडी गई. स्वार बाद ता बिना संकाचे बुरंग बाटे आवीने अनंगदेव पातालसंदरी साथे भाग भागववा लाग्यो.

पातालसुंदरीनी नगरचर्चाना दर्शननी मागणी—राजने भोजन अर्थे निमंत्रण

संकेत अनुसार नि:शंकपणे दररोज छुरंग वाटे आव—जा करता अनंगदेवने अक बार पातालसुंदरीओ कह्युं के—''तुं मने तारे घेर लई जई नगरचर्चा देखाड़" थोडी आनाकानी पछी अनंगदेव ओने पोताना घेर लावे छे. त्यां गबाक्षमां बेसी ते नगरचर्चा जुए छे. ते वसते ते राजाने क्रीडा अर्थे उपवन तरफ जतो जुए छे तेने जोई पातालमुंदरी विचार करे छे के—"मने केदीनी माफक पूरी राखे छे अने पोते इच्छा मुजब हरेफरे छे. ते जाणे छे के हुं बहु चतुर हुं पण हुं ते राजाने छेतरुं तो ज खरी."

आम नक्की करी तेणे सार्थवाह अनंगदेवने कह्यूं, " तुं राजाने जमवानुं आमंत्रण आप अने पीरसवानुं मने सेांपजे. '' प्रथम तो राजाथी बीता अवा अनंगदेवे आनाकानी करी पण अंते पातालमुंदरीना आग्रहने वश थई राजाने भोजन अर्थे निमंत्रण आप्यं. घणा आग्रहना अंते राजाओ ते आमंत्रण स्वीकार्यु. अने अजीतसेनने घेर आव्यो. पातालसुंदरीए राजा जमवा बेठो **अेटले सर्व रह**ंगार सजी तेने पीरसवा माड्युं, राजा ओनुं सौन्दर्य जोई प्रथम चमके छे पण पछी क्षेने ते पातालसुंदरी होवानी शंका थाय छे; पण ते विचारे छे के---" पातालसुंदरीने तो हुं भेांयरामां पूरीने आव्यो छुं. तो ते अहीं केवी रीते आवी शके ! आ तो अना रूपने अनुरूप अनंगदेवनी स्त्री हरो." क्षेम समाधान करी ते शंकानं निवारण करे छे पातालसंदरी फरी पीरसवा आवी. तेने जोई वळी राजाने शंका घेरी वळी, अंटले ज्यारे ते पुन: पीरसवा आवी त्यारे राजाओ सुंदरी न जाणे एम भोजनसामग्रीमांथी अंक ''छांट'' तेना वस्त्र पर नाखी. पण पातालसुंदरीने ते वातनी खबर पडी गई. शंका पडवाथी जेनो भोजनमां रस उडी गयो छे अवो राजा जलदीथी महेले पाछो फर्या, आ बाजु पातालसुंदरी पण 'छांट' वाळां वस्त्र बदलीने सुरंग वाटे भेांयरामां आवी सुई गई, राजाओ सर्व ताळां उघाडी भेांयरामां आवी जोयूं तो पातालसुंदरी उंघती पड़ी छे. राजाने आवेलो जाणी ते कृत्रिम उंघकांथी बगासां खाती उठी. राजाए क्षेना वस्नुतं बारीकाईथी अवलोकन कर्युं पण एने ''छांट''नी कोई पण निशानी देखाई नहीं. आम शंकानुं समाधान थई जतां ते पातालसुंदरी जोडे फरीथी प्रथमनी माफक विलास करवा लाग्यो.

पातालसुंदरीनुं अनंगदेव साथे पलायन थवुं अने राजा तेमने वळावा जाय छे.

लांबा समयना अकान्तवासथी कंटाळी गयेळी पातालसु दरीए अक वखत अनंगदेवने कहं युं के "मारे आ देशमां रहेवुं नथी, माटे तमारा देशमां जवानी तैयारी करो अने हुं पण साथे आवुं छुं." अनंगदेवे राजाना भय दर्शावी तेम करवानी पोतानी आनाकानी बतावी. पण पातालसुंदरीओ पोतानी इच्छा जारी राखतां, एनी सूचनाने अनुसरीने "मारां माता—पिताए मने जलदीथी बोलाव्यो छे." अवो कृत्रिम लेख राजाने बतावी, तेनी पासे जवानी आज्ञा मांगी. राजाओ अनिच्छाए तेने एना नगर जवानी रजा आपी. अनंगदेवनी इच्छा प्रमाणे राजा तेमने समुद्रना कांठा सुधी बळावा आववा कबूळ थयो.

हवे शुभ दिवसे सार्थवाह पोतानां वहाणो तैयार करी पोताना देश जवा तैयार थया. राजा पण तेओने वळाववा तेमनी साथे थयो. पातालसुंदरी पण सुरंग वाटे अनंगदेवना आवासे आवी, सज्ज थई, पालखीमां बेसी समुद्र किनारे जवा तैयार थई. पोतानी पालखी राजानी पासे राखी ते राजाने कहेवा लागी, ''आपनी कृपाथी अमे घणुं धन उपार्जन कर्युं छे. वळी अमारो अज्ञानथी केाइ अपराध थयो होय तो माफ करजो.'' आम वार्तालाप करतां ते त्रणे समुद्रिकनारे आवी पहेांच्यां. अनंगदेव अने पातालसुंदरी राजाने 'छेल्ला जुहार' करी वहाणमां बेठां. थोडी वारमां वहाणो हिंदमर्थादा बहार नीकळो गया. दु:ख अनुभवतो राजा पोताना महेळे पाछो फर्यां.

पातालसुंदरीनुं सुकंठ साथे प्रेममां पडवुं अने अनंगदेवने समुद्रमां धकेली देवो.

सार्थमां अनंगदव साथे अेनो नानो भाई सुकंठ पण होय छे. हवे समुद्रना प्रवास दरम्यान दियर मुकंठ साथे स्वाभाविक हास्य—विनोद करतां पातालमुंदरी तेना गानतान प्रत्ये आकर्षाईने तेना प्रेममां पडी गई. प्रेमासक्त अेवी तेणे विचार्युं, ''आ साथ'पति अनंगदेवने हणीने आ मुकंठ साथे अनंत सुख भोगवुं.'' क्षेक वार रात्रे अनंगदेव शरीरनी उपाधिए जागृत थइ, वहाणनी किनार पर बेटो हतो ते वखते लाग साधी पातालसुंदरीए तेने समुद्रमां धकेली दीघो अने घछी क्वित्रम पोकार करी विलाप करवा लागी. पोकारथी प्रेराई ''पाहारी'' दोडी आव्या. तेभणे सर्व स्थळे शोध करी, पण तेमने निष्फळता मळी. पातालसुं३रीए कृत्रिमपणे अनंगदेव साथे समुद्रमां पडी मरवानो प्रयास कर्यो. पण सुकंठ इत्यादिए तेने रोकी राखी. हवे पातालसुंदरी निर्विघनपणे सुकंठ साथे विलास करवा लागी.

आ सर्व चेप्टा निहाळी सुकंठे विचार्युं, "जे एक स्वामिनी न थई ते बीजानी केम थशे, जेणे राजाने छोडी अनंगदेवने ग्रहण कर्यो, क्षने तेने पण छे।डो देनार मने केम छेह न दे?'' एम ते मन वगर एनी साथे भोग भोगवतो रहेवा लाग्या.

सार्थपतिनो बचाव अने दीक्षाग्रहण

हवे समुद्रमां पडेल अनंगदेवने कर्म-संजोगे एक पाटियुं हाथ आव्युं. तेनाथी तरतो अने जळमां तणातो ते सिंहलद्वीपमां भावी, स्थस्थ थइ विचारवा लाग्यो के ''आवो निर्मळ स्नेह राख्यो छतां ते मने त्यजी गई, तो स्त्रीने कोई भरथार सगो नथी " एम विचारतां वैराग्य जाग्यो. एव।मां तेने एक मुनि मळवा. एमणे एने मायाना साचा स्वरूपनो ख्याल आपीने वैराग्यनो उपदेश आप्या, मुनिना उपदेशथी वैराग्य पामी ओणे चारित्र प्रहण कर्युं.

सुकंठ अने पातालसुंदरीनु सिहलद्वीप आगमन अने सुकंठनुं दीक्षाप्रहण

दिरियानी मुसाफरी करतां करतां सुकंठ अने पातालसुंदरी अकस्मात ते ज सिंहलद्वीपमां आवी पहें। च्या. हवे मुनिवेशमां अनंगदेवने जोई, ओळखी, सुकंठ लज्जा पामी गयो. अने तेणे पण वैरारय पासी दीक्षाग्रहण करी ते पछी पातालसुंदरी सर्व वहाण लई अन्य द्वीपमां जई, वेश्या थईने रही अने अंते नरकनी गति पामी.

राजा जयंतसेन वैराग्य पामी मोक्षे गयो

हवे आ बाजु सार्थवाहनी विदायथी विषाद अनुभवतो राजा जयंतसेन नगरमां पाछो फर्का. सत्वरे भोगरामां कईने जुने हे तो पातारुमुंदरी न मके. उन्नंतमेनने तस्त रूपारु आख्यो के धूर्त सार्थवाह पातालसुंदरीने लइ गयो. राजाए सेवकोने बोलावी सर्वत्र तपास करावी. भेांयरामां तपास करतां गुप्त सुरंग मळी आवी. सर्व भेद कळाइ गयो. राजाओ खलासीओने तैयार थई 'सार्थव।ह'नो पीछो करवा हुकम कर्या पण खलासीओओ जणार्व्यु के ''काफलो तैयार थतां घणी वार लागहो.'' राजा आधी तहन निराश थई गयो. राजानुं मन संसारमांथी उठी गयुं.

आ समय दरम्यान नगर बहार 'चारण' केवळीनी पधरामणी थइ. राजा तेने वंदन करवा गयो. मुनिए राजाने धर्मदेशना आयी. राजीञे पातालसुंदरीनुं चरित्र पूछ्युं. मुनिक्षे ते सर्व कही संभळाव्यु. सुंदरीनुं दुश्चरित्र सांभळी राजा वैराग्य पामी, चारित्र ग्रहण करी, काळकमे मुक्तिपद पाम्यो,

खंड ४: मुख्य कथा

चार प्रधान-आशकोनो शोलवतीना शील-खंडननो प्रयास अने तेमनी खाडामां फसामणी-चार प्रधानोतुं आगमन अने दासी द्वारा संदेश

आम चार प्रधानीए पातालमुंदरीनी कथा कही. राजाने शीलवतीना 'शील' अंगे शंका-शील बनाव्या. अंते राजाओ प्रधानोने कह गुं, ''ह वे अेवुं करें। जेथी शीलवतीना 'शील 'ना भंग थाय." पछीथी राजानी अनुमित मेलवी चारे प्रधाना शीलवतीना शीलना खंडन अर्थे नंदन-नगर आवीने तेमणे दासी द्वारा शीलवतीने संदेश मोकलावी, पोताने आधीन थवा कहेवडाल्युं. शीलवतीए एने 'परनारीनो संग न करवो जोईओ' अ अर्थनां अनेक वचनो कही पाछी काढी. पण ते दासी फरीथो आवी. एटले तेणे विचायुं, ''मारा पितना हाथमां अम्लान रहेतुं कमल जोईने मारा शीलनी परीक्षा करवा अर्थे आ लोको आव्या लागे छे. तो अमना मनमां पण चमकारो थाय अेवुं पारखुं देखाडुं " अम विचारी तेणे दासीने आ प्रमाणे कह्युं, '' जो के शीलवती नारी माटे परपुरुषनो संग करवो योग्य नथी पण द्रव्यनो सारो लाभ मळतो होय तो ते पण रंग करवा तैयार थाय छे. माटे जो प्रधानने इल्ला होय तो केक लाख 'टंका' लईने आजथी पांचमा दिवसनी रात्रे पहेला प्रहरे आवे." केज प्रमाणे वीजा प्रधानने बीजा प्रहरे, त्रीजाने त्रीजा प्रहरे अने चोथोने चोथा प्रहरे आववा कहेवडाल्युं.

वाण वगरना पलंगनी युक्ति अने चारे आशकाेनी खाडामां फसामणी

शीळवतीओ आ चार प्रधान आशकोने योग्य शीक्षा करवानुं तकी कर्युं. ते माटे तेणे पेताना ओरडामां दासीओ पासे खाडा खोदान्यो. खाडा पर क्षेक "वाण" वगरना पलंग मूक्या अने ते पर चादर ढांकी शय्या तैयार करावी. नक्षी कर्या प्रमाणे रान्निना प्रथम प्रहुरे पहेलो प्रवान आन्यो. तेने सारुं सन्मान आपी, लाख 'टंका' लई, पेला ओरडामां तेडी जई, मुंदर चादर पाथरेला पलंग पर बेसाड्यो. बेसतांनी साथे ते नीचे उंडा खाडामां जई पडिया, तेवी ज रीते अन्य त्रण प्रधानाने पण तेमनी पासेनुं द्रव्य लई अंज खाडामां पाडी देवामां आव्या. दरराज देराखां बांधेला कुंडा द्वारा तेमने जल-आहार आपवामां आवतो. हरे आवी विषम परिस्थितिमां थे।डा समय रहेतां ज तेमनो विषय-विकार टळी गये। अने पश्चात्ताप करतां त्यां रह्यां.

शत्रु पर विजय मेळवी राजा अने अजितसेननुं पुनरागमन—भाजनिमंत्रण

हुवे राजा अरिमर्दन अने अजितसेन शड्डने जीतीने नंदननगर पाछा आव्या. अजितसेन घर आव्या. शिलावतीओ चारे प्रधाना अंगेनी सर्व विगत पतिने संभळावी. अजितसेनने पण आश्चर्य थयुं. अरिमर्दन राजाओ प्रधानोनी शोध करावी, पण कंइ पत्तो मळया नहीं. शीलावतीना घर जह, तेनी खबर काढवानुं राजाओ नकी कर्युं. अंटले राजाओ विनोदमां अजितसेनने पाताने घर हजी सुधी जमवा न बेालाववा अंगे टेाक्या. शीलवतीनी सलाह-सूचनाने अनुसरी अजितसेने राजाने पोताने घर जमवानुं आमंत्रण आप्युं. प्रधानोनी 'भाळ' मळशे ओम विचारी राजाओ पण सपरिवार मेाजन अर्थे आववानुं स्वीकार्युं. राजाओ ' चर 'ने गुण्तपणे अजितसेनका घर मोकली मेाजननी केवा प्रकारनी तैयार करी छे तेनी तपास करावी. पण आश्चर्य साथे पाछां फरेला ''चरे'' जणाव्युं के त्यां भाजननी केाई पण जातनी तैयारी नथी. राजाने आथी विस्मय थयुं. पण आखरे ते सपरिवार मेाजन करवा अर्थे अजितसेनने त्यां आव्यो.

शीलवतीओ चार प्रधानाने रसोइ पूरी पाडता यक्ष बनाव्या

शीलवतीए भे।जननी सर्व सामग्री तैयार करावी. पछी खाडामां पडेला चार प्रधानीने शीलवतीए कह्युं, "जो हुं जे रीते कहुं ते रीते तमे करवा तैयार हो तो तमने हुं बहार काढुं. " प्रधानो तेम करवा कबुल थया. अटले चोरने बहार काढीने स्नान करावी, चारेना शरीर विकराळ लागे एवी रीते चंदन वडे चितरी तेमने यक्ष जेवा बनाव्या अने कह्युं, "राजा जमवा आवे त्यारे ओरडामांथी सर्व रसे।इ जेम मागु तेम तेम लई आववी अने पीरसवी." राजा सपरिवार अजितसेनना घेर आवी जमवा बेटो. शीलवती यक्षाने जेम जेम आज्ञा करती गई, तेन सर्व वस्तुओ यक्षो द्वारा पीरसाती गई राजाओ विचार्यु—आ चार यक्षा शीलवतीनी सर्व मागणी पूरी करे छे. आ यक्षा मारे त्यां होय तो केन्नु सारुं?" भेाजनने अंते राजाओ अजितसेन पासे यक्षानी मागणी करी. अजितसेने कह्युं, "आ सर्व आपनुं ज छे. तो आ 'यक्षनी' शी वात! आ चार यक्ष हुं आपने अवश्य आपीश, आप राजसमामां पद्यारो अने त्यां हुं चार यक्षाने मंजूषामां मूकी मेकली आपुं छुं. तेने आप महोत्सव करी स्वीकारजी." राजा पीताने आवासे आवी राजसमामां बेटो. शीलवतीओ चारे यक्षाने चार मंजूषामां पूरी, राजसमामां मोकलाव्या. राजसमामां मंजूषामांथी चार प्रधाननु लग्जास्पद परिस्थितिमां प्रगट थवुं.

घणा उत्सवपूर्वक चारे मंज्ञ्घा राजसभामां सर्व समक्ष उचाडवामां आवी, तो चार विकराळ आकृतिवाळा यक्षा बहार आव्या. राजा कंडक भयथी अने कंईक कौतुकथी ते चारेय आकृतिने नीरखी रह्यो. आंखना पलकारा इत्यादि मानव लक्षणा जोई राजाओ तेमने पूछ्युं ''तमे काण छो ?'' पण लज्जाने लीधे तेओओ कंड पण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं. आखरे वधु निरीक्षण करतां राजाओ चारे प्रधानने ओळख्या. राजाओ आ सर्व अंगे पृच्छा करतां तेमणे पाताना सर्व वृत्तान्त राजाने जणाव्या. पुष्कळ सर्व हकीकत जाणी राजाओ शीलवतीना शीलनी प्रशंसा करी. अने तेने बहुमानपूर्वक द्रव्य आप्युं.

खंड ५ : मुख्य कथा

मुनि धर्मघोष द्वारा उपदेश, पूर्वभव वृत्तान्त कथन अने दीक्षाग्रहण

हुवे अक वखते नंदननगमां श्री धर्मघोष मुनि पधार्या. अजितसेन अने शीलवती तेमने "वंदणा" करवा गया. मुनिओ घर्मिपदेश आण्या. धर्मिपदेश ग्रहण कर्या बाद अजितसेने पोताना "पूर्वभव" विषे पृच्छा करता मुनिओ कह्युं के—"पूर्व पुष्पपुरमां ओक सुल्श नामना विणक अने तेनी पत्नी सुयशा रहेता हता. तेने धेर दुर्ग अने दुर्गा नामे दंपती सेवक हतां. हवे एक वखते ज्ञानपंचमीने दिवसे सुयशा दुर्गाने साथे र्र्छ एक साध्वीजी पासे जाय छे. त्यां सुयशा "ज्ञानपंचमी"नी पूजा करे छे. ते जोइ दुर्गाओ ते अंगे साध्वीजीने पृच्छा करी. साध्वीजीओ तेने—"ज्ञानपंचमी"ना दिवसे "ज्ञानप्जा" करवाना महिमा समजाव्यो. तेनुं श्रवण करी दुर्गाओ कह्युं, "अमे सेवक आवी पूजा न करी शकीओ." ते सांमळी साध्वीओ तेने "श्रील"ना उपदेश आपतां कह्युं "श्रील क्रत पात्र ते चित्तने आधीन छे. ते सर्वपर्वनां दिवसे शील पाळवानुं वत तु रुई शके छे, अने परपुरुषनी इच्छाना हमेशा त्याग करी शके छे." दुर्गाओ ए व्रजनो स्वीकार कर्या. ओना पतिए पण परस्त्री त्याग अने पर्छी सौधर्म कल्पमां देव थया. त्यांथी च्यवी दुर्ग ते अजितसेन थया अने दुर्गा ते तारी स्त्री शीलवती थइ." पोताना पूर्वभव सांभळी बन्नेने जातिस्मरण थता तेमणे "चरित्र" ग्रहण कर्यु: अने अम रहेतां केटलेक वखते ते ब्रह्मदेवलेक देव थया. हवे त्यांथी च्यवीन कालकमे मनुष्यमवमां निर्मळ शीलवत पाळी शीलवती अने अजितसेन मुक्तपद पामशे.

४. शृंगारमंजरी : शीलवती कथा-परंपरा

प्रास्ताविक

जैन कविओए अने साहित्यकारेगए गुजरातमां कथासाहित्यनी एक आगवी परिपाटी जनमावी छे अने पेग्नी छे. कवि जयवंतस्रिकृत 'शंगरमंजरी' के 'शीलवतीचरित्र' अन्तर्गत प्राप्त थती 'शीलवतीकथा' आवी एक जैनकथा छे. शीलवतीकथा जैन कथासाहित्यमां व्यापक्रपणे प्रचार, प्रसार अने प्रतिष्ठाप्राप्त स-रस कथा छे. फलतः छेक लंस्कृत—प्राकृतथी प्रारंभी अर्वाचीन गुजराती भाषा पर्यन्त ए कथाने। विकास, विस्तार अने रूपांतरने सुरेख रीते आलेखी शकाय एटली सामग्री प्राप्त थाय छे. किव जयवंतस्रिए आ परंपरागत प्राप्त कथा-सामग्रीमांथी प्रेरणा मेळवी कदाच प्रथमवार मध्यकालीन गुजरातीमां पेतानी प्रतिभा अने कल्पनाना सामर्थ्य अनुसार शुद्ध-शुद्धि करी तथा तेने पेताना गुगनां लेकमानस अने लेकरिचने अनुकुळ घाट अर्थी, पद्यात्मक स्वरूपमां स-रस वार्ता सरजी छे. कथा परंपरा : संस्कृत—प्राकृतमां शीलवती कथा

प्राकृत भाषामां रचायेल श्री सामप्रभाचार्य कृत, 'कुमारपाल प्रतिबाध' [ई.स १९५८]मां आपणे 'शीलवती कथा' पहेल प्रथम शीलवतनी दृष्टान्त कथा रूपे उपलब्ध थाय छे. आ कथाने निरूपता केटलांक प्रथा आ पछी संस्कृत—प्राकृतमां प्राप्त थाय छे. एमां संस्कृत—प्राकृतमां रचायेल 'शीलेपदेशमाला' [वृत्ति—सामितिलकस्रि, ई.स. १३३८]मां मळती 'शीलवतीकथा', प्राकृत—संस्कृतमां रचायेल 'श्रावक प्रतिक्रमण—वंदिषु सूत्र' [वृत्ति रःनशेखरस्रि, ई.स. १४४०]मां प्राप्त थती 'शीलवती कथा', प्राकृतमां रचायेल 'भरतेश्वर बाहुबलि' [वृत्ति शुभशीलगणि, ई.स. १४५३]मां मळती 'शीलवती कथा' हाल उपलब्ध छे. आ त्रणे ग्रंथो मुद्दित स्वरूपमां मळे छे.

अर्वाचीन कालमां पण त्रणेक कथाग्रंथोमां 'शीलवती कथा' सांपडे छे. संस्कृतमां विजयलक्ष्मी-स्रिकृत 'उपदेशप्रसाद' [ई.स. १७८७]मां शीलवता हच्टान्त रूपे 'शीलवती कथा' मळे छे. संस्कृतमां रचायेल 'श्री शीलवती कथानक' [प्र. ई.स. १९२०]मां स्वतंत्रपणे निरूपायेल 'शीलवती कथा' प्राप्त थाय छे. वस्ती संस्कृतमां रचायेल श्री अजितसागरस्रि कृत 'अजितसेन शीलवती कथानक'[प्र. ई.स. १९२८]मां पण पूर्वोकत 'शीलवर्ता कथा' ज निरूपायेल छे.

गुजरातीमां शीलवती कथा

प्राचीन—मध्यकालीन गुजरातीमां पण आ 'शीलवती कथा' आलेखती केटलीक कृतिओ प्राप्त थाय छे. सौथी प्राचीन कृति ते किव जयवंतस्रि कृत 'शृंगारमंजरी'ने गणावी शकाय. त्यार बाद सुनि देवरतन कृत 'शीलवइ चुपइ'मां [ई.स. १६४२]मां प्राय: आ कथा मळे छे. आ पछी सात वर्षना दंका गाळामां मुनि दयासगर कृत 'शीलवती चउपई'मां [ई.स. १६४९]मां पण आ 'शीलवती कथा' ज आलेखाइ छे. त्यार बाद किव कुशलधीर कृत 'शीलवती चतुष्पिका' [ई.स. १६६६] आ कथा अंगेना ध्यान खेंचे एवो सुदर प्रयत्न छे. जिनहर्ष कृत 'शीलवती रास प्रबंध' [ई.स. १७०२] पण आ कथा निरूपती एक समृद्ध कृति छे.

अर्बाचीन समयमां पण आ कथा आलेखवाना प्रयत्ना थया छे. अेमां 'श्री जैन साळ सती चरित्र' [प्रई.स. १९३९]मां एक सती तरीके 'शीलवतीनी कथा' मळे छे. तेमां आ कथानुं अर्वाचीन स्वरूप सांपडे छे.

आम ई.स. ११५८थी आरंभी आज पर्यन्तना लगभग ८००-९०० वर्षना सुदीर्घ विस्तारी फलक पर आ कथाना विकास के विस्तार थयेला जोइ राकाय छे. जे प्रस्तुत कथानी जौन साहित्य-समाजमानी लाकप्रियतानुं सुचक छे.

५. शृंगारमंजरी कथाः एक लोककथा तरीके एनी कथासामग्रीना लेकतात्त्रिक [Folkloric] दृष्टिए अभ्यास

प्रास्ताविक

पूर्वे आपणे 'शुंगारमंजरीचरित्र रास'ना कथानकनी रूपरेखा संक्षिण्तमां जोड़ गया छीओ, आनी कथा सामग्रीना अम्यास करतां तेने स्पष्ट पणे त्रण खंडमां विभक्ति करी शकाय ओम छे. 'शुंगारमंजरीनी कथा'मां प्राप्त थती 'शोलवती कथा'नी मुख्य कथा मूळे वे स्वतंत्र कथानी बनेली होय ओम लागे छे; ओना पूर्वार्धमांमां 'श्रेष्ठीपुत्रनी शकुनरूतज्ञ बुद्धिमान पत्नी'नी कथा सांपडे छे. जेमां 'पशु-पंखीनी भाषानुं ज्ञान', 'गुढार्थ' उक्तिकथन', 'राजा अने बुद्धिमान मंत्री', 'समस्या पृच्छा' जेवा कथा शकुति के कथाधटकना समावेश थाप छे. ओनां उत्तरार्धमां 'पतिव्रता पत्नी अने फसावेला आशकों' नी कथा मळे छे. जेमां 'शील-प्रतीक', 'फसावेल आशकों' जेबा कथाधटको प्राप्त थाय छे. बळी अपतिव्रता पत्नीना दृष्टांत लेखे मळती 'पातालसुंदरी कथा ' नामनी आडकथा पण मूळे स्वतंत्र लेकिकथा छे. जेमां 'पतिथी प्रच्छन्न प्रेमी के परपुरुष साथे संग करनार परपुरुषासक्त प्रमदा ', 'पति के प्रेमीने मरिता आदिमां गबडावी दृइ अन्य पुरुष साथे प्लायन थनार प्रमदा ' इत्यादि जेवा कथाधटको मळी आवे छे.

शंगारमं जरी कथा : कथाप्रकृति : कथाघटको

आम 'शृंगारमंजरीकथा'नी कथासामगीने नीचे मुजब त्रण खंडमां विभक्त करी शकाय:

- (१) श्रेड्डीपुत्रनी शकुनरूतज्ञ बुद्धिमान पत्नीनी कथा
- (२) पतिव्रता पत्नी अने फसावेल आशकानी कथा
- (३) अपतित्रता (बेबफा) पत्नीनी कथा.

आ त्रणेय कथा-खंडमांथी अनुक्रमे नीचे मुजब कथाप्रकृतिओ के कथाघटका तारवी शकाय:

- (१) श्रेष्ठीपुत्रनी शकुनरूतज्ञ बुद्धिमान पन्नीनी कथान्तर्गत कथाप्रकृतिओ के कथाघटको
 - ৭. पद्य-पंखीनी भाषातुं ज्ञान: राकुनरूत (Knowledge of Animal language, कथाघटक-सूची कमांक 'बी' २१६, कथाप्रकृति क्रमांक ५१७. ६७०-६७१ १)
 - (अ) मध्यरात्रिए शियालनी लाळी अने तदानुसार द्रव्यप्राप्ति (कथाघटक-सूची कमांक 'अन' ५४७)
 - (बी) शकुनवाणी द्वारा भूमिगोपित धननिधि अंगे सूचना अने तदानुसार धनप्राप्ति (कथाघटक—सूची क्रमांक 'अन' ५३७)
 - २. गृहार्थ उक्तिकथन : उपलक दिन्दए अर्थहीन भासती उक्तिओ (अथवा कार्य)नुं लाक्षणिक रीते अर्थघटन करता अर्थपूर्ण नीवडे (कथाघटक-सूची क्रमांक 'अच' ५८०)
 - ३ नृप अने घीमान मंत्री : (घीमान मंत्रीपत्नी)-कथाघटक (सूची क्रमांक 'क्षेच' ५६१.५) मंत्रीनी नियुक्ति अथे कसोटीह्रप के।यडाओ
 - ४. समस्याप्रच्छा (Riddles, कथाघटक सूची क्रमांक 'क्षेच' ५३०-५९९.
- अत्रे सर्वत्र एस. टोम्पसनना 'घी फोकटेल' तथा 'मोटिफ इन्डेक्ष ओफ फोक लिटरेचर,
 १-६' नामना ग्रंथोमां आपेल वर्गीकरण अनुसार कथाप्रकृति के कथाघटकना क्रमांकना निदेशि
 कर्यो छे.

- (२) पतित्रता पत्नी अने फसावेला आशकोनी कथान्तर्गत कथाप्रकृतिओ के कथाघटको ५. शील-प्रतीक (Chastity Index, कथाघटक-स्ची कमांक एच' ४३०, कथाप्रकृति कमांक ४८८).
 - ६. फसावेल आशका (Entrapped suitors, कथघटक-सूची क्रमांक 'के' १२१८.१.१ 'के' १२१८.३ कथाप्रकृति क्रमांक १७३०).

(३) अपतिव्रता पत्नीनी कथान्तर्गत कथाप्रकृतिओ के कथाघटको

- ७. कुंवारी कन्या के स्त्री के पत्नी के प्रियतमाने भूमिग्रह के मीनःरा के अन्य स्थानमां पुरुषपरिचयशी विभुख राखवाना हेतु अर्थे केद राखवी (कथाघटक-सूची कमांक 'टी' ३८१-कथाप्रकृति कमांक ३१०, ५१६).
- म्मिमार्ग के सुरंग वाटे रक्षित कन्या के स्त्रों के पतनी के प्रियतमाना मिलन अर्थे गमन अने एनी साथे रमण (कथाघटक-सूची क्रमांक 'के' १३४०-'के', १३४४.१०, 'के' १३४९-१०, कि' ३१५-०१ अने 'के' १५२३).
- ८. परपुरुष साथे रमण करवा पित के प्रेमीना त्याग करीने के कोई जलस्थानमां गबडावी दहने परपुरुष सह रमण करनार के पलायन थनार परपुरुषासक्त पत्नी (प्रमदा) (कथाघटक—स्ची क्रमांक 'के' '२२१३.२—'के' २२१२.३२, 'के' १२१३.५ तथा 'टी' २३५.५ कथाप्रकृति क्रमांक ६१२).

[नेांध — उपर्युक्त कथाप्रकृतिओ के कथाघटकोनी कमानुसार सविस्तर चर्चा हवे पछी प्रगट थनार बीजा खंडमां रज्ज करवामां आवशे.]

६. 'शृंगारमंजरी' : एक रास तरीके मूल्यांकन

किव जयवंतसूरिकृत 'शृंगारमं जरी चरित्र रास' अने अपरनाम 'शीलवती चरित्ररास' ए शीर्ष को ज दर्शावे छे अम, अक 'रास' छे. 'रास'ना स्वरूप—प्रकार अंगे आ पूर्वे सारा प्रमाणमां चर्चा—विचारणा थई चूकी छे. 'रास ' स्वरूपना विविध अंग उपांगानी चर्चा डा. दृरिवल्लभ भायाणी १, डा. भोगीलाल सांडेसरा, र डा. चंद्रकान्त महेता , श्री. डोलरराय मांकड , श्री. के. का. शास्त्री, भी अनंतराय रावल, डो. मंजुलाल मजमुदार , श्री. का. ब. व्यास ,

⁹ डो. हरिवल्लभ भायाणी, गुजराती साहित्य परिषद पत्रिका, प्राचीन रास काव्यो, फेब्रु— मार्च. १९४७, पृ. ७.

२ डो. भागीलाल सांडेसरा, संशोधननी केडी, अभदाबाद, १९६१, पृ. २७९

३ डो. चंद्रकान्त महेता, मध्यकाळना साहित्य प्रकारो, मुंबई, १९५८, पृ. ३०७-३७८

४ श्री. डोलरराय मांकड, गुजराती काव्य प्रकारी, १९६४, पृ. ११८ ते पछीनां

५ श्री. के. का. शास्त्री. आपणां कविओ, अमदावाद, १९४२, खंड-१ पृ. १४३-१५४

६ श्री. अनंतराय रावल, गुजराती साहित्य (मध्यकाळ) मुंबई, १९६३, पृ. ३८-३९

७ डो. मंजुलाल मजमुदार, गुजराती साहित्यनां स्वरूपो, वडोदरा, १९५४ पृ. ६८-७८

८ प्रो. का. ब. व्यास, वसंतिविलास, मुंबई, १९४२, पृ. ३७-४६,

श्री हीरालाल कापडिया^६, श्री भारती वैद्य^{९०} इत्यादिओ तेस ज हिं**दीमां डा. दशरथ^{९९} ओझा,** विश्वनाथ त्रिवेदी^{९२} इत्यादि करी छे. आ बधी रासना स्वरूप अने बंधारण विषेती चर्चा—विचारणाना संदर्भमां 'शृंगारमंजरी' एक रास तरीके मूलवणी आ प्रमाणे करी शकाय.

(१) रासनो प्रारंभ सामान्य रीते सरस्वती देवी के तीर्थं कर के गुरूनी बंदनाथी थती. तदानुसार कवि जयवंतसूरिए पण काव्यनो प्रारंभ सरस्वतीने प्रणाम करीने कर्यो छे. चंद्रवदिन चंपकवनी, चालंती गज्जगत्ति. मयणराय-मंदिर जिसी, पय प्रणम् सरसत्ति. आ पछी कवि अलंकारमंडित वाणीमां सरस्वती देवीनं वैभवी वर्णन आपे हे. सेाविन-चूडि करि धरि, उर वरि, नवसर-हार, खलकित साविन-मेखला, पिय झांझर झमकार. वेणी-दंड प्रचंड क्षे, जिस रोष-भूयंग, अंग अनंग अभंगनु, नाग सुरंभ समंग. ३ अने त्यार बाद कवि गुरुने प्रणाम करता कहे छे. सहिगुरु चरण नम् निसि-दीस, जेहथी पहुचई सकल जगीश, जेहथी लहीई धम्म-विचार, सकलशास्त्र सद्गुरू आधारि. १० वळी कविशे पोताना गुरू अने गच्छ विषे माहिती आपतां जणाव्युं छे के, वडतपगछि अति महिमावंत, श्री विनयमंडन उवझाय महंत. शीलिं थूलीभद्र सरसति बुद्धि, गौतमनी परि लब्धि प्रसिद्धि. वळी किवें काव्यार ममां ज कवनना वस्तुनो निदेश कर्यो छे जेमके-ते सहिगुरूना प्रणमी पाय, जयवतसूरि क्षेक चित्तई थाइ, प्रथ करं होगारमंजरी, बाल शीलवतीन चरी. १७

आम आपणे उपर जोयुं तेप कविक्षे रासना प्रारंभमां सरस्वतीने प्रणाम करी ते पछी गुरूने प्रणाम करी, ते पछी गुरू अने गच्छनी माहिती आपी छे. बळी काव्यना विषयनो पण निर्देश कर्यो छे जे 'रास'ना लक्षणने अनुरूप छे.

(२) सामान्यतः रासना अते काव्यपटननी फलश्रुति, कविना गुरु अने गच्छनी माहिती तथा किनो स्वलप परिचय आपवामां आवतो ते प्रमाणे अत्रे किन जयवंतसूरि पण काव्यना अंते शीलने। महिमा गाता कहे छे.

दिनि दिनि उदय हुइ घणड, सघलइ जय जयकार, ओ सिन मिहिमा शीलतुं, मानइ सिन भूपाल. २४०१ शीलवती चरित्र करी, सघलई वखाणिड शील, भनीयण पाछ एक मिनि, जिम पामु सुख—लील. २४०२

९ प्रो. हीरालाल र. कापडिया, श्री. जैन सत्यप्रकाश, अमदावाद १९४६.

१० डो. दशरश्च ओझा अने दशरथ शर्मा, रास अने रासान्वयी काव्य, वाराणसी १०४०, पृ. १-९२

१२ भारतीय वैद्य, मध्यकालीन राससाहित्य, मुंबई, १९६६, प्ट ६५–१०६

१२ अब्बुल रहेमान कृत, संदेश रासक, संपा. हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा विश्वनाथ त्रिपाठी, मुंबई, भूमिका, १९६८, पृ. १–१३

वळो काव्यान्ते कविए पोताना गुरु अने गच्छनी पर'पराने पण विस्तार**धी** वर्णवी छे जेमके...

षृद्धतपापक्ष जाणीई. श्रीरत्नाकर गच्छ. कल्पलता जिम वाघती, हीसई जिहां गुण-गच्छ 2804 श्री तपगच्छ उद्योतकर, श्री विजयरत्नसरिंद जिन सुरपति सूर वृंदमां जिम ग्रह-गणनां चंद २४०६ पोताना परिचय आपता कवि जणाबे छे-श्री विनयमंडन गर्णीद्रनु, लघु सीस भूमि प्रसिद्धः जयवंत पंडित अभिनवी, शुंगारमं जरी किंद्र, २४२२ वळी कविशे कृतिनो रचनाकाळ नीचेनी पंक्तिओमां स्ताध्या निर्देश्यो छे. संवत से।ल चउदोत्तरो, आसो सुदि गुरु बीज, कीधी शृंगारमं जरी, जयवंत पंडित हेजि. 2828 आम कविए काव्यांते आ सर्व माहिती आपी रासना ते लक्षणने जाळच्युं छे.

- (३) पंदरमी सदी पछी रासने। विस्तार वधता तेना विभाग पाडवानी पद्धति प्रवेसी हती ते प्रमाणे २४२४ कडी संख्यानो विस्तार धरावतो प्रस्तुत कृतिने ५० जेटली जुदी जुदी 'ढाल'मां विभक्त करी छे.
- (४) रासनी रचना गेय एवी 'देशी'मां थती तदानुसार प्रस्तुत 'शृंगारमंजरी'मां कविए जुदी जुदी अनेक देशीओ प्रयोजी छे.
- (५) रासनी रचना प्राय: दूहा, चोपाई, तोटक इत्यादि छंदोमां करवामां आवती, अहीं ते ज प्रमाणे कवि जयवंतसूरि प्रथमवार अेने प्राचीन गुजरातीमां रुचे छे ते अेनी विशेषता छे.
- (६) के।ई पण धर्निसद्धांत के व्रतना प्रतिपादन अर्थे सामान्य रीते रासनी रचना थती ते प्रमाणे अत्रे कवि जयवंतस्रिक्षे पण शीलव्रतन। महिमागान अर्थे प्रस्तुत रासनी रचना करी छे.
- (७) विषय परत्वे जोइओ तो रासना विषय शीलवतीनुं चरित्र आलेखवाना छे. आम ता किवना हेतु शीलना महिमा दर्शाववाना छे. अने ते माटे शीलवतीना चरित्रनुं निरूपण करे छे. किविए आ कथानुं वस्तु जैन परंपरामां प्रख्यात एवी शीलवतीनी कथामांथी लीधुं छे. आ कथा आपणने सर्व प्रथम प्राकृत ग्रंथ 'कुमारपाल प्रतिवेधि' अन्तर्गत शीलना महिमा वर्णवता अक दिष्टान्त लेखे प्राप्त थाय छे. अने पछी ते संस्कृत, प्राचीन गुजराती भाषानां कथाग्रंथोमां मळी आवे छे. किव जयवतस्रि प्रथमवार गुजरातीमां रचे छे ते एनी विशेषता छे.
- (८) धर्मोपदेश के धर्मप्रचार के जैन रासनुं प्रधान लक्षण हतुं. तदानुसार अत्रे पण किन जयवंतस्रिए शीलना महिमा गाई अंते वैराग्यना बाध आप्या छे.

भाम 'शृंगारमंजरी' रास स्वरूप विविध लक्षणा धरावती होई तेने आपणे 'रास' कहीछुं. ६

समालोचना

'शृंगारमं जरी' अन्तर्गत प्राप्त थती 'शीलवती कथा' पूर्व नेांध्युं छे अम जैन साहित्यमां व्यापकपणे प्रचार-प्रसार अने प्रतिष्ठा पामेली कथा छे. किव जयवंतस्रि प्राय: प्रस्तुत परंपरानुसारी कथा-सामग्रीने अपनावी पहेल प्रथम मध्यकालीन गुजराती भाषामां एक 'रास' कृतिनी रचना करी अने छंदर पद्यात्मक स्वरूप अपे छे. कथावृत्तान्त तेनी नानी—मोटी विगतोमां परंपराथी रूढ थयेल होवाथी कथावस्तु पुरता तो मौलिक कल्पना के संविधाननी दृष्टिओ कथावस्तुने शणगारवानी बाबतमां, वर्णनाने रस-निरूपणनी बाबतमां, तेम ज मनगमता प्रसंगाने बहेलाववानी बाबतमां किने पुरती अवकाश रहे छे. किव जयवंतस्रिए आवा दरेक प्रसंगाने लाम लईने पोतानी प्रतिभा अने सामर्थ्य अनुसार एना वस्तुसंकलना, पात्रालेखन, भावनिरूपण, वर्णनालेखन, अलंकारयाजना जेवां पासाओमां कुशलता दर्शावी छे. अने अक स-रस रास कृति बनाववाना सफळ प्रयास कर्या छे. पण एक प्रकारना नियत ढालामां ढलायेली जैन परंपरानी 'शीलवती कथा'ने प्रथमवार मध्यकालीन गुजराती भाषामां अवतारवानुं होई आ कृतिमां केटलीक मर्यादाओ जोवा मळे ते स्वभाविक छे.

'शंगारमं जरी'नी वस्तुसंकलनानी दृष्टिए समीक्षा करता आम कही शकाय. कवि जयवंतस्रिके रासना प्रारंभ परंपराने अनुसरीने सरस्वती देवीनी स्तुति करीने [स्तुत्यामक मंगलाचरण करीने] कर्यो छे. कवि सरस्वतीने प्रणाम करता कथे छे:

> चंद्र-वदनि चपक-वनी, चालंती गजगत्ति, मयणराय-मंदिर जिसी, पय प्रणम् सरसति.

त्यारबाद किव अलंकारमंडित वाणीमां सरस्वती देवीनुं वैभवी वर्णन आपे छे. आ वर्णनमां हृद उपमा-उत्प्रेक्षाओं ठीक ठीक छे, छतां उचित शब्द पसंदगी अने लयना कारणे एक प्रकारनी अभिनव चारुता जोवा मळे छे. (कडी २-८) किव अत्रे कंडक विस्तारश्री सरस्वती देवीना हृपशणगारनुं वर्णन करी एने वंदना अर्थ छे.

ते सिहगुरुना प्रणमी पाय, जयवंतसूरि एक चित्तइ थाय, प्रथ करुं शुंगारमंजरी, बोलुं शीलवतीनूं चरी. १७

आटली मंगळाचरण अने वस्तुनिर्देशात्मक पूर्वभूमिका रची कवि नंदननगरमा वर्णनश्री कथाने। प्रारंभ करे छे.

नंदनगरनुं वर्णन संपूर्णता आणवाना प्रयासरूप प्राय: ७४ पंक्तिओमां विस्तायुः छे. [कडी ४२–५९]

पछी नंदननगरना राजा अस्मिर्दनने। परिचय, ते नगरमां वसता रत्नाकर अने तेनी भार्या 'श्री'ने। परिचय, दंपतीनी अपुत्रक स्थिति अने ते अंगे दुःख अने चिंता, देवीनी आराधनाथी पुत्र प्राप्ति, बारमे दिवसे नाम महोत्सव करी पुत्रनुं अजितसेन नामाभिधान अजितसेननी विद्या-

संपादना अने यौवन-प्राप्ति, रत्नाकरनी एने येग्य कन्याप्राप्ति अंगेनी चिंता, एटलामां एना परदेश गयेला भिन्ननुं आगमन, मित्र द्वारा, पाते मंयगला नगरीना जिनदत्त अने शीलवतीनी लीधेल मुलाकातनुं वर्णन, शीलवतीनुं रूपवर्णन, पुत्रीना विवाहार्थे जिनदत्ते पददेशी मित्र साथे मेाकलेल पुत्र जिनशेखर, रत्नाकर द्वारा जिनशेखर सह अजितसेनने शीलवतीने परणवा माटे मंयगला नगरी मेाकलवेा, अजितसेननुं शीलवतीने परणीने स्वनगर पाछा फरखुं इत्यादि, विगती कवि अति संक्षेपमां तीव्र गतिओ वर्णवी जाय छे. जे कविनी वस्तुने लाधवथी रजू करवानी वस्तुसंकलनानी सुझ दर्शांव छे.

आ पछी पण वातां तीन्न गतिए चाले छे. एकवार मध्यरात्रिए शीलवतीनुं शीयाळानुं लाणीनुं उपश्रवण, तदानुसार पशुपंखीनी भाषाज्ञ शीलवतीनुं नदी किनारे जई त्यांना शव परथी पांच रत्ना प्रहण करवा, रत्ने। लड़ने शीलवतीनुं गृहे आवी पूर्ववत् शय्यामां सूइ जवुं, शीलवतीना आवर—जवरथी जागृत थड़ गयेलो छेनो पति अजितसेननुं एना शील अंगे शंकाशील बनवुं अने सवारमां पिताने ते वृत्तान्त कहीने एने थियर मूकी आवव तैयार थवुं छे बावतमां रत्नाकरनुं संगत थवुं अने तदानुसार रत्नाकरनुं रथमां बेसाडीने शीलवतीने एना थियर मूकी आववा नीकळवुं इत्यादि विगतांशा कविए सीधी वंगीली कथात्मक शैलीमां संक्षिष्तमां वर्णव्या छे. जे कविनी कथनकलानी शिक्तनुं दोतक छे.

आ पछी रत्नाकर सह शीलवती रथमां बेसी पोताना पियर प्रति प्रयाणने। प्रारंभ करे छे. ते वखतें मार्गमां अनेक शुक्रन थाय छे. अत्रे किव शकुनोनी एक विस्तृत यादी आदी आपी दे छे. (१४८-१६५) जो के आपणने आजे आ वस्तुसंकलनानी दृष्टिओ योग्य न लागे पण ते वखतनो समाज आवा शुक्रन-अपशुक्रनमां विशेष विश्वास के श्रद्धा धरावते। हशे अ संदर्भमां आवी लांबी यादी आवे ते स्वभाविक छे.

किव फरीथी वस्तुप्रवाहमां वेग आणे छे. रत्नाकर अने शीलवतीनां प्रवास, प्रवास मार्गमां उपस्थित विसंवादो, रत्नाकर अने शीलवतीनुं वटवृक्ष नीचे विश्राम लेवा बेसवुं, त्यां करीरना वृक्ष पर बेटेला वायसनी वाणीनुं उपश्रवण, पश्ची-पंखीनी भाषाज्ञ शीलवती द्वारा अने उपाल म देवो इत्यादि कथाविगत किव तीन्न गतिओ आलेखे छे पण पछी किव वायसवाणीना गुण-अवगुण विषे, वायस अंगेना शुकन-अपशुकन अंगे शुकनशास्त्र प्राप्त दसेदीशाना शुकनो प्राय: २९ दृहमां (२१८-२४६) वर्णवे छे. ते स्थाने किव शुकनाविल अंगेनुं पोतानुं ज्ञान श्रोताना लाभार्थ ठालवी देता होय अम लागे छे, छतां ते प्रमाणभान दाखवे छे.

बादमां काव्य फरी वेग पकडे छे. शीलबतीनो वायस साथेनो संवाद सांभळी रहनाकरनी ते अंगे पृच्छा, पृच्छाने अंते प्राप्त माहिती अनुसार बुक्ष नीचेथी दश लाखनो निधि प्राप्त करवो इत्यादि प्रसंगो किव अति संक्षिप्तमां शीघ्र गतिए आलेखी जाय छे. जो के आनी मध्यमां पण किव सामान्यज्ञान निर्देशक दृहाओं आपवानी वृत्ति रोकी शकता नथी (३२०-१२७) ते पछी किव कथाविगतने झडपथी निरूपता काव्यने आगळ धपावे छे. शीलवतीने पाछी फरेली जोई अजितसेने करेल केाप, रहनाकरे शीलवतीना पूर्व कार्य अंगे करेलो खुलासो अने पंदरकाटी इच्य प्राप्तिनी लाभनी कहेल वात, ते सांभळी अजितसेनना केापनी शांति थवी, रतनाकर अने अजितसेननुं शीलवतीने पूर्व करेली भूल बावत 'खमाववु' इत्यादि प्रसंगो किव शीध्रगतिओ मात्र ३० कडीमां [३४६-३६६] आपी दे छे जे किवनो प्रमाणभान के संयमना गुणने सूचवे छे. अहीं कथा प्रवाहनो क्षेक तबको पूरी थाय छे.

आ पछी वार्ता मंधरगितए आगळ वघे छे. अजितसेन-शीलवती आनंद-विनोद अर्थे समस्याबाजी करे छे. अत्रे आपणने सोएक कडीमां [३६'५-४६२] विविध प्रकारनी शेंसी जेटली समस्या मळे छे. अत्रे कथाप्रवाह लगभग थंभी जाय छे. पण समस्याबाजी तल्कालीन जमानामां ख्व लोकप्रिय होई आम बनवुं स्वामाबिक छे. रत्नाकरनुं मृत्यु थतां अजितसेन अने शीलवती ग्रहपित अने गृहस्वामिनी बने छे.

मघु मासनुं आगमन थता अजितसेन अने शीलवती वसंतिवहार अथे अन्य युवार स्त्री पुरुषो साथे वनमां जाय छे. किव अत्रे युवान—स्त्रो पुरुषा विविध विलास अने वसंति। आगमने प्रकृतिमां जे उल्लास प्रसरे छे अनुं कलात्नक रीते विस्तारथो आलेखन करे छे. टूंकमां कहीए तो किवि अत्रे एक फागु काव्यनी ज रचना करी छे. वस्तुसंकलनानी दृष्टि अहीं कथाप्रवाह साव मंद—लगभग स्थिर थई गयेलो लागे पण मध्यकालीन रासोमां आवुं प्रकृति निरूपण एक अनिवार्य लक्षण होई तेम बनवुं सहज छे.

आ पछी कथाप्रवाह पाछो शीघ्र गतिओ चाले छे. अजितसेनने शीलवती द्वारा उद्यम अने उत्कर्ष अथे राजसंपर्क साधवानी स्चना आपवी अने तदानुसार अजितसेननुं नित्य राजसभामां जबुं, राजा अरिमर्दनने राजसभामां ४९९ मंत्री होवा, राजानी पांचसेमो मुख्य मंत्रीनी नियुक्ति करी राजकाजना भारमांथी मुक्त थवानी इच्छा, मुख्य मंत्रीनी नियुक्ति अर्थ एनी बुद्धि चातुर्यनी कसोटी करवा राजसभा समक्ष केायडाओ रज् करवा, राजा द्वारा रज् थयेला 'हस्तीतलिन' अने 'चरणप्रहार'ना केायडाओनो अजितसेने शीलवतीनी सलाहस्चनथी स्चवेला साचा उकेलो, बुद्धिप्रभावधी प्रसन्न थयेला राजा द्वारा अजितसेने मुख्यमंत्री तरीके निमण्क करवी तथा राजा समक्ष उपस्थित थयेल 'दीन—धूत'ना के।यडानो अजितसेने स्चवेल साचो उकेल इत्यादि कथांशो किव अक पछी एक अविरत गतिऐ निरुपी जाय छे. जे किवनी प्रसंगोनी रज् करवानी कुशाल-तानी शक्तिने स्चवे छे. आ पछी किव संक्षिण्तमां शीलवती द्वारा पोताना शील साथे संकळायेल अम्लान कमल शील—प्रतीक आपवाना प्रसंगनुं निरुपण करे छे.

आ पछी पाछो कथाप्रबाह मंदगतिए चाले छे. किव आ पछी नवदंपती अजितसेन अने शीलवती वच्चेना प्रणय अने प्रणयकलहनुं कंईक विस्तारथी आलेखन करे छे. आ पछी राजा अरिमर्दन अजितसेनने युद्धार्थ पोतानी साथे आववानी आज्ञा करे छे. अहीं कथा कंईक जुदो ज वळांक छे छे. आ प्रसंगनो किव औं चित्यपूर्वक विनियोग करी अजितसेनने शीलवतीना पडनार विरहना प्रसंगनुं आलेखन करे छे. आवी पडनार विरहना ख्यालंथी व्याकुळता अनुभवता अजितसेनने व्यथा—वेदनाने किव विस्तारथी आलेखे छे. जेमां किवनी उत्कट भावालेखननी शक्तिना दर्शन थाय छे. व्यथित अजितसेननुं गृहे आववुं, क्षेनी आवी व्यथित स्थिति जोईने ते अंगे शिलवतीनी पुच्छा, अजितसेने राजानी आज्ञानुं करेल कथन, कथनना श्रवण मात्रथी शीलवतीनुं बेमान थई जवुं, अजितसेननुं शीलवतीने जाग्रत करी आश्वासन आपवुं इत्यादि प्रसंगा किव नाटवात्मक रीते आलेखी जाय छे.

अजितसेन श्रीलवती पासे विदाय लेवा जाय छे, ते प्रसंगे कवि दंपतीना परस्परना स्नेहनी उत्कता, अकबीजानी अनुपस्थितिमां उपस्थित थनार विरहनी व्याकुळतानुं विविध उपमा, उत्प्रेक्षा अने दृष्टान्तनी परंपरा योजी विस्तारथी वर्णदे छे. केटलाक स्थाने कवि जयवंतस्रिने।

परिचय थाय छे पण कथाना प्रवाह अत्रे लगभग स्थिगित थई जाय छे, जे अत्रे किवत्वना उन्मेष प्राप्त थाय छे ते अपेक्षाओ क्षांतब्य छे. शीलवती अजितसेनने विदाय आपी आंधु सारती पाछी फरे छे. अने किव विरिहणी शीलवतीनी हृदयनी व्याकुळताने सुरेखताथी आलेखे छे. अमां किव विरह्मा मूक वेदनाथी आरंभी काळझाळ पीडा सुधीनी स्थितिने अभिव्यक्ति अर्प छे. आ आलेखन कंईक प्रस्तारी [८७३–११११] बन्युं छे. कथाप्रवाह लगभग थंभी जाय छे. पण किव विरहणी शीलवतीनी मानसिक विहवळताने विकळतानुं जे वर्णन करे छे ते शीलवतीना आंतरमानसनी स्थितिने छती करे छे. अत्रे केटलाक स्थाने शुद्ध किवतानुं पण दर्शन थाय छे. जे अनुपम भावनिह्मणानी कविनी मनारम कलाशिक्तिनो पूरता परिचय आपी शकवा समर्थ छे.

आ पछी कथा प्रवाह गति पकडे छे सैन्य आगळ प्रयाण करी क्षेक जग्याके विश्राम ले छे. त्यां अजीतसेन पासे अम्लान पुष्प जोईने राजानी ते अंगे पृच्छा, अजितसेन द्वारा राजाने शील-प्रतीक अंगे सर्व हकीकत जाण्या पछी राजाना मनमां शीलवतीना शील अंगे उपस्थित थयेल शंका, अने आनी चर्चा विचारणा अथे^९ पाताना चार मंत्रीओने बालावी तेओने आ सर्व बिना जणाववी, मंत्रीओ द्वारा पण स्त्रीनी चंचळता पर टीका करी शीलवती अने शील-प्रतीक परत्वे शंका उपस्थित करवी अने स्त्रीओ केवी अविश्वासपात्र होय छे. अवी पोतानी दलीळना समर्थनमां 'पातालसुदरी'नी 'स्त्रोचरित्र निरूपती उपकथा कहेवी इत्यादि कथांशा किव अक पछी एक शीघ्र गतिओ रजू करे छे. पण मुख्य कथाप्रवाह मध्ये आवती उपकथा खासी साडीसातसेा [१३१८–२०५९] कडी रोके छे. जेथी मुख्य कथाना प्रवाह (छेक २०५९ कडी पर्यन्त) रोकाइ जाय छे. वस्तुसंकलननी दिष्टिओ आ थोडोक प्रमाणभंग लेखाय, पण जैन रास साहित्यमां आ वस्तु सामान्य गणावी शकाय क्षेम छे. आ कथा आपवानुं कथागत प्रयोजन ती राजा व्यरिमर्दन मनमां शीलवतीना शील अंगे शंका उपस्थित करवानुं छे पण साथे साथे अंक कथामां बीजी कथा आपवानो अने ते द्वारा क्षेकी साथे बे कथा आपवानी तक किव झडपे छे. वळी किविशे शीलवतीना शीलगुणने आवी व्यभिचारी स्त्रीनुं पात्र रज् करीने कविए शीलवतीना शील गुणने वधु ओप आप्यो छे. जे कविनी वस्तुसंकलना अने पात्रालेखननी साची सूझनुं दर्शन करावे छे. आम उपकथा पण मुख्य कथाने सारी रीते उपकारक नीवडे है.

आ पछी कथाप्रवाह पूर्ण वेगे आगळ वधे छे राजाना आदेश अनुसार चारेय मंत्रीओ हु शील—खंडन अर्थे शीलवती समीप आववुं, चारेय मंत्रीओ द्वारा दुतीओ मारफत शीलवतीने भोगेच्छा अंगे संदेशो मोकलवो, शीलवती द्वारा चारेय मंत्रीओने रात्रिना जुदा जुदा प्रहेरे पोताना गृहे आववानो संकेत आपवो, संकेतानुसार क्षेक पछी एक आवता मंत्रीने वाण विनाना पर्ये केनी प्रयुक्ति वहे गृहना उंडा गर्तमां गवडावी देवा इत्यादि कथा विगतो कवि झडपथी आपी जाय छे. जो के आनी वच्चे वच्चे कवि दूतीना प्रकारो अने तेना कार्य अंगे तथा परदारागमनना देष अंगे दृहा द्वारा निरूपण करे छे नेंधवुं जोईओ.

आ पछी कथावेग कंईक मंद पडे छे. वर्षानुं आगमन थता विरहिणी शीलवती जे जे व्याकुळता अनुभवे छे अेनी वर्षाऋतुना वर्णननी पीठिकामां सुंदर रीते अभिव्यक्ति करे छे. पछी अजितसेन शीलवतीने पत्र रुखे छे जेमां कवि अजितसेनना शीलवती प्रत्येना उत्कट अनुरागने वर्णवे छे. शीलवती आना प्रत्युत्तरमां पत्र रुखे छे, जेमां कवि शीलवतीना हृदयना अटपटा

भावाने, ऐनी विरह व्यथाने, मिलननी झंखनाने कुशळताथी निरुपे छे. जेमां केटलीक जग्यां के कविनी कवित्व शक्तिनां पण दर्शन थाय छे.

अरिमर्दन अने अजितसेननुं युद्धमां वैरीना पराजय करीने पाछा आववुं, अजितसेननुं गृहे आगमन अने अजितसेन अने शीलवतीनुं मिलन, शीलवती द्वारा चारेय मंत्रीओ अंगेनो सर्व कृतान्त अजितसेनने जणाववो इस्यादि विगत कवि तीच वेगे जणावी जाय हे.

राजा अरिमर्दन पोताना चारेय मंत्रीओनी करेली निष्फळ शोध, बादमां अरिमर्दन राजानुं मंत्रीओनी शोधार्थ अजितसेनना गृहे भोजन निमित्ते आववुं, शीलवती द्वारा चारेय मंत्रीओने रसोइ अर्थता 'यक्षो' तरीके रज् करवा, अनाथी प्रभावित थयेला राजा द्वारा 'यक्षो'नी मागणी करवी, अजितसेन द्वारा चारेय मंत्रीओने एक काष्टमंज्षामां पूरी राजसभामां रवाना करवा, राजसभामां चारेय मंत्रीओनुं हास्यापद स्थितिमां 'छता' थवुं, सर्व वृत्तान्त जाणी राजाने शीलवतीना शीलनी खातरी थवी, शीलवती द्वारा चारेय मंत्रीओ पासेथी पूर्वो लीधेल धन पातुं आपवुं अने तेओने 'परस्त्रीना नियम' आपवा इंत्यादि विगतो कवि संक्षिप्तताथी रजु करीने काव्यने झडपी अंत तरफ दोरी जाय छे. वच्चे किव कयांय थोभता नथी.

आ पछी किन शीधताथी कान्यने आटापी छे छे. नगरमां धर्म घोष मुनिनुं आगमन थतां अजितसेन अने शीलवतीनुं अनी वंदनार्थे जन्नु , अजितसेन वहे पृच्छा करात। मुनिनुं अजितसेन अने शीलवतीना पूर्वभवनुं अवण करवाथ। 'जाति स्मरण' थता बन्नेनुं चारित्र ग्रहण करन्नुं, अंते बन्नेनुं वहालोकगमन... अम झडपथी कान्यनो अंत आणे छे. कान्यान्ते किन शीलनी प्रशंसा करी, गुरु अने गच्छनी परंपरा वर्णकी, ग्रंथनी प्रशंसित करी कान्यनो समाप्ति करे छे.

हांगारमंजरीनी पात्र सिंहट विविधतामरी छे. अमां स्त्रीओ छे पुरुषा छे अने पशुपंखी जगतनां पात्रो छे. जयवंतस्रि जेटला कथाप्रवाह परत्वे सजाग छे, एटला पात्रनिरूपण परत्वे नथी एस पण कविचत् लागे छे. कथाना प्रसंगामां ने रीते पात्रो उपसतां आवे छे ते रीते ते अमने उपसवा दे छे. ए अंगे कोई कारीगरी के कसब विशिष्ट रीते ते प्रयोजता नथी. पण तेम छतां केटलाक स्थाने कथा—प्रसंगामां एमना कवित्वना विनियाग थयेला छे. त्यां त्यां पात्रनी रेखाओ तेजस्वी पण बनी छे. पात्रना हदयनी सूक्ष्मवृत्तिनां विविध स्पंदन—गति इत्यादिनुं कविभे साह कही शकाय क्षेत्रुं आलेखन कर्युं छे. पात्रना भाविनरुपणमां कविना कवित्वना उन्मेष जोवा मळे छे

जयवंतस्रिकृत रंगारमं जरीनुं महत्त्वनुं आकर्षण वर्णनो छे. जयवंतस्रिना वर्णना सामान्यत: संक्षिप्त, सुरेख अने आकर्षक होय छे. थोडीक पंक्तिओमां व्यक्तिनुं के प्रसंगनुं वर्णन करी, किंब कथात आगळ ध्यावे छे. तेम छतां एमनुं किंवत्व, अमनी मनारम कल्पनाळीला, मने।हर अलंकारयाजना इत्यादि एमनां वर्णनामां आपणने जोवा मळे छे. वक्षी, पूर्वे आपणे जोई गया छीओ तेम—शुगारमंजरीनुं प्रसंगा अने विगता सहित कथानकनुं समग्र कळेवर परंपराथी इद्ध थयेछं छे. अठले निरूपणमां नावीन्य अने चास्ता लाववा किंवने पोतानी वर्णनशक्ति—शैलीशिक्ति पर सिवशेष आधार राखवानो रहे छे, अने आ संदर्भमां परंपरा प्राप्त वस्तु परत्वे किंवओ पोतानी प्रतिभानो कुशळतापूर्वक करेलो विनियोग किंव माटे यशःप्रद छे.

प्रकृति, पात्रना रूपवस्त्र। छंकारादि, कुदरती के मनुष्यनिर्मित घटनाओ अने पात्रोनां चित्त-कृति व्यापारो—आ सर्वनुं यर्थाथदर्शी वर्णन करवाना कवि जयवंतसूरिना प्रयास स्तुत्य छे.

मध्यकालीन गुजराती कविओ सामान्य: परंपराप्राप्त रूढ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो विपुल संख्यामां प्रयोजता, तदानुसार कवि ज्ञयंतस्रि कृत 'शृंगारमंजरी'मां पण स्थळे स्थळे आवा अलंकारोने। प्रयोग जीवा मळे छे. केटलीक वार कवि जयवंतस्रिक्षे उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक उपरांत अर्थान्तरन्यास, दृष्टांत, व्यतिरेक वगेरे जेवा अलंकारो पण स्वभाविकताथी प्रयोज्या छे.

कवि जयवंतसूरि केटलीक वार लेकोक्ति के रूढिप्रयोगनो उपयोग करीने पण वक्तब्यने स्पष्ट अने क्षेत्रेख बनावे छे.

[आना उदाहरणोनी विस्तृत यादी परिशिष्टमां आपी छे.]

मध्यकालीन काव्यसाहित्यमां 'रास' नामना काव्य प्रकारनुं क्षेक लक्षण के छे के ते क्षेक गेय प्रकारनी रचना छे. एमां तालबद्ध रागमां गाई शकाय एवी विविध प्रकारनी देशीओ रचायेली मध्यी आवे छे. ते प्रमाणे कवि जयवंतसूरिनी प्रस्तुत कृतिमां पण आ प्रकारनी विविध देशीओ जोवा मळे छे.

प्रस्तुत रासमां कुछे अकावन ढाल मळे छे. कविशे आमां जुदी जुदी देशीओ अने रागना उपयोग कर्यो छे. कविए केटलीक ढालेगां परंपराप्राप्त देशीओना उपयोग कर्यो छे. जेमके बीजी ढालमां कविशे 'थूलिमद्र अकवीसोनी देशी'ने। प्रयोग कर्यो छे. अवी रीते नवमी ढालमां कविशे 'गिंसुकुमालना चाढालीया'नी 'श्रेणि परि राणी देवकीशे' शे देशीना प्रयोग वर्यो छे. तो बारमी ढालमां 'श्याम प्रधुम्नना रास'नी 'समोसरण देवइ रच्यु' शे' देशी प्रयोजी छे.

कविञे देशीओमां केदार, केदार गुडी, मल्हार, भीली मल्हार, देशाख, सामेरी, धन्यासी, रामिगिरि, सिंधूडउ, मारुणी, साधुओ गोडी, आसाउरी, काफी, मूपाली वगेरे वगेरे रागोना उपयोग कर्यो है.

कविए रासमां दूहा, चापाइ, हरिगीत, सबैया, से।रठा, उधार वगेरे छंदानी देशीओना उपयोग कर्यो छे. केठलेक स्थळे ता छुद्ध दोहरा अने चापाई पण आप्यां छे.

कवि जयवंतस्रिना कृति—समुच्चमां 'शुंगारमंजरी' सर्वश्रेष्ठ छे. उपलब्ध कृतिओमां सौधी विस्तृत प्रस्तृत कृति कविनी परणित प्रज्ञानी प्रसादी छे. बिहरंगमां तेमज आंतरतत्त्वमां कविनी जामेली हथाटीना परिचय आपनार प्रस्तत कृतिमां स्थाने स्थाने कलाकैशल्य तथा कल्पनाशिकत-कविशक्तिनी झांखी थाय ते स्वामाविक छे.

उपर्युक्त चर्चा-विचारणा परथी आपणे कही शकीक्षे के अशिथिल वस्तुसंकलना द्वारा कथा-निरूपण, सुरेख अने व्यक्तित्वद्योतक पात्रालेखन, गतिशील अने साक्षात्कारक चित्रो आलेखवानुं वर्णन कौशल्य, भाषाप्रभुत्व अने अलंकारोनें उचित विनिद्ये। इत्यादि अंगा परत्वेनुं कवि जयवंतस्रिनुं कौशल अमनी अक कवि तरीकेनी प्रतीति करवाने प्रयीप्त छे. आम जयवंतस्रि केवळ रास करनार रासकार नथी. पण एक गणनापात्र साचा कवि छे, अम निःसंकाचपूर्वक कही शकाय. जैन साधु होवा छतां पण अमनुं कवि तरीकेनुं पासुं पण ठीक ठीक उजलुं छे, प्रस्तुत समग्र कृतिमां एमना कवित्वने। मधुर प्रकाश पथरायेष्ठा छे.

७. शृंगारमंजरी : भाषासामग्री

भाषासामग्रीनी दिष्टिओ 'शुंगारमं जरी ओक महत्त्वनी कृति छे.

अेनी ध्वनिमाळामां 'ऋ' के 'ळ' देखाता नथी. तद्भव शब्दीमां अन्त्य के उपान्त्य स्वरगुग्मों 'अइ' अने ' अउ'मांथी हजु 'छै' के 'औं ' स्वरो विकस्या नथी, जोके छेनुं उच्चारण थतुं हशे छेम कहीं शकाय.

क्षे अने औं तत्सम् शब्दे।मां सचवाया छे. उ त. दैव (९९), भैरवी (१५५), चौर (२४६), यौवन (५८७).

'ऋ' बहुधा 'रि'मां रूपान्तरित थयो छे. उ.त. रिज्ञमति (१६९), ढंढरिखि (१९१), रिज्ञपति (११९९).

चरणांत प्रासमां केाईबार 'इ' अने 'अंना प्रास सधाया छे. जे 'इ'नुं प्रतिसंप्रसारण थई लघुप्रयत्न 'य' थता हावानुं सूचन छे. उ.त. निव होय... नहीं काई (१९९), प्रथम संभागि.. शीलव्रत याग्य (४००), संसारइ तेह... ठारवण करेइ (१०९३), प्रीणइ लेाइ... वहुइ साय (१२६२)

शब्दमां कवित लघुप्रयत्न 'य' मळे छे. उ.त. संभोज्य (११९), तिस्यु (१३८४), च्यारि (२०७४).

'ह'नुं लेखन स्वरसहित जुदुं मळे छे. उ.त. नान्हलडी (६८९), अवहरची (६९७), क्षेह्रवी (१३३६), बण्पीहडा (१३५१).

'न' अने 'ण' मांथी तद्भव शब्दमां स्वरमध्यवती 'ण' सिवशेष आवे छे. मूळ संस्कृत 'न' ने। (प्राकृत—अपभ्रंश द्वारा) प्रा.गु.मां 'ण' थया. छे. उ.त. भाण (६६), नाण, (१०८५), माण (१३८७).

'शु', 'पू', 'मू' से अत:स्थ वर्णीमांथी मूर्धन्य 'प' प्रा.गु.मां तत्सम शब्दामां ज सचवाया छे, उ.त. शेष (१७४), विषम (७६१).

प्राचीन गुजराती ग्रंथोमां तद्भव शब्दे।मां ज्यां 'ष' आवे त्यां छे ओ घणुंखरुं हमेशां 'ख'नां छेखन प्रतीक तरीके वपरायेछा होय छे, उ.त. भाषाइ (१३१२) विष (१३६१), भूष (१४०४). जोके केटलांक तत्सम शब्दे।मां 'शु' सचवाया छे उ.त. शब (११९) अंकुशि (१५३१).

संस्कृत शब्दमां 'स्र' प्रा.गु.मां बहुधा विकार पामीने 'स' बने छे उत. दिसिइ (१९), परदेशी (७५), सिरि (१४८५). सामलां (१५१०).

कवित स्वरमध्यवर्ती 'ई'नुं प्रतिसंप्रसारण थयुं छे. उ.त. वहरी (७८८), वहरणी (१०६९).

प्राकृतमां केटलाक अनादि असंयुक्त वर्णना छे। पछी उद्कृत (अविशिध्ट रहेला) स्वरमां 'य' श्रुति प्रवेशे छे. [जुओ, सिद्धहेम ८-१-७७] अना केटलांक उदाहरणा 'श्रुंगारमंजरी'मां मळे छे, इ.त. मयगल (५०९) गयण (८९१), मायताय (२०३३).

अधतत्सम शब्दने। व्यंजन संयोगि विश्लेष वहे निवासया छे. उ.त. गरव (६३२), परधान (६४१), अनारथ (६६८), परवत (८४८).

चरणान्ते आवेल शब्दना 'अ' अस्वरित होई मन्देाच्चार्य के शांत रहेता संभवे छे. उ.त वखाण (६३४) विनाण (१६२९) मान (१६२९).

केटलाक अर्ध-तत्सम शब्दोमां विश्लेष मळे छे. कोरति (१५), करम (१२०), हिस्सिइ-(१७५), दुरलम (२३६७).

ठ्याकर्ण

नाम, विशेषण, सर्वनाम, क्रियापद अने अव्यय के संस्कृत व्याकरणनां पांचे शव्दस्वरूप अन कृतिनी भाषामां ऊतरी आव्यां छे.

नाम

आ काळनां नामनां रूपाल्याना मुख्यत्वे वे प्रकारनां छे. जेमां क्षेना अंगना विस्तार न थया एवां नामनां रूपाल्याना अने जेमां एना अंगना विस्तार थया होय एवां नामनां रूपाल्यानाः जेने अविकारी अने विकारी नामिक अंगो तरीके ओळखावी शकीओ. अत्रे आ बन्ने प्रकारनी विचारणा करी छे.

'अ' कारान्त पुल्लिंग नामो

पहेली/बीजी

अकवचन

प्रत्ययरहित:

बाप (१२५), कंबुक (४२७), हांगार (१९२२) भूपाल (२०३३), चर (२३११)

विकारी: 'ड' प्रत्यय :

निसासु (८५), मोगरु (५४८), नेसडु (१९७), सींचाणडु (१५४), लींबडु (१७३७), इत्याडु (१६४७), दीवड (१५०), ममरड (४७७), मोरडड (२२१६).

पहेली/बीजी

बहुक्चन

प्रत्यय रहित : सज्जन (३२२), गयवर (७९४) देशस (१८९३), मेशसा (२२५०),

'आ' प्रत्यय : हंसा (४७५), वानरा (२०६५), चरणा (२२००), दंतडा (५), विणकडा (१७८९), संदेसडा (२१४०), भमरला (५४७), बगला (२०८५).

त्रीजी/सातमी

अेकवचन

'इ' प्रत्यय : कुसुमि (६९), सेठि (२८९), कंठि (२२९१) छाकि (२०३४)

'इं' प्रत्यय ः दिवर्सि (६३), सारथवाहि (१३९०), हार्थि (१६७५), हेर्खि (२१५२),

'अइ' प्रत्यय : भमरलइ (५२४), पर्योधरइ (५६४).

'अं' प्रत्यय : हूंगरे (२७३), कांटे (१४२४), गारडे (२१९०), उरडे (२३२१).

'इ' प्रत्यय हैड**इ (१**२४). धतुरइ (१३६२), भाद्रवडइ (१७०२<u>)</u>.

त्रीजी/सातमी

बहुवचन

'ঐ' प्रत्यय : सज्जने (२८४), गान्छे (१८१४), हाथडे (२१०२) दिहाडे (२१०२), नीसासडे (१०७७).

'अ'कारान्त नपु सकल्या नामा

पहेली/बीजी

अेकवचन

'अ' प्रत्यय : काज (१२४), पान (१२५७), कपुर (१८२०), भोजन (२३२६).

अविकारी : 'उ' प्रत्यय : तनु (७१), बापीडु (९५४), उखाणडु (१७९७).

विकारी: 'अंड' प्रत्यय: कटकड (८६५), रूषणड (६५५), चितङ्कं (२१) ह्रईअङ्कं (७१२)

तलावडूं (१६१३).

पहेली/बीजी

बहुवचन

'अ' प्रत्यय : सरोवर (३२३), तहयर (१९१३), चीर (२११०), भोजन (२३२०).

'आं' प्रत्यय: : सज्जनां (१३२), वयणां (१५६७), झांखरडा (५७६) अपराधडां (१९२६).

त्रीजी/सातमी

अकवचन

'ओ' प्रत्यय : वचने (७२८), छीलरे (९९३), मरकलडे (१५९१), फुलडे (१६६१).

त्रीजी/सातमी

बहुवचन

'अ' प्रत्यय : गुणे (५१६), निसाणे (१८२२), नयणले (९६७).

'अ' कारान्त स्त्रीलिंग नामे।

'अ' प्रत्यय : वात (१२३), खेहु (११३६), सान (१९३०), आस (१९७४).

'इ' प्रत्यय : आंखडी (४), सेजडी (९७०), सणगडी (२०४२), सांढडी (२२६९), मजुंसडी (२३२८).

पहेळी/बीजी

बहुवचन

'आ' प्रत्यय : शाखा (३३१).

त्रीजी/सातमी

अेकत्रचन

'इ' प्रत्यय : वाट**इ (१५७),** वाडइ **(१**१६२), छासि (१८८७), थापणि (८१२).

ंइं⁾ प्रत्यय : शरदइं (७५१), लाजइं (१६४१), रातिईं (४४४), शरदिइं (५०३).

त्रीजी/सातमी

बहुबचन

'इ' ग्रत्यय : आंखि (१८३६).

'आ' कारान्त स्त्रीलिंग नामो

पहेली/बीजी

अेकवचन

प्रत्यय रहित : मेखला (४६), गाथा (४६३). छाया (११८३), किडा (१७८५).

पहेली/बीजी

बहुचवन

प्रत्यय रहित : वापिका (४६), प्रेमगाथा (६०२), वालुका (७९), संपदा (२३९१).

त्रीजी/सातमी अकवचन

'इं' प्रत्यय : कलाइं (७२), चेंब्डाइं (१२६), कायाइं (१६७३), दुगाईं (२३८७).

'इ' प्रत्यय : मुच्छांई (९८७), कलाइ (१२९८), विद्याइ (२४११).

त्रीजी/सातमी

बहुवचन

नयण-तुलाई (१२९०)

इ/ई कारान्त पुल्लिंग नामो

पहेली/बीजी

अेकवचन

प्रत्यय रहित : गृहपति (२४५), सारथपति (१३९१), ढंढणरिखि (१९१), ज्ञानी (१९९), योगी (१९९) पडेश्ची (२०७३).

विकारी : अलंकरिड (७३), अंगणिड (२११०), पटहाथिड (६४२) पापीड (१४०८) कठीड (१७९१), दारिद्रीड (२२२८).

पहेली/बीजी

वहुचनब

'आ' प्रत्यय : धूलीआ (१७०), पंथीआ (२३०), पापीआ (१७६१).

'इ/ई'कारान्त स्त्रीलिंग नामो

पहेली/बीजी

अकवचन

अप्रत्यय : हाणि (१२९), मालति (३३६), वेडि (१४०७), आरती, (४७), बारडी (१७३७), धरणी (२३१०).

पद्देली/बीजी

बहुवचन

त्रीजी/सातमी

अकवचन

'इं' प्रत्यय : सृष्टिहं (२२४), सतीहं (४२६), सेरीहं (५५६), गारीहं (१२७५).

'इई' प्रत्यय : शरदिइं (५०२), दैविइं (१४२९).

त्रीजी/सातमी

बहुवचन

इं प्रत्यय : कामीनीइं (५५६), डालीइं (५५७), नदीइं (११८९).

'उ'कारान्त नामो

अविकारी: केतु (४७), राहु (२९९), रिपु (४९९), वसु (१३१५) [पुर्लिग]. कामधेतु (१२), ऋतु (१३), वहु (३४७), इक्षु (१३६२). [स्त्रीलिंग]. प्रश्नु (१२), सुरत्तरु (१२), जंतु (३) बिन्दु (१८३९) [नपु०]

'ऊ'कारान्त नामो

फुलवहू (३५०), नववधू (३८६), स्त्रिक्तिं। भू (२४५), थाल्रं (२२०८), कूड्र (२२४९) [नपु०]

नामयागीओ-अनुगो

उपर्युक्त विभक्ति प्रत्ययो सिवाय बाकीनां रुपाख्याना—नामयोगीओ—अनुगाथी करवामां आवे छे. नामयोगीओ आ कृतिमां पण ठीक प्रमाणमां मळे छे. ओमांना केटलांक ओक करता वधु विभक्तिओ माटे वपरातां होई अने बीजां के जेओने काई चोक्कस अर्थ नथी अने तहन जुदी ज रचना लई शकनारां होई ओ प्रत्येक काई एक ज विभक्तिनां छे ओवो विभाग करवानुं ओ शक्य नथी.

अन्ने नीचे केटलाक नामयोगी अनुगोने विभक्ति प्रमाणे वर्गीकरण करी रज्, करवाना प्रयास कर्यो छे.

त्रीजी विभक्ति :

सिउं

वायस सिउं (९६), पाहाण-सिउं (४२६), केतिक सिउं (१७२२), सारथवाह सिंउ (१९३१) [पुलिंग]. स्तन सिउं (४२६), हैया सिउं (५५९), जल सिउं (१४६५) [नपु॰] नगिर सिउं (६०८), अवला सिउं (१९७५), परनारी सिउं (२०८६) [स्त्रीलिंग].

स्युं/स्यूं

सागर स्युं (१६७), पियु स्युं (१६५७). [पुलिंग] मनस्युं (१९६), मनइस्यूं (१०८) तलाइं स्यूं (१९५) [नपु०].

करी

नोंध: आ खरा स्वरूपमा नामयागी नथी, परंतु मात्र वळगण छे अने मात्र वधु भार बताववा त्रीजीना नामो पछी उमेरवामां आवे छे.

गुणे करी (५१७), मेटि करी (१३८६), सुणी करी (२०५८).

साथ/साथइं

मन साथि (३६२), वनिता साथइं (१९०४), लक्ष्मण साथि (१८६).

चोथी विभक्ति :

नइं

गृह्हनायक नइं (२३९), भूपति नइं (१३१२), सारथपित नइं (१४४८) [पुलिंग] झांझर नइं (५७३), आभरण नइं (२०७०), पंखी नइं (२१८) [नपुं०] ऋषिदत्ता नइं (१९०), नलीनी नइं (८११), साध्वी नइं (२३७६) [स्नीलिंग]

प्रतिं

राथ प्रति (१९१०), अजितसेन प्रति (२१५५) [पुर्लिग] बहु प्रतिहं (१६८), श्रीलबती प्रति [स्त्रीलिंग]

माटि/माटइ/माटिइं

गुण माटि (२५०), स्त्री माटहे (६३८), गुणवंत माटिइं (१४७०).

भणी/भणइ

बरपाटण भणी (३१६), मंदिर भणी (२२५९), श्रीलवती भणइ (६९६) सारथपति भणइ (१८५७).

कन्हर/कन्हइं

तुझ कन्हइ (७०८), तुज वन्हइ (१६५७), तुज कन्हुइ (१७७६)

पांचमी विभक्ति

थी

देहथी (३१२), छोकथी (१७९२), रामथी (२३०२) [पुर्लिंग] मुखथी (३६७), युथथी (१९८८), मरणथी (१४९५) [नपु०] शीलवतीथी (६४३) [स्त्रीलिंग].

थकी

हैया थकी (२१०), घर थकी (६८५), विरह थकी (१४२५).

थिकी

वनिता थिकी (१२३), तात थिकी (६३४), बंधन थिकी (१७७३).

थके/थकां

स्वर्ग धके (१५०७), दूरि धकां (२१८१).

पांहि

स्वर्ग पांहि (५९), सज्जन पांहि (९४९), माणस पांहि (९६२)

पासि/पासई

प्रीड पासि (८७८), सजन पासईं (९८८), नयणां पासि (१५२२)

छद्वी विभक्ति

छट्टी विभक्तिमां केटलांक प्रसंगामां 'ह' प्रत्यय मळे छे. ठ. त. चकारह मुद (७२), पवनह वैरी (३७४). कंतह कार्राण (२९५४) (पुर्लिंग) कुसुमह मालिका (४४) मनह मनेारथ (१९७५) धनह मंडन (२३५९) (नपु०) शरदह तणउ (२८१), मंजुसह मांहि (२३२०). (स्त्रीलिंग)

नुं/नु/नूं (अनुग)

साचतुं (२००७) (पुलिंग)
हतुं (२२), करमतुं (१२६) नयणातुं (१४२६) (नपु०)
अंबमंजरीतुं (१३), श्लीलवतीतुं (१८०), वीजलडीतुं (१९४०) [स्त्रीलिंग]
मोहतु (९), परिमलतु (२०५०), विरहृतुं (२१५९) (पुलिलग)
कमलतुं (९६१), मनतु (१२६) (नपु०)
वितातुं (५७५) निशातु (२३०३) (स्त्रीलिंग)
ब्रह्मान् (४०१), पुरुषन् (४६) (पुलिंग.)
पापन् (७३४), मोतीन् (१९७७) (नपु०)
काडीन् (३५५), शीलवतीन् (१७) (स्त्रीलिंग).

ना/नां

वसंतनां (५१७), परदेशना (१६०९), छयल्लना (२०७८) [पुलिग] सुखना (१९३,) सुकुलनां (१३५२), थणनां (६०६). [नपु०] प्रेमवितनां (७१०) रमितना (७४९) [स्त्रीलिंग]

नि

अजितसेननिं (८००) भूपालनिं (१७८८), बल्लभनिं (२०७२). [पुलिंग] विद्यागनिं (७५१) सुखनिं (१०४४). [नपु०] कामिनिनिं (७७५), भूपतिनिं (६५१) [स्त्रीलिंग].

नी

गौतमनी (१४), प्रेमनी (१९७८), विणगनी (२०६०) [पुर्हिंग] वरसनी (५२०), कुलनी (२०१७), नयननी (२९२३). [नपु०] गणिकानी (७०५). [स्त्रीलिंग.]

नउ

गुण-मणि नउ (८), सुंदरी नउ (९१), सीबलि नउ (५४७)

तणइ/तणइं

नरपति तणइ (३७६), स्वामी तणइ (१९९३) ,धर्म तणइ (२३९४) [पुर्लिग] देव तणइं (७८१). नयणां तणइ (१३४६). पस्य तणइ (२३४३) [नपु०]. मोती तणह (२०००). पंख तणह (२१८६) संगति तणइ (१३६) [स्त्रीलिंग]

तणी

जिन तणी (६९), राय तणी (१४७६), कर तणी (१७०४). [पुर्लिग]. रान तणी (३१९), नीर तणी (१७७८) नरक तणी (२०८७) [नपु.] केसूअडी तणी (५३०), साकर—चूरि तणी (१७०३). कवित तणी (१६८८) [स्त्रीलिंग]

तणा/तणां

दीहा तणा (१३६), मदनराय तणां (५६८). गुरु तणां (२३९२). [पुर्लिग] मीन तणा (१३२९), मन तणां (२१६२). (नपु॰.) सरसित्र तणा (८) (स्त्रीलिंग.)

ਰਗਭ

रत्नाकर तणड (७५), सज्जन तणड (१७४१). प्राण तणड (१९५२) [पुर्लिग] धन तणड (२६२), वसु तणड (१३८६), दैव तणड [मपु.] शरदह तणड (२८१), रमणी तणड (१२२४). [स्त्रीर्लिग].

तणु/तणुं

लोक तणु (१९७), सज्जन तणु (१७३९), प्रीति तणुं (८१).

केरी

दूरियन केरी (१२७३), किंनर केरी (५३१३), माणस केरी (२०७१) [पुर्लिग] दुख केरी (१८६), सोविन केरी. (७९५). [नपु॰].

केर/केरं/केर्ं

दुरियन केरु (७३२), परनर केर्ह (१३१५), गयवर केरू (१६००). [पुर्लिग] कर्म केरू (३६४), भूमिहर केरूं (१४८६).. (नपु०) राक्षसी केरूं (१९०), महिला केरू (१३२८)., गोरी केरू (१८०३). [स्त्रीलिंग]

केरां

सडजन केरां (२९२), माणस केरां (४९४) [पुर्छिग] आयुध केरां (३१३). वन केरां (६६१), पंखी केरां [नपु॰], गोरी केरां (१७९७). कामिनी केरां (२०६१)., (स्त्रीर्छिंग)

केरडा/केरडु/केरइ

सजन केरडा (२६), असित केरडा (१९८४)., वाहलां केरडु (१७९४) परनारी केरई (२०६१)., आउलि केरड (६७८)., विवाह केरड् (१०८)

केरो

वाहला केरो.

सातमी विभक्ति

मझरि/मजारी

तिहुपण मझारी (१५२८)., खाड मझारि (२३०६), मेह मझारी (२३५६) [पुर्लिग] हैया मझारि (१५६९), सुपन मझारि (१६१६) [नपु०]. सह्रोय मजारि (५९३). सभा मजारी (६४७). [स्त्रीर्लिग].

उपरि

प्रासाद उपरि (४७), स्त्री उपरि, (३६८)., घर उपरि (२२५).

मां

छयल्लमां (२८), केाशमां (३६८)., कमलमां (१४९७) (पुर्ल्लिग) विहाणामां (१२०), कारागृहमां (१९८७)., हैयडामां (९९४) [नपु०.] समितिमां (२७), कलामां (८८०); वेडिमां (९९३) [स्त्रीलिंग]

मांहि/मोहइं

अगिन मांहि (१४९०), कोट मांहि (५८३९), सायर मांहि (१४४२) [पुलिल] त्रिभूवन मांहि (६३), वन मांहइं (१९२) पाणी मांहि (२०३) मन मांहइं (२८८) [नपु०]

उपर बतावामां आवेलां अने केटलीय ामिकी विभक्तिओना सादा अर्थ आपवा सामान्य रीते वपराता नामयागीओ उपरांत प्राचीन गुजरातीमां बीजा पण घणां नामयागी छे, अमांना केटलाक् नीचे दर्शाव्या छे.

विण/विना

सुत विण (६७), भय विण (९२२), ज्ञानी विण (१९९२) [पुर्ल्छिग] धर विण (८), इचण विण (१४६७), जल विण (११७०) [नपु०] अरथी विना (२०५), मेह विना (१३५१), दिवस विना (१८७७) हंस विना (२०८५).

साथि।साथइं

मन साथि (३६२), सज्जन साथि (२१८३), सखी साथि (५५२). वनिता साथई (१९०४), सज्जन साथई (१६७०), मन साथिई (९२३)

हेठि/हेटिछं

करीयिल हेठिं (२६१), तहयर देडिलं (२५७), धवल-गृह देठिलं (१३७०)

आगिल

प्रिंड आगलि (९१), पंजर आगलि (४३७), ससि आगलि (५८७), प्रिय आगलि (६०९).

वचालि

थल वचालि (६०१), हृदय विचालि (७३१).

काजि/काजई

गुण काजि (१४३१), कीडा काजि (१४९९), परीक्षा जावा काजइं (६४२), गुण उपराजन काजि (३३१), मिलवा काजि (१६०५).

पाखइ

पुत्र पाखइ (६४), वन पाखइ (६६), जल पाखई (७२८).

सर्वनाम

हूं, तूं, ति-ते-तेह, अ-अह, जे, आप, कु-को, सिउं इत्यादि सर्वनामो क्षेनां विविध विभक्तिजन्य रूपोमां प्रयोजावेलां मळे छे.

			•
	ē	r	
	۲		
_	•	•••	

विभक्ति	अेकत्रचन	बहुवचन
पद्देली	₽ \$\$, ₽\$\$	_
बीजी	मु, मुझ	_
त्रीजी	मइ, मइ, मि, मिइ.	
चोथी	मुहनि	_
पां चम ी		_ *
छट्टी	मुझ, मझ	अम्ह, अह्यारा.
सातमी		•

नेंध ;—आ सिवाय पहेला पुरुष अंकवचनमां महारुं, माहरडा, माहाराइ, माहारा, महारडी जेवां [माहर+ड प्रत्यय परथी थयेला] रूपो पण मळे छे. वळी मोर्क, मोरइ जेवा राजस्थानी पकारनां सर्वनामो पण मळे छे.

पहेला पुरुष बहुवचनसां अह्मारा, अह्मारडउ, अह्मारडी जेवां [अह्मार+ड प्रत्यय परथी थयेला] ह्यो मळे छे. वळी अम्मीणा, अम्मण् जेवा राजस्थानी प्रकारनां सर्वनामो पण मळे छे.

<u>तू</u>ं

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
पद्देली	त्ं., तुं	तुहा, तुहा, तुहा
बीजी	तुझ	
त्रीजी	तइं, तिड्, ति	
चोथी	तुह्मि	
पांचमी		
छट्टी	तुझ	तुम, तुहा.
सातमी		**************************************

नोंध:—आ उपरांत बीजा पुरुष क्षेकवचनमां ताहरइ, ताहरुं, ताहरुं, ताहरा जैवां रूपो मळे छे. वळी तारु, तेरी, तारी, तारां, तोरइ जेवां पण मळे छे.

बीजा पुरुष बहुवचनमां तुह्यारडा, दुह्यमारडइं, तुह्यमारडु, जेवा [तुम्हारे+ड प्रत्यय परथी थयेला] रूपो पण जोवा मळे छे.

दर्शक अने त्रीजो पुरुष सर्वनाम

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
पद्देली	सा, स, सं, सो, सोइ,	_
	ति, ते, तेह, तं, अहे, भे, इ, भो	-
बीजी		
त्रीजी	इणि, तिणि, तिणइ	_
चोथी		_
पांचमी		_
छद्री	तसु, तासु, तास, तेहनां, तेहनी	_
स्रातमी	तिणि, तिणि	

नेांध:-साधित रूपोमां इंसिड, इंसिडं, इंसियां, अह्वूं, अवडां, अवडुं, जेहवा, जिसिया, जिसिड, जेहसिड, जेता, तेवडा, तेवडी, तेवडु.

स्ववाचक: अप्पणा, आपइ, आपि, आपणड, आपणमइ, आपणां.

सर्वनामो : आपणु, अप्पणूं, अप्पणु, आपणेइ.

अनिश्चित सर्वनामो : क, को, कोइ, कांइ, कइ, केवि, सवि, सहू, केता.

संबंधक सर्वनामो ; जे, जंजं, तंतं, जेजे-तेते, तां-जां.

प्रश्नार्थ सर्वनामो : किसिडं, किसिड, केतइ, केतला, केतल्लं.

बचन: विकारी अंगवाळा नामना बहुवचनमां पुलिंगमां अंगनो 'आ' मळे छे अने नपुंसकर्लिंगमां 'आं' प्रत्यय लागे छे.

'आ' प्रत्ययः विशारदा (४८), रूडला (५९७), भमरला (५४९), दीहा (१०७५), वणिकडा (१७८९) वानरा (२०६५). [पुर्लिग]

'आं'प्रत्यय ; नयणलां (४), पारेवां (२१७), फुलडां (९०७), वयणां (१५७७), क्रियाणडां (१७९१) [नपु॰].

अविकारी अंगवाळा नामना बहुवचनमां कोइ प्रत्यय लागतो नथी. पण संदर्भ उपरथी के कियापद के विशेषणादिकना स्वरूप उपरथी बहुवचनत्वनुं सूचन थइ जाय छे.

दोहिला वक्ता (१८), दुख सह्या (१९२), मंदिर प्रजाल्यां (२८८), उंचा आंबा (३२४), फल वेडीयां (८८९), फल पाकां (१६४२).

लिया: मध्यकालीन गुजरातीमां मळता अणे लिंगोनां उदाहरणो क्षत्रे मळे छे.

पुंलिंग: मयगल, जनम, ब्रह्मा, विधाता, गृहपति, वासूकि, रिपु, मधू.

स्त्रीलिंगः वात, खेह, आस, गाथा, सभा, काया, हाणि, कुरंगि, भमुहि, कीरति, नववधू.

नपुंसकल्पि : चीर, ढोर, अफीण, प्रश्रु, मटकु, इक्षु, भू

,6

विशेषण

विशेषणोमां अविकारी अने विकारी अंगोना नामनी जेम ज रूपो मळे छे. आमांना अविकारी अंगना विशेषणो विशेष्यनी पूर्वे अने पछी कोई जातना फेरफार विना ज प्रयोजाय छे. विकारी अंगनां विशेषणोमां सामान्यत: विशेष्यनां लिंग वचन विभक्ति अनुसार फेरफार थाय छे.

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
पहेली/बीजी	मोर्ह जंतु (७१), झीणड चंदछं (२७८). भागु कांडडु (१०५३), गुणवंती कामिनी (९५), नीली कांचली (१२०९), मीठी सेलडी (१२०८)	दोहिला वक्ता (१८) ₹ाता हाठडा (५५८), ऊंचा आंबा (३२४), दाधा रूखडां (२७५)
त्रीजी/सातमो	बारमइं दिवसि (७१), महारइं माउल्हं (३२९) इंगि अवसरि (११५८), सुनि रानि (८१७). तिणि पुरि (२३३६), गुरूयिं धर्नि (२३५५)	गोरे गालडे (५६९), वणिकने आहरडे (१८३१), अहेवे बोलडे (२०७६),थाडे दिहडे (२१८२)

संख्यावाचक विशेषणो :

अंक (६९), अंकि (२३४), अंकी (१०२७), अंकन् (२०४४) अंकइ (२०८), दो (४६२), त्रि (३७३), त्रिहु (१५२९), च्यारि (१२६०) चियारि (११०९), पांच (११४), छ (४६०), नव (६१३), दस (१४५७), पन्नर (३५५), सत्तर (३९६), सहस्र (४५९), लाख (४५९), कोडि (४५९), अर्बंद (४५९),

क्रमवाचक विशेषणोः

प्रथम (४२,२४१६), पहिल (९९१), पहिल (१२८), बीझ (७८), बीजाउ (११७), तृतीय (২০৩২), चउथइ (४६२) पंचम (४६१), पांचमी (২३८५). दशमी (২২५०).

क्रियापद

किपापदनां त्रणे कालनां इप मळे छे.

वर्तमान काल-कर्तरि रूप

पुरुष	ए.च.	ब.व.
१ हो	विरमउं, गमुं, जोडं	-
	लहूं, कहूं, प्रीस्	
२जो	कहि, आणइ, जाणइ	-
३जो	कग्इ, खणइ, अछह, वांछई	भिज इं, म इं, बोलइं

कर्मणि रूप मुख्यत्वे त्री.पु. क्षे.व. अने ब.व.मां मळे छे जेमके, कीजइ (६२५), संतीखीइ (६२६), हीडीइ (६२८), सेवीजइ (३३१).

भविष्यकाल-कर्तरि

पुरुष

ए.व.

ब.व.

ं लो देखसिंड, पालेसिंड

करसिंड, आसिसिंडं, मिलिसिंडं, वखाबिंडं

२जो कहिस, करिस, वरसिस, जाएसि

३जो अहिसइ, स्करइ, लाजसइ, फलसिइ

आज्ञार्थ

शुद्ध आज्ञार्थः बी.पु. ए.व.-भेलि, करि, झ्रि, समरि, महेलि

बी.पु. ब.व.-आपु, जोड, सुनु, कहु, सुणु

भविष्यार्थ आज्ञार्थ ; बी.पु.ए व.-हजे, वाधजे

बी.पु.ब.व.-वूलगो, पधारया, सींचया, राच्या, खमया.

(संभव छे के उच्चारण 'ज' होय,)

भविष्यः म आणिस (५३१), म बहैिस (६७८), म वंछिस (७८७), म घरिस (८०३), म उमजिस (१७४५), म उतारिस (२२४४).

कियापद (प्रेरक)

'आव' प्रत्यय : वजावह (५४१), नचावह (५७६), ठमकावह (५७६), चडावि (६९१),

महेलावि (७९१), सभावि (६९२)

'आह' प्रत्यय : उडाडइ (५८०), कडुआवीया (८३१), बोलावीया (९४७), मायावीयां (१३०९),

रीसावियां (१३०), लजाविया (१३५६).

कृदन्त

कृतिमां वर्तमान, भूत, संबंधक अने देत्वर्थ कृदन्त मछी आवे छे.

वर्तमान कृदन्त मां किंद्रुत (८), अवटातु (१४०८), कांपतु (१५६९), रुचतु (१८३१), एकबचनमां अने भमता (२२८), चालता (७९३) सुण्तां (१३४), धरतां (१७०), हीडतां (९२३), समरतां (८९६) बहुवचनमां मळे छे.

आ उपरांत संस्कृत 'अन्त' [एनुं निर्बोळ स्वरुप 'अत्'] मांथी प्राकृतमां विकसेला 'अन्त' अंगथी बनेला चलती (१), झरता (२०५) करता (१८) झ्रांता (२९) ६प ठीकठीक प्रमाणमां मळे छे.

संस्कृत कर्मणि रुप बनावता 'य'ना विकास 'इ' केटलांक वर्तमान कृदन्तनी पूर्वे आवी मळया छे. उ. त. बीहेतु (५८०), कहीतां (८३३).

भूतकृदन्त मां दीठउ (४२२), पइठउ (१८२४), जालिउ (५५४). वसीउ (४५१), पूरीउ (२३७३) पुर्लेग एकवचन अने बइठा (१९३), तूठा (१९३९), परिभव्या (३०१), मम्या (१८५) दाखव्या (१४१०) पुर्लिंग बहुवचनमां मळे छे.

नपुंसक लिंग एकवचनमां सुणड (७२१), छेदिड (२८). करिड (३६३), लहिड (२३७९). कीयूं (६४८), खायूं (१०९०), वंचीड (५९८), टालीड (२१२९), वल्षु (१८१), कीयुं (५७७), लीघां (६४), कीवां (६४). लाघां (१०३९), पइटां (४६२), बइसतां (१३६३) जेवां रूपो मळे छे.

हेत्वर्थ कृदन्तमां बूजविवा (५१७), पामिवा (५१८), वधारवा (६२४) चलवा (८२५) त्यजवा (१७५४). श्रीसवा (१८१३). लिखवा (२१६६).

विध्यर्थ कृदन्तमां छे।डवु (६८८), उल्हवु (१०४७), वीनवूं (६४९), मानवु (६६९), मढावूं (२२६३) इत्थादि मळे छे.

संबंधक कृदन्तमां नमी (९), वीनवो (६९). अभीय (४६४), वंकीय (५६३), सुणीय (५९५), सुस्तीय (११३९), मंत्रीय (१२५४) जेवा रुपो मळे छे.

आ उपरांत वधाराना अनुग 'नइ' लागीने थयेलां रुपो पण मळे छे. करीनइ (६१), लहीनइ (६४३), भरीनइ (६३५), आवीनई (६५०) 'अण'वाळा कियावाचक कृदंतने ह+कार > आर लगाडीने कर्तुवाचक नाम बनावाय छे. उ. त. चालणहार (८३५), सींचणहारा (८६७) कारणहार (१४५९), लडणहारा. (८९८) मागणहारा (१७५०).

अन्यय

अव्ययोमां कियाविशेषण, नामयोगी, उभयान्वयी अने केवलप्रयोगीना बिकास आ भूमिकामां ठीक प्रमाणमां छे.

कियाविशेषण अन्यय

स्थलवाचक: जां, जिहां, तिहां, उपरि, दूर, दूरि, तिहांथी, किहांथी, तां.

काल्याचक: हवडां, हिव, हवडाडइ, हवइ, जवथी, तवथी, आगइ, जव, तव, आगि, आज, जाम, ताम, केवार, केवारई, पुणरिव. अहिनिसि, सदा, वारंवार,

पछइ, तिणिवारी, जेणिवार, जिहारइ.

रोतिवाचक: जिम, तिम, जं, तं, इम, किम, एम, किमइ, परि, परिपरि, वेगिरि, इणि परि, एणि परइ, सहजइ.

कारणवाचक: कां, कांइ, किम, कांइ, के।इ.

निश्चयवाचक : निटोल, निश्वइ, सहो.

नकारवाचक: ना, न, नहीं, नवि, म.

संशयवाचक: कि, किरि, रखे, जाणे, जाणि.

नामयोगी अन्यय

स्थलवाचक: पासि, वरि, उपरि, मझारि, लगई, मांहि, मांहइ, मांहइं, प्रति, भणि.

कालत्राचकः आगिल, पाछिली, आगई.

सहितार्थक: सिखं, सहित, साथि

रहितार्थक: विण, पाखइ, विना

तुलनावाचक: समान, पहि, पांहि, समाण, सरसी.

साधनवाचक : थिकी, करी.

८. सदर्भग्रंथसूची

१. अंग्रेजी पंथो

Folkore as a Historical Science G. L. Gomme, London, 1908 Folktale

S. Thompson, New York, 1951.

Folktales of Bengal

Lal Bihari Day, London, 1912

Folktales of Kashmir

J. H. Knowles, London, 1888.

Motif Index of Folk-literature (Vol. I-VI)

S. Thompson, Bloomington, 1946

Motif and type Index of the oral tales of India

S. Thompson, Jonas Baly, Bloomington, 1949

The Types of the Folktale:

S. Thompson, A. Aarne, Bloomington, 1928

२. संस्कृत-प्राकृत-प्रंथो

कथासरित्सागर : सोमदेव भट्ट

निर्णयसागर प्रेस, मुंबई, १९३०

कथासरित्सागर : खंड १-२; सेामदेव भट्ट अनु केदारनाथ शर्मा, पटना १९६०

कुमारपालप्रतिबोध : से।मप्रभाचार्य मुनि जिनविजयजी, वढोदरा, १९२०

बहत्कथामंजरी-क्षेमेन्दकृत

सं. शिवदत्त अने परब, निर्णयसागर प्रेस, मुंबई, १९३१

भरतेश्वर बाहुबलिवृत्ति : भाग १-२, शुभक्षीलगणि देवचन्द्र लालचन्द्र, सुरत, १९३२

शीलवती कथानक

हंसविजय जैन लायब्रेरी प्रंथमाला, समदावाद, १९२०

३. हिन्दी ग्रंथो

युगादि देशना-साममन्डनगणि कृत

अनु. श्री. विनयश्री महासति, जयपुर, १९३०

रास अने रासान्वयी साहित्य

ा. दशरथ ओझा, दशरथ शर्मा, काशी, १९६०

शत्रुंजयतीर्थोद्धा रप्रबंध

मुनि जिनविजयजी, भावनगर, १९१७

संदेशरासक : अब्दुल रहेमान कृत,

सं. हजारीप्रसाद त्रिवेदी तथा विश्वनाथ त्रिपाठी, मुंबई, १९६०.

४. गुजराती प्रंथो

आनंद काव्य महोदधि-मौक्तिक १-८ सं. जे. ऐस. झवेरी, मुंबई, १९१८

आपणा कविओ : के. का. शास्त्री गुजरात विद्यासभा, अमदावाद, १९४२

डपदेशप्रसाद, भाग--२ : विजयलक्ष्मीसूरि कृत [भाषान्तर] श्री जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, १९२२

उषाहरण : वीरसिंह कृत

सं. भा. जे. सांडेसरा अने अं. बु. जानी, मुंबई, १९३९

ऋषिदत्ता रास : जयवंतसूरि रचित

संपा. निपुणा दलाल, ला. द. भा. सं. विद्यामंदिर, अमदावाद, १९७५

कथासरित्सागर भाग १-२, सामदेव भट कृत

अनु. इ. सू. देसाइ अने शा. वि. शास्त्री, मुंबई १९१९

कर्पूरमंजरी: मतिसार कृत

सं. भा. जे. सांडेसरा, मुंबई, १९४१

गुजराती काव्यप्रकारो

डेालरराय मांकड, १९६४

गुजराती साहित्य परिषद पत्रिका, प्राचीन रास काव्यो, डा. हरिवल्लभ भायाणी, फेब्र्–मार्च, १९४७

गुजराती साहित्य—मध्यकालीन अनंतराय रावल, मुंबई, १९६३

गुजराती साहित्यनां स्वरूपे।

म. र. मजमुदार, वडोदरा, १९५४

गूर्जर रसावली

संपा. ठाकार, मोदी, देसाई, वंडादरा, १९५६

जंबुस्वामी रास: यशोविजयजी कृत

सं. डा. रमणलाल ची. शाह, सुरत, १९६१

जैन गूर्जर कविओ, भाग १-२-३

मा. द. देशाई, मुंबई, १९२६-४४

जैन साहित्यना संक्षिप्त इतिहास

मा. द. देसाई, मुंबई, १९३३

प्राचीन फागु संप्रह

संपा. डा. भा. जे. सांडेसरा, डा. सा. घू. पारेख, वडादरा, १९५५

प्राचीन-मध्यकालीन बारमासा-संग्रह

संपा. डा. शिवलाल जेसलपुरा, अमदावाद, १९७४

भरतेश्वर बाहुब्लि वृत्ति [भाषान्तर] : शुभशीलगणि कृत

अनु. मा. ओ शाह, जैन विद्याशाला, अमदावाद, १८९९

मदनमोहना : शामळ कृत

संपा. ह. चु. भायाणी, मुंबई, १९५५

मध्यकालना साहित्य प्रकारो डा. चन्द्रकान्त महेता, मुंबई, १९५८ मध्यकालीन रास साहित्य भारती वैद्य, मंबई, १९६६ रूपसंदर कथा-माधव कृत सं. भा. जे. सांडेसरा, मुंबई, १९३४ वसुदेवहिन्डी, प्रथम खंड (भाषान्तर) संघदासगणि अनु. भी. जे. सांडेसरा, भावनगर, १९४७ वसंतविलास : अज्ञात कृत संपा. का. ब. व्यास, मंबई, १९४२ शमामृतम-नेमिजीन स्तवन संपा. धर्मविजयजी के।वीर्याक, १९२३ शीलेपदेशमाला, जयकीर्तिस्रि कृत, सामतिलक कृत टीका (भाषान्तर) जैन विद्याशाला, अमदावाद, १९०० श्री कुमारपालप्रतिबाध : सामप्रभाचार्य कृत जैन आह्मानंद सभा, भावनगर, १९२७ श्री जैन सत्यप्रकाश, प्रा. हीरालाल कापडिया, अमदावाद, १९४६ श्री जैन सेाळ सति चरित्र, सं. अ. ओ. शाह, अमदावाद, १९३९ श्री श्राद्ध प्रतिक्रमण सूत्र-वंदित्त सूत्र (भाषान्तर) सं. धर्मविजयजी, वडादरा, १९४६ संशोधननी केडी, भाे. जे. सांडेसरा, अमदावाद, १९६१

५ जूनी गुजराती हस्तप्रतो

ऋषिदत्ता रास-लींबडी भंडार, लींबडी
गीत संग्रह—ला द. भारतीय संस्कृति विधामंदिर, अमदावाद
नेमिनाथ राजीमती—ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद
बारभावना सडझाय—ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद
शीलवती चुप्ह—देवरत्न—ला. द. भारतीय संस्कृति त्रिद्यामंदिर, अमदावाद
शीलवती चुप्हपदिका—कुलशधीर ,, ,,,
शीलवती रास—जनहर्ष ,,,,,
शीलवती रास—दयासार ,,,,,,
श्रीगरममंजरी—जयवंतस्रि—ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावाद
श्रीगरमंजरी—जयवंतस्रि—हेहेलाना अगसराना प्रथमंडार, अमदावाद
श्रीगरमंजरी—जयवंतस्रि—वीरविजय उपाश्रय प्रथमंडार, अमदावाद
श्रीगरमंजरी—जयवंतस्रि—वीरविजय उपाश्रय प्रथमंडार, अमदावाद
श्रीगरमंजरी—जयवंतस्रि—वीरविजय उपाश्रय प्रथमंडार, अमदावाद
श्रीगरमंजरी—जयवंतस्रि—तपाच्छ जैनशाला प्रथमंडार, खमात.

जयवंतस्रिकृत

ञ्चारमंजरी

दूहा

चंद्रवद्नि चंपकवनी, चारुंती गजगत्ति, मयणराय मंदिर जिसी, पय प्रणम्ं सरसत्ति. १ सोविन-चुडी करी धरी, उरवरि नवसर-हार, पिय झांझर झमकार. २ खळकति सोविन-मेखला. वेणी-दंड प्रचंड जिस = द्येष−भुयंग, नाग सुरंग सभंग. ३ अंग अनंग अभंगन्, कटि तटि झीणउ लंक, पीन-पयोधर भार भर, विकसित-पंकज नयणलां, धणुह जिसिउ भूवंक. ४ दाडिम-कुली जिम दंतडा, अधर प्रवाली-रंग, नाशा दीप-शीखा जिसी, नयणे जित्त कुरंग ५ काने कनक−ताडंक, कोमल किशलय कमलकर. घन पीन स्तन जघन-युग, कयली-कोमल जंघः ६ कमल कमंडल करि धरणि, धरणि प्रसिद्ध सनाम, सारद सेवक सुखं-करणि, करणि गति अभिराम ७ सचराचर व्यापी रही, गुण-माणि नड भंडार, गुण अनंत सरसति तणा, कहितु न छहं पार ८ सरसति पय-पंकय नमी, प्रणमुं श्रीगुरु-पाय, नाण-दिणाहिव दक्खवी, टालिंड मोहनु ठाय ९

ढाल ः १ चोपाईनी

सिह्गुरु-चरण नमूं निसिदीस, जेहथी पहुचइ सकल जगीश, जेहथी लहीइ धर्म्म-विचार, सकल शास्त्र सद्गुरु आधारि १० खीणउ झीणउ जड सकलंक, किम कीजइ गुरु तुल्य मयंक, दिन दिन चडत कला अकलंक, कुमत-राहुनु भंजइ वंक ११

जयवंतसूरिकृत

सायर खारु रवि आकरउ, जाणीइ, सुरतरु काष्ट-रूप जे मूरख ऋतु वसंति कोइली सर होइ, वडतपगछि अति महिमावंत, शीलिं थूलिभुद्र सरसति बुद्धि, चंद्रकला जिम अति उजली, श्रीवसुदेव, सौभागि जिम साकर दूध सेलडी सद्राक्ष, वाणी–पीयूष, जस सहिगुरुना प्रणमी पाय, शुंगारमंजरी, प्रंथ कर्

कामघेतु पशु मणि पाथरु, सहिगुरु सम किम वखाणइ. १२ अक्षर लहूं, ते महिमा सद्गुरुनु अंब-मंजरितुं महिमा सोइ. १३ श्री विनयमंडन उवझाय महंत. गौतमनी परि लिब्ध प्रसिद्धिः 88 जस कीरति चिहुं दिसि झलहली, अहिनास नरवर सारइ सेव. १५ जेहवी मींठी आंबा-साख. निर्मल-चंद्र सुचंद्र 88 मयुख. जयवंतसूरि एकविंतइं थाइ. बोऌं शीलवतीनं चरी. १७

द्हा

शास्त्र करंतां दोहिलां, ते पहिं श्रोता थोडिला, सुजन विस्तारइ दृहु दिसिइ, सरूवर प्रसवइ कमलनइं, सालंकार सुलक्षणि, सुकवी वाणी–सुंदरी, वंकिम चित्त सुवन्नमय, पथ चमकइ चितढूं हरइ, बांकां कठिन ससामलां, पइ पइ हुइ अलखामणां, देखी बाहलां मांगसां, नव संभुक्ता वहुअ जिम, हैंडळूं , गाहा महिला उलंभडे, तणे वहाळां सीस घूणेविंण हैहलूं, गुणतां सजन केरडा, जोतां नीसासइ बल्झ, सरस सुभाषित समितिमां. तस हैडूं परमत्थ-सिउ, मुरख पभणइ छयहमां, सिर--छेदउं जाणइ नहीं,

दोहिला वक्ता महीमंडलि को कवीयण सरस प्रबंध संमिर गैध. वधारइ सरस अनइ गुणवं चमकइ चित्त हरंति. २० सुकवि-वयण सुरम्म, गोरी-नेउर जिम्म. 2.8 कुकवि-वयण विकार. जिम अय-संकल भार कुकवी-वयण सुणंति मुह मचकोडाव जंति अणरसीइ न जणाइ, रसीआ जिम जिम केलवई, तिम तिम अधिकां थाइ २४ कवीयण वयण विलासि, मरकलडे करइ हास गाहा-रस सविलास, सुणतां दिइ उल्हास. सह को समद्रं भणंति, ते को छयछ रहाति. छंद-विहीण, रुक्षण कोद्डिं दीण भमृहि

शृगारमंजरी

गीय सुकामिनी, तुरीयां रस न लहंति, गाहा तीह मुक्खह सेा डंडडु, तेहिंन ते नवि हुंति. २ए भावके, निनिदंति, कवीयण मुरख न लहइ कोडी भूंडानइ' कीडा हति. ३० अलखामणा. सुमांणसह, रस नवि जाण्या जेण. गाहा गीय नींगमीआ तिणि मुरखि निज दीहडा, आलेण. ३१ जो गुण करणि समत्थ, सुकवि बीयणलां, सोदु मुरिखां, कां दूसइ कवि सत्थ. ३२ भाव न जाणइ काढइ कवीयण दोस. मुरख न लहइ भावके, कामिनि शुष्क-पयोहरा, सोइ सिउं घरइ रोस. 33 मुरुव्रनि जड नवि गमिड, तउ सिउं निरगुण सत्थ, तड सिडं ते अकयत्थः कमल तिजिउ साऌरडे, ३४ वाणी सहिजि सर सजड, दोखी किसिउं करंति. खीं जि एक छंडइ लक्ष आद्रइ, वइरी मरंति 34 एक उल्लुकह निव गमिउ. **उगि**उ दिणयर सार, तु सिउं सुरय-गुण गयउ, सघलइ 3 8 हूउ विस्तार. किहि एक व्यास समास किहि, सोहइ प्रबंधि, सरस गिरिमा से।हइ गोर-थणि, अणिमा लंकह-संधि ३७ पयड स दाहिणि जिम्म. गुप्त न गूजरि थण समा, गुप्त विपयडवि अत्थवर, सोरठी-थण सम्म. ३८ वीनवुं, के।इ म धरयो खेद्, जोडनइं एवी वार्ति नहीं 39 सुकवीनु दास हूँ, उद्यिं विहसीइ, दोसायर सहंति. न सज्जन चरित जयंति. 80 पंकजनी परि, सुगुणा सारद सहिगुरु सुकवि जन, प्रणमी चरण-सरोज. वखासिउं, जिम सहुनइं हुइ चोज. 88 शील-चरित्र

ढाल २

राग : केदार

(श्रेणिक रायवाडि चढियो, से देशी)

पृथिवीय मंडल सयल कहीइ, प्रथम जंबूद्वीप, सिव द्वीप मांहिं मूलगडं, जिम वृक्ष मांहिं नीप, तिहां चित्त पवित्र सुसत्त खित्तह, प्रथम भारत खित्त, तिहां नयर नंदन नाम निर्मल, चिहुं खंड मांहि विदित्त. ४२

जिण पुरि मानिनी चमकंति चल्लइ, राणिण नेपुर पाय, लडसडित मदन उत्तंग तोरण गगन सरिसु, चउपट्ट चिहु दिसि मालीयां, सिस-वयणि खेल्छित रसिक, अ चतुर मांनव चित्ति चितइ, व्यवहारि नंदन चतुर चल्लइ, कर-प्रहित अंगुलि अकमेकि, किहिं करति नाटक गीत गावति, हींडोडि हींचित रास देवति. जिहां चतुर चउकीपाट्टे चहुटइ, मनगमत छंखति सारपासा. कुरुविंद् चित्रित साहामा साहामी. इसीअ च्यारिति चतुर चहुटइ, आवास-अंगणि रणकंति ने उर कनक-कल्जीं. मलपंत मनसिज मत-मयगल, चमकती मचकु नयन दाखति, जिहां कनक-कलस त्रितय मंडित, अवर मेरु महि-तलि. जिनमूर्ति मनोहर देव-मन्दिर, कनक-दंडिं, केतु चंचल प्रासाद ऊपरि मंगल धज पुज जिहां वसति वसति नागदंसण, अत्राण बोहग कम्म सोहग, सिंह जि सेाहग संजया, जिहां पठित विद्या लेखशालि, भगति माइ वर्गसांड, किंहा करति शास्त्राभ्यास राउत. व्याकरण-विद्या गीत नाटक, किहिं करति कक्केश तक्के-चर्ची, काव्य संगीत नाटक सत्य साहित. जिहां दान-मंदित चमकंत चहुटइ चतुर चल्लइ, बिहु पक्षि निर्मेल पद्मिनी-वर, प्रेम जिणि नयरि निवसति रसिक मानव, विमल-सरवरि

गहेलडी, गति चित्त मयगलराय...दुपद... जिहां करति मंदिर वाद, जिहां सप्तभूमि-प्रासाद, संदर-जन नयन-नहीनी सविकासि. शत चंद्र किस आकासि ४३ लडसडत करित टकोल. मुख-भरित सार तंबोलि, कंडि कुसमह-मा लेका. सोल वरसी बाह्यिका ४४जि[.] विणग खेलित सोगठे. दाह देवति अति हट्टउछि सुदीस ओ, विणग बडठा हींस अ ४५जि. सजल-कुआ, विमल-जल भरि वापिका. नीर आगति बालिका. चालि खलकति मेखला, रसिक निरखति विह्वलाः ४६जि. सकल सुन्दर झलहलइ, लहलहइ. आरती. वर पेखतां मन गहिगहइः ४७जि. चरण गुण-मणि संजुआ, छात्रबुद्धि सारदा, गणित अंक विशारदाः ४८जि शास्त्र चर्चा पंडिता. वेद-वाद अंखडिता. प्रश्न प्रहेलिका. चंपूमालिका. ४९जि॰ चतुर हस्त-मस्तक, विविध भोग सुबधुरा, राजमंदिरि सिंधूरा, परिमल मंजुला. हंसली ५०जि.

जिहां रोग सोग वियोग, दोहम दुःख दालिद चंडिमा, रणराय अंगणि वैर-परभव, नहींअ कहींइ जिहां छंड-भंडा चरड-चंडा, खंट-छंटा नट नहीं जट्ट मोटा ख़ुंट खोटा, विकट संकट जुवटा ५१जि. जिणि नयरि चिहुं दिसि विविध, चित्रित प्रौढ पुष्कल पोलि, मंगल काज, अनुदिन हेम-तोरण उली, बद्ध तिहां पोलि पोलि दानशाला, जिमति मानव जे विबुध सेवित सौख्य, मंडित स्वर्ग सरखी जोडिः ५२जिः जिहां सगुण अर्थी सर्व मानव, गुणवंत पंडित जिहां कुसुममाला मत्तवाला, धरइ मालिणि आश्चर्य नाटक गीत मनोहर, चतुर मानव गाम. जे छयल सुन्दर रसिक भोगिक, ते योग्य वसवा ठाम. ५३जि. जस नयर बाहिरि सजल सरुवर, नदी नीरि निर्मली तिहां विकच-पंकज प्रेमि भमरा, भमति भोगिक मनरूली तिहां हंस सारस अलस चालति, चतुर चकवी चमकती. बक डाक चातक ढिंक चाकवा. पालि खेलित श्रभगति ५४जि. कदंब जंबू, बिंब जंबीर निव प्रलंबया. अंब बदरी बहुल बीली, बोल बाउल बंध्रक तुंबया, कदली, बकुल केतकी हिंताल ताल तमाल बहदला. किल वृक्ष बेउल सदल चंचल, कमल विमल परिमला ५५जि. वालक मंझला, जिहां तिलक जालक सरल सालक, बकुल नव निलन नालक मदन मालक, नीर खालक बंजुला, वर नल रक्त मालक तरल तालक, कुसुम, शालिक परिमला, आराम पालक चतुर मालिक, वृक्ष चालक बहुद्छा. ५६जि. जिहां जाइ जुइ बमिल कूइ, चतुर कामिनी, हुइ रित-राय नारी कुसमि सारी, भमर भारी जहां बहुल परिमल बकुल संकुल, विमल-सर जल शीतला, जिहां मलय-मारूत मधुर-आरुत, भन्नर किंनर जीतला ५७जि. जिहां राम-लक्ष्मण भीय-अर्जुन, नकुल-सहदेवी जिहां सोमवल्ली अक्के कक्के, सिंहका-सुत अति खरा, जिहां कुंभकर्णि िकिछित-क्रूबा, भूमि संभव-मूनियुता, नयर-वाडी देव-मानव, परम पुरुषि सेविता ५८जि॰ सोइ स्वर्गपाहि अधिक पत्तन, वावि कुआ वाटिका. जिहां चतुर मानव चतुर नारी, पहिरंत अनुदिन साटिका, परिणामि नंदन नामि नंदन, नयर-शिरोमणी जाणीइ, जे नयर नव नव भीव पोषी, कवीस्वरे वखाणीइ. ५९जि.

ढाल ३

राग : देशाख

(थूलिभद्रना अकवीसानी देशी)

तेणि नयरि राजा अरिमर्देन भछ, सत्य नामइं रे परिणामि वछी सांभछ, जेणि भंजिड रे वहरी जननु आमछ, जस व्यापिड रे त्रिभूवनमां यश निरमछ,

तूरक.

त्रिभुवन्त मांहि पुहुवि नाहिं, सर्व पांहि निर्मेलु,
यश आप थापिउ भुवनि व्यापिउ, चंद्र शापिउ कशमलु,
वइरीअ जीता जग-वदीता, केवि भीता अणुसरइ,
दारिद्र कापइ कीर्ति थापइ, वैरि कांपइ थरहरइ. ६०
तेणि नयरि रे गुण रयणायर धाम रे, रयणायर रे व्यवरारी अभिराम रे,
पुरुषोत्तम रे वसवा केरुड ठाम रे, जस अंगि रे नहीं जड भावनूं नाम रे

तूटक

जडभाव करीनइ न वेरी, नहीं अनेरी कालिमा,
मुहिं मधुर भीठड सुजिन दीठड, गुणिंह जेठड चंगिमा,
मर्याद राखइं नेह दाखइ, सरस भाषइ वयणलां,
अन्याय—भंजन न्याय—रंजन, कमल-खंजन नयणलां ६१
तस नारी रे श्री नामि रंभा जिसी, गुण-पुरण रे रूपइं जाणे उर्वेशी,
नयन श्रमि रे वापलडी मृगली हसी, तस चिति रे धर्म तणी वासन वसी

तूरक

तस वसी वासन पाप पासन, जैन-शाशन बोह ए, सा शरद-रयणी चंद-वयणी, कमल-नयणी सोहे ए, मुख्ति मधुर-वाणी साकर-वाणी, सर्व प्राणी मोह ए, श्री नामि सरखी सुजिनि निरखी, सदा हरखी सोह ए. ६२ सा नारी रे नागरवेली जेहवी, त्रिमवन मांहि रे गुणे करी विख्यात हवी, मुख-मंडन रे रंग देखाडइं अभिनवी, फल पाखइ रे झूरइ अनुदिन एहवी.

त्टक

अनुदिन्त झुरइ पाप चुरइ, पुण्य पुरइ पदिमनी, ाजम सदलकोमल विमल परिमल, बहुल फल विण पदिमनी, चिति घरइ आरित बुद्धि भारित, रूपि सा रित कामिनी, बिहु-पिक्ष पूरी नहीं अधूरी, पुण्य-सूरी भामिनी. ६३ रत्नाकर रे व्यवहारी पाप परिहरइ, एकचिति रे श्री जिन-आज्ञा अनुसरइ, एक दिवसि रे व्यवहारी चिंता करइ, पुत्र पाखइ रे मन माहि अति दुःख घरइ.

श्गारमजरी

तूरक

दुख धरइ सुंदर सकल मंदिर, चिति-कंदर समल्हइ, अति गिरूइ वेदन देह-भेदन, वरिस सम दिन निरवहइ, तस नहीअ थाडी कनक-कोडी, चित्त कुडी समलहि, जे पाप लीधां दु:ख दीधां, कर्भ कीधां सोइ सहइ. ६४

द्हा

हंस विना मानस जिसिडं, वास विना जेम गांम, थांमा विण मंदिर जिसिडं, उत्तम विण जेम ठांम ६५ चंद्र विना रयणी जिसी, भाण विना जिम दीह, नीर विना सरोवर जिसिडं, जिम वन पाखइं सीह. ६६ उत्तम सुत विण कुछ तिसिड, शोभइ नहींअ निदानी, सुत विण सुगति न पाभीइ, इम कहइ वेद-पुराणि. ६७

ढाल ४

राग सोमेरी तथा राग गोडी

(दशरथ नरवर राजीड, ए देशी)

नीअ-मिन एहवुं चीतवइ, रयणायर धन-नाह रे, वली वनिताइं वीनविड, मिन हूड अधिक उमाह रे

तृटक

निअ-मन्नि चिंतइ पुण्य पोतइ, तेणि जोतइ मिंत छहीं, तिहां अजित जिनवर मूर्ति सुखकर, निमंत्र सुर-नर विन रहीं, तस महिमा गाजइं तूर वाजइ, कष्ट भाजंड सिव सहीं, वांछिय पुरित अजित मूरित, पाप चूरित भय दहीं ६८ शासन रखवाछी सूरी, अजितबाला तस नामजी, सेवा सारइ जिन तणीं, पुरइ वंछित कामजी

तूरक

शाशन केरी अति भलेरी, महिम देहरी अभिनवी, एक चित्ति थइनइं तिहां जईनइं, भोग देइनइं वीनवी, तस भाग्य जागइ पाय लागइ, पुत्र मागइ मानवी, सा क़ुसमि वूठी नहींअ जूठी, सेठि तूठी दानवी. ६९ तस अनुभावइं सेिठिनिं, पुत्र हवुं गुणवंतजी, सुर-तरु सुर-भुवनिं जिसिड, जयवंत विद्यावंतजी.

तूरक

तस पुत्र हऊवु अतिहि छहूउ, पुण्य बहूउ गुणि बहु, सोइ पाप छंडन कुमित खंडन, जिम कुसुम-मंडन केवहु, सोइ सेठि-नंदन मेरू-नंदन, शिशिर-चंदन गुण-निल्ड, दालइ कंदन सर्व वंदन, सुजन आनंदन मलु ७० नाम-महोत्सव बारमइ दिवसि, करइ अभिरामजी, देवी अनुभावई हुवु, अजितबल इति नामजी,

तूरक

तस नांम दीधु पुण्य कीधुं, काज सीधूं तस तणडं, ढमढाेल ढमकया घूघर घमक्या, चतुर चमकिया चित्त घणडं सोइ कुमर वाधइ कला साधइ, पुण्य आराधइ इसिडं, अति सुगण सुंदर मयण-मंदिर, हेम मंदिर तनु जिसडं. ७१ चतुर चकोरह मुद दीइ, दीन दीन वाधइ सोइजी, सकल कलाइं पूरीड, रयगायर सुत जोइ जी.

तूरक

जे देखि तिल्नी नयन—निल्नी, नील-दल्नी विहस ए, बिहू पिक्ख पूरू नहीं अधुरू, भित्र सूरु दीस ए सोइ निःकलंकी सिंह—लंकी, जडित मूंकी गुणि वडु गुणि चंद सरिखु चतुर निरखु, अंतर परिखु अवडु. ७२

दृहा

दिनि वाघइ कुमर ते, जिम सुदि केरू चंद, सकल कलाई अंलंकरिड, त्रिभुवन नयणां-नंद, ७३ सुंदर सुत देखी करी, चिंतइ हैडइ तात, ए सरखी जींग कन्यका, किम मिलेंसिइ विख्यात, ७४ एहवइ रत्नाकर तणड, परदेसी एक मित्र, आविड दिवसि घणेरडे, पूळिडं तास चरित्र. ७५

ढाल ५

राग : केदार गुडी

(कपुर हुंइ अति उजल, अ देशी)

मित्र कहइ तव वातडी रे, मीठी सरस अपार, मयंगला नयरीइं गयुं रे, हूंतु करण व्यापार ७६ बंधवजी वातलडी अवधारी, महारा मननु अक आधार, तु दीन तणड उद्धार... दुपद तथा आंचली.

शुगारमञरी

जिनदत्त नामइ तिणि पुरिं रे, व्यवहारी गुणवंत, चतुर शिरोमणी जाणई रे, हैडल्र मो ₹, हंस मानस जिम मानसि रे, खीर-नीर जेहवुं नेहलुं रे, तेहवुं सोइं मुज नेहलु रे, एक दिनि जिमवा नहुंतरिंड रे, आदर कारीअ अपार, मिं पणि अंतर निव करिड रे, दीई आपिउं वली लीइ रे, गुह्य कहइ धरिइ मन्न, जिमइ जमाडईं निज घरइ रे, प्रीति तणुं ए चिन्ह. तस धरिं जिमवा हूं गयु रे, तिहां अक दीठी बालि, त्रिणे त्रिभुवन जीपती रे, मनोहर रुपतुं आलः कही न सकूं एक जीभडी रे, तस गुण-रूप अनंत, आकुल व्याकुल तव थयुं रे, भोजन गयुं तव वीसरी रे, मनडुं थयुं अवधूत, तृपति न पामई आंखडी रे, वली वली जोतां रूप. तव मिं बंधव पूछीउ रे, ए कुण कहिनी नारी, नीसासु मूंकी कहि अे मुज दुहिता सुंदरी रे, शीलवती सुविशाल, सकल कला-गुणि आगली रे, देश विदेशि हूं भमिउ रे, मिं वर जोया कोडि. भमतां भमतां निव मिली रे.

सज्जन नई वली संत. ७७ ब. त्रीजुं सोइ होचन्न, तिम मुज बांधू रे मन्न ७८ ब. जेहवुं चोल-मजीठ, अहवू अवर न दीठ. ७९ ब. प्रेमइ किसिउ अविचार ८० ब. ८१ ब. ८२ ब. जोतां मोरू जंहा. ८३ ब. ८४ ब. रे, दुखिइ भरिउ भंडार. ८५ ब. मोरइ है अडइ साल. ८६ ब. अे सरखी जोडि. ८७ ब.

दूहा

किहि वर किहि घर पामीइ, वर घर नहीं संयोग, घर विण वर सिउं कीजीइ, निगुणां धरि सुगुणी पडी, दिन झूरंतां मुरख सरसी रूपवती नइ सुगुण विचक्षण प्रिड विना, कुण जाणइ गुणसार. रसीआ विण रस-केलवण, मुरख निर्गुण-प्रीउ आगिळ तिसिंड, गोरडी, अंगणि मनह-मनोरथ किम फलइ, परण्या पाखई वरि भर्छू, अकिज कडुइ बोलडइ दिन

वर विंण सिउ घर-योग. 66 गोठडी. पगि पगि साल स थाइ. 69 गुणवती, सुंदरि चतुर अपार, आगिल भाव, संदरि नउ हावभाव. 98 पगि पगि सालइ साल, मातइ यौवन-कालि. 92 नहीं 🕆 मुरख भरतार, दिन गमार.

वेधक नइं गुणि आग्गळ,	भोगी- पुरुष सुजाणं,	
वेधक नइं गुणि आग्गलु, चतुर सरूपि सुंदरो,	स्वर्ग तणउ अहिनाण.	98
मंकड कोटिं सिउं करइ, तिम गुणवंती कांमिनी,	नवलख मोती-हार,	९५
चतुर मराछी चमकती,		
चेतुर मराला यमकता, अे अणघटती जोडली,		९६
सुगण सरूपी प्रोउडउ,	नारी चतुर अपार,	
सरखी जोडी नवि मिलइ,	मुरख सही किरतार,	९७
जन−गमती मन−भावती, अबिहड पुरव पुण्य विण,	सुगुणी सरिखु पिम्म, जोडी लहीइ किम्म	९८
निगुणी सुगुणां करि चडी,		
सरखी जोडी निव मिलइ,	दैवह मोटी खोडि,	९९
परणिया पाखइ वरि भर्लू, काठ-लक्षण मुख्य प्रीई,	नही मुरख-भरथार,	
नर झूरइ सुगुणी विना,		
थोडइ ठामि जि दीसोइ,	सरखी जोडी वारि	१०१
दिवस घणा मुजनि थया, पणि किमहिं नवि पामीउ,		१०२
	तब हूं बोछिउ मित्त,	
वर कारणि झूरि म घणूं,	म धरसि चिंता चित्ति	१०३
• • • •	नहीं विधाता खोडि, ते तस मेळइ जोडि.	१०४
रत्नाकर नंदनपुरिं,	तस सुत अजित पवित्त,	
जडती जोडी ए अछइ,	पुणतां हरिखिउं चित्तः	१०५
हैडा झूरि म मनि घणूं, सरखइ सरखं मेळसइ,		९०६
सुगुण सरूपी सोइ नर, सरखी जोडी ए जडी,	नारी चतुर अपार,	900
·	•	1,50
जिनशेखर सुत मोकलिउ, व मूं साथि सोइ आवीउ,	गवाह करइ काजि, वाचा मानु आज	१०८
सेठि सुणी वलतूं कहइ,	भाइ ति वारू किद्ध,	
सेठि सुणी वलतूं कहइ, मनि आणंद हवूं घणउ,	तस बहुमान सुद्दिद्ध.	१०९

ढाल ६

राग : धन्यासी (पीउडु रे धरि आर्वि, आषाढभूतिना रासनी, अे देशी)

जिनशेखर सिउं मोकलिउ, मयंगलि अजितकुमार, शीलवती तव अजितनिं, परणावी रे गुणवंतनी नारि किं ११० शीछि रे सुख सवि सार, जोड शीछि रे शीछवती सुविचार किं, जस होसिं रें जय जय कार कि... दुपद तथा आंचि छ आवीड, अजितसेन कत्या परणी सुख विल्लसइ नव नव परिं, आंत अधिकु रे ते साथि रंग कि १११ शी एक दिनी बिपहुर निशि समइ, पुढियां दोइ सुविचार, शीलवती जागी तिसिं, मिन चिंतइ ने पशु-शब्द विचार कि ११२ शीः फेर शब्द हवई सांभली, चिंतइ मनडा मांहि, आवइ छइ एक कुणप को, पूरिं ताणि उंरे ए नदी मांहि कि ११३ शी. पांच रत्न पांच कोडिनां, दीसइ छइ तस पासि, भक्ष देइ नइं माहरूं धन, लेयो रे कोइ चतुर विलासि किं ११४ शी शीलवती इम सांभली, चिंतइ चतुर सुजाणि, भक्ष देह मन-भावतूं, धन मेहलूं रे मोरइ मंदिरि आणि किं. ११५ शी. शुकन-वचन साचूं मिलइ, वलीअ विशेखि सीआल, जोइई तनु वही जाणीइ, एणीवाति रे पंपालसी आल कि.(?) ११६ शी. बीजउ को नहीं मानसइ, हूं जोउं स्वयमेवं, प्रत्यय आणी शुकन नड, सा सुंदरि रे उठी ततखेव कि ११७ शी. कुंभकरि कुंभ-स्तनी, करि चाली मलपंत, जल आणेवा मस करी, निव जाणइ रे ते कांइ कंत किं. ११८ शी शब देखी मनि हरखइ, छीधां रत्न स पंच, शब सीआलि नइं दीउं, वली की धुंरे तस संभोज्य प्रंपिच किं. ११९ ज्ञी.

ढाल ७

राग : धन्यासी (सालिभद्र भोगी रे हो, अे देशी)

पांच रत्न धरि आणिआं रे, चिंतइ हरखी नारि, विहाणामां प्रीडिंन कहूं रे, धन-आगमन अपार• १२० बाइजी जोड करमनी वात, जेहनड मोटु छइ अवदात, जिम्नूवनमां विख्यात... दूपद तथा आंचढी•

आहर जाहर अति घणउ रे, हुउ तेणी बिपहर-राति कहां गइ रे, एकली घोर अंधारि, मन विरमिउं वनिता थिकी रे, तात आगली कही वात, हैंडइ कांइ न विमासीउं रे, कीधुं सहसा काज, कुडउ लेख देखाडीड रे, जिनदत्त नइ आलापि, अंगित आकारइं करी रे, नयणां वयण विकारि, चेष्टाइं गति बोलवइ रे, स्त्रीई पति मन उलिखं रे, चिंतइ करमनुं दोस, कीं घां करम न छूटी इरे, पहिलु पडिउ वरांसडु रे, पति नइं न कहिउं एह,

ते देखी मनि चिंतवइ रे. भोलु अजितकुमार १२१ बार माहारि हूं जाणतु रे, एअ सती निरधार १२२ बा अहिंन पीहरि मोकलु रे, घर सरखी नहीं जात्र १२३ बार क्रोध तणइ वसि प्रांणीउ रे, न छहइ करतु अकाज १२४ बा तुम पिता तेडियां उतावलां रे, स्त्री नइं कहइ पति-वाप १२५ बा लहीइ मननु पार १२८ बा॰ कुहुनु कीधइ सोस १२७ बा हवइ तुं एहवूं संपन्ं रे, पणि हवइ जोउं छेह. १२८ बा.

दूहा

छेहडइ माति जे उपजइ, ते पहिली जु सजन रीसावियां दीसीइ, कइ अम्मीणा दोसडा, मन भाग्गां सज्जन तणां, पणि सोहामणां, भगां हइई खटुकइ साल जिम, बोलेइ बोलाव्यां नहीं, समाणां सज्जनां. सज्जन वहिडियां दोस विण, दीसीइ, देखत अंधां अण-बोलाव्यां बोलतां. ते आदीहडा, सज्जन पाछडं वाळी जोअतां, नयणे केरतां

आप-हाणि नइं जण हसूं, तु बि-परि नवि होइ. १२९ जोतां वांक न कांइ, कइ वइरी कान भरांइ। १३० चालइ नहींअ परांण, गुण विण सींगिणि जव हवी, तव नवि लग्गइ बांण १३१ रुसणडां नइ पन्न, भगा सज्जन मन्न १३२ चित्ति उतरीआंइ, नयणे कांइ. १३३ दीसइ जाणे पंथी जाइ, सुणतां बहिरां थाइ १३४ अण-जोतां जोअंत. विचि डूंगरडा जंति १३५ सञ्जन ते दीहा तणा, कोडि अंश नहीं आजु १३६

लाख विचालि, जे नितु नयणे खेलतां, आगलि ऊभां आज. सही ससनेहां मांणसां, नेह वित्रोडीयां. नेह विहूणां मांगसा. तेहजि जिहांरइ मन हतुं, भलूं हवुं इणि अवसरिं, जाणिउं सुजन कपूर छइ, सज्जन दुर्जन आंतर्, अपराधइं नविं ऊभजइ, करम-संयागइं विहि वसइ, त मनमां निव झरीइ, सज्जन सल्लुणां वहिडीआं, अमी थिक मीठुं स्युं करइ, मांगस छंडइ. उच्छां बोली नवि वणसाडीइ, सरोवर-पालि तणी परइं, जिम सायरनी लहिरडी. जड छइ शील जि निरमलुं, अहवुं निय-मनि चींतवइ, वाटइ जातां अति घणां. अशुभ अमंगल परिहरी, राजा दिध वरवर्णनी, हय दुर्वी चंदन वली, मध मांस मधु रूप मणि, अक्षत सोविन देव धृत, माटी वस्त्राभरण जख, बद्धापन नीररूह, एता देखी चतुर नहि, मनवंछित फल पामीइ, रत्त कुंभ दोए जल भर्या, भाट करइ कइवार जड, डाबां वलइ, जिंमणांथां वामथी, जिमणां जाइ श्वान शिखी सींचाणडु, रूडा सार्वंड़ . ए सवि

ते सज्जन देखइ नहीं. लख जोयणां स हुंति. अंधप्पण्रं रुहैति. 236 काढइ अवसर वंक, तही मिलतां निःशंक १३९ लाधु मननु पार, पणि छेहडइ हूआ छाहर. १४० को अवसरिं लहेवाइ, उत्तम कहेवाइ. १४१ जड त्रटड धण-पेम. नींच तणी गति एम. १४२ मन मिलसि रसेण. जड वासीउं विसेण. १४३ जांणी मननु पार, धरी रहीइ मन बारि १४४ दिन दिन तिजइ प्रीति, तेहवी न कीजइ रीति. १४५ तु टलसइ सवि कलेश. रथमां किद्ध प्रवेश. १४६ शुकुन हवां शुभ सार, ग्रुभनु कहूँ १४७ वेदया गज वृष गाइ, कुमरी-फुल फल जाइ. १४८ चमर मकरंद. मुनिवर महिमावंत. १४९ गौमय दीवउ वीणि. पंडित शुक विप्र वीण. १५० महलेवां जिमणांइ, धन संपदा अणाइ. १५१ घेनु सवछी होइ, मनवंछित फल होइ. ते सावडू सजोइ, १५३ . उवडु सहोइ. वायस नइं कलीयार, १४५ पंथइ सुख दातार.

तीतर भैरवी, बोलइ जिम्णइ पासि, सांढ टींटोडी चील्हडां, चातक वाम विलासि १५५ कुरंगी नुलीउ, खंजन दुर्गा चास, ए सवि रूडां सावडू, धन संपदा विलास. १५६ वामी रासभ करभ हय, वायस शुक दुर्गावि, साहि सीआल डांवां भलां, जड खर करइ खभाविः आगलि अथ डाबी लवइ, समली रूडी होइ, मधुर छंबती जोइ. डावी जिमणी कोकिला, १५८ बाहिरी लगडी अनेरडां, पंखी दुष्ट सभाविः तेहनुं स्वर पुंठइ भलउ, एहवुं शुकन सभावीः १५९ **छुं(क)डी चेष्टा भ**इरव सर, दुर्गा गमन निटोल, ते स्युं लिहसइ शुकन जे, एन लहइ त्रिणि बोल १६० दुर्गा प्रथम पीआणडइ, जुस्वर करइ आसन्न, डावइ पासि सोहामणी, फल हुइ आसन्न. १६१ लोमट हंस प्रमुख खग, पंथइ द्रीन विषम हरण-गति जमणली, अति उपाइं १६२ दुर्गा वायस धूकनइ, लुंकडि च्चारइ जोइ, जोतां डावां स्वर करइ, सुख संपदा सहोइ. शुकन-भाव अेणी परइं, जे जे शुभ परिणांमि, ते ते पंथि हवी घणा, चिंतइ वनिता तांम १६४ वहिलूं वलण हसइ वली, मान-मुहुत रथ चालइ उतावलु हवि, जोउ शुक्त नउ भावः

ढाल ८

राग : केदारु पुरवी

(गिंसुकमालना चोढालीयानी, एणि परिं राणी देवकीओ, ओ देशी)

नारीअ, चिंता चित्ति निवारीअ, तव सारीअ जिनवर गुण संभारती अ, सही ए करती शील सपोषण, दैवनइं दुषण, भूषण बुद्धई जेहवी भारती ए. आगिल नदी अति दुअंगम, सागर स्युं कीध जंगम जलनिधि जाणइ एहवु ए, भार सहित रथ नहीं तरइ, उतरइ, जोतरइ सारथि रथ हलूउ हवु ए. इचंदनथी सहु ्रत्नाकर तव वहूं प्रतिइं, इम बोलइ वली निज मतइं, रमति रे छंडु वहूँ तुहे अहींथकी ए, आगलि उंडा पांणीअ, वली जाणीअ, वाहाणीअ उतारु तुह्ये पय थकीअ. बहुल

वाहाणी वली उतारीअ रिज़ुमति, सारीअ पहिरी चलने चमकती ए, करी ए वामा ए. भव्य-जंतु जिम भव तरिया, जोतर्या धाइ धोरी धुछीआ ए, नवपद महिमा मनि स्मरता, सुभट एक मारगि मिलीअ, ते वलीअ सेठिइं सभट प्रशंसीउ ए. वखाणउ सायर. धाय सबल दीसइ एह तनि, नवि मानइ साचुं ए सही, रह्या मनमां धरीअ, आगलि चाल्या आउल, वेडल वुलिसरी परिमल भर्य ए, मंदिर, जांणे जंगम मंदिर, वह ञे कहइ कंदर सरखुं पणि मुज मनि हवइ ए, कहइ छंडुं वहिलीअ, चाल्यां जिसइं, हरिसईं सेठइं नयर वखाणीउं ए, थके जाणे उत्यू, नयर सानन, वखाणइ समविं ए पुर, छंडी पुर, वेगइं ते ते देसडु, मेहल्य वेसडु लोक तणु जिहां अभिनवु ए, कहइ ए वन सेठि गहन, रयणायर, वह कहइ सुणु सायर नयर ते मनोहर रूप ए, समी, वांकी कोइ नजिम विपरित शिख्यित जिम तुरंगी, जु रंगी बोल न मानइ अह्य तणु ए, नग-फूट, जेहवां मोटां वेलाडल, कहि ए वाउल शीलवतीनं तिहां रहइ ए, मंदिरि, नहंतरी आव्य

निवारीअ, रज धनपती चितइ वामाए, रामा ए पणि नहीं रामा रमकती ए तटिनी-तट उतयो, तिम जगदीस्वरनुं ध्यान धरतां, इम करतां मारग केतु वुलीआ ए. वलीअ, द्ढ-प्रहार अंगइ वहू कहइ सुणु रयणायर, कायर किहि एकथी नहासीउ ए. चिंतइ रणणायर निय-मनि, पुंश्वही ए चित्ति परिताप अति करीअ. अगसरीअ मौनपणडं मारगि विलेअः १७२ दीठउ तव एक देउल. शेठि वखाणइ मंदिर स्वर्ग जिस्युं ए अवतर्यु ए. १७३ तुह्म मनि छइ अति बंधूर, मुर/ख मांहइ पहिलीअ, गहलिअ उनमत नीपरि ए लवइ ए. आव्युं पुर तिसइं, आगलि इंद्र-भवन जिस्युं अवतर्युं, चीतर्यु निय-मनि मनोहर जाणीउं ए. १७५ नवि जोइई एहनुं मुज मनइ ए तिहांथी चाल्या ते पुर, नेपुर विघवा वनिता जिम तजइं ए. तव दीठउ एक देखी थोडु जन-वहन, निवहन उत्तम केंंगु हीं नवु ए. उत्तम रयणायर, ए धनपति चिंतइ ए समी, मनसमी जिम धण हीनइ विस हरू ए. कुटिल जिसी हुइ वली जे बोलइ ते सवि अखुट वचन कोश ते एह तणुइए. एहवि आव्य माउल, ससरा स(र)सी संदरी, निज घरी भोजन सामग्री करोइ ए. १८०

भोजन देइ ऊपरि आपी सादर, चादर. सुंदर चूआ-चंदन छांटणां ए, उत्तम वस्त्र... वडलावीय, वडलावीय चलावीय संतोखी मातुल निज मंदिर वल्युं ए. सवि वीसरी, दुःख गयां आत(ता)पि नीसरी, साधन अणुसरी वाटइं वटतर्, छांहडी ए, वड हेठि रथ छोडीय, आलस मोडींअ, नारीअ लटकइ लोडावइ बांहडी ए

•ढाल ९

राग: रामगिरी (ऋषिदत्ताना रासनी, ऋषिदत्ता पंथि संचरइं, ए देशी)

सेठि बइठा वड हेठलड़ं, रथ छांहींडइ रे नारि, नियमिन चिंता चींतवइ ए, है है अधिर संसार. १८३ कीधां करम न छूंटीइ, जूउ ह्रदिय विचारि, दिन सघला नहीं सारेखा, चिंता चित्ति निवारि. १८४ दूपद तथा आंचली

करमिं मुंजी मोटउ नम्यू, वली रावण भूप, पांडव नरपति वनि भम्या. जोउ करम सरूप. १८५ की. बार वरस राम वनि रल्या. भाइ लक्ष्मण साथि, सुख-दुःख केरी बांधणी, सह करमनइ हाथि. १८६ की• नल नरपति पर मंदिरइं, करइ अन्तनउ पाक, सुरित छांडीउ. निय-तन जोउ करम-विपाक. १८७ की. मूलगी, करमइं चड्यु रे कलंक, सती सुभद्रा शीलवती नइं कलंक. नडी, दमयंती करमइं १८८ की• हरिचंद पर धरि जल वहइ, सीता सहइ अपवाद. करम साथइं कुणइ नवि चलईं, कीजइ किस्यु रे संवाद. १८९ की. रूषिदत्तानइं वली चडयुं, राक्षसी केरूं आल, कर छेद्या कलावती. जोउ करम-जंजाल• १९० की. मयलासुंदरी, सह्या महाबल दुःख अपार, ढंढणरिखि मास छ लगि, नव पाम्या आहार. १९१ की. मयणरेहाई दुःख सह्यां, परिहर्यु पतिनुं वन मांहइं सुत जनमीड, जोउ करमनुं वेश. १९२ की. अक सुखना अक दुःखना, दिन सरिसा न होइ, जिम तरुअरनी छांहडी, खिणि नमती रे जोइ. किहां ते मंदिर मालिआं. सप्तभूमि-आवास, वाघ सिंच भीषण वली, किहा विन-वास.

किहां पल्यंक तलाइ स्यूं, किहां हींडोला खाट, किहां रहिवुं रज-पूंजमां, वली १९५ की. अवघट-वाट उदय आव्युं कर्म महारइ, जउ चड्युं रे कलंक, भोगव्या विण छूटइ नहीं, मोटा राय नइ रंक १९६ की. दूहा

इम करि नीअ-मन चालती, शीलवती गुण-गेल, अह्वइ पासि करीरथी, धन-आगम अनरथ समु, वायसिं वनिता भणइ, तोरूं वचन सोहामणुं, कलियुगि तुं ज्ञानी समु, आगम निर्गम सवि लहइ, सुख-दुःखनी वात तुं कहइ, तुज अरथी अहीं को नहीं, गुण अवगुण थइ परणमइ, गुणवंत विण कुण लहइ, सार विण सुकइ वेलडी, केरी भालडी, कुगुण कवेधां आगलइं, गुण-मणि मन भंडारमां, मुरख करि सोइ अप्पीउं, सुगुणां गुण अरथी विना, नागरवेलि फल विना, पासइं कुगुण कुवेध नइं, झूरी झूरी पंजर हवइ, गुणवंत वरी अेकइ भळु, कारेली बहु कां फली, सुगुण सुवधां नितु मरण, मन मांहइं झुरी मरइ, सुगुणां विण गुणवंतनी, सरखइ सरखुं जे मिलइ, सज्जन को तेहवुं नहीं,

वायस बोल्यु बोलः १९७ जाणी ह्रदय मजारि, भाइ तुं अवघारि. १९८ खोटडं ते नवि होय, तूं सरिखु नहीं कोइ. १९९ तुं तां चतुर सुजाण, तोरी वाणि सुवाणि. २०० भाइ म करि आयास, तिहां स्यूं करइ प्रयास २०१ कुण दिइ गुणनइ मान, उगी स्नइ रानि २०२ पाणी मांहि म नांखि. ैं है निज गुण मन दाखि मूल न कीधुं जाइ, कुडी मूल न थाइ. २०४ दिन झ्रांता जिम झूरइ वली जाइ सुगुणां हइई साल, अवटातां जाइ काल नहीं नर-गुण दसलाख, वरि अेक रूडी-द्राख जे जाणइ गुण-दोष, निसिदिन हैडइ सोस कहु किम भागइ भुख, ते जांणइ मन-दुःखः जेहनइं कहुं मन-दुःख, कंठि आवइ हैआ थकी, आधु न लहइ मुक्खे. २१० बोली बोली थाकु घणूं, उडि न पंखि-सुजाण, जाइ-न तुं तिणि देसडइ, जिहांको हुइ गुण-जाण.

अेक अपराध आगइ कर्यु, तेहथी चुक i ताहरै कहण करूं वली, तु दुख हुइ महंत्. तं निसुणी रयणायरइं, पूछइ वहनइं वत्तं, वायस वयसह नीच ए, अेह स्युं केही 283 शीलवती एह्युं सणी. वल्तु उत्तर तातजी मुख किम पणि नवि बुझतु कहु, मांणस पहि पंखी जे हूइ सुगुण सुविध्ध, भला, कुगुण कुवेधां मांणसां, किध्ध. कां किरतार **इं** जेह सरि पीइ दीप जल, तींह पूंछी न देअंत, मांणस पहड़ के मोरडा, होंति. रूडा कयंत्र २१६ रूपइं सृडिला, रूडा गुण जाणेवइ मोर. प्रीतइं पारेवां मांणस नहीं पण भलां, ढोर. 280 ए सरख जिंग कोइ नहीं, मेलणहार, वाहलां संदेस सुघउ पंखी नइ अवतारि. कहइ, 286 ग्रुकन-शास्त्रमां बोल्या छेइ गुण जेह. एहना. मुज मुखि एक ज जीभडी. नवि कहिवाइ तेह. 289 अभ्यागत १ अद्भूत कहइ २, मेहागम ३ अशोभन्न ४, मीदं भोजन ५ रौद्रभय ६, शोभन ७ नइ भयचहिन ८ २२० प्रहर १ तस्कर १ कल्ह २ मेहागमन ३ इष्टागमन ४, विरूप ५ कल्रह ६ राजप्रसाद कहइ ७ बोली महाभयरुप ८ प्रहर २ अशुभ १ अनिइ मृत्तवत्तडी २, अभ्यागत ३ धनलाभ ४. मेहागमन ५ रायमान दिइ ६, राजविडूर ७ वस्त्रलाभ ८. प्रहर ३ देह-व्याघि १ भय २, सुख कहइ ३ मन चीत्या फल होई ४, राजभय ५ भयवात्त किहइ ६, मेह ७ अभ्यागत कोइ ८. प्र॰४ ब्रह्मस्थान कि स्यडी, चिहु ए पुहुरे वाणि, पूर्वादिक दिसि चिहु पहरि, स्टिइं गणे सुजाणः घर उपरि ऊंचड चडी. काक करइ कक-वाणि. इष्ट-समागम ्र वु घन-आगम वली जाणि. २२५ हुइ, दद शबद्इं ु दुःख दोहिद्धं,' ख ख शबदृ आहार, कु कु धननाश करइ वली. टटटट मृत्यु विचार. २२६ बंध-संहरे गगइ वली भूमि-लाभ, हहइ हुर्, कारय-सिद्धि घधइ ए स्वर तणड विचार. हुइ, २२७ जोतां मारगि मांणसां, सनमुख वायस होइ. तिणि मारगि नवि जाइवु, जाइ तु न वलइ सोइ.

तु वंछित वायस हुइ जड सावडू, प्रेइ. पंथइ अति दुःख देइ. वघ बंधन हुइ उवडू, २२९ तुंडइ भूमि खणइ वली, वाटइ जंत, वायस त ते वाटइ पंथीआं, लाभ घणेरू हुं त वायस कंटक-तरु चडी, शबद करइ वार वार तु तिहां कलेश हुइ धणड, एहवउ शुकन-विचारः २३१ शुक वृक्ष सिर कलेश. शुम भोजन वडि-सर करई, खडगइ वैरि प्रवेश ध्याम पुंजि धान्य आगमन, २३२ कुंभि तुरंगमि जउ चडी, वाइस शब्द करेइ. वरभोजन वाहलां मिलइ, वयण धरेइ. २३३ साचु ः वस्त्र-खंड लेइ धरि चडइ, वायस तु हुइ लाभ, चर्म-खंडि निधि दीसीइ. कुसुम फलइं हुई लाभ. २३४ स्योदियि जड नगरमां, वायस रंगि, आवइ दुख हुइ तेण देसडइ, मध्याहनइ देश-भंग २३५ राय चौर-भय अत्थमणि, आगमन विचार, एं रातईं जाइ गामि देश-भंग अपार. तु २३६ जु, रुदन करंति, शुष्क-वृक्षि प्राकारि जड, वायस जलधर जल वरसइ नही, एहवुं शास्त्र कहंति. वायस नयरि भमता वलय कोरि दीसंति, जउ, देश-भंग तु जाणिवु ए, पणि साचु हुति. २३८ वायस अरूणोद्य समइ, सन्मुख बोलइ, प्रह मान-मुहुत वली धन घणुउ, गृहनायक नइं देई. जु चडी घर-बारणइ, पंख धुणइ दिसि सोइ, तु दिन पांच मांहइ वली, अगनि–उपद्रव होइ तोरणि चडी खर-स्वर करइ, सरइं सुंजत्त, महुर सांतीउं, निधि देखाडइ जित्तः तु भूमि-तिल २४१ घर साहमू थइ घर जोइ, खर—स्वर वली बोलइ. वायस दिन पंचक मांहि, तु धन-हाणि करेइ. २४२ वली उठइ बइसइ वली, तेडइ निज परिवार, चिंता तु जाणे तिणि मंदिरई, हुइ अपार डावुं अंग जड चंचु-पुटइं, लूहइ धूणइ रीस, तु दिन थोडामां वलीं, सीस कचडइ निज सीसि.

२३९

२४●

२४३

मंडल करिव परुप्परइं, भोयण जइवि ठवेइ, तु गृहपति नइ भू-घणी, मोटी पदवी देइ २४५ इत्यादिक सिव शुकनमां, बोल्या छइ धण भेय, जाणपणू पणि दोहिलूं, जगमां शास्त्र अमेय २४६ ससरइ अत्यादर करी, बहूनइ पूछइ वत्त, ए बायस किह छइ किस्युं, ते तूं कहइ मुज जित्ति २४८

ढाल १०

राग केदार गुडी

(छानो छपीनई रे कंता किंहां गियो रे, अ देशी)

निसासो मूंकी कहुई रे, शीलवती तव नारि रे, तातजी तुह्य नई स्यूं कहूं रे, हूं निर्भाग्य संसार रे २४८ कुलयुगनी स्थिति एहवी रे, जे गुण थाइ दोष रे, निज गुणथी दुख उपजइ रे, तु दीजइ कुहुनइं दोष रे. २४९ कु. छेदन भेदन तिन सहइ रे, निज गुण माटि मंजीठ रे, घाणी-पीलण सहइ घणूं रे, सेलडी जु गुण मोठ रे. २५० कु. सफल सदाफल आंबलां रे. फल माटि सहइ दुख रे, वालु जु परिमल दीइ रे, तु छेदावइ मुखु रे २५१ कु कस्तुरी जु मृग धरंइ रे, तु ते छंडइ प्राण रे, पासि पडिउ सुजाण रे २५२ कु. हय गय सूडा रूयडा रे, हुआ दोष समान रे, तिम मुजनइं गुण माहारा रे, तुं मई लहिउं अपमान रे. २५३ कु. मि जउं तुह्य नइ गुण करितु रे, सीयालिणि-इवर संनधि रे, हूं लावी पांच रत्न रे, सांत्यां करी अति यत्न रे. २५४ कु. तुह्य सूत शय्या उपरइ रे, जे दीधूं अपमांन रे, मि अपराध किसिउ कर्यु रे, इम कां थया अज्ञान रे. २५५ कु. गुण अवगुण जोया नहीं रे, वायस सविहंमां मलगु रे, वायस वयस समान रे. ए छइ अति सुझाण रे. २५६ कु. महुर सरइ बोलइ वली रे, करीयर तस्यर हेठाले रे, द्विण अच्छड् द्स कोडि रे, ते लिउ आलस मोडि रे. २५७ कु. जे अरथी हुइ अरथनु रे, हुं भूख्युं छुं अति घणूं रे, मुज नइं दिल आहार रे, साचां मारां वयणलां रे. मम करसिउ विचार रे. २५८ क.

ढाल ११

राग देशाष

मुजि रे नीसासा मेहली बोल्ड, सुणु सुणु स्वामी गुणवंत तात रे, सुख रे पाम्या वाणी एहवी सुणी नई, जोउं रे एहनी मतिनूं पारखूं, एहवुं रे धनपति चिंति विमासी, आणिड रे आयुध नगरथी एक रे, खणतां रे करीयिल हेठिं दीठडं रे, दस-कोडि मनि ऊलट अति उपनु, चितइ रे तव रे ससरु वनिता बोलइ, रथ अहां थकी पाछउ वालि रे.

मुज रे मनडूं दुख जलि-भरिडं, कुण आगलि कहूं मन तणी वात रे. २५९ हरखिया मन घणूं धनपति सार रे, अ रे वनिता अति मतिवंती, गुणवंती ए नारि रे अपार रे...दुपद कर कांकणनई स्यूं मकरंदं रे. एह्वु रे धनपति चिति चिंतइ, पूरिउं रे मनडुं अति आनंदि रे २६१ निधान रे. २६१ **सु.** देखी देखी धन तणउ अंबार रे, ्र स्विमी मूरतिवंती, मुज धरि वहु सुविचार अपार रे. २६२ स. बुलु पाछां वहू मंदिरि आपणइ, बोल्इ ससरु वयण रसाल रे. २६३ सु.

दुहा

शीलवती वलतूं भणइ, हूं न जोउं तुह्य बारि, जु अविचारिउं तुद्धे करिउ, कांइ निव कीधु विचार रे. भगां जिम जिम समइ सांभरइ, तिम तिम साल सथाइ. सोविन नइ वस्नह तणीं, मन भगुं कुबोल सर फूटडं जल वही गयुं, पालि म मन-भग्गूं वली दिन गयुं, वाहलां टलीं वयरी थयां, छेहडउ वाटडी, बोलह मनामणू भर-रूसणि मूरख मांणसा, मांणस नवि बोलावीइ, भलवई कहइ कुवोलडा, बोलावीइ, विचलियां जो उलाणी अगान फूंकतां, गुण त्रूटा जउ कोडिना, जिम सर तिम नर नेहलु,

कुबोलडे, ते किम कहु संधाइ, २६५ संधइ संधि मिलाइ. पण, संधि न बइसइ २६६ बंध अपार, तींह सी आस गमार. २६७ देइ जाते. जोयंति. आसा–खबध २६८ वहंति पूरइ पालि, गय नेहि करिआलि. २६९ मनसिउं तिजिउ नेह. माम गणइ निस-नेह. २७० तु हुइ उर्तु अपार, मुह छाहारि. भराइ तउ किम लभइ लक्ख, त्रूट न लग्गइ विक्ख.

राय पडी जे डूंगरे, न मिलइ बरसह कोडि, अंतरंग मन उतरिउं, ते न मलइ वली जोडि. एक बोल्डं तूटी जाय, वरसह केरी प्रीतडी, जे अवगुण मनमां वसियां, ते नवि अलगा २७४ वनि दव दाधां रूखडां, पीलवीइ मेहेण. चिति क्रबोलडे. नवि बलउं पल्लवड मृएण. २७५ नेह करंतां वरस सय, छे। डंतां क्षण एक. अवगुणि एक कुबोल नइ, प्रेम तणउ होइ छेक. २७६ जे अवगुण विरमइ नहीं, विरलइ ते संसारि. छेह लगइ वहिडइ नहीं, अवगुण सय संभारि २७७ उत्तम किमहि नड भंजइ, आदरीआं सय हाथि. खीणड झीणड चंद्छ, सिरि वहइ श्रीजगनाथः २७८ कुण जाणइ मन-वत्तडी, जे मनि वसीया दोस. फल चीरिं गुण जाणीइ, पणि निव मांणस रोस. २७९ हैडा घण्अ न झूरीइ, सज्जन वहिडचा देखि. जे मनमांथी उतर्यां, तेनु लेखि म 260 उतरीया, तेह सिउ किसिउ सनेह. मनथी 🐇 बप्पीह के तूं शरदह तणड, वंदइ २८१ विहडिउ नेह जे सांथीइ, ते नवि आवइ ठांमि, शीतल की उंजल तापवी, नीरस हुडु परिणामि. जोइ, कुसंपा सुजन सुसंपां अलखामणां. नख आमिखथी होइ, अलगा ते अरणइ कहइ (?) 26₹ ते तु कीजइ नेह रस, जे तु दीसइ रंग. नितु बलवूं निस नेहसिउं, जिम दीवडइ पतंग. सुगुण सुवेधां मांणसां, मुरखंडे तिजायांइ. सुगुणां गुण अरथी घणा, पणि छेहु मुरखांइ. 264 केतिक कंटक कां धरिं, जाता भमर म मेहेलि. सुगुणां विण गुण कुण छहइ, गोरी गुण-गेल्रि. तूं विण बोलावई न विसरइ, जे विण घडी न जाइ. ते वाहाला स्यं रुसणं, सज्जन कीजइ कांइ. 266 दोस कीया तिणि सज्जने, तुहइ मनामण थाइ. मंदिर प्रजाल्यां पावकिं, तुहि न अगनि तिजाइ.

सेठि मनावइ वली वली, सुंदरी, सुकुलीणी सा सज्जन चंद्न पन्नर्नि. भागई पणि गुण करइ, कमल-नाल जिम कूंअलूं, वार न लागइ भागता, व्रज थकी अति आकरां. अवगुणि किमहि न भंगीई, मुहि कड्डऊ बोलइ नहीं, गुण लइ दोस न उच्चरइ, दुरियनपीडचा सजन पणि, छाहारिं टप्पण मइली, सज्जन गुण केतां कहूं, पाहणि रेखा प्रीतडी, कठिन न बोलइ दुहवीया, मर्म न पभणइ पर तणा, पर अवगुणि मनि नवि धरङ्ग. बइरी नइं पणि नवि कुपइ, गुण कीधि अवगुण करिं, अवगुण कीधि गुण करइ, सज्जन तुहीन तणीं परिं, दुरियन दीवा समवडिं, सज्जन अति रीसिं भरिया. राहु मृहि ससि किरणलां, सज्जन दुरियन परिभाव्या. अगनि अगर दजाडतां. चंदन वनि जिम सीयला. छेदन भेदन तनि सहइ, विद्रम छेदिया ठायथी, बींध्यां जण जण करि चड्यां, वरि अेक वरस विलंबीइ, छेह लगइ नावे उतरइ, जइ अवराह जिसय करिया, सुयणा ता न धरंति, अक समइं जे गुण करिड, ते अनुदिन समरंति.

शीलवती सुविचार, मानिउ बोल विचार. 269 ए त्रिहूं एक सभाव, नहीं अवगुणनु भावः २९० तिम दुरियन मन होइ, निवि संधाइ सोइं 298 सज्जन केरां चित्त. अविचल हुइ सुचित्त. २९२ खल बोलणां सहंति, सज्जन किमहि न रुसंति. २९३ सहिजइं शुद्ध स्वभाव, अधिकु उजल भाव. तु हइअ सरिस दोइ. अशनि समी रीस होइ. २९५ मुहुडइ हंसी बोलंति, सज्जन लक्षण हुंति. २९६ नित्य करइ उपगार, सज्जन सहिज जुहार केवि करइ उपगार, ते सज्जन संसारि. २९८ तापि विलाइ तेह, अधिक जलइ कय-नेह. 299 विष्पिय न भणइ तोइ, अतिहिं शीतल होइ. ३०० गुण पणि तोइ करंति, परिमल बहुलु हूंति. ३०१ विरला सज्जन हुति, पण बहु परिमल दिति. ३०२ कीधां खंडो खंडि. तुहइ रंग अखंड. 303 कीजइ सुमनस संग, राता कांबाल रंग. ४०६

ढाल १२

राग गोडी

(श्याम प्रद्यम्नन। रासनी देशी, समोरण देवई रच्युं, ए देशी)

रथ पाछड वालिड वली, सेठिइं करीय विचार रे, अनुदिन शीलवती तिन, शील तणउ शुंगार रे. शीलइं सुख सवि हेव रे, जोडं जोडं सील्ह पारखं, जलन हुइ जल समविंड, सारइ सुर नर सेव रे...दुपद ताहारी अदभूत बुद्धि रे, सेठि कहइ तव वहू प्रतिं, तिं ते पुरव वोलडा, कां बोलिया असंबद्ध रे ३०७ जो. नवि बोलुं खोटी वाच रे, तातजी हूं वहू तुह्य तणी, जे जे बोलिया बोलडा, ते ते सधला साच रे. ३०८ जो. धरीइ चरण त्राण रे, चरण राखेवा कारणिं, कीजइ चरण त्रांण रे. विखम वेळाइं वळी वळी, ३०९ जो. नइ उंडी जलवरि भरी, दुअंगम पंथ अद्ष्ट रे, जाउ कंटक खूचइ पगइं, तु अति हूइ अनिष्ट रे. ३१० जो. जउ बाहणां भीनां वली, तु क्षणमां सुकाइ रे, वाहणां अदभूत थाइ रे. जउ वंठां तु वली नवां, ३११ जो. सरव उपाइ वली वली, राखेवउ निज देह रे, देहथी अधिक बीजडं किसिडं, जहांसेडं धरीइ नेह रे. ३१२ जो. जे तुह्मे सुभट वखाणीउ, विजइ अप्रतिम मल्ल रे, मिं तस प्राठेई देखीयां, आयुध केरां सल्ल रे. ३१३ जो. पृंठिं दीध प्रहार रे किहि एकथी तस नाहीसतां, साहामु थाइ एकइ नहीं, ते कायर निरधार रे ३१४ जो.

ढाल १३

राग मल्हार

(मम करो माया काया कारिमी, ए देशी)

जे अेक देउल नयरिंन परसिं, दीठइ अति सुक्सिल रे, मुज मिन देउल ते निव भावीउ, जेहवुं जंगण जाल रे. ३१५ सुणु सुणु बातडी तात अझारडी, हूं तुझ गुण तणी दासि रे, जे जे बोल्यां पूरव बोलडा, जोउ जोउ तेह विमासि रे. ३१६...दुपद जंगल जालइं रे देहरू रानमां, नट विट लड़ विश्रांम रे, रहिवुं न घटइ तीह सुमाणसां, जड जूआरीनूं ठाम रे. ३१७ सु. तेह भणी देउल मइं न वलांणीं , हवइ सुणु नयरनी वात रे, बरपाटण भणीं तुद्धो अति वर्णविदं, मिं न वलाणि तात रे. ३१८ सु. तिणि पुरि वाहलां मांणस को नहीं, कुणि नवि बोल्ड दीध रे, रान तणी परि नयरि भमिया घणूं, कुणि नवि भगतंडी कीध रे. ३१९ सु.

frage is to the factor of the frage (

समावडी, जिहां को सुजन न ते दिसि रान सून्ं रडवडइ, गुण नंवि जाणइ बहू जण भरीड एकजि वाहलां सुजन विण, देस, रान तणी परि जाणीइ, कोइ न संदेश ३२१ पूछइ नहीं, जिहां को नहीं गुण-जाण, जिहां बाहलां सज्जन जेहवूं शून्य तिहां जातां मन किम वहइ, मसाण. बप्पीह मेह, सयल सरोवर जील भरियां, मनि तेह विना, जेहनई जेहसिउ नेह. ३२३ सधलंड सूनुं विखम-फल, कां धरइ मन ऊंचां आंबा अंदोह, ते ऊपरि सिउ मोह ३२४ काजि न आवइ आपणइ, कारेली आप धरि. नहीं पर मंडपि वरि द्राख, वरि नहीं गोरा नव कालां पणि आपणां, लाख. ३२५ वरि **रूड**उ ते चंदन विसमथी, पंथ करीर, वरि खारथी, थोदूं जलधर ंनीर. ३२६ सायर जेहथी वरि सज्जन एकइ भर्छ, पहुचइ आस, बहूँया नर तेहनड सिउ बीजा संवास. वसइ,

देशी पाछली चालती छड़

मि तिणि कारणि रांन समानडूं, कहिउं कहिउं नगर विख्यात रे, जे पणि दीठउ आगिल नेसडु, जोड जोड तेह तणी वात रे. ३२८ सु. तिणि पुरि तुद्धानि माहरइ माउलइं, दीधुं दीधुं अति बहूमांन रे, स्वामि तेणइ कारणि नेसड, कहिउं किहं नगर समान रे. ३२९ सु. जिणि परि लहीइ मान जि अति घणडं, सोइ पुर नगर समान रे, जिहां नहीं सज्जन कोइ न बोलावए, नयर स रान समान रे. ३३० स्र. मिं रथ छाया सहजिं अणुसरी, परिहरी वटतरु छाय रे, वायस-विष्टा शाखा पतनथी, छ मासि रंडा थाय रे ३३१ स. युगतइं युगती वांणी सांभली, धनपति हरख्या अपार रे, बुद्धि सरसति अभिनव अवतरी, चिंति चिंति चित विचार रे

ढाल १४

राग रामगीरी (सुगुण सल्हुणा सींमधर, अ देशी)

शीलवंती सुंदरी, मतिवंति अलवि अपार रे. धनपति मन अति रौजवइ तु, गोरी ते गुण भंडार रे. ३३३ सुगुण सळूणी रे मनसिउं. नहींअ विखाद रे. नव नवां कौतुक जोअती तु, आवइ ति मंदिर सार रे...आंचळी किहिं एक खेलइ मृगलडी, मृग कंधि कंथ चडावि रे. कहिं एक पीउ पीउ बोलतु तु, चातक नेह सभावि रे. ३३५ स. किहि एक दीसइ मोरडी, नाचता मोर अपार रे. किहिं करइ मालति मोगरइ तु, कइवडइ भमर झंकार रे. ३३६ स्. किहि एक चमरी-सेरभी. किहि चकव चकवी जोडि रे. बग हंस सारस कोडि रे. ३३७ स किहिं अलवि चालइ ईसली तु, मनोहर नीलां पांख रे. किहि एक दाडिम स्यडी. बोलतां अति घण रूयंडा तु, जेहवी ते आंबा-साख रे. ३३८ स. पदिमनी वेघ विल्लघडा, किहि भमइ भमर रसाल रे, बइठीति सरस रसाछि रे ३३९ सु. कोकिला पंचम आलवइ त्. किहि कठिन पीन-पयोधरा. सिखि-पिछ चरणा सार रे. वन मांहइ खेलाइ शबरली तु, कंबु-कंठि गुंजा-हार रे. ३४० सु. किहिं सरल साल तमाल नीला, किहिं तरल ताल प्रलंब रे, बीजोरि बोर बदांम बीड, तुंब अंव जंबु कदंब रे. ३४१ सु. जंबीर जंबू जाइ जूइ, किहि द्राख रायण सार रे, करणीय किंश्रुक केतकी तु, नारिंग सदल अपार रे. ३४२ सु. पुत्राग नाग सुराग पूरी, ऊगी ति नागर वेछि रे, अति कठिंन श्रीफल दाडिमिनी तु, वरवर्ण कोमल केलि रे, ३४३ स. चतुर चंपक केतकी तु, दमनकु करूबक वाल रे, शतपत्र पाडल पोयणी तु, जासुण जाती जाल रे. ३४४ सु. इणि परिं कौतुक जोयतां, पुहुतां ति मंदिर ठाय रे. कामिनी देखी आवती तु, अति अजित थयु विछाय रे, ३४५ सु.

सैठि वहु ज देखीयां, सुत रूठइ ते वार, आहा धिग् धिग् तातजी, अ सिंड करिंड विचार ३४६ ए अति चंचल पाषिणी, कां आणी निज-गेहि, नीठरि अति निस-नेहि. ३४७ छंपटी लोमिणी. शीलवती नइ नामि. दु:शीलिनी, ए असती जेहनु न गमइ नाम. ३४८ मांणस कां देखीइ. जे देखी मन डल्लसइ, ते वाहालां परगामि, आंखि आगरि अलखामणां, जेहनूं न गमइ नाम. ३४९ एहवां वचन सुणी घणां, हुं हुं वारइ तात, मोटी ए घर-लछी कुल वहू, एहनी वात. ३५०

ढाल १५

राग असाकरी

अ बुद्धि अभिनव भारती, कुल-बहु शील-श्रुंगार, अति निपुण गुणवंती भली, निव लहूं हूं गुण पार रे ३५१ शीख्वती सम को नहीं, नारी चतुर सुजाण रे, शीलिं सुर नर करइ वखांण रे सीता जेहवी, ...दुपद तथा आंचली

वरसरल शय्या कूल-वह फुलदेंचति समी, ए नारी कुल-श्रृंगार, इम तात वचन सुणी घणां, सुत रत्न पूछइ वात धन-लाभ पन्नर कोडिनू, जाणीति अति मतिमंत रे. मद-मोद मेहुर मंदिरिं ते, द्रव्य थापिउ कोशि, भूवि स्वार्थ-भूता सह भमइ, जिंग नहीं बल्लभ कोइ रे. धन देखी सह क हर्सीडं, अति अजीत थय विछाय रे,

ऊपरिं, तुं जो-न पांचइ रहन. धन कोडी पन्नर सर्वह, एणीइ आणिड यत्न रे. ३५२ जी. निर्दोखी गुणवंत भली, एनारि अतिहिं उदार रे. ३५३ शी. आ रत्न लाभ लगइ वली, सोइं सेठिकहइ अवदात रे. ३५४ जी. तस बुद्धि अधिकी वली लहीं, मिन हुउ कोप सुशांत रे. ३५५ शी. धन-लाभ देखी अती घणउ, वीसरइ हैंडइ रोस रे. ३५६ शी. जस आस पुहुचइ जेहथी, तस तेह वल्लभ होइ रे. ३५७ शी किम दाखबूं मुख माहरुं, हिंब करुं किसिड उपाय ३५८ जी.

जिम कितव चूकु दायथी, जिम सुभद् चूकु धाय, जिम युथ चूकु हरिणलु, कर विना जिम कारे-राय रे. ३५९ शी. बिछाय वदन थयुं तिसिउ, भून्यस्त दृष्टि सुदीन, जउ कार्य अणघटतूं करइ, तु लाज धरइ कुलीन रे. ३६० शी. निज वदन हूं किम दाखवूं, कुहुनि कहुं मन बात, इम चित्ति साथि झूरता, तव भणइ सुगुण स तात रे ३६१ शी. मन साथि जेहसिउं मांडीइ, छेह लगइ आवचल नेह, एकवार कलह करी घणउ, परखंद जोइई तह रे ३६२ शी. अज्ञान भावइं जे करिउं, तस दोष न कहइ नीति, इम कही बेहू खमावीयां, अति सरल प्रांजिल चीत रे. ३६३ शी. नव नारि पणि सुविनीत अति, इम कहइ टाली रोस, ए कंत नहीं अपराध तुज, मुज कर्म केर दोष रे. ३६४ शो. तहीं प्रभित अधिकु प्रेम तस, जिम तामरस रोलंब, जिम चंद्र अनइं चकोरडा, जिम कोकिला नइ अंब रे ३६५ शी. तहों थकी प्रश्न-प्रहेरिका, नवी नवी भाषा भेद, पूछइ जि वर हैआंटिका, ते कहइ वडइ बिछेदि रे, ३६६ शी.

: 88

अथ प्रहेलिकाधिकार

दुहा

सरघा मुखर्थी स्युं हवइ, कुण करि-मंडन होइ,
सुंदरि सिस-मुखि मृग-नयणि, उत्तर दिइ मुज सोइ. ३६७
शील्यती उवाच-मधुकर, व्यस्तजाति. १.
अजित उवाचएक नारी रहइ कोशमां, स्त्री उपरी स्त्री नेटि,
हैइ विलग्गी निव गमइ, पुरुष तणउ भरइ पेट. ३६८
शील्यती उवाच-तरवारि, समस्तजाति. २.
अजित उवाचसायर-सुत दमयंति-प्रिय, कुण कहु कमला-कंत.
भोगिक वल्लभ कुण हवइ, भर सायर का हुंति. ३६९
शील्यती उवाच-चंदनलहरि, द्विव्यस्तजाति ३.

अजित उवाच-पावक–वाहन सर्व प्रिय, वीर वल्लभ संसारि, कहेवी शोभइ नारि. वाणि केहवी, शीलवती उवाच-मेखलाभरणसहिता, ज्यस्तसमस्तजाति ४. अजित उवाच-जलधि-सूता कुण प्रिय, शोभा लहइ परिणांमि, सिइं पामइं सुख भमरला, उत्तर दिउ अभिराम् शीलवती उवाच-कमलेन, द्विसमस्तजाति ५. अजित उवाच− कुण वनवासि अलखामणड, अहिधर कहेवु मित्त, झुरी झुरी मन भीतरिं, कुण कृश हुइ नित्त. ३७२ शीलवती उवाच-विरिहत, द्विव्यस्तसमस्तजाति ६. अजित उवाच-सुभट चौर वंछइ किसिड, का खल वयाण वसंति, पवनह वैरी कुसुम-प्रिय, का गणिका घर शीलवती उवाच--भूजंगऽलि, त्रिव्यस्तजाति ७. अजित उवाच-दुर्जन जन जिंग कहेवू, विण अपराधि कहेवु, विरही नइं न ससि-वाहन सो शीलवती उवाच-दोषाकर, एकालापकजाति ८. अजीत उवाच-कहेवी, भील तणड अहिठांण, दुअंगम अटवी वनिता किसी, दइ सुजाणि. ३७५ नवयौवनि आनंद शीलवती उवाच-मदनवती, भिन्नकजाति, ९ अजित उवाच-न्याय राजियंइ नरपति तणइ, कहु कुण केहवी होइ, वनराजी केहवी कहेवी भजइ, दिउ अहा उत्तर सोइ. शीलवती उवाच-कुमुदावलीराजिता, भेद्यभेदकजाति १० अजित उवाच-कुण जाणीइ, अरूण उगमतं कुण, मंदगतिइं सिस-लंछन कहु कुण हवइ, उत्तर दिउ अहा निउण. ३७७ शीलवती उवाच-मद् १, अरूण २, ससि ३. प्रश्नोत्तरसमजाति. ११

अजीत उवाच-

मान हानि उत्तर जिहां, कह तिहां केहवूं प्रश्न, निज करि वीर धरह किसिड, दिउ तुद्धे उत्तर कृदन. ३७८ शीलवती ज्याच-कोदंड, पृष्टप्रश्नजाति १२.

अजित उवाच-

सुहर्डि रूठइं विइरीआं, कां रमइ उरवरि नारि, अति आसारि सिउं हवइ, अति चंचल तरवारि ३७९

शीलवती उवाच-...(?) भग्नोत्तरजाति १३.

अजीत उवाच-

नागार-हित न्याइ करी, नरपित कहेवुं होइ, वैनितेय आलय किसिउ, दिउ अहा उत्तर सोइ. ३८० शीलवती उवाच—नागरहित अद्युत्तरजाति १४

एवंमध्यांतादि झेयं.

अजीत उवाच-

मोह करइ कुण कृपणिंन, विश्व विधाता कुण, कंद वधारइ कुण वली, कुण दिइ पंथ सडण. ३८

शीलवती उबाच-...(१) कथितापह्नुतजाति १५.

अजीत उवाच-

राजीवाली-बोहगो, को ता इठा होइं बाबीसं होइ गुरु, दीहामुक्खो कोइ...(१) ३८२

अजीत उवाच-

शीलवती उवाच-हंस.

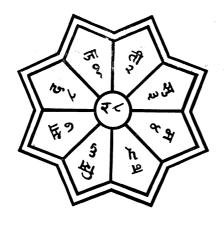
बालक-पिय गिरिजा-पीउ, नारी हैं इ कोइ, दसइ इक्रगुरू रितु नम्रन-लघु, कुण दोहा नाम होइ, ३८३ शीलवती उवाच-पयोहर

अजीत उवाच :

धणुंह तणइ शिरि कुण रहइ, कुण हुइ सुयण शरीरि जल निहिदिसि लहु नयन-गुरु, वयवर कवण सुधीर. ३८४ शीलवती उवाच-गुण, दोधकनांमजाति १६ अजीत उवाच-कुण निषेधा रथ हवइं, कुण पश्चिम दिशि स्वामि गोरी कमला-नाह कुण, कुण हवइ धरणी नाम. ३८५ शील्बती उवाच-.....(?)

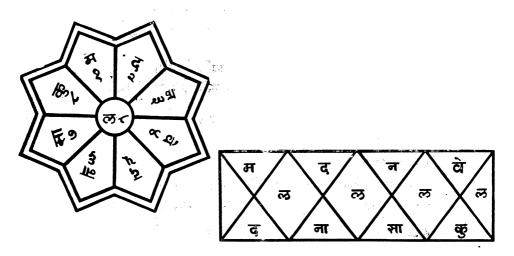
अजीत दुवाच-घन जघन स्तन पीन युग, निर्जित नयनि कुरंगि, नननन मममन अहइ अह, कुण कहइ पहिलड संगि. ३८६ शील्यती उवाच-नववधू, वर्णीतरजाति १७.

अजीत उवाच-रुंपट शिंर पीयुष-प्रिय, अश्रुची भूचर नाम, वसंग उत्तम भय कुहु, केह्रवु भमर सुजाण ३८७ शील्वती उवाच-जातीसुमनसिसादर, अष्टदलकमल्जाति. १८.

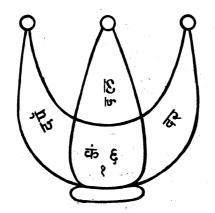


अजीत उवाचजगमां अश्रुचि किसिउ हवई, कोमल सिंउ कमलांह.
दमयंति वरनाम तनु, नाम किसिउ कटकांह. ३८८
सरल किसिउं पंकज-निलं, कुंण रखुइ नगरांह,
किसिउं जणावइ आचरण, कवण सहाय खलांह. ३८९
कुण निषेधा रथ हवइ, ब्राह्मण वल्लभ कोइ,
मुखमंडन केहवु नींच जन, विरही केहवु जोइ. ३९०

शीलवती उवाच-मुद्दनवेदनासाकुल, १८, मंजरीसनाथजाति १,, अष्टदलकमल २, गोमुत्रिता ३, व्यस्तस्मस्त ४, बहिलोधिका ४ द्विचित्रगर्भितं. १८.



अजित उवाच— जल अभि मांनस कुसुम—सर, महेरव मिंड्सम कलेश सुख भय गुहवर नाम कुण, गोरी उत्तर दिसि. ३९१ शीलवती उवाच—कंदर्प १, कंदल २, कंदर ३, काकपदोत्तरजाति १९.



अजित उवाच-सक्ति जपन्म निषेच कुण, वन-वैरी कुण होइ, रतिवर जलचर ठाय कुण, भय विचि अक्षर कोइ. ३९२ शीलवती उवाच-वदन, मदन, मंथारजाति, २१.



अजित उवाच-

मरण थकी कुण दोहिलु १, ओर किसिउं करि जाइ २, अहिवर वास ३, एकांत वच ४, वैरीस्मर ५, तिमिरांह ६, ३९३ कष्टनांम ७, वर्णात्य कुण ८, श्रीवीची केहवु मार ९, पंखी १० दिवसह नाम कुण ११, बलिभद्र आयुधसार १२. ३९४ गोरी र्रातवर नाम कुण १३, गोरसथी स्युं होई १४, कमलापति १५ कहेवु दोहिलउ, हरिण विमासी जोइ. ३९५ संबह वहरी कुण हवह १७, सुंदरी मनस्युं जोइ, सतर प्रश्न मई पूछीयां, एक पदि उत्तर देइ ३९६

शीलवती उवाच-सर्वतोभद्रजाति २२.

र विह	विर	हर	बिं	रह	हर	रवि	विह	₹:	वि	वि
विह	ह१	वि२	ल३	8	4	Ę	ल ७	6	र९	१०
				अह	हल	वि १३	हवि	अः	विह	₹
				११	१२	१३	88	१५	१६	१७

अजित उवाच-

कुण नर उन्मादी हवइ, सिउं हयवछम वन्नि, पंखीडा सिउं वल्लहुं, उत्तर दि सुवचन्नि. ३९७ शीलवती उवाच-नववया, प्रतिलोमजाति २३.



पावक वाहन सङ्जनह, वैरी वल्ली नाम, सुंदरि सिस-मुखी कटि—तटी, सिइ शोभइ परणामि. ३९८ अजित उवाच– शीलवती उवाच–मेखलयो.....

पावक अरि मरूथिल, किसिउं नरगुण सखी बोलावि, वाहालेसर वाणी किसी, सरोवर पालि सोहावि. ३९९ शीलवती उवाच— नीरजसिहता, शृंखलाजाति २४ आजत उवाच-

स्मर-थानक नव-बालिका, सिउं कहइ प्रथम संभोगि भय संयोगह नाम सिउं, कुण शीलव्रत योग्य. ४०० शीलवती उवाच-मदनरहित, एकांतरित शृंखलाजांति २५. अजित उवाच--

स्त्री-मुख सम वनवासिनी, किसिउं समावइ मेह, उत्तमजन वांछइ किस्युं, ब्रह्मानूं कुण गेह. ४०१ शीलवती उवाच-सरसिजवास, एकांतरित शृंखलाजाति २५. अजित उवाच-

शबद एकांति भुजंगहर, कुण हरइ तिमि-रस निउण, मरण थकी अति दोहिल्छ, सुंदरि ताहरू कुण. ४०२ शील्वती उवाच-विरह, नागपाशजाति २६

अजित उवाच-

कुण निषेधा रथ हवइ, सज्जन वल्लभ होइ, नेह जणावइ मन तणउ, कहु कुण उत्तर सोइ. ४०३ शीलवती उवाच–नयन

अजित उवाच− अंतिम अखर कहु किसिउ, कुण कमळापति नाम, बाळा ळोचन उपमा, कुण पामइ अभिराम. ४०४ शीळवती उवाच−हरिण.

अजित उवाच-निसि दिन वंछइ सुभट सिडं, धुरि एक अक्षर देइ, बाला-गति कूच उपमा, सुंदरि कुण पामेइः ४०५ शीलवती उवाच-वारणः अजित उवाच-कुण गोरी-मुह समवडिं, दिइं अक अक्षर अंति, विरहनई सिउं निव गमइ, ते मल्यागिरि हुंति. शीलवती उवाच-चंदन. अजित उवाच-मध्य निखेधी वर्ण करि, आगिल पाछली एक, ससि-वयणी मृग-लोयणी, तनु उपमि कुण छेक, शीलवती उवाच-कनक. अजित उवाच-व्यजंनमां कुण मूलगड, सिउं वहन संसारि, ते नेह गुण ते नीपजइ, ते कहु कुण श्रृंगार 806 शीलवती उवाच-कज्जल, वर्धमानाक्षरजाति, २७. अछि अल गुण कुण वहही, कूंण भडइ अंगोअंगि, नाम किसिडं हरिनूं कहि, जित नयन कुरंगि. शीलवती उवाच-मालती. अजित उवाच-कुण गोरी उर उपमिं, मध्यम वर्ण तिजेइ, मधुकर कहेवी मालती, वल्लभ पणि न भजेइ. ४१० शींलवती उवाच-कदली. अजित उवाच-पुरव पछिम विकिण हैइ, सुभट से। मध्य-विहीन, अरि पूरई गोरी हैइ, कुण हुइ कठीन सुपीन. शीलवती उवाच-पयोधर, हीयमानाक्षरजाति २८. चातक वल्लभ कुण हवइ, करि संपिय जंपीय, नेहलया करवत किं, न करइ सुयण कुवीय. शीलवती उवाच-कलह, चलव्धिदुजातिः २९. अजित उवाच-पारवती पति नांम जे, आदइं कन्ह करेइ, ते सुंदरि तुज पासि छई, अहनु उत्तर देइ. ४१३ शीलवती उवाच-हार.

अजित उवाच-जे अक्षर उतावला, आदिम इंसिड भेलि, दोखी देखी नहीं सकइ, बाहला ते तूं मेहलि. 888 शीलवती उवाच-चीर. अजित उवाच-जे मोटउ हुइ वृक्षमां, आदिं काहानु देइ, ते तूं रूधि म प्रीउडा, अम घरि जोसइ तेह. ४१५ शीलवती उवाच-वाट. अजित उवाच-ज़लचर जीवह जेहथी, तेहनई प्राणाधार, तेणि आ साथि मिलि, कीधु तस संहार ४१६ शीलवती उवाच-जाल. अजित उवाच-जेहनु रंग वखाणइ, इ तस अंति होइ, रत-कल्हइं ते प्रीउडइ, सही अविणासी कोइ. ४१७ शीलवती उवाच-चोली, दत्तमात्राधिक जाति, ३०. अजित उवाच-सरोवर कांठइ जे वसइ, धुरि आकार करेइ, अंतिम अक्षर परिहरी, सा अह्य चित्त हरेइ. शीलवती उवाच-बाला, मात्राधिकाक्षर व्यक्तजाति ३१. अजित उवाच-सुंदरि सूर-गिरि कुण हवइ, अंत्य विनाशनि होइ, ते बि केवल नींचिंन, द्रव्य थकी अति होइ. 886 शीलवती उवाच-मंदर, च्युतमात्राक्षरजाति. ३२ अजित उवाच-चातकनइं जे वल्लहु, तस आदिक्षर ठाणि, मूलदेवी सिउं पालटी, घरये अधिक सुजाणि. ४२० शीलवती उवाच-मेह, च्युतदत्ताक्षरजाति ३३. अजित उवाच-हंस बल्लभ हवइ पालटी, निर्मल अग्नि शतांग, त्ंस वे हील्युं कमुअनि, अखि तूह तिख घंख.

शीलवती उवाच-कमल.

सुंदरि डूंगरि सिंउ हवइ, अतिहिं विषम अगम्य, खिह पाखाल लिहालंडच. खोखी अविलुह टिम्म (१) ४२२ शीलवती उवाच-कंदर, अर्धमूलदेवी ३४. अजित उवाच-सविखपनी तिखहा भपी, उज कडखान खावोकि, ऊजल विमि कसरान जु, टिप्पिहि यखी डोकि.(?) ४२३ शीलवती उवाच-आस, शुद्धमूलदेवी ३५ अजित उवाच-मृहि मीठी अति वल्छही, चांपीती रस देइ, गोरी छोछी पातली, ते पणि वृध घरेइ. ુકર शीलवती उवाच-इक्ष्रयष्टिः अजित उवाच-गुणवंतु वाहालेसरू, थण अंतरि सुपइठ, थाइ विलग्गइ गोरि गलि, सती जननि इठः ४२५ शीलवती उवाच-हार. स्तन सिउं आहिंगन लीइ, वलगइ गोरी कंठि, अंगो अंगइ भीडीइ, सतीइं जार न हूंति. ४२६ शीलवती उवाच-कंचुक. शाब्दिक प्रहेलिका-माग विचालि तं वसइ, तुज पति उपमि जेह, पणि नवि रूधइ वाटडी, भंजउ अहा संदेह. ४२७ शीलवती उवाच-मा**तं**ग. अजित उवाच-मण मजिझंमि य सा वसइ, पणि नारी निव होइ, तेहिंन सेवइ योगिवर, कहिउं न बूजइ कोइ. ४२८ शीलवती उवाच-मसाण. अजित उवाच-मद्नबाण सहकार, सारसळां वरनेत्रह. नेपुरी आलि प्रियंग, चंग मयगल गइ चितुह, भूपति रूठइ सवल, सयल बल ठाहावइ वेरीअ. नाहसंतां कहु कोइ, होइ वल्हावन केरीअ, वली तेणि तुठइ भूमिपति, एक अक्षर धूरि देइ करि, निज राज पट्टणदेस सरिसी, कवण खेलइ वास हरि. ं शीलवती उत्राच-सुंद्**री**. ं

अजित उवाच-धर्मवंत पणि प्राणहर, गुणवंत पणि छइ वंक, सद्वंसि पणि अकुलीन नर, बिहु-कोडे पणि रंक. ४३० शीलवती उवाच-धनुष

अजित उवाच-

छिद्र सिंहत पणि बहु गुणवंती, करइ मेलापक पणि निव दूती, लोहमइ पणि वेसि न होइ, पुरुष सिंहत सा नारी कोइ. ४३१ शीलवती उवाच−सुइ-दोरू.

इत्यर्थ प्रहेलिका, प्रहेलिका जातिः ३६.

अजित उवाच-विरही कराछी गोरडी, पीडी नयेण-सरेण, चंपकमाला उरि धरई, वाहाली कारणि केण. शीलवती उवाच-पूर्वहरेणमोदग्धः अधुनापि हरिलंगाकारधारिणी, चंपककिल कापि काणतापोपशांति चितनोत्. ४३३ अजित उवाच-प्रीउ चाल्यु परदेशडइ, ओ उगिउ बीय-चंद. विरहणी वनिता गुण घणेइ, कुण जाणइ वृत्तंत 838 विरह जगावइ कोकिला, कुहु कुहु पंचम भावि, गोरी गाइ गीतवर, विरहणी कवण सभावि. ४३५ पीउ परदेसी आवीउ, बाला देखी सलजा, कोइल वायल करडु, ए पूजिया कुण काजि ४३६ हंस उडाडिउ बालाइ, प्रीउ चालंतु जाणि, पंजर आगिल मेहलींड, गोरी भाव वियाणी 830 बाला विरहानलि तपी, खिणि खिणि दुखं न खमाइ, अंगिनि धन जि अंगमी, मसिहर सेवइ मांइः 836 प्रिय विण झ्राइ बालिका, सूकी खंखर थाइ, गज-गामिनि मृग-लोयणी, कां उध्वब्भय जाइ. रथा सम्मुह पिउ मिल्यु, जुहार न कीधु जाइ, लाजि चतुरा कंठथी, हार सत्रोडइ कांइ. 880 राखीतु रहिसइ नहीं, पीऊडु चालणहार. मोकलावइ भींति आंतरइ, गोरी कठण विचारी.

सजन सेरी साहामूं मिल्युं, नीचा नम्युं न जाई (पाठान्तर 'क').

यत साजन दीठड आवतु, त्रूठड मोती हार, लोक जाणइ मोती वीणइ, नमी नमी करइ जुहार. मौन करी आगिल रही, नयणां करसिउ जंपि, प्रीउ चालंति बालिका, कारण जाणिउं कंपि. हृद्यालिकाजाति, केचित्तुंगढजातिप्राहुः ३७. अजित उवाच-रातिइं आवइ दीसिं जाइ, शीतलकर मोरइ तिन वाहइ, वली वली जोतां दिइ आनंद, कह ते वालिंभ नाजीचंद शीलवती उवाच-नाजीचंद्र, ३५ अजित उवाच-मधुरः सरइ बोल्ड मनहरइ, सुगुण सुवैध निज खोल्ड घरइ सूर-नर तेहिंन ध्यानि लीण, कहु ते वनिता नाजीवीणि शीलवती उवाच-नाजीवीणि. अजित उवाच-उंचा अणीआला बलवंत, मुहि काली तिल गोरा हुति, नीसरइ हैंडुं फोडी भल्ल, कुह ते प्रयोघर नाजीभल्ल ४४६ शीलवती उवाच-नाजीभल्ल, ३६. अपद्युतिजाति ३८. सुखीआं अमीअ तलावडू, दुखीआं विंति अगनि शिखा पीउ विरहियां, उ सखि चंद रसाल. ४४७ क्ररीरांररीररारकं, क्रीरांरिरार, रर रिरि रूरिरिरां, रोरिररं ररा सर 886 इत्यादि मूलदेवी, सहदेवी, करपल्लवी, नेत्रपल्लवी, अंकपह्नवी, बिंदुपह्नवी, नादपह्नवी, वस्त्रापल्ली, अषधपल्लवी, धान्यपल्लवी, वर्णपरावर्तादि भाषां विद्रमती प्राहु, इंछालिपि प्रभृतीनिपं ३९. अजित उवाच-रावण-रिपु-सेवक-पिता-अरि-स्वामी-सुत तास, तस वाहन सर सांभली विरही मेहलइ नींसास. 886 शीलवती उवाच-मयुरवाणीः त्रंबासत-पति-प्रियतमा-वाहन, मध्य-विभागि, जल-सूअ-सूअ-सूआ-वाहनह, गमनि उपाइ राग. 840 शीलवती उवाच-सिंहलंकी, हंसगमनी मधुर रसरइ.

Jain Education International

अजीत उवाच-रवि वैरी शिर-केशि, तास भक्षण मुहि वसीउ, नयने तेहनुं मित्त, तास वैरी कटि हसीउ, उरवरि तेहनु भक्ष, रूपि तस स्वामिनि दीपइ, करचरणे तस वास, तास प्रियग मनि जीपाइ, इम दक्ष गुणि तस स्वामिनी, मही मांहइ महिमां सोहञ्जे, मदमत्त मंथर मयण महा, रस मंजरी मन मोहके. ४५१ पवनह वाहन वाहनह, तस वाहन तस नारि. तिणि थानिक मेळावडु, जोअ चतुर विचार. ४५२ ...गंगाया... गिरिजा-प्रिय, उर-भूषणह, तस बल तस शुंगार, वाहालेसर ते लावयो, जुहइ प्रेम अपार. ४५३ ...हार.... सागर-तनया तास वर, तस वाहन तस आहार, तस वल्ली अह्य बल्लही, कहु कवण विचार. 848 ... नागवल्ली, नाटशिलाजातिः, ४०. अजित उवाच-ऊडइ पणि बोल्डं नहीं, जेहनइं पंखी न होइ, प्रीउ आवंतउ जे कहइ, सिंह ते पंखी कोइ. ४५५ शीलवती उवाच-वधावुं. पत्र पुष्पु फल जिहां नहीं, अण वावि उगंति, सोइ सिव हूंनइ दीसीइ, ते कुण भंजड भंति. ४५६ शीलवती उवाच-केशपाश, समस्यांजाति, ४१ अजित उवाच-इस्वर-चरणे जे वसइ, तिणि नामइं जस नाम, तस वयणे हूं परभवी, सहीं म पूछिस नांम. ४५७ ...बइल्लेन... चातक मुहुडइ जे छत्रइ, तिणि नामिं सोइ नांम, सहि तस विरहिं दुबली, चालिउ रयणि विरामि, 846 शीलवती उवाच-प्रियः. इति प्रश्नाधिकारः. पुनरजितः पृछति, अंक कला वेछि –शीलवती उवाच, अजित प्राह-एक विन २ शत २२ चंपका, एक चंपके २२२ शाखा, एक शाखायां २२२ चंपकानि, एवं सर्व वने कति चंपकानि.

अजित उवाच-किश्वत् मासं यावत् , स्थानद्विगुणाष्टकाः ददाति, १, २, ४, ८ एवं ३० दिने कित टका भवंति शीलवती उवाच-५ अर्बुद, ३ कोडि, ६८ लाख, ७० सहस्र, ९ शत इति मास सं स्या एवं सर्वतो १ अव्ज, ७ कोडि, ३७ लाख, ४१ सहस्र ८ शतं २३, छ । अजित उवाच-८ कोडि ८८ लाख ८८ सहस्र ८ शत ८८, अस्य वर्गे किं भवति, ८८८८८८८. शीलवती उवाच-७ अंत्य, ९ सरितांपति, १ महापद्म २ नखर्त्र, ३ खर्त्र, ४ अब्ज ४ अर्बुद, ९८ लाख, ७६ सहस्र, ५ शत, ४४ छ. अजित उवाच-स्थानद्विगुणे नष्टे २९ दिनांके त्रिंशत्तम दिनांकेन शिरोतले को विघीयतां. शीलवती उवाच-त्रिंशतम दिनांकोद्विगुण क्रियते, ततोत्यांक मध्या दे को हीयते, रोखं शिरोबालक, छ. (चित्र पृष्ठ ४२ मां छे.) अजित उवाच-९८ दिन संक्रिक्ते कि भवति. शीलवती उवाच-४ सहस्र ८ शत ५१ छ. अजितसेनोवाच-८० टंकैः १ सेर, ४० सेर १ मण, १६० मणे १ मूटक एवं विधो मृटकः कित चिटकैर्मक्षितः एकैकेन अढीटांक तिलाः भक्षिताः शीलवती उवाच-द्वि लक्ष २, ४ सहस्र, ८ शत २०४८०० छ. अजित उवाच-महिला हेलानि रत, सुरत रस समरिं भडतां, मुद्धिं मुद्धि प्रहार, हार अंगो अंगि अडतां. तृटउ कल्हिं लागि, भागि त्रीजइ भुंइ पडीउं. पइठइ सेजि विजालि, पंचम रेडखडीउ. छठउ ति कामिनि करि-कमल, दसमू ति प्रोउडइ अणसरिउ, छ सत्र मोती देखीआं, ते हार केतइ परिवरित. ४६० शीलबती उवाच-३०. 🍼

ξ

		_
द्वि गुणेनष्टे २९ दिनांके	१ . २	
	8	
£\$888888888888888	9 ६	
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	३२	
\ &&&&&& &&&&&&&&	Ę 8	١
<i>६६६६६</i> 8888888	926	
\	२५६	
\ <i>६६६६</i> 88888	५१२	
\ & &&&& &&&&&&&&&&&	१०२४	
\ ६६६ 8888	२०४८	
\ \ \$ \\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	४०९६	
\ ६६६४४४ /	८२९२	
६४४६६६ /	9 ६ ३ ८ ४	
\ ६६४४	३२७६८	
\	६ं५५३६	
/ £8 \	१३१०३२	
\ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \	२६२ १ १४	- 1
9 /	५२४२८८	
	१०४८५७६	- 1
\ /	२०९३१५२	
//	४१९४३०४	
y	८३८८६०८	
	१६६७७२१२	
	33448833	
	१७१०८८६४	ı
	१ ६४२१७७२८	
	२६८ ४३ ५४ ५ ६	
<u> </u>	५३६८७०९ १२	

अजित उवाचभिम्म भाग भाग गुण रागि, भागि बठइ तरू सिहिरिं,
त्रीजड विकचि कदंबि, अंबि चडथड ल्हरिं,
पंचम चंपिक विमल, अमल कमलह दलि त्रीजइ,
तिहां एक मातु भमर, अमर तरू सिहिरं दीसइ
ते भमर संख्या केतली, कहु गणित अंकइ कामिनी।
मृग-नयणि बोलित अमीय, सिस-मुखी, मत्त मयगल-गामिनी। ४६१
शीलवती उवाच-६०

अजित उवाच-

गोरी नयन कटाक्ष, दश विक्षेपइं नाहाठां, हरिणां चडथइ अंसि, वंश-जालइ जै पइठां, अर्घा तिटिनी तीरि, नीरि ते ताणी लीघां, पंचिमं पंकज नयणि, वयणि पण तरणां दीधां, दो मान मागइ मानिनी, तुज सेव करतां देखीइ, इम सर्व हरिणां तणी संख्या, केतली ते लखीइ. ४६२ शीलवती उवाच-४०, छ. इति गणित अंकपूरछा, छ. श्री, श्री गाथा प्रश्न प्रहेलिका, जे इम पूछिया भेद, केता ते बोली शकूं, हूं पणि वडह विच्छेहि. ४६३ गोठि करंता सुगुण सिउं, कहींअ न आवइ पार, वाणी वरसइ अमीय-रिस, जिम भाद्ववि जल-धार. ४६४ सन्जन सिउं गुण गोठडी, जाणे अमृत-पान, भूख तरस ते किम वइ, जस मिन तेहनूं ध्यान. ४६५ सूर-गुरूनिं नवि उपजइ, जे रस सहिजि सुचंग, सग्ण सवेधां संगतिइ, ते ते हुइ रस-रंग सुंदर सुगुण सुवेधनइं, साहमां मिलइ सुजाण, साकर दुधइ सिउं मिलि, कुण करीसइ वखांण. ४६७ राग-सरोविर रिस रमइ, जिम हंसानई हंस, रूप विलसइ नब नव परिं, दोइ निज कुलि अवतंस. ४६८ कुल-देवतिनी परि सहू, आराधइ परिवार, गुणवंत संघलई मानीइ, नाहानांइ सु वार 859 नाहानां मोती गुण वडां, गोरी वडइ थणेण, पान-अडागर नाहानडा, वाहलां हूइ गुणेण. ४७०

प्रसिहर नाहानू पूजीइ, बाछु-रवि वंदाइ,	
	४७१
गुणवंता गुणि राचीइ, रूपि न धरीइ रंग,	
वरि कंटाली-केवडी, सीबलि नहींअ सुरंग	४७२
गुणवंता अरथी घणा, कुहुनि कहिसिउं रंग,	
जस मन बाधू जेहसिउं, तेहिंन तेह सुचंग.	४७३
तरुवरि जायां वनि वसियां, सरस सुरगां फुल,	
जिहां जाइ तिहां मानीइ, गुण माटइं लहइ मूल.	४७४
रवि आवाइ नितु दूरिथी, हंसा पासि फिरंति,	
गुणवंत पंकज कारणईं, केता सेव करंति	४७५
भमर भमइ दुख निव धरइ, परिमल वेधिउ फुलि,	•
सुगुणां सञ्जन सेवना, स्नाभइ केणइ मूर्लि	४७६
ओ भमरउ ओ कमलिनी, ओ द्वाख्या ओ वीर,	
साधन सोविन-मूंदडी, ओ नर नवरंगा हार	४७७
जां न चल्रइतां अमीय-रस, नेह न क्षण महेलाइ,	
विचलिउ विखयी अधिकते, दीठइ मन उल्हाइ	४७८
नव नव रसि सुख विलसतां, इस दिन गमीया केवि,	
2	४७९
रयणायर सूर सुंदरी, गोर-पयोधरि भार,	
हार तिण परि संपना, सुर सुंदरि भरतांर.	४८०
विहि वरांसिउ विहुं परिं, दोइ कलंक धरेइ,	
एक सरखूं मेलइ नहीं, अनि नर रयण हरेइ.	४८१
जग-वल्लभ उपगार पर, सज्जन पुरइ आस,	
फटि रे निरगुण दैवते, कांइ न कीयां चिरास	४८२
सुगुण सदुषण सरजीयां, हा हा ए विहि वंक,	
तुछ आयु कइ धन नहीं, अहवा होईं कलंक.	४८३
थोडा वरसइ मेहला, घणा करइ उपगार,	
संभारणुं सज्जन करइ, थोडइ घणूं संसारि	828
थोडा बोलइ बोलडा, पालइ मेरू समान,	
सज्जन सुपुरिस चिरज्यु, कीजइ कुण उपमानि	४८५
रंग देखाडी रस समी, मोह उपाइ जाय,	
जिम जिम समइ सांभरइ, तिम तिम काल ज कपाइ.	४८६

अजितसेन अति दुख धरइ, नयनि वञ्चटइ नीरि,	
विरह-सरोवर उलटिउं, केतो रुंघई वीर.	४८६
केता समरुं बोलडा, प्रेम तणा परवाह,	
दुख दारुण वञ्जघातथी, जिम दावानल-दाह.	866
कुटुंब सहु तव बुजवइ, अधिक न कीजइ सोस,	
एहवी गति संसारनि, कुहुनइ दीजइ दोस	४८९
सुर सुरपति जिन चक्रधर, वासुदेव बलदेव,	
हरि-हर सूरगुरु असुर नर, चिरजीवी-न न केवि.	४९०
राम रावण मुंज भोज नृप, सवि पुहुता परलोकि,	
चंचल गति संसारनी, कुहनु धरीइ शोक.	४९१
दु:ख घरीइ कुण कार्राण, किहसिउं कीजइ नेह,	
जे अविहड करी सारीइ, ते पणि आपइ छेह	४९२
प्रेम सर्वे छइ कारिमा, अविहड देइ म जाणि,	४९३
घडीय न जाती जेह विण, ते विण धरीइ प्राण	074
माणस केरां हेडलां, कठिन घडिया जिम लोह, फाटइ नहीं घण दुःख सहइ, वाहलां तणइ विछोहिं,	४९४
कहिनां दुःख संभारीइ, कहिनु कीजइ सोस,	3,3
क्षाहुना दुःख समाराइ, काहतु काग्य सारा, झुरि म समारे सनेहडा, हइडा करि संतोष.	४९५
सांजि जिम पंखी मिछी, नव नव रंगी रमंति,	
साजि ।जम पेखा मिला, नव नव रेगा रेनातः कुण किहानु किहांथी मिल्युं, तिम सवि सज्जन हुति.	४९६
गुण संभारी सहू रडइ, सगपणि न रडइ कोइ,	• • • •
मेह जातां मोंरा रडइ, पीछ जतां निव जोइ.	४९७
सहुणा सरिस संयोगडा, क्षणमां हुइ विश्राल,	•
वीज तणूं अजुआलढूं, न रहइ ते चिरकाल.	४९८
हइअडू वज्र तणी परिं, फाटइ नहीं वियोगि,	
जे जे दुःख आवी पडइ, ते ते सहिवूं होकि	४९९
चंचल गति संसारनी, जांणि भूलि म जीव,	• •
शोक-संताप सिव परिहरि, घरम करु सदेव.	५००
	• .:
थोडइ घणु प्रीछीलीइ, डाहा हुइ जेह, अस्थिर सिउंमन परहरी, स्थिर स्युं कीजइं नेह.	409
	1-1
चक्रवा–चक्रवी मेलीयां, सर लीधों कणलांह, जनपूजा पामी गयुं, न सोचियु दिणनाह.	402
जनपूजा पामा गयु, न साम्ययु ।दणनाहः	404

महीअलि नाम रहावीउं, जलधर जीतु दार्न, ते नर गया न शोचीइ, त्रिभुवन-तिलक समानः ५०३ सज्जन सहु टोल्ड मिली, प्रीलविड अजितकुमार, शोक संताप निराकरी, तस सूपिंड गृह-भारः ५०४ वाहलां विछोहियां मांणसह, पहिलूं डंबर खाइ, आज तेहवूं कालि नहीं, दिनि दुख उहलाइ. ५०५ शरिदं सरोवर नीर जिम, खिणि खिणि छंडइ पालि, तिम तिन तिन दुख उसरइ, जेहवूं हुइ ततकाल. ५०६ अजितसेन गृहपित ह्यु, शीलवती धिरनारि, कुटंबभार दोइ निवंहइ, निज कुल तणा आधारः ५०७ इम करतां दिन केतला, गमीआ लील विलासि, अजितसेन सुख जोइवा, पुहुता श्री मधुमासि. ५०८

ढाल १६ राग काफी [देशो फागनी]

कमल-सिंहासन निरमल, अमल-ससी सिरि-छत्र, चंचलगति मलयानल, मयगल अतिहि विचित्र, कोकिल-कल्स्व बंदीय, नंदीय अलि-परिवारि, मयण-राय रहिष कानिनि, मानिनि-मद संहार. ५०९

काव्यं

कामिनी-जन सेवा गहिगही, कुसुम-बाण अति दारुण किर प्रही, आगलीथी आव्या वसंत-प्रधान, पूंठि थकी राज पंच-बाण ५१० चंपक-तनु कर किशलय, बिशलय-दल भुज नेत्र, अलि कुल कजल अंजन, जनमन-रंजन चित्त. गोरी जंबीर पयोधर, अघर प्रवाली-सार, वसंतरूप ए कामिनी, कामिनी तिलक-रांगार. ५११ प्रींउडड उत्तर कामिनी सिउं रातु, निव रहइ रिव वारिउ जातु, दिखणी इम नींसासु मेहलइ, वायुल उन्हड तिणि खेल्लइ. ५१२ सरस सहकार सिपंजर, मंजिर करीअ आहार, कोइलि सरलइ सादिं, वादइ अति मनोहर, विरहिणी-जन मन-साल ए, साल तणी परि तेह, प्राण त्यजइ के पहिलां, गहिलां जे ससनेह. ५१३

शृंगारमंजरी

वृक्ष सिउ लइ आलिंगन् वेलडी, फल-पयोधरि नमी साहेलडी,	
कामिनी नव-नेह गहेलडी, प्रीउं कंठि वलगइ वहेलडी.	५१४
प्रिय विरहिय हीय-सारणि, तिणि कारणि हर देवि,	
मदन-बाण एणइ हेतुकि, केतकी शापी हेवि,	
विरहिणी-जन मन-दारिण, दारुण करवत-धार, वनि वनि केतकि महिमही, गहिगही भमर जंकारि;	५१५
·	717
भमरला गणि वींटी केवडी, गुणे करी पण दीसइ केवडी, बन मांहि देखी इम केवडी, विरहिणी मूरछाइ केवडी	५१६
स्त्री-कुचिसरं बल मांडि म, दाडिम ताडि म आणि,	
दिन थोडा रे वसंतना, सतना गुण तूं आणि,	
तुज मनि भूसा जेहनी, ते एहना अधर विचालि,	. 6
इम बूजविवा सूडिला, रुडला बईठा डालि.	५१७
दाडिमी कुच उपमा कामिवा, तप तपइ ए शोभा पामिवा,	_
वन मांहि अधो-मुखि जे रहइ, टाठि-ताप तिणि वेधई तिन सहइ	५१८
नव नव किश्लिय रातीय, मातीय कुसुम-अंबारि,	
सहिजि सुरंगीय वेलडी, बेलडी अंब-आधारि,	
किहिं चंदनि अहिनव-कुल, वकुल-लता किहिं जाल,	
जोतां चींत कि हीसइ, किहि सहिकार रसाल	५१९
वसंत-मासि पंथी-जन-कामिनी, वाट जूइ उभी गज-गामिनी,	
यौवन चंचल जाइ जिम दामिनी, वरसनी परि वहरणि यामिनी	१२०
वनि आंबा रस-मंजरि, पिंजर छांटणां कीध,	
कुसुम चित्ताम कोकिला-रवि, धवल-मंगल तिहां दीध,	•
पहिरी कुसंभ सपल्छव, पल्छव रूपि सुरंग,	
मदन आवंति वनि तां, वनिता इम धरइ रंगः	५२१
मानिनी-जण आण मनावी, कोइलि कलह भंजिउ आवी,	
कामराय तुठिउ तिणि काजइ, कोइलि नइ आपिउं वनराजि.	५२२
अगुर-पयोधर सफलीय, नव-वहूनी परि ्वेलि;	
बोलड़ नव भिय कांपति, रहि रहि प्रीउ मुख मेहेलि,	
नन नन अलि रवि वारती, आवी मलय समीर, दिइ आलिंगन वेलिसिउं, हेवि सिउं आणी धीर	५२३
	737
भमरलइ कोइ चांपी काची-कली, वेलडी तिणि कांपि आकलो.	
तेणि पल्णव शोणित नीसरइ, पंथीयां नव-वहू तव सांभरइ.	पर४

परिमल रस परि पंथ ए, मंथ ए मानिनी मान, मलय-समीर आनंदन, मदनसेना नींसांण. रत-जलहर, लहरि मनोहर वाइ, युवती-जन धरि आविवा, अति उताविल धाइ, ५२५ वायुलु कुसुम-कामिनि विलसवा, मलयथी आव्यु वन वसिवा, वन मांहि देखी कुसुमावली, विरहिणी विरहि थाइ आकली. ५२३ नव नव चंपकनी कली, नीकली सोविन-वानि, जाणे कामनी दीपिका, कामिनी दीपइ काम, अलि-अल कज्जल धारती, वधारती परिमल-गुणि महिमहिती, दहिती पांथ पतंग. ५२७ भमरलु कोइ बइठउ चांपइ, तेणि भारि काची-कली कांपइ, प्रीउडु नव-बाला चांपइ, रितु-वसंत एणी परि व्यापइ. अंबर सालय, वरसालइ मधु-मासि, देखी पंथीय-वधकर, मधुकर बइठा पासि, इम कोइ वनिता विरहणि, रहणि न पामइ ठाम, क्षणि धरि क्षणि वन-तरुअरि, किहिं निव छइ विश्राम. ५२९ विरह-ताप सिख मई न खमाइ, दिन गमूं पिण रात्रि न जाई, वसंत-मासि देखी मिन गहिबरी, विरहणी कह इं हुं का अवतरी ५३० मेहिल-न मान तुं मानिनि, मानि-न वचन रसाल, प्रीउनि चलने ताडि म, ताड म आणिस बोल, पाइ पड़ी करइ मीनति, वीनति तूं अवधारि, कोइलडी इम बुजवइ, बइठी वर-सहकारि. ५३१ कामिनी कोइ कामिं आकली, पाइ पडी अनइ मनावइ वली वली, जाइ यौवन जाइ वसंत है, मेहिल मान हिव बोल-न कंत है. ५३२ केलि करइ के सूअडा, केसूअडानी डालि, भमर भला तिहां भोलज्या, रोलज्यां रंग रसालि, वसंत वधू-जन वल्लभ, जाणे कुंकम-रोल, मुख-मंडन, सरस सुरंग तंबोल, कामराय ५३३ विरहिणी-जन प्राण निराकरइ, तिणि शोणित रात्रिम अणुसरइ, केसूअडी तणीं हारि सुवांकडी, काम तणी ए जाणे आंकडी. ५३४ सुंदरि कुच-युग सोदर, सुंदर पीन विशाल, कंटक-प्रिय नख विलखीय, देखीअ अतिहि रसाल, बीछी-फल तव पंथीय, हइडइ उपाइ जाल, अणदीठिं उचाटन, टीठिंइ सालइ साल.

प्रीउनि तेडइ सानि सुवेखी, चतुर कामिनिनी परि देखी,	,
सुकर पल्लवि वेली नाचती, भमरनइं तेडइ मदि-माअती	५३६
सही ए निसिदिन सेवइ, सञ्जन सुगुण सुरंग, घडीअ न पासुं छांडीइ, मांडीइ नव नव रंग,	•
अलि-अल इम मनि जाणीय, बइठा डालडी मूलि, पाडल किशलय कोमल, परिमल पेशल-फूलि.	५३७
चंदन-गंध भुजंग मि लीधड, वायुलइ मलय संगम कीघड, संगतिई विख धारिड घूमइ, तिणि वायु पंथी-मन दूमइ.	५३८
सरल सछाय अशोक ए, लोक नि मोहन रूप, जाणे स्त्री कर-पल्लव, पल्लव रातइ रुपि, पंथीय कामिनि विरहय, रहिय वीसामु लेइ,	
आशा-बंधि अशोक ए, सोक संताप हरेइ	५३९
कामिनीचरण प्रेम-प्रहारिं, तरु हसिउ ए फुल-अंबारि, कांतनी परि अशोक सुसंपनु, भमरला मिसि रोमंच उपनडः	480
वंश वजावइ भमरला, सुणतां दिइ उल्लास, तांडव मांडी नाचए, राचए मोर विलास, गीत गाइ तिहां कोइलि, आलवी पंचम-राग, इणि परि रितुपति आगलि, नाटक हुइ सराग	५४१
अशोक देखि कोइबुल उचाटिउ, कामिनी-मुख तंबोलि छाटिउ, प्रिय तणीं परि संभारण काजि, धरइ पल्लव राता आजइ.	,
चालवती कर–िकशलय, वेलडी नाच करंति, रंग-मंडिप मलयानिल, सोय कला–गुरु हुंति, नील-दल केरी कांचली, पहिरी नव नव भाति, भमर जोइ ते नाटक, मनोहर मांडी पांति,	५४३
कामिनी-स्तन आलिंगन पामी, कुरुबकइ पणि फूलिंउ कामी, हरिणाक्षी भीडइ स्तन विचालि, माणस पंहि ते रुंप रसाल.	·
वसंत-मासि मुझ विरिहय, रहीय न सक्कइ नारि, प्राण त्यजइ प्रेम -गिहलीय, विह्लीय वसंत मजारि, काम वसंत वय-स्नेहिन, दुखण चिंतइ कोइ कोइ,	
कोइिं संशय टालिया, तुहि तुहि बोलइ सोइ, कामिनी जे साहामूं जोइ, तिलकनी परि कुलइ सोइ,	५४५
प्रेमनइ रसि साथइं बोल्ड, इंद्र नइं ते गणिइ तृण तोलइ	५४६

एणइ जो वनि बहु भोलव्या, भमरला परिमेल-वेधि, रंग देखाडी बाहिरि, भूला भमइ बहु-वेधि, तिणि पापि अंत्यज मुखि, सीबिल नउ हुउ वास, इम जे आस्यां भांजस्यइ, ते फल लहिसइ तास. ५४७ भमरलु कोइ फुलिंनिव रमइ, सहीय वेधि विल्रूघड वन भमइ, वली वली मालती गुण संभारइ, चिंतथी घडीइ न वीसारइ. ५४८ करणी केतिक किंशुक, कमल कंदबक कल्हार, कणयर कदंम मनोहर, पाडल पोयणि सार, महिमहितु वली मोगरु, मरुउ महिमि अपार, मानवनां मन मोहन, मुचकुंद्नइ मंदार. ५४९ सुगुण मांणस सोहइ वांकडु, रूपवंति नइ छाजइ आंकडु, तेह भणीं करणीं नइ केवडी, धरइ कंटक रूप गुणे वडी जही जाल जासूअण, जांबु नई वुलिसरी वालु वेडलि, विन विन वावि सनीर, सरल सकोमल सुंदर, शीतल सोहइ कुहु कुहु करती कोइलि, कलहंस निइ किहि कीर ५५१ ऋतु-वसंत एगी परि आवीउ, भोगीआं-जन मिनं अति भावीउ, कामिनी सवि शुंगार सोहावी, सखी साथि खेलइ वनि आवी. ५५२ विसहर जाणे जेणीई, वेणीई बंधन कीध, जग-बल्लभ अरि-भूषण, दुषण एहवूं कीध, कुंतल-छलि अथ चामर, मनोहर-मयण तणाइं, सिरि पंकज रस-लोभीय, जाणे भमर भरांइ. ५५३ सींदूरिं सिरि-मांग सो जालिउ, मदनराइं जाणे डंड आलिउ, कामिनी जेहिंसिउं बल मांडइ, तेहनई आणी पाए पाडई. ५५४ भमहि-कोदंड चडावीय, सांधीअ लोचन-तीर, जे बल नयन सिंउ मांडतां, ते ते जीता वीर, हरिण हवां वनवासीय, कमल रहियां जल मांहि, चिर न रहइ वली खंजन, चकोर सहइ दिनि दाह. मानिनीं हर-सिंउ बल मांडइ, मित्रना अरि-सिउं रहइ ताडइ, इरवरिं मदन लोचिन बालिउ, कामनीइं निज लोचिन वालिउं ५५६ युवती-जन-मुख उपिम, कीधुं चंद अजाणि, जेणि काय पंकज उपिम, ते पणि अतिहिं अजाण, यव-जन लोचन-पंकज, किम विहसइ सिस देखि, कमिलं कमल न उपजइ, मनसिउं विचारी पेखि. ५५७

कामना श्रवण दोइ हीचेालडा, विंब-विद्रुम राता होठडा	•
नासिका सग दीवा केरी, दंत दाडिम-कुली अधिकेरा	५५८
कंचण-कल्राय पयोधर, योधि रहिया वे मांडि,	
गयवर–कुंभ सहोदर, सादर किम जाइ छांडि,	
नखन्क्षत सहइ रत-समिरं, सहइ थण मुच्टि-प्रहार,	
वर्री हैआ सिउं आथडइ, नापइ नमी लगार	५५९
एक दुःख कर-पीडन केरुं, उपिर वली बंधन नवेरुं, झूझिवुं तेणि मुखि सामला, तुहि पयोधर न महेलइ आमला	५६०
कमल-मृणाल सकोमल, भूज-दल अतिहिं प्रलंब,	
मोहिं युव-जन पांडवा, पाश तणा प्रतिबिंब,	
घन घन ते अपराघीय, चांपी थणह विचालि,	
बांधइ प्रीउनिं पार्शिय, सगुण सनेही बाल,	५६१
मयण-मंदिर नाभि रसालि, तिणि तिहुअण जीपइ बाली,	
जब पयोधर सिउं चांपइ गाढइ, तब हइउ अति थाई टाढूं	५६२
पातलडी कटि लंकीय, वंकीय नयणिन भावि,	
नितंब-थली अति पहुलीय, त्रिवलीय सहिज सभावि,	
चित्त चमकावइ चालती, जघन पयोधर भारि,	
जंघ जिसी केलि कोमल, रंभ मनावी हारि	५६३
आंखडी मचकु अति दाखनइ, मुख तणउ मटकु वली साचवइ,	
पातली किंडि मरडी चालइ, पीन पयोधरइ सालइ.	५६४
गति हराच्या मयगल, अलविं जाता हंस,	
रूपि रंभ हरावीय, जाणे धरिष अवतंस.	
लोचन मुख कर सुचरणि, जीता पंकज—सार,	
पार न आवइ वर्णन, रूपिं रति–अवतार	५६५
नयन-तीर वेणी-तल्र्वारि, पीन-पयोधर-कोट-मजारि,	
कांम-राय जीपइ मदि-पुरु, कामिनी-जन बिंछ करी सुरु.	५६६
सरिवरि सोविन-राखडी, गोफणि गूंथी वेणि,	
सोविन-सिंथु सुन्दर, सोहइ सरसी तेणि,	
निलवटि नीली टीलीय, दीपइ चंद विचालि,	
तेजिं ससिंहर दिनकर, कानि झबूकई झालि.	५६७
	• •
आंखडी अलविं अणींआली, अनइ कज्जल-रेहा काली, मदनराय तणां विं बाण, पंचवाण ते कहइ अजाण.	1.67
चन्त्राच प्रचा च चार्च, चचनाण (१ फहरू अजाण.	५६८

कुंकुम-गोरे गालडे, सोविन-कांटडु नाकि,	
अघर-प्रवाली रातडइ, नागर-वेली राग,	
नविसिर-मोती जालीय, कंठि मनोहर-हार,	
गजगामिनि मृग-लोयणी, जाणे सार संसारि	५६९
बांहडी लहिकइ लटकाली, मानिनी मन मोहइ मटकाली,	
	५७०
नख-शर घाइ न उसरइ, सूरा सुरत-संप्रामि,	٠
ते गुण जाणि मानिनि, स्तन नि दिइ बहुमांन,	
चंदिन चरचीय चाेळीइं, दीधुं उचित पसाय,	
नवल्रव हार स आपीय, राख्या हृदय नइ ठाइ.	५७१
मयण-मंदिर साहइ नाभि रसालि, प्रेम-सरावर अ शंसय टाली,	
चतुर लोचन-चकोरां जिहां भमइ, चक्रवाक पालि उपरि दोइ रमइ	५७२
खलकंति सोविन-मेखला, सोहञ्जे त्रिवली मजारि,	
पहेरणि नवरंग-फालीय, झांझरनइ झमकारि,	
पय अलता-रस रंजीय, रंजी नयन विलासी,	
	५७३
को सही सिडं कोइ प्रीउ स्युं, विन खेलइ मधुमासि.	754
कामिनी नयन-भाव देखाडती, चित्त चंचल वेगइ पाडती,	
चरण-झांझरडां ठमकावती, काचूडं उरि नीलु सोहावती	५७४
अक प्रीउ-अंचलि वलगीय, अक वलगी सही-हाथि,	
वातलडी काइ करतीय. प्रेमइ घाली बाथ.	
कोइ कहइ सही पडिखनुं, हूं आवु तुज साथि,	•
इम आवेइ रस खेळवा, विने बनितानु साथ.	५७़५
केाइ सखी तिहां वीणि वजावइ, पींन-पयोधर केाइ नचावइ,	
झांझरडां को सखी ठमकावइ, कोइ चंचल तिहां नेत्र चमकावइ	५७६
नवरस नाटक वनि तिहां, वनिता कोइ करंति,	
कोइ बइठी केळीहरि, प्रिय-सिडं केळि करंति,	
बालीअ आंबला-डालीइं, हीचोलडी खाइ,	
कुंतल मेहली मोकला, को सही केडइ धाइ.	५७७
कोइ सखी चालइ किंड मरडी, कोइ करइ नयन-भ्रम करडी,	•
कुप्तम-कुंदक कोइ उछालइ, कोइ जइ सहीनि बांहि झालइ.	419/
अलुन कुर्या मार ज्ञाजर, मार गर तहात मार सार सालह	100

the second second

कोइलि-कंठ रसालीय, बालींय दिइ किहि रास, सुंदर प्रीड सिंड तरु-तिल, कोइ करइ मदन-विलास, कुसुम लेबा किहि भमर्रान, सहीय ऊडाडइ कोइ, प्रेम-विलोह न कीजीइ, इम सही बोलड कोइ.

409

कामिनी −मुखि बइठइ भमरछ, कर वडइ सा उडाडइ भमरछं, कोइ कहइ सही भांजि म आसडी, जउ हुइ तु सही अह्यारडी ५८०

कुसुम–टोडर कोइ गूंथीय, घालइ सहीय नइं कंठि, कोइ सही चीर–पालवि, पालवि बांधइ गंठि, एक प्रीउ एक थाइ कामिनी, एक सही जोसी धाइ, छेहडइ छेहडा बांधीय, परणावइ वन मांहि.

468

नयन-बाणि विनता को ताकइ, पूंठि को सही आवइ ढांकइ, कोइ कामिनि कोइलिनइं खीजइ, कुहु कुहु करी सहीनइं रीजवइ. ५८२

मुह मचकोडइ चालती, नव भोगवीय को बालि, लडसडतां गजगांमिनि, डगलां भरइ रसाल, सहीयर तेवडा तेवडी, कारण पूल्रइ कोइ, पइ भागु सहि कांटडु, इणि परि बोल्ड कोइ.

463

ओ सही तुर्जिन प्रीउ तेडइ, ताहरी क्षण न मेहलइ केडी, कामिनी जोइ पाछउ वाली, वाही रे सही को दी ताली ५८४

कहि-न सखी ति वेणीय, बांधीय कुण अपराधि, रिह रिह गोरी पृछि म सिथल थइ वली बांधि, रत-समिर रही पाछिल, वली चडी परकिर अह, इम कोइ बोलइ बालीय, बंधन-न कारण तेह.

424

पीन पयोधर तूंतां पातली, सुमुखि दुर्मख कठिन सूहांली, कहि न सखी एतां किम वाजसइ, इम कही वनि कोइ सहिनइ हसइ. ५८६

किह सिख सिउं तोरइ हइअडलइ, पंकज मयण तणांइ, अक नालई दोइ पंकज, किह सिख केम मनाइ, अथ चकवा दोइ मुख, सिस आगिल किम रहेइ तेह, लावण्य-सरोवर बूडतां, यौवन-गज-कुंभ एह.

460

पातलइ कटि लंकइ जग जीतु, सिउं करसइ पीन पयोघर सही तुं, कोइ सही निज सहीनइं इम इसइ, ते सुणी वनिता मनि उल्लसइ. ५८८ पीन-पयोघर भारीआ, दोहिल चालइ कोइ यौवन नि उलंभडा दिइ, सही बोल्ड कोइ, तब कोइ बोल्डिस कामिक, अंतरि रही सहिकारी, छउं अह्ये परउपगारीय, अह्य करि आप भार,

469

कोइ कहइ सखी नख-क्षत रूपिं, राहुथी बीहीतु ससि-भूप, तुड-पयोधर डूंगरमां वसइ, तेह भणी उरि चोली तूं कसिः ५९०

सिंख तुज मुख-सिंस छोभीय, अलि-गण रूपिं राहु, एह भमइ तुज मुख पाखिल, अंबरि वदन विछाहि, कोइ कहइ तुज कुच-युगि, जाणी गज-कुंभ भ्रंति, वन-गज भडवा आवइ ए, कोइ सिंख अम भणंतिः

498

वदन चंद-सहोदर ताहरुं, कोइ सखी बोलइ निव आतरुं. सा कहइ हसीइ निव हे सही सिस-कलंक माहरइ मुखि नहीं. ५९२

पातलडी कटि-लंकीय, पीन-पयोघर भारि, लडसडती कोइ बाकीय, चालइ सहीय मजारि, सही निं को कहइं हे सहि, सहिनिं साहि न बाहिं, जड पडसइ थण भारीय, हासूं हसइ वन माहि.

५९३

कोइ कहइ प्रीउ राति कां पीङिउ, हदय बारि थोडेरू सि न भीडिउ, तीने पयोधर हईइ जिंग रिलाणु, तेह भणी कंत तुंज सिउ रीसाणड. ५९४

को एक कामिनि सुंदरी, प्रीउ सिदं कीय संकेत, विन सुणी जन-कोलाहल, पगलां सुणीय समेत, वली वली जोइ बालीय, चिकत जसी संदेह, सघलइ देखइ तनमय, जेहिंन जेहिसिउ नेह.

494

पूंठिथी सही पालव ताणइ, कामिनि प्रीउ आव्यु जाणइ, रहि रहि समय हवडां प्रीउ नहीं, पूंठेथी इम सुणी हसइ सही. ५९६

किंहि चाचिर किंहिं चडवटइ, किहिं त्रिवटइ सही-वृंद, केलीहरि कुसुमा-किर वसंत खेलड आनंदि, लटकित वेणि सुमेहलीय, झांझर नइ झमकारि, थण भारिं कडकडतीय, चोली कसीअ अपार.

५९७

चतुर कामिनिना गुण जोइवा, रिसक मानव आवइ खेळवा, रितुवसंत जाणे भळइं आवीडं, रिसक मानवइ मनि भावीडः ५९८ कोइ आवइ विनता-विसि, कौतुक जोवा कोइ, कामिनि रिस कोइ चंचल, मित्र सिउं प्रेमिं कोइ, मुखि तंबोल समारीयु, उरि धरि चंपक-माल, कुसुम-माल सिरि घालीय, करि धरी कुसुम रसाल

५९९

कामिनी दोइ अंतरि धाइं, बेहूनि अडतु कोइ जाइ, कोइ संभ्रमि साहामू आवी, नारि सिउं दिइ आर्टिंगन भावी ६००

दोधक भणइ कोइ कामूक, कोइक गीत सगाइ, कोइ ताणइ छानु पालव, को स्त्री केडीऊ जाइ, कमल-नाल कोइ जल भरी, छांटइ थगह विचालि, कोइ मचकावइ आंखडी, कोइ वलगइ तरू-डालि

५०३

कुसुम-कुंदिक प्रेम-गाथा लिखी, स्त्री साहामूं नाखइ मन उल्ल्खी, कामिनी-गण जेणि थानिक बोलइ, कोइ कामूक रहइ तिणि उल्रह ६०१

कोइ कोतिक-दिल कामूक, कामिनी रुप लिखेइ, वली वली नयणे निरस्तीय, हइडा सिउं चापेइ, मुखि चुंबन देइ सादर, सीस नमावइ पाइ, प्रेम-गहेलां मांणस, देखी आकुल थाइ,

€03

भमरल कामिनि नइ मुखि देखी, कोइ मानव बोल्ड स्त्री पेखी, भमरला ति काइ रस लीजइ, अही सुंदर पणि सहामुं जोइ जइ. ६०४

विन किहं कोइिल वाणीय, सुणीयित आंबला—डािल, कोइ पंथी जाणइ एणइ विन, आवी मोरी बाल, आवि-न गोरी आिलंगन, देइ मुज पूरि रुहािड, कांइ रही कहइ वेगली, वाहाली भुख देखािड.

E 0 4

कोइ कामुक कुंच कानिंह सिउ(?), पीन पयोधरि देखी एति कसिड, कहि-न कुंचुक ति सियां फलकाम्यां, जेणि सुंदरि थणनां फलकाम्यां. ६०६

कामिनि जाती देखीय, कोइ नर चतुर सुजाण, सांबिल नई मिस धातीय, बोल्ड सरस सुवाणि, सांबिल सरखां मांणस, दैविं सरज्यां कांइ, देखीतां अति मनोहर, हुंस न पुरइ जाइ.

७०३

भमरनई कोइ विरही इम कहइ, भमरला विरह वेदन तुं लहइ मालती विरहिं तूं सामेलुं, कामिनी विरहिं हूं दुबलड. ६०८

निस-नेही नेह छांडीय,	प्रिय आगलि थइ जाइ,
सोइ भुजंग उलंभडा,	ऊभू दिइ वन माहि,
वीज पडइ ते उपरि,	जे करि छंडइ प्रीति,
नेह करी किम छंडीइ,	एह न उत्तम रीति.

६०९

प्रीउडंइ छेहडइ पटुली ताणी, सखी मांहिं गोरी लजवाणी, मांणस मांहि प्रीउडु लाजसइ, एकातिं उलंभउ दीजसि. ६१०

इणि परि तिणि वनि नव नव, नर नारीय रमंति, नंदनवन जाणे अवतरिउं, भोगी भमर भमंति, सीखवती पति-संयुत रसभरि खेळइ रास, कुसुम-केळीहरि सरुवरि, रंगइ करइ विळास.

६११

कुसुम-टोडर करी कंठि धालइ, माहो मांहि नव नवा फूल आलइ, कमल-नाल पाणी भरी छांटइ, बाहु वडइ रुंधी रहइवाटइ. ६१२

नवल-नेह नव-यौवन नव-रस, नव-रस सरस अपार, नव-दिन मास वसंतना, मुरीय नव सहकार, वसंतमास इम सेवीय, नरनारी सविलासि, ससि-वयणी प्रीउ सरसी, आवइ आपणइ आवासि.

इ.१३

चतुर मानव अणी परि सेवइ, कामिनी यौवननां फल लेवइ, जयवंत पंडित वाणि सोहामणी, रिसकनइ मनि लागइ रलयामणीः ६१४

इति श्री वसंतवर्णन, श्रीः.

ञेणी परि नबनवां सुख भागवइ, अजितसेन स्त्रीनुं मन जोगवइ, समयनी परि जाइ दिहाडला, जिन दौगंधक देव सुखाविला. ६१५

दुहा

वाहलां सिंउ सुख विल्सतां, दिन जाता न जणाइ,	
वाहरां विण जे अध-र्घाड, वरस समाणी थाइ.	६१
वहालां सरिस संजोगडु, अविहड करे संदैव,	
मन मानइ जो ताहरूं, तु घन देवे दैवः	६१७
पुरव पुण्य पसाउलइ, अविहङ होइ सनेहि,	
नितु झुरिवुं तिणि नेहलइ, जेहवु चतक मेह,	६१८

पक्ष सनेहलु, जेहवु दीप-पतंग, एक एक एकनइं वेघि मरइ, अवर न आणइ रंग. ६१९ नेह न ते साहामणउ, जेहवु कोकि-कलाप, पक्ष सनेहलु, पिंग पिंग हुइ संताप ६२० एक नयण समाणी प्रीतडी, जगि विरलानइं सुख दुख संघाति सहइ, नेह न छंडइ तोइ. ६२१ चास-पींछ तणी परइ, बिहु पखि सरिखु रंग, थोडइ ठामिसु दीसीइ, सरखी प्रीति ६२२ दुध अनइ जल जेहवी, जीह सवाली प्रीति, आपणपिं दोहिलं सहइ, भेद नहीं जस चींति

ढाल १७

राग सवालाखी सींधूउ (समुद्रविजय रायां क्रुंअरू रे, देशी)

एक दिन वनिता वीनवइ रे, प्रीउडा तूं अवधारि, महीयल महिम वधारवा रे, जईइ राज-दूआरि. वाहलाजी सुगुणा कीजइ संग, जेहनु रंग अभंग. वाहलाजी वाधइ प्रेम सरंग, वाह ...दुपद तथा आंचली ६२५ द्धरियननिं कंपावीइ रे, कीजइ पर उपगार, उत्तम भूपति सेवत^{ां} रे, वाधइ महिम अपार, ६२६ वा. सज्जन नइं संतोखीइ रे, कीजइ उत्तम कांम. सुगणां साथइं हीडीइ रे, राखी जइ जिंग नांम. ६२७ वा. यौवन-वइ गुण संचीइ रे, कीजइ उत्तम संग, तिणि मारिंग निवं हीडीइ रे, जिहांथी हुइ कलंक, पापी यौवन : दोहिलूं रे, पिंग पिंग आल चडति, छत्र न हुइ जस सिरिं रे, निश्वइं तेह पड़ंति. देव वसिं तात तुझ तणड रे, पुहुता जड परलोकि, विरव तणी स्थिति एहवी रे, कुहुनइ कीजइ शोक. ६३० वा. बाल-लीला हवइ परहरी रे, गुण उपराजन कार्ज, वाहाला उधम कीजीइ रे, सेवी जइं सुराज. ६३१ वा. सहू सिउं प्रेम सुराखीइ रे, गरव न धरीइ लगार, वचनइं सहू संतोखीइ रे, दीजइ दीन आधार ६३२ वा. सज्जन स्युं सज्जनपणूं रे, कठिन सिंउ कठिन सभावि, भमर तणा गुण आवीइ रे, भूपतिनइ प्रभावि. तात थिकी गुणि आगला रे, उत्तम सुत ते जाणि, रवि-सुत शनि सरखा वही रे, तेहनू किसिउं वखाण गुणि अधिका को तातथी रे, सायर-सुत जिम चंद, अज्ञालइ कुल निरमलूं रे, सहूंनइं दइ आनंद ६३३ वा. तेह भणी राज-सेवनार रे, कीजइ अति सुविवेकि, मान लीहीजइ महीयलिं रे, आवइ अंगि विवेक ६३६ वा नरनइं स्त्री दइ सीखडी रे, ए निव घटतूं होइ, तुहइ जे घटतुं कहइ रे, डाहइ मानवूं ६३७ वा. कमला-जातिं कामिनी रे, सरसति श्री अवतारि, स्त्री माटइ न उवेखीइ रे, गुण हवडां संसारिः ६३८ वा. अजितसेन इम सांभली रे, वचन धरी मन मांहि, नितु जाइ राजमंदिरिं रे, सेवइ अजित उछाहिः

ढाल १८

राग काल हरिड (सासू पूछइ सूणि नव वहूआरू, ए देशी)

सकल सभानइं अजित रंजावइ, भूपित दिइ तेहिनिं अति मांन, सिइं च्चारनइ अधिक नवाणुं, राजन नइ धरि छइ रे प्रधान. ६४० अनुदिन राजन चिंति विमासइ, चिंता-सायर दूतर अपार, निचित थाऊ हूं एह चिंताथी, कुहुनइ सिरि सूंपी राजभार.... दुपद तेह्वु को न मिल्ड गुणवंतु, वीसासीक नई बुद्धि-निधान, पांचसइ माहि मूलगु, जेहनइं किर थापइ परधांन. ६४१ अ. तेह परीक्षा जोवा काजई, राई मांडिउ विसमुं संच, सहुनई कहइ पटहाथोउ रे, तेलो मांन कहु रे प्रपंचि ६४२ अ. मेरु तणी पिर कुगइ न तोलाइ, अजित तब पूली गृह-नारि, शीलवतीथी बुद्धि लहीनई, जाणिउ तोलवा तणउ प्रकार. ६४३ अ. हाथी प्रवहण मांहि चडावी, जल मांहि ते राखी यान, प्रवहणि नीर चिंदुउं जां उंचूं, तिणि फलहइ की घूं अहिनांण ६४४ अ. गज काढी पाषाण भरीनई, जां लगइ आंकइ आव्युं नीर, ते पाषाण तोलो मान आपाइ, अजितसेन ते साहस धीर ६४५ अ.

एह्वी अजित तणी मित जाणी, रंजिड सुगुण सुवेधी राय, मान महुत अधिकेरं आपइ, तुठड दिइ धण देश-पसाय. ६४६ अ. भूपित पूछइ वली एक दिहाइइ, बइठड सयल सभा मजारि, चरण-प्रहारि हणइ जे अहानि, तेहिन सिडं की जइ सुविचार ६४७ अ. के अविचारी उच्छक जंपइ, मांणस रूपइं ढोर गमार, ढंड सबल तेहिन प्रभु की जइ, जे तुझनइं दइ चरण-प्रहार, ६४८ अ. अजितसेन रांइ बोलाविड, जाणी पुरव बुद्धि-विलास, सो पणि जंपइ स्वामी वीनवं . तुझनइं एह्न अरथ विमासी. ६४९ अ.

द्हा

घरि आवी नइ स्त्री कहनइ, पूछीड नस वृत्तंत. उत्तर दीइ, अवधार तुह्ये शीलवती ६५० हणइ, कीजइ तस भूपनिनिं चरणे सत्कार. दीजइ वली मन भावतूं, मान-महुत अपार ६५१ गुणवंती गारडी, अमीय झरती वाणि, वाहलां ए बोलिउं किसिउं, सुंदरि सुगण सजाणि ६५२ शीलवती वलतुं भणइ, स्वामी जड विचार, स्रत द्यिता विण भूपनि, कुण दिंइ चरण-प्रहार. ६५३ कुण दुहवइ वाहलां विना, अवर न चिंति अणाइ, कुण संतोखइ ते विना, अवर न कोइ सुहाइ. ६५४ हुइ प्रेम-रस, ते जेहसिउं दइ चरण-प्रहार, क्षण एक मीठडं रूसणडं, जेहसिडं प्रेम अपार ६५५ तां दखण देखड़ नहीं, जां मनि हुइ रंग, जे जे बोलइ बोलडा, ते ते जाणइ ६५६ दुख-सुख सरिखां लेखवइ, नेहइं बध्या कमिल बंधाणउ भमरलु, सुख मानइ ससनेह. ६५७ तेहनइ मनि गुणवंत ते, जेहसिउं जल-पंकइ पंकज वसइ, तुहइ लागु राचइ ६५८ ते तसे न जोइ सूप-गुण, मन मान्या सउं कोइ, वायसनइं मोह छींब सिउं, तिणि दीठइ सुख होइ. मनि मान्यां मेहलई नहीं, वरि सिरि वहइ कलंक, मृग सिउं अविहड मन मिलिउं, छांडइ नहीं मयंक.

जे वन केरां रुखडां, विहसइ चरण-प्रहारि, माणस पहि ते तरु भलां, जे लहइ प्रेम-विचार ६६१ नेह नयणे निहालीयां, मनि उल्लास धरंति. चतुर सविदुमां तिलक ते, नेह विशेख लहंति ६६२ मन-अंतर जेहसिउं नहीं, ते दइ चरण-प्रहार, प्राण जि धरीइ तेहना, अवर किसिउं जिंग सार ६६३ कइ वहरी कइ वल्लहां, रोस कि सहिलु होइ, तेह स्युं किस्या अबोलडा, बि मां एक न कोइ. ६६४ पाय पडी जे मन्नवई, तीह करी मानस-रोस. हैडा साहामूं नवि जोइ, तेहसिउ केंद्र सोस. ६६५ जे वाहाला नइ नापीइ, जे जिंग किपि न होइ स्नेहिं-बद्धां ते पंछी, प्राण तिजइ जिगि कोइ. ६६६ मन नयणांनी प्रीतडी, ए जगि वाली-रेह, पहिलूं जउ नयणां मिलइ, तु मन मंडाइ ६६७ प्रीति किसी ते कारिमी, जिहां विचि अंतर थाइ, देयादेय विचारणा. वच**न** अनारथ ६६८ प्रीति विशेषइं प्राण दिइ, दाडुर जातई मेहि, तेहिन स्युं अण आपवूं, जस मिन अहेवु नेह ६६९ पिय माणुस किय विष्पिय, दोस न आणइ झीणवि पुन्निमि संगथी, चंदह वाहाली सोइ. ६७० तेह भणी प्रेमिं करी, जे दइ चरण-प्रहार, प्राण पहिं वाहलां भणी, कीजइं तस सत्कार. ६७१ वनिता वचन सुणि इसिउं, मनि धरी सकल सरुप, अजितिं राजसभां जइ, वीनवीड भूप. ६७२ तिणि वयणे राउ रंजउ, दीधुं अधिकुं मान, पांचसई मांहइ मूलगु, थाप्यु अजित प्रधान. ६७३

ढाल १९

राग मारुणी धन्यासी (पदमस्थ राय वीत शोक पुरि राजीड रे, ए देशी)

एक दिनि बइठा राजा राज-सभां वली रे, काेइ नर दीन पहूत, भींजवतु जन–मन आंसू–जिंल रे, बाेलइ विधुर विदूत ६७४ रूथडा राजहंसजी, तुद्धयों सुणयो राजनजी रहोयामणीड, अवधारुजी वीनतडी सेाहामणीजी, उतारुजी दुख-सायरथी मूहिन रे...द्रुपद ६७५

एणइ पुरि निवसइ घूरत एक वाणीउ रे, सघलइ छइ विख्यात, चित्ति वंदुनइ मुहुढइ मीठडु रे, सहु लहइ तस अवदात. ६७६ 'मि तो ते सिंउ मांडी प्रीतडी रे, केल्लि अनइ जिम बारि, मायावी माणस किम पतीजइ रे, विसहरनइं गलइ मारि. ६७७

द्हा

भाेला भमर म बइसि, आउलि केरइ फूलडे, थई विलिस, जण हासूं मनि उरतु ६७८ विऌख करिस संग, राते सींबिल भमरा फुलडां, रंगी, ये नश्वद्य मायावीयां ६७९ देखाडइं बाहिरि मन काती मुहि मीठडां, फल किंपाक जग भोगव्य मायावी ए, जिम मृग पार्धा-गानि, ६८० यौवन वयिं स्त्री संगमइ, जुइ धूरत छयऌ−सिरोमणि जे नवि छलीया अेतले, तेह ६८१

ढाल पाछली

देशि चालती

एक दिनि चालिउ हूं बनिता घर तणी रे, तास भलामण देइ, ते पणि बनितानई रिस रातडु रे, स्त्री सिउं प्रेम धरेइ. ६८२ ह्र विणज करी आव्यु हूं दिनि केतलड़ रे, धूरतनइ कही वात, ते पणि धन बनिता सिउं लोभीउ रे, मुज सिउं खेलड़ घात ६८३ ह्र देसि-विदेसि भमतां अद्भुत लिइं रे, हुं बोल्युं ततकाल, आ पुर बाहिरि तरत् कुपमां रे, आंबु दीठ अकालि ६८४ ह्र तब धूरत कहइ ए जउ साचूं हवइ, दोइ किर जे लेवाइ, ते तूं लेजे महारा धर थकी रे, नहींतिर हूं तुज लेसि. ६८५ ह्र ते फल रातई घूरत काढी आवीउ रे, जे जोयुं परभाति, फल निव दीठुं हूं विलखु थयु रे, मुज मित्रि कही वात. ६८६ ह्र मित्र कहइ भोला तूं तु बंचीउ रे, नर घुरत अपार, अक किर बनिता एक किर धन-गंठडी रे, लेसइ जे तुज सार. ६८७ ह्र ते हु भणी हूं आविउ तुह्य कन्हई रे, दीनानाथ दयाल, ते घूरतथी मूहिन लोडवुं रे, शरणागित प्रतिपाल. ६८८ ह्र

ढाल २०

राग गुडी

(झांझरीआ मुनिवर धन धन तुह्म अवतार, ए देशी)

अजित प्रधानि राय वीनव्याजी, पुछिड विसमु भेय, अजित कहइ स्वामी वीनवूंजी, अरथ विमासी एक ६८९ गुणवंती रे नारी कुलडा तणी रे श्रृंगारि नान्हलडी रे सोभागिणि बुधइं गयुं धन वालीइजी, सुगुण सोभागिणि सार...दुपद धरि आवी पूछी कांमिनीजी, तेहथी छहीअ विचार, राज-सभां आवी कहइजी, राजनजी अवधारिः ६९० गु. नारी धन सवि ताहरुंजी, उपली भुंइ चडावि, नीसरणीं अति भारइजी, अर्कि पासि मेहलावि ६९१ ग्र. सोइ धन लेवा आवसइजी, धूरत लोभ सभावि, नीसरणी करि लेयसिजी, उपरि चडवा काजि ६९२ गु. दोइ करिं नीसरणीं प्रहीजी, होस्यइ होस्यइ सत्य संधान, विलखु थइ पाछउ जसइजी, इम कहइ अजित प्रधान ६९३ गु तेणि एहवीं मति सांभलीजी, धरि आवी तिम कीध, धूरत विलखु थइ गयुजी, काज न एकु सीध

द्हा

तहींथी राय प्रधाननइं, अधिकु नेह सहोइ, सधलइ गुण वहाला जि लइ, सगू न वहालूं कोइ. एक दिनि शीलवती भणइं, वचन-सुधा-रस मुज मन-मानसि हंस सम, वाहालेसर अवधारि ६९६ सुर सरिखा पणि माहरू, खंडी न सकइ शील, तु अवरहची वात कुण, सांभिष्ठ कंत सरील माणीश संदेहडु, मुज मनि अवर न कोइ, तुझ करि प्राण समोपीया, थोडइ घणूं सजोइ, दीठइं विरहानल शमइ, हइडु धरइ उल्लास, जेणि जिि वाहलां सरजीयां, हूं बलिहारी ६९९ तास तुं दीठिं उल्लसइ, नयन वयण विहसंति, मन प्रनिमि चंद्र, चतुर चकोर हसंति

मुझ मनि लागइ कारिम्, वली वली कहितां नेह, पणि थोडइ घणूं प्रीछचों, तुह्य साथइ ए देह जेहसिउं अविहड मन मिल्युं, जेहवी पाहणि-रेख, तिहुंसिउं लगाइ कारिमूं, बाहिरि वचन विशेखः छेह लगइ वहिंडइ नहीं, सही सुकुलीणां जेह, काया करी, अवर सिंउ न धरइ नेह, मन वचने ७०३ सुकुछीणीनी रीति ए, जेसिहडं मांडिड रंग, सुख-दुख तस कारणि सहइ, पणि न करइ नेह-भंगः ७०४ एक गुणवंतु परिहरी, अवर सिउं मांडइ प्रीति, चंचल रंग पतंग जिम, ए गणिकानी रीति ७०५ बगर्ला छीरुरि जरु पीइ, ये पामियां समञेण हंसा वरि तरसिया रहइ, पणि न मिलइ अवरेण, ७०६ तुझ विण मुज मनि को नहीं, अवर न सहणा माहि, कइ सखी मन माहरू, कइ परमेश्वर थाइ 909 वोल्डा, ते सिंव जाणे साच. जे जे बोल्या सुख-दुख जीवित तुझ कह्नइ, आदक्षण करि दोखी दुर्मुख छइ घणा, संधइ पाडइ मनि माणस तस बोलडा, म करिस सिथिल सनेह. ७०९ प्रेमवंतिनां, एहवां सुणी रसाल, अजीतसेन वलतू भणइ, रोमंचीउ ततकाल. ७१० नहे-गहेलडी, इम कां बोलइ बोल, कइ सूती नीसी आंगणइ, कइ गइ सान नीटाेल बाहिरि किसिउ जणावीइ, मन सिउं अविहड नेह, हइअहूं जाणइ आपणूं, मन वाहिलां छइ जेह, ७१२ नयन वयण वसिंडं मिलइ, अं राखियं न रहंति, पणि अवरह सिउं तुज विना, मुज मिनं किहिं न रमंति मेरू कांपड रोष सलसलड, सायर सुकड सहि सज्जन सुकुलीण जे, वाच न चूकइं तोय. पूरनिं, कुण कामिनि नि रूधइ पसरंत, मन मानई आपि रहइ, लाजनी पालि ७१५ करिति. रूपवती नई गुणवती, सुंदरि शील तूं सोन्ं नई सुगंघ वलीं, कहु कुण मूल करेइः ७१६ 🐇

सोनइ सामि न हुंइ किमिं, मरुथिंछ न हूइ पंक,	
उत्तम न करइ पाडु उं, न धरइ हंस कलंक.	७१७
दोधी दुर्मुख सिंउ करइ, जउ मनि खरू सनेह,	
वाई वहिंडइ केतलूं, सजल आसाढा-मेह.	७१८
अधिक वघारइ प्रेम-रस, दोखी दुरियन वाणि,	
सोनूं करतां पाहाण-सिउं, अधिकु वाघइ वान	७१९
दुरियन वचन हैइ धरी, प्रीति विशेख त्यजंति,	
प्रेम किसिउ ते कारिमु, जे विचि रेह पडंति	७२०
दोखी दुरियन केरडा, लाख सुणउं जो बोल,	
तहइ तुछ उपरि थकी, मन नुहइ डमडोल.	७२ १
शीलवती वलतूं भणइ, तुहइ सुणि सुविचार,	
पापी चंचल चिंतडूं, सुपरिस करइ विचार	७२२
अणचींतिउ मन चींतवइ, वंछइ दुर्लभ जेह,	
अणघटह विकलप करइ, असरिस मंडइ नेह.	७२३
जे निव सुहुणइ दीसीइ, जे निव नयणां बारिं,	
हैं है चंचल चिल ते, वंछइ हैआ-मंजारि	७२४
कुहनइ कहिसिउं मन मिलइ, तेहिन किहिसिउं भाव,	
कुंण जाणइ ज्ञानी विना, निज निज चिंत संभाव	७२५
दैव वसिं पहिंछो पार, तुह्य मान शंशय होह,	
शील-परीक्षा कारणि, कमल लीड एक तोइ	७२६
तव जिनवर पूजा करी, सरस सकोमल भाख,	•
परमेस्वर गुण स्मरती, इम बोल्ड प्रीड सार्थित	७२७
मन वचने काया करी, जड नर वंछड अन्न,	
तु कुरमायु कमल अे, जिम जल पाखइ वन्न	७२८
जड शीलि हूं माहा-सती, विकसित रहियो तोइ,	
शीलवती अहेवूं कही, पति-करि पंकज देइ.	७२९
अजितसेन एहवूं सुणी, चतुर चमकिउ चित्ति,	
तय तणीं परि करि ग्रहइ, पंकज तेह जिंडित्त.	७३०
वली वली जोइ कमल ते, चांपइ हृदय विचालि,	•
जिम निर्धनि धन पामीउं, वली वलि जोइ संभालि,	1050
•	345
दुरियन केरु प्रेम जिम, जे न रहइ चिरकाल, सज्जन नीपरि कमल ते, अविचल रहिउं रसाल.	
त्तरभग गागर कमल त, आवचल राहेड रसाल.	७ ३२

परगट महिमा शीलनु, जोउ परीक्षा शीलइं सवि विद्या फलइ, सारइ सुर नर सेव. ७३३ इम पतिनृं मन स्थिर करी, सुख विलसइ दिन राति, राग-सरोवरि जीलतां, केलि करइ एकांति. ७३४ किहांरइ प्रइन प्रहेलीइ, किहारिं पासा -केलि. खट भाखा, नितु नवली रंगरेली किहांरइ ७३५ किहारिं करइ नव-पल्लवी, कर नयणांनइ अंक. किहारिं प्रेम-रसिं करी, साहामूं जोइ नि:शंक. ७३६ किहारइं आछिंगन लीइ, नव नव सुरत रमंति, सरस सरंगी गोठडी. किहि एकांति करंति. ७३७ स्नेह-रूसणइ अवोलडा, सुंदरि घरइ केवार, दीन-वच पीउ पाइ पडी, मन्नावइ वार वारं. ७३८ रूसणुं क्षण एक मीठउं सनेहिं सबल तीमन तीखां खट विण, भोजन भर्छू न होइ. ७३९ मीनति करइ चरणे पडइ, हुं गुनही तारु दांस. गोरी तुज मिन रीसतु, बांधि न भूज-युग पासि. ७४० तण तण विहसी समप्पीउ, सुंद्रि करीइ. हरख सवाय लक्खु वि कुविय दिया, गोरी मुज न ७४१ सुहाइ. गोरी हासा-रूषणउं, सही न सकुं तुज वेघि, तो सिव रोसि वसलडु, न भल्ली-वेध. खमइ ७४२ अत्थमिड ससि ऊगमइ, धन फिटूं विल होइ, गोरी कां करिं रूसण हं, यौवन गयूं न होइ. ७४३ आसन सयल समप्पीउं, विनयिं मूंचि. उभी पणय को वहउ वयरण, पयडइ हैइ निगृह. 688 हविं अपराध नहीं करुं, बोलि न तूं एक वार, प्रेम-गहेलां इंणि परइं मन्नावइ सु वार. ७४५ नींसतनी छइ नेह, मान ज मोडइ मानीयां. न मानइ जेह, प्रेमइं ते पाओ कहुं पडइ. ७४६ रंगि चडइ नेह रतुडी, पय हणीया चिहु चित्ति. कुसुम पीडतां, अधिक होइ सुरत. 980 इणि परि नव नव रमतिना, केता कहुँ प्रकार, संयोगी जाणता हुसइ, जस धरि दोइ सुविचार. ७४८

राग-सागरि इम झीलतां, हविं विचि अंतर थाइ, विरह-वाहाण दैविं करिउं, हइअडुं गहिंबर थाइ. ७४९ देखी न सकइ दैव ए, कुहुनि चिर-संयोग, वेगलां, दाखइ विछोह विषम-वियोग. ७५० अति संयोग वियोगनि, अति तेहइं हुइ छेह, आपिवा, शरदइं ऊनइउ छेह गाजड ७५१ इणि अवसरि तव अजितनइं, राइं दीध आदेश, आपण वयरी जीपवा. चालीसइ परदसि. ७५२ तुह्मो पणि साथई आविवूं, जव सुणीउ ते बोल, आकुल व्याकुल तब थयड, चित्ति थयुउं डमडोल. ल्डसडतु तव तिहां थकी, आखडउ सुठामि, रडतु पडतु नीसरिउ, चित्त अनरइ ठाम. ७५४ मुंइ भमतां नीठइ नहीं, चित्त करइ उचाट, तालोवेलि अंगि ऊरत्, छांडी जाइ वाट. ७५५ नवयौवनी, सरस नवरंगी सकोमळ किम छंडासिइ गोरडी, सुंदरि नवल सनेहिः ७५६ भूखियां भोजन दाखवी, अध-विच काढी लेड. मेलवी, दैव सुरंगी विछोह ७५७ विण धूंआ विण लाकडे, विण अगनि दहइ देहिं, बिरह-द्वानल प्रगटीड, नवि उहलाइ 946 दोहिलु त्यजतां सचल-रस, अधर-रस किस छंडाइ, नवयौवनि गोरी छाडतां, हइउं फाटइ कांइ. ७५९ दैवि ते क^{ां} सरजीयां, वाहळां बिछोहियां पिंग पिंग विरहिं आवटइ. पंजर हुइ देह. ७६० दैवम दाखिस माणुंअ भवि, कहिसिउं विषम सनेह. अहव किम नेह जड करिं, तुम देखाडिस छेह. ७६१ नेह खरू पंखी तणउ, क्षण निव अलगां थाइ. सुख-दुख संघाति सहइ, निसि-दिन एकिं ठाइ. ७६२ धिग् धिग् परवसि मुणुअ-भवि, दिवस वियोगि भर यौत्रन विरहिं नडिउं, दिवस अनारथ थाइ. वचन सुणि दुख अवडूं , हैडामां न समाइ, विरहिनलइ हुं सिंउं थसइ, किम दिन जासइ माइ. ७६४

इंणि परि मनसिउं झूरतु, पुहुतु निज अवासि,	
नवि बोलइ न हसइ रमइ, हैडइ करइ विखास	७६५
नीसासु मुखि मेहलतु, नयन विखूटां नीर,	
मुहुडइ बोली नित्र सकइ, विरहिं रुधिउ वीर.	७६६
भूख तरस उडी गयां, गइ शरीर सान,	
मन चंचल किहांइ भमइ, न गमइ मीठूं गान.	७६७
शोलवती वलतूं भणइ, कां न करइ प्रीउ वात,	
वलतु उत्तर को निह, एसी तोरी घात.	७६८
बोल न बोलइ निवंहसइ, इम कांथयुं असन्न,	
सुनादि हूंकारडा, चंचल दूसई मन्न.	७६९
कइ अपमानिउ भूपति, कइ कुणि हविउ कुबोलि,	
कइ गोरी-गुण-वेधीउ, मारिउ नवन-त्रिश्रूलि	७७०
वाहाला मन-दुख मुज कही, वहिंची आपि न भाग,	
तुजथी मुज मनि अति दहइ, दुख दावानल दाध.	७७१
अजितसेन वलतू भणइं, गोरी पूछि म वात,	
ए दुख सुणतां तुहनइ, थसइ माहारी परिघात.	७७२
वज्रघात समान ते, राइं दीध आदेश,	
आपण वहरी जीपवा, चाळीसइ परदेशिः	७७३
तिणि वयणे मुज दुख थयु, हैडइ अधिकु शोक,	
दिन केतइ मिलसिउं हविं, तुज सिउं थसइ वियोग.	७७४
विरह-वचन इम सांभली, मेहलती नीसास,	
सान गइ धरिंग ढली, गोरी हुइ निरास.	७७५
वाधइ विरह सुलहरडे, चिंता जल-ऊधाण, गोरी दुख-सायरि पडी, भागुं आज्ञा-वाहाण.	૭ ७૬
दुख पसिरयां सुख वीसिरयां, सुंदरि छूटी सान, पंजर मूंकी मन भमइ, विरहि कीउं बंधाण.	161616
हा हा दैव किसिउं करिउं, माडी आशा-डाल.	
जासइ सींचणहारडु, छाइ दावानव−जाछ,	
वरिं झंपावुं कुपमां, प्राण तिजूं विख खाइ,	•
विरह तणां दुख दोहिलां, साल समा न खमाइ.	
मरण दहइ एकवार तूं, पिंग पिंग विरह दहति,	
विरह वियोगां माणसां है है प्राण तजाते.	6/0

धीर थइ प्रोड प्रीछवइ, वहाली म करसि सोस, सुख-दुख दैव तणइं वसिं, कुहुनइं दीजइ क़ुहृनि चिर-संयागडा, चंचल जिम इंद्र-जाल. देखत पेखत सुपन जिम, थाइ सवि विश्राल. जे दिन सरजिया सुख तणा, ते संयोगि जाइ, जेता दुख वियोगना, ते झूरंत विहाइ ७८३ अजितसेन जिम जिम करइ, चालवानी हल−हल्ल, विरहिं शीलवती-हीइ, तिम तिम वागइ रे रयणी तूं मूज सही, सिहयर जाण म प्राण-हरी रवि ऊगतइ, प्रीउ जासइ परदेसि. कमिल बंघाणड भमर्ल, उगिड वंछि सूर, कमलिनि तुर्जाने छांडसइ, ते देखी नेह पूरि. ७८६ चकवा चकवी विरहीउ, सूर म वंछिस मित्त, दुखीयां दुख सही रहियां, सुखीयां चीबट चित्ति. गले जे सूर्रानं ए करजे मुज तुज मुज वइरी उगतइ, पीउं जासइ परगामि. रयणी तूं तिम वाघजे, जिम नवी थाइ प्रभात, अखइ हजे, जिम मोटी हुइ अमंगल कारिमां, सातइ वली हथीयार. करइ गोरी नेह-गेहलडी, नव नव करइ प्रकार. ते देखी पीउडु भणइ, मृधि म गहेली थाइ, हुं परवसि भूपति तणइ, करिं अमंगल ७९१ नींसाणे एहवइ भल भूपति चडिउ, वल्यु धाय, छत्र चमर सिरि वरि धरियां, अवर चिंहयां सिव रायः हयवर हेखारव करइ, सोनां केरां जीणि. अति उद्भत गति चालता, जय संप्रामि प्रवीण. अति उंचा गयवर गडिया, बीजा डूंगर अह, चामर झलहलइ, गाजंतां जिम काने मेह. ७९४ घूधरी, धम धम करता सोविन केरी उतावलां, वली पल्हाणियां खग उंट. ७९५ वली वेसर भारइं भरियां, महिष लीया जल काजि, नफेरी ते तडतडी, लीयां नींसाहण साथि।

विकट सुभट लांबे मिल्या, पायक कोडा कोडि, सलिह टोप अंगारडा लोह, लोह-सनाइ सजोडि. घरणि धूजइ रोष सलसलइ, ढूंगर डोलइ धृष्ठिं सूरय जहीउ, इम मिलिडं कटक असेस. 696 ह्य आरोहिउ भूपती, मिलीया सुभट असंख्य, जय जय मंगल उज्चरइ, बंदी-जन ७९९ ना अजितसेननिं तेडावी, आव्या सेवक सार. ते साथि सवि मोकलिउ, आगलिथु परिवार. 600 छूं पूठिथी, इम कही मेाकलिया तेह, हेविं मोकलावी आवीउ, अजितसेन निज-गेहिः

ढाल २१

राग साध्रुओ गोंडी (गुणे गिरूआ तणा, ए देशी)

प्रीउडु ऊभइ आंगणइ, नयिन बछूटां नोर, श्रावण भाद्रव आवीआ, बोली न सकइ ते वीरा रे. ८०२ आपु-न सीखडी गोरी, दिन-न आदेसडो रे, म धरिस मिन संदेशो मिन निव झूंरिवुं, मत वीसारे सनेहेरो रे, तुह्य किन्ह प्राण ज एहो रे, सुनउ भमह अह्य देहो रे. आ. ...द्रपद तथा आंचली

सरोवर समइ समरयो, आस उडणहार, मनिसंडं धरयो प्रीतडी, दुरइं नयन-जुहारो रे. ८०३ आ. किहांरि वचने दुहवीयां, खमयो ते अपराध बाहाछी वीसारु रखे, दुरि थकी नेहो रे. ८०४ आ. इम मिन माणिस गोरडी, जे हूं छउ परदेशी, पंजर सूनुं रडवडइ, मनडूं छइं तुझ पासे रे. ८०५ आ. पसरी तुझ मन-मांडवइ, अझ गुण-वेलि रसाल, नेहे-जिल नितु सोचयो, जिम नुहइ विरहनी जालो रे. ८०६ आ. मत जाणिस मन वीसरइ, दुरि गया सनेह, अण-तेडियां आवइ अवसरइं, जिम बापीडा मेहो रे. ८०७ आ दूरइ नयन-मलवडु, सरजिउ सरजनहारि, पणि मनिसंडं नहीं आतरू, गौरी-प्रेभ विचार रे. ८०८ आ.

बीजिं ससिहर ऊगमइ, सुंदरि जोटो तेह, तिहां होसइ नयन मेळावडु, जा मिन जसइ सनेहा रे. ८०९ आ नेह-परीक्षा जाणीइ. सही परदेसि गयांइ. निस-दिन समरइ न विचलइ, विज गुण जेम गयांइ रे. ८१० आ. जिम सूरयनि कमल-वन, जिम चातकनइ मेह, जिम निलेनीनइ चंदलु, तेहवुं राखे सनेहा रे ८११ आ राखे थांपणि प्रांणनी, मेहली छइ तुज पासि, दिन थोडामां आविसिर्च, ताणिया तुज नेह पासे रे. ८१२ आ गोरी म रूअसि दुख भरी, दिउं छउं माहरडी आण, रोतां दुःख नहीं विसरइ, नयणां होसइ हांणि रे. ८१३ आ ्रमुंदरि वचन इसियां, सुणि हइडुं गहिंबर थाइ, विरहि-द्वानल परजलइ, बोलिड जाय रे. ८१४ आ. पालव साही पति तणउं, रूधी रहि ते वाट, आंसुडइ भीन उरि -कांचुड, प्रीड जाति उचाटो रे ८१५ आ वाहला मुज विण माहरी, कुण करसइ संभाल, विस्हानिल तनु सुकसइ, जिम तरुअर विण झालो रे. ८१६ आ. सुनि रानि सूर्वेलडी, विण सीचइं गोरी प्रीड नेहे-नयण विण, झरी झरी पंजर थयो रे. ८१७ आ पिंग पडी कूण मनावसइ, कुण करसइ अद्य सार, कुण सहिसइ ऊलंभडा, कुण देसइ आघारो रे ८१८ आ कां सरजियां पीड वेगलां, वरि सिं न लीघा प्राण, दोहिली विरहनी वेदना, कां थयड देव अजाणा रे ८१९ आ. बाहाला वीसारु रखे, गया पछी परदेसि, चिर विरहानिल जलइ वेलडी, सींचेयो संदेसे रे. ८२० आ. अह्म मांहि को गुण नथी, तुह्ये संभार जेण. को अवसरि संभारयो, अह्मनि दोस मिसेण रे. ८२१ आ. तुह्य गुण अहा नही वीसरइ, मत वीसारइ मूंह, भगर भलेरां भेटसइ, करयो सार केवार रे. ८२२ आ तुहम्यो मुर्जानं संमारयो हूं तुझ न समरेसि, मन साथइं संभारवं, ते तु छइ तुह्य पास रे. ८२३ आ. द्रि गयां सनेहडु; राखइ विरला कोइ, यम सूरयन कमिलनी, अवर न साहामूं जोए रे. ८२४ आ.

सइ-हथि आंसू लूहीयां, देइ आलिंगन प्रेमि. पीउडु यहइ अह्य चालवा,क इ करइ अमंगल ऐसो रे, ८२५ आ, दुख-सायरिं मुज बूडतां, वरिसि म आंसू-घारि, एक तरतां छइ दोहिल, जोइ न चिंति विचारो रे ८२६ आ. छेह नही प्रेम-वचननउ, दिवस घणेरडु जाइ, अति दुख वाघइ देखतां, हइडुं गहिबर थयो रे. ८२७ आ. हवइ नही समय विलंबनड, मन डमडेाल करेइ, अह्म जावा दिउ सीखडी, हइडइ दुख म धरेयो रे. ८२६ आ, नयणां-हांणि रोयंतडइ, झूरंतां तनु-हाणि, मन दुख इम नही वीसरइ; चिंता चिन्ति म आणे रे. ८२९ आ. वाहाला साचूं ओह पणि, मन निव राखिउं जाई, पसरिया सायर पूर जिम, कहेइ कहेइ ठ।िम बंधायो रे. ८३० आ कारय-सिधि हु तुह्य तणी, मि नवि कीध विलाप, नयण गलइ कडुआवीयां, तुद्धा विरहानलि तापे रे. ८३१ आ अह्य जावा आदेसडु देइ, न सकइ रे मन्न बोली न सकइ जीभडी, किम आपुं आदेसो रे. ८३२ आ. शतखंड थाइ जीभडी, जावा कहितां रे बोल, भारइं किम तूटइ नहीं, मनदूं धरइ डमडोलो रे. ८३३ आ हंसइ भरिया ऊचोलडा, सोहवा जिणि सरोवर हंस जीलता, ते किम दिइ आदेसो रे ८३४ आ चालणहार चालसइ, जासइ नव नव गाम, दुख देखणहारां एकलां, रहिसइ सूनलइ ठामो रे. ८३५ आ. कहि सिउं करसइ गोठडी; सरोवर हंस गऐण, किम जासइ दिन झूरतां, मिलसिउ कैति दीहेण रे, ८३६ आ. रहिसइ नईों, जे हूआ चारुणहार, राखीतां अवसरि संभारयो, जाता हंस जुहारो रे. ८३७ आ. घणडं घणडं कहीइ किसिडं, रखे वीसारु चिंति, थोडइ घणूं स जाणयो, करयो अह्यारडी चींता ८३८ आ वली वली ए कहि छइ किसिड, वाहाली संभारण काजि, वीसरइ, तुज गुण राति न दीहो रे. ८३९ आ. वीसारतां न बीसारीयां नवी सरइ, जे गिरुयां गणवंत द्रि गयां नेह सांभरइ, हैअडइ गुण अनंतो रे. ८४० आ. सोहाविंउ सोइ देसडु, जिहां तुद्ध गमन करेइ, रान थयु आदेसडु, वाहलां दूरि गएण रे. ८४१ आ. हंसा जिणि दिसि गम करेइ, तिलि दिसि मंडन थाइ, ते सरोवर जूरी मरइ, जिहांथी इंसला जायो रे ८४२ आ. रे गुणवतां नाहला, दरशनि अमीय दुर्लभ तुज मुख-चंदलु, कहीं देखिसडं एकांते रे. ८४३ आ. नींठर हैंडुं पुरूषनूं, कठिन घडिउ जिम लोह, नेहड़ं नारी टलवलइ, नाणइ प्रीउ मनि मोहो रे. ८४४ आ. टलवलता प्रीच विलपतां, महेलंता निरधार. नीठर मनडुं किम वदइ, ते मुज कहु विचारो रे. ८४५ आ. परवत सरखा भेदीइ, नइ-पाणी परवाहि, कठिन हैं उत्हा पाहाणथी, नींठर निरगुण नाहो रे. ८४६ आ वेध विलाइ रस रमी, चिंतडूं चोरी जाइ, प्रीउडा ए तुज पापनूं, किम सुजवणउं थायो रे, ८४७ आ. जउ जाइसि तु जाइ तूं, प्रीउ मुज कंठि म लागि, होइ अमंगला पंथीया, मृत माणसनडं संगो रे. ८४८ ा. जड तुह्ये न रहड प्रीउडा, तु एक वयण भमरा वास-निवास जेते, तुहा अहानि देउ रे. ८४९ आ. बभसूया- वाहन गती, सिरि-वाहन-थणहार, गोरी तुज कही देखिसडं, जस वेणी हर हारो रे. ८५० आ भूपति जोसइ वाटडी, वेला थइअ अपार. जड जावूं परदेसडइ. तु सिड करइअ विचारो रे. ८५१ आ. तुं गोरी वलतूं भणइ, वाहालाजी अवधारि, किवारइं मनि समरयो, करयो अहा तणी सारो रे ८५२ आ. कुशलइं मारग वुलयो, रूडा काज करेइ, गुणवंता मिलसइ धणां, अह्मनि चिंति धरेयो रे. ८५३ आ. पंथि पधारु प्रीउडा मन चींत्यां फल होउ, काज करु वहाला आपणडं, आ दिसि साहामूं जोयो रे ८५४ आ. वहाला वहिला पधारयो, सिद्धावउ ने सुजाण, यतन करी नई राख्यो, तुद्ध पाखइ अह्य प्राणो रे. ८५५ आ अजितसेन आयास लही, हबइ चालइ परगामि, शीलवती वडलाविवा, साथइं आवी नामो रे, ९५६ आ.

सुंदरि नेह-गेहेलडी, धरती अति उचाट, नयनां-जलधरिं सींचिति, प्रीउंजावा तणी वाटो रे. ८५७ आ सूरयडु तपइ, चरणे वेलू-जाल, बुछ मंदिरि गोरडी, तूं मूंहीलडी बोलो रे ८५८ आ वाहाला विरहानल तपइ, तिणि दुखि दाजइ अंग, तिणि दुखि ए दुख वीसरइ, अनइ वही तुद्य तणइ संगो रे. ८५९ आ. चरणे खूचइ काकरा, लोही झरइ रे प्रवाह. परसेवड अंगि उतरइ, रहि रहि बूजवइ नाहो रे ८६० आ मोरइ आंसू-जिल सींचीउ, मारग शीलु रे होय, अनइ वली तुह्यची गोठडी, प्रीड ए दुखडु न जोए रे ८६१ आ. इणि मसि जेतीइ घडो, प्रीउ तुद्ध साथि रहाइ, सफल हुइ ते ते घडो, अवर अनारथ थायो रे ८६२ आः जोतां पणि लाभइ नहीं, सजन वउलावा ठाम, जिहां तुंहा वउलावी वलूं, तिहां रान मसाणो रे. ८६३ आ इम मुंइं वुली केतली, दूरिथी दीठउ राय, अजिनसेन तव वीनवइ, वाणी सरस अपारो रे. ८६४ आ, वाहाली आ वड-छांहडी, सरस सरोवर एह, साहामा दिसइ कटकउं, हवइ वलु आपणइ गेहो रे. ८६५ आ. बचन उसींकल आपणा, हवईं म वीसारसि चित्ति, दिन दिन अधिक वघारयो, वहाली आपणी प्रीति रे ८६६ आ सुंदरि कहइ किम वाधसइ, वाहाली प्रेमनी वेलि. सींचणहारा वेगलइ वनि, कुंण करसइ सारो रे ८६७ आ. वाहाली बोली मवचन ए, जनमंतरि न मिलंति, घण अंतरि ससि-कुमदनी, तृहइ नेह न चलंते रे. ८६८ आ हाथ वछोडावी जतां, वाहाला बल मांणेसि. जड जाइसि मन माहिथी, तु तुज बल जाणेसे रे. ८६९ आ. प्रेम वसइं अति परिचइं, विरहि जलंतडइ देहि. कांइ जे अणघटतूं कहिउं, ते उसीकल करेयो रे. ८७० आ. वाहाली ते दिन कब हसइ, जब तूं अह्य दुह वेसि, बाहरां तणा उलंभडा, सुणतां अमीय सरीसो रे. ८७१ आ. इम उत्तर पडुतरइं, करीय सरंगी हेवइ प्रीउडर वुलावीउ, सूनी थइ सवि धातो रे. ८७२ आ.

जयवंतसूरिकृत

राग मारुणी मांहइं वीरही

दृहा

गोरी पींउ वउलावी, सूनां रहिया ढंढार,	
मन वउलाविउं प्रीउ सिउं, हवइ कुण करसइ सार	८५३
गोरी जोइ ऊभी रही, ओ वाहलेसर जाइ.	
नयणा लेयो रंगडु, जिम मन तृपतु थाइ	८७४
मेहलीआ करि वादलूं, टाढा वाय सवाय,	\$
सजन सुंहालां साचरइ, अंब म छंडे छाय	८७५
सजन चाल्या गुण महेलीआं, हैयडइ महेल्युं साल	
ते गुण त्रेवडी समरतां, हैयडइ उठइ जाल	८७६
सजन चाल्या विदेसडइ, मेहली माहारी सार.	
तेणइ देसि मोरु जंबारडु, सि न सरजिउ किरतार.	.८७७
हुं सि न सरजी पंखिणी, जे भमती प्रीउ पासि,	
भूख-तरस वरि वेठती, नयणां तणइ विमासि	১৩১
हूं न सरजी वालुका, जे प्रीउ चंपित पाइ,	
पणि कां सरजो विरहिणी, शीउ नांव देखुं माइ	८७९
रे शशिहर तुं बीजइ दिनि, मूंहनइं कलामां भेलि,	
इणि मिसि प्रीउ साहामूं जोइ, विरह विछोहिया मेलि	८८०
रे चंदन तोरा गंधमां, भेलि-न मार भाग,	
ऐणि मसि प्रीउ अंगई रमूं, अवर न पामूं लाग	८८१
रे चांपा तुज गुण करुं, पूरि-न मोरी आस,	
प्रीउ कंठइ वलगूं जइ, जउ लइ मुज तुज पासि.	८८२
रेरे नागर वेलडी जु दइ तुज अवतार,	
प्रीउ मुख-मंडन हुं हवु, सफल करुं संसार.	८८३
माइ विधाता मीनित करं, माइ सिउ भेलि-न मूंह,	
एणइ मिस प्रीउ मुखि जे वसूं, पुण्य हुस्यइ वली तूंह.	८८ 8
एणि परि नेह-गेहलडी, गोरी विलेख करेड,	
उरि विरहानल प्रगटीउ. आस-जलि वरसेइ.	664
उदीसड पेला हाथीया, उ पेल वाहाल जोड.	•
उदींसइ पेला हाथीया, उ पेलु वाहालु जोइ, वाली सकु तु बालया, नयणां अंतर थाइ.	८८६
प्रीड पंचारिया वाटडी, उडिंग लागी छेह.	
प्रीड ्यु नयणा बारिथी, हवई सिंड वरसिस मेह	660
्म जाण्युं हूं बद्धी बली, प्रीड ्मुख जोसि रसाल,	
जिम बन-माली बन तणी, श्वणि क्षणि करइ संभाल	
take the street and a self added and to the contract of	

विरह-दवानल प्रगटोंड, बाली आस्या-वेली,	*
अधर समा फल वेडीयां, हैडा-आर्या मेलि.	८८९
जे देखी मन उल्लसइ, ते सज्जन परगांमि,	
सरखा को देखुं नहीं, मन राचइ जस नांमि	८९०
मन लागुं नारिंगडे, किम रमइ लिंब-फलेण,	
मनि अलजउ सज्जन तणउ, किम भागइ अवरेण.	८९१
सुमन भमरे सेवीयां, किम गमइ आउल्लि-फूल,	
ते गुण सङ्जन केरडा, लाभइ केणइ मृलि	८९२
सुगुणी नइं मन मोहिनी, हंसे सेवीं गंग,	
निरगुण नीरस छीलरे, ते किम मांडइ रंग	८९३
गुण घणा मन सांकडू, हैयडामां न समाइ,	
तेह भणी आंसू मसिं, गुण उलटीआ न माइ	८९४
भींतिर विरहानल जलइ, मृहि धूआं-नीसास,	
सजन गुण वाबाइउ, बोलइ तनु वनवास	८९५
गया ते मन बुहरति करी, वणजारा पर ठांणि,	
अह्यनइं गुण वुहरावीयां, तस नहीं हुइ हांणि	८९६
रे सज्जन जड तुह्ये गया, तु गुण मेहल्या कांइ,	
पापीडा क्षणि क्षणि दहइ, जिहां जाउं तिहां धाइ.	८९७
सूनी सराविर पालिडी, ऊडणहारा हंस,	
संजन चाल्या परदेसडइ, अह्ये रिइया निरास	४९८
सिंहजि सिळ्णां माणसां, दैविं कीयां सदोस,	
दुरियन नी परिं जिहां वसइ, तस मिन लाइ सोसं.	८९९
गुण संभारू केतला, मन भरी उं भंडार ,	
जिम वयरागर भूंहडी, रयणा तणा अंबार	९००
सायर नीरह भूंई तिणह, गयणगणि तारांण,	
वयरागरि मणि सुयण-गण, पार नही एयाण	९०१
वरि विसहर खाधां भला, क्षणमां जीवत लेइ,	
पणि विरहानल दोहिल, क्षणि क्षणि देहि दहेइ	९०२
पणि विरहानल दोहिलु, क्षणि क्षणि देहि दहेइ. विरहानल दीवा बलइ, सींचती नेहेण,	
देहती दीवटि आवटड, नवि उल्हाड केणि.	९०३
मख्जन जाता ते करिउं. जे वन भील करंति.	
ट्य लाइ दरिं रह्यां. भीतरि जीव बलंति	९०४
दव लाइ दूरिं रह्यां, भींतरि जीव बलंति. सज्जन जातइ ते करिउं. जे पारथी करंती,	
मधर वचन महि दाखवी. अह्मनइं गण बाज्झति.	९०५
जड जाणत दख एवडुं, पहिलं प्रीउ विरहेण	• •
मधुर वचन मृहि दाखवी, अह्मनइं गुण बाज्झति. जड जाणत दुख एवडुं, पहिलूं प्रीड विरहेण, तुनविकस्त सनेहडु; प्रीड न जोअत नयणेण.	९०६

नेह-मूल दुख-वेलिन्ं , विरस विरंगी जेह,	
प्रेय विरहानल-फूलडां, मरणा—फल हुइ छेह.	९०७
नेह-मूल दुख-वेलिन्ं, विरस विरंगी जेह, प्रेय विरहानल-फूलडां, मरणा—फल हुइ छेह. पूकां भीतरि सरसपणि, मूढवि दुख वेयंति,	
नेहइ रतवि पंडुरा, दुणां विहु तणयंति.	९०८
कां किधां परदेसडइ, वाहास्रां नेह सुरंग,	
अंगो अंगइ न मिलत, जउ नयणां मिलत सुचंग	९०९
चंद निल्नी रवि कमलिनी, न मिलइ अंग़ो अंगि,	
दूरिं दीठइ उल्लसइ, नयणां केरइ संगि.	९१०
नवि बोलावइ मधुर सरइं, नापइ कांइ रसाल, नेह नयणे निहालीयां, वाघइ कळप बाल	९११
सुंदरि नेह-गहेलडो, विलवती निरधार,	
प्रीउ सिउं मन वउलावि करि, पाछी वली सुविचार	९१२
डभी वडनी छांहडी, नयनि	
डग आधां न भराइ ते, हो हो धिग् ससनेह	९१३
प्रिय विरहि रोयंतडड. रोआव्या गिरि-टॅ क .	
नीजरणां मसि जल झरइ, गोरी जोइ निशंक	988
वनि रोआव्यां रुंखडा, गोरीइ रोयंति तंत,	
साल सलाव्युं विरहीया, गुण समरी विलवंत	९१५
वन वारइ पंंखी मसिं, रहि रहि सुगुणि म रोइ	
जिहां संयोग वियोग तिहां, दुख धरइं सिउं होइ.	९१६
विरह तणां दुख दोहिलां, नवि वीसरइ जीवंति,	
विरिंह मांणस न विसरइ, पणि दूबलडां हुंति	९१७
सञ्जन पहिलूं हूं सि न गइ, दुख न देखत एह,	
हैं न फाटइ स्या भणी, वाहालां तणइ विछोहिः,	९१८
मांणस केरां हैयडलां, कठिन घडचां किरतार, विरहि न फाटई ब्रज्मय, धिग् धिग् मनुष्य-जंवार,	
	९१९
विरह कराली बालिका, पगि पगि इम विलवंत,	
निज घरि आवी गोरडी, दिन जाइ झुरंत	९२०
विन भुविन कही सुख नहीं, तालोबेलि ऊचाट,	
क्षणिक बाहरि क्षणि भूंइ, क्षण उभी क्षण खाटि	९२१
जेहनइं जेसिउं नेहडु, नेह विण तस मिन रांन	
एकि जाणे जग भरिउ, जेहसिउं नेह-बंधाण	९२२
सवि सूतुं सजन विना, ऊवस सघळूं गांम,	
दुख भरि पुहुवो हीडता, काइ ्न पूछइ नांम	९२३
दुख भरि पुढ़ुवो हीडतां, काइ न पूछ्द नांम. जे सेरी सोहावती, लडसडते डगलेण, तेणइ सेरीइं मृग चरइ, सजन विदेस गएण.	
तेणइ सेरीइं मृग चरइ, सजन विदेस गएण.	९२४

कुसुम-सेजि जिणि मंदिरि, सुख विलसती रसाल,	
दीठां न गमइ ठांम ते, देखी सालइ साल.	९२५
तेह ज मांणस तेह ज घर, तेह ज ते ठांण,	
एकइ जाते सहू गयुं, चंचल थयां छइ प्रांण.	९२६
अन्न न भावइ विरहीयां, जल दीठउं न सुहाइ,	
वैध नहीं को तेहवु, जस दुख कहीइ जाई	९२७
जे सिंह मीलीया सजन सिउं, तस हैयडइ नितु साल,	
जे सजन सिउं निवं मिल्यां, सुनउ तस अवतार.	९२८
सजन साथइं जे मिल्या, ते नितु झुरि मरंति,	-
गुण संभारी आवटइ. सुख सुहणइ न छहाति.	९२९
कां ते सजन सरजीया, अहा सरज्यां कइ काइ,	•
दुख कारणि नेह कां करु, दुख-सायरि पडीयांइ.	९३०
इस गण समरी विख्वती. मेहलंती नीसास.	• `
मुच्छाइ धरणी ढली, समरी प्रेम-विलास	९३१
सही शीतल उपचारडा, करइ अनेक उपाय,	
नीर चंद चंदनह, ते विख-वेळी थाइ.	९३२
विरह-दवानल परजलिंड, छांटि म सहि सलिलेण,	• •
हैयडुं पाहाण ताण परि, पीउ जासइ फूटेण	९३३
शीयल कयली पत्तडे, वीजि म विरह विलत्त,	• • •
विरह-दवानल धीकीउ, वाधइ वाइ जडित.	९३४
भींतरि विरहानल तपइ, बाहिरि सिउ उपचार.	•
उषध वाहालां-संग विण, न समइ रोग लगार	९३५
मयणराय किम वीसरइ, जायु विरह संतावि,	•
सुमनस-दंसण शीयल-जलि, सिंचजइ नहुजाव (?)	९३६
चंदउ चंदन केलि-दल, ए जस इधण हुंति,	. , ,
पीउ विरहानिल सोइ सहइ, किम उल्हाविउ जाति.	९३७
रावण-रिपु-सेवक-पिता, अरि-वल्लभ मत लांइ,	
तार्ति तेलई शीतल-जल, छम छम अधिक सथाइ.	९६८
गहिली मेह पिय-वयण, विण महेली कुंभ-पिएण,	
मायर-तनया-सत दही. सहि हं दुब्बल तेण	९३९
हरतिय-नयणे जे वसइ, हे सिख ते मुज देइ,	
अगनि अगनि उतारीइ, सो पुण मयण दहेइ.	९४०
कामण मोहण जिणि कर्या, तेदिजि टालइ दोख,	
जेणइ लायु वेघडु, तेह्जि भंजइ शोख.	98 9
आकरसइ गुण ताहरा, मोहन-रूप रसाल,	
वसीकरण तोरां नयणहां, मारण विरह कराल.	९४२

वियोग उचाटन बोलडा, कामण मोहण एह,	
अह्म वसि करवा सजना, किहां ते सीख्या एह.	९४३
विरही मांगस डिखडां, चकरा जागई सोइ, एक रयणी रडतां गमइ, दुख सरिखु सवि कोइ.	
एक रयणी रडतां गमइ, दुख सरिखु सवि कोइ.	688
थइ सचेतन सुंदरि, सालइ प्रोउ-सनेह,	
थइ सचेतन सुंदरि, सालइ प्रोउ-सनेह, गुण संभारडी गोरडी, पंजर हवुं देह	981
जे बाटइं सजन गया, फेरा दिइ तिणि वाटि,	
जइ रमइ सुनइ रांनडइ, धरती अंगि उचाट.	९४६
आंगइ थांनिक बोलावीकां, वउलावीयां एगइ ठांमि,	
दुख साल्ड तिणि दीठडाइ, वाहालां जातइ गांमि.	९४७
काम उपाय नव नवां, गोरी फेरो देइ, है है वैध विलूघडा, सुपरि संवरिं वेइ (?)	
है है वैध विलूघडा, सुपरि संवरि वेइ (?)	९४८
सजन पांहि विसहर भला, क्षणमां प्राण हरेइ,	
वेध विख लाइ पंजरि, क्षणि क्षणि देह दहेइ.	888
सजन दीठइ जीवीइ, मरीइ अणदीठेण,	
सुगुणां संग त्रसाळ्ञां, त्रस छीपइ कहु केण	९५०
आंबा-फलनी आसडी, कइरिन सफली सेाइ,	
सगुण सॡ्यणां मनि वस्या, अवर न रच्यइ कोइ	९५१
मोति चूरि चिणंतडां, सरोवरि झीलइ हंस.	
छीलरडे बग डोहीइ, ते किम करइ प्रसंस	९५२
गुण संभारी जेहना, भमरू जुरि मरंति,	
जां ते माछित निव मिलइ, तां किम आस फलंति.	९५३
जोइ जोइ पाछउ वलइ, बापीडु जल चंग,	
तेहवां सजन को नहों, जे दीठइ हुइ रंग	९५४
सगुण सॡणां वेघडइ, अवर न भावइ कोइ,	
सुर-तरु तणइ भोलावडइ. आक न मोठउ होइ.	९५५
ऊडी गया ते हंसला, सूंनी सरोवर पालि	
जेहसिउं रूडा भावता, ते पुहुता पेलांडि	९५६
जिम जल विरहि माछली, तालोवेलि कराइ,	
मन्त्र विण निए ग्रेंट्यरं दिय दलवळ्यां जार	010
फाटि न विरहिं रे हैयां, कां तूं नीठर आज,	
वाहलां विण जे जीवीइ. तिणि जीवइं सिंउ काज	९५८
सनेह विछोहा दोहिलां, डूंगरि देयो लीह,	
आवटणुं आठइ पुहुर, सजन विछोहा जीह.	९५९
पाटि न विरहिं रे हैया, कां तूं नीठर आज, वाहलां विण जे जीवीइ. तिणि जीवइं सिंउ काज सनेह विल्लोहा दोहिलां, हूंगरि देयो लीह, आवटणुं आठइ पुहुर, सजन विल्लोहा जीह. सजन करां दुखडां, आपि न जडं भंजाइ, कमल परइं रवि अथमणि, पहिलूं तिन करमाइ.	
कमल परइं रवि अथमणि, पहिलूं तनि करमाइ.	९३०

मित्र दुख देखइ नहीं, आपइं संकोचाइ,	
नेह खरु रवि कमलनु, अवर न दीठ सुहाइ.	९६१
मांणस पांहि दाडुर भल, मेह विण प्राण त्यजंति,	
अहव निसनेहां मांणसां, सरणां, भय न धरंतिः	९६२
तहेवुं नेह स्रगाडीइ, अवर न जां सुहाइ,	
जिम मेहा बर्पीहनइ, नेह देखाडी जाइ	९६३
हंसा आपि-न पंखडी, मन भावइं सो लेइ,	
अलजंड भांजंड मन तणंड, जह ते संजन मिलेई	९६४
ले चंदा चतूर तूं, मोरी करि न संभाल,	
सजन संदेसु दाखेंवी, जाता प्राण स वालि	९६५
युग सरखी रयणी गमुं, वरस समाणां दीह,	• , ,
सुनडं यौवन सजन विण, आलइं जाइ दीह.	९६६
वर्छी वर्छी जोइ नयणलां, करि आरीसु लेइ,	, , ,
सजन दीठा एणे नयणले, हूं बल्हिहारी तेणि.	९६७
चिंता मनि छइ मिल्रणनी, सारणि हैइ बहेइ,) / · -
नवि मांगइ चिंतामणि, जां सजन न मिलेइ.	९६८
एक जि चिंता सजननी, अवर वीसारी चिंत,	140
चिंता थकी अधकी दहइ, कोइ म करयो प्रीति	९६९
ते दिन कहीइ आवसइ, जहां मिलसिउं एकांति,	147
कुसुमि विछाही सेजडी, प्रीउ सिउं विहीसइ रातिः	९७०
नांम न मेहलई नीद्रमां, प्रगट करइ मन-वात,	700
तालोवेली उरतु, दाधजवर उचाट	, • (° ð
सन्जनइं सुहुणइ् मिलूं, मिन हुइ हरख लगार,	191
देखी न सकइ देव ते, नींद्र हरइ तेणी वार.	९७२
विरहि म आवइ नींद्रडी, वली विशेख संयोगि,	104
सही ससनेहां मांणसां, पहिलूं नींद्र वियोग.	९७३
हूं जाणुं सुहुणइ मिस्टिंड, मनि हुइ दुख-वीसार,	7.02
	O ve ta
करुं उपाय घणी परइ, नावइ नींद्र लगार.	९७४
आंखडीयां रातिंड धरइ, अरुजेड दोइ मिलणांइ,	0.04
एक सजन नइं नींद्रडी, दो जण छोडि गयांइ.	५७५
चिंताइं सभरित भरी, सजन विरहि देह,	06
आवी न सकइ नींद्रडी, कसरारिं नयणेह(?)	708
नयणे वेची नींद्रडी, अंगी करिउ अणुराय,	
वलती सी तस आसडी, जे करि चडीयां जाइ.	300
उत्तर देइ आकली, सहू दूबलां पूछेइ,	
जे सजन विछोहीयां, मातां किम हुइ तेह.	९७८

सजन सॡ्रणां मनि वसइ, अधिक वधारइ सोस,	
तनु भिजइं भीतरि गलइ, वाहलां मोटउ दोस	९७९
बहु गुण भरीइ सजन-तिन, पइसणि न छहुं भेयः	
तेह भणी हूं दिनि दिनि, पत्तल अंग करेइ.	९८०
विरह-द्वान्छि जाछोउ, छांटिउं नयण-जलेहिं,	
तुहइ सहइ पत्थर दिइ, दिनि दिनि पंडुर देह.	९८१
आंसूडां क्षणि क्षणि जरइ, नयनि अखंडी-धार	
विरह-सरोवर उछटिउ, नयणां वहइ घडनाल	९८२
रोइ रोइ छूटइ आंखडी, हैडडूं किम छूटिइ,	
जिम दव लागु वे।डिमां, भींतरि जरि मरेइ.	९८३
भीतरि विरहानल जलइ, मृहि धूँआं-नीसास,	
नयणे आंसूडां गलइ, हैयडइ ऊठइ जाल	828
समय समय ना बोलडा, प्रेम तणा एकांति,	
निःकारण मनि समरतां, हैयडूं हेजि हसंति	९८५
उजाणे लीलां करी, वाटइं सजन जाइ,	
वेध विऌ्घां माणसां, ते केडइंऊ जाइ.	९८६
सजन गुण संभारता, थाइ अचेतन देह,	
भूख त्रस नवि सांभरइ, मूच्छाइ ससनेह	९८७
सजन पासइं मन वसइ, सुनुं भमइ ढंढार,	
दोहिलु पापी वेघडु, मरम भलुं अकवार	९८८
पारेवा नेहइ मरइ, दाडुर मेह विहीन,	
नेहइ बंद्धा सवि मरइ, जिम जल विरहि मीन,	९८९
विरहिं मांणस सही मरइ, अहवा जउ न मरंति,	
दव-दधां हुइ साल जिम, निशि जूरि मरंति.	९९०
पहिछूं नयणां नेह करइ, विंता चित्ति घरेइ, र	
नव नव संकल्प ऊपजइ,३ विरह प्रलाप दहेई ४	९९१
नयणां नाठी नीद्रडी,५ तनु जूरी जिब्भेय,६	
आंखडीयां आंसू झिरइ,७ अति उनमाद वाहइ.८	९९२
गुण समरइ म्र्ङो दहइ,९ विरिह मरणां होइ,१०	
विरहीनी ए दस दिशा, साल समांणी होइ.	९९३
कबहि मिलुंगी वल्लहां, मन मिलणां अहिलास,	
इअ चिंत तां मांणसां, जीवीय रखइ आस.	९९४
समरि समरि गुण मालती, भमर भमी झुरंत,	
तिम गुण समिर सजनह, झूरि झूरि मरंति.	९९५
मानस-गुण मनि समरता, अवर सिउं न मिल हंस,	
गुणवंता ते सरभलां, तेह भला ते हंस.	९९६

समरइ हाथी विजनइ, करहा मरुथलयांइ, तिम मन समरइ सजनह, जोयण छख गयाइ. प्रगट करइ गुण तेहना, जेहसिउं जस अणुराय, एक वाहलां गुण-गान विण, अवर न कोइ सहाइ. अछता गुण कहइ तेहना, जे जस उपरि रत्त, नांम लेतां मन उल्लसइ, जिहां हुइ अंक चित्तः दिन दोहिलई नीठर नहीं, रयण रडंत विहाइ, विरह तणी जे अघ-घडी, ते युग सरखी थाइ. भूख नहीं निद्रा नहीं, तालोवेलि प्रलाप, दाधज्वर दहइ रोग ए, दोहिलु विरह-संताप १००१ हैयडइ कांइ सुजइ नहीं, मुहुडइ नवि बोलाइ, 🕏 🕏 विरहां मांणसां, पहिलूं मति मूंझाइ १००२ क्वचित् अभिलाख १ स्मृति २ गुणकीर्तिन ३, उद्वेग ४, व्याधि ५, जडता ६, चिंता ७, प्रलाप ८, छन्माद ५, मरण १०, एता समरद्शा प्रोकताः, अतएवद्पृथक व्यावखातां..... भागइ विरहानल तपइ, चंद्र दहइ बली देह, **भा**गइ सरोवर उल्लटइ, उपरि[ः] वरसइ मेह. १००३ हर-बाहन सायर-पिता, अमीय कला निकलंक, निलनी सिडं तुज प्रीतडी, इम कां दहइ मयंक १००४ रेलइ चंदा चतुर तूं, चिंति न चित्त सुजांण, भागइ विरहानल तपइ, उ स्युं करइ परांण. १००५ रे शिशमुखि मनि समरि तूं, पूरव वैर विचार, मुख साथइं बल मांडती, मुख केरइ आधारि १००६ रे चंदा सुणि वत्तडी, गुणवंत जोइ न चींति, बिहि विपडचां वझ्र सोधीइ, ए कुण उत्तम-रीति. १००७ जां प्रीउ नावइ दैव तूं, तां शशिनइ जंपेइ, जव आवइ मोरु वल्लहु, तव संसि महिम करेइ. १००८ रे पापी सुणि वंदला, विरही मारणहार, भ्राय जाओस ए पापथी, बल तूं म करि गमार १००९ विस-सायर कुरंग-प्रिय, सच्च-चंद दहेउ, सीयल चंदन का दहइं, एमह भेय कहें १०१०

केह हैइ सङ्जन वसइ, तेहइ दुणु भार, विरही मांणस दूबलां, कहु सिंह कवण विचारः १०११ सन्जन सहिजि सॡणडां, तम्मय पीउ करेइ, विरहानल सूर्य तपइ, तणि ज्ञीणंग सहोइ १०१२ विरही कां हुइ दुबलां, कारण कहु-न विमासि, सही ए निश-दिन जेहनइ, पिछ पिछ वाघइ मांस. १८१३ उत्तर पुहुर अंगीठडी, भींतरी धीकइ जास, भाठ मांचइ किम सॡण ते, पल पल वाघइ मास. १०१४ के जे बोल्या बोलडा सजिन नेह-रसाल, खिणि अटकइ ते हैइ, जिम अणदीठड-साल १०१५ जे जे बोल्या बोल्डा, सजिन नेह-रसाल ते बोल संभारता, सूकूं सालइ साल. १०१६ घडली वरसा सु समी, रयणि अनीठी थाइ, सजन विण जे जीवीइ, ते जीविडं न कहाइ. १०१७ सजन जातइ ते करिडं, जे वली करइ सोनार, विरहि अंगीठीं खार-गुण, गाली सघली घात १०१८ सजन जातइ ते करिडं, जे वली करइ लोहार, विरहानल मन तापवी, दइ गुण धणह-प्राहार. १०१९ सही ए गुण सजन तणा, सोइथी नींचा दाइ, अलगाथाइ. १०२० सुइ वींधी मेलइ एकठां, सजन सजन सहिजि सीयला, गुण-दाबानल निश-दिनि रहइ जु एकठां, तुहि-न जाइ सभाव १०२१ सजन नहीं ए पारधी, नांखइ निज गुण-पास, निशि-दिन आवटणुं करइ, मिलइ न मेहलइ आस. १०२२ सजन साप समाणडाः सहिजि हुइ वंक, वंकिम नयणे विख वमइ, वयणे देइ डंक. १०२३ दाहि दाहि फलि कलमलुं, रतिंड पहिलूं देहि, पछइ अनुदिन झमझमइ, वीछी डंक सनेह. १०२४ सन्जन गुण नहीं तुहा तणा, वीछीं सरखा होइ, दीसंता मुहुडइ समा, ऊकराटिं विख जोइ १०२५ एक परइं दुरियन भला, दीठा दहइ विकराल, सजन अणदीठा दहइ, दीठि सालइ साल १०२६

विरह भल्ज एकीं परइं, संगम सुख जणाइ, तेहाजि सज्जन संगमिं, तनमय विरहि जणाइ. १०२७ सजन प्रहियां मन भीतरिं, कीधी वाडि सनेह, तु परदेसइं किम रहिचा, सुपनि न महेलिया एहः १०२८ सजन देखुं जा लगइं, तां मनि हुइ समाधि, जब संजन दुरई गया, तव वाधी असमाधि १•२९ पहिलंड पंडिंड वरांसड़, जे मइ कींड सनेह, मन आपी परवसि थयां, हवइं जीवित संदेह. १०३० जड जाणड दुख एवडुं, तु निव करत सनेह, जिम छाली पाणी पींइ, जलह न अप्पइ देह. १०३१ सरीसडा, सजन गुण सुविशाल, बाउल-कंट पइसंता दीसइ नहीं, भींतरि सालइ साल. १०३२ वांका बोरि सकांटडा, सजन गुणह समान, खूचीनई पाछा विख्या, जम जम करइ पराणि. १०३३ सजन गुण जिम ॡगडूं, मुज मनि वोरि-कंटालि, ऊरें डुं नवि ऊखडइ, वलगइ तारो मारि कटारि प्राण लि, वरि विष देइ मारि, पणि रे पापी देव तूं, सज्जन विरहि म मारि १०३५ कइ अमृत कइ विख समा, सज्जन किस्या कहाइ, संगमि अधिका अमीयथी, विरहिं विख सम थाइ. १०३६ तेहवा सजन सनेहडा, जेहवां रुंख परास, जिम जिम विरहानल जलइ, तिम तिम पल्लव तास. १०३७ हैडा सुपरि वारतां, कां तिइ कीउ सनेह, भुख गइ निद्रा गइ, ए फल लाघां छेहि १०३८ हेजि-हीसी तेह करिड, करतां जाणिउं निरवहितां हविं दोहिलुं, विख विरहानल दुखु १०३५ हैया व्यसन वसाइआं, कुडड करवि सनेह, भूख तरस न सांभरइ, आवटणउं निशि-दीह. १०४० मनि संताप जि तेतलु, जेतु हुइ तिल पीलीइं तां लगइ, जां लगइ दीसइ त्रेह. १०४१ सहि ससनेहां दुखडां, आपि सहिणां द्रुध अगनि ऊकालीइ, नीर बलन जोइ, १०४२

प्रीति न कीजइ जां लगइ, तां मनि हुइ समाद्धि, जनथी मांडी प्रीतडी, तवथी आणी व्याधि १०४३ नेता सुखनि कारणि, मांडी प्रीति रसाल, तेता मुज फरि हूयां दुख, दहइ विरहानलनी झाल. १०४४ नयणां डूंगर-ज्ञरण जिम, नितु नितु नीर झरेइ, है डूं रत्न तलाव जिम, पूरिं फाटी जाइ १०४५ है दु दुखि पूरी है, जिम दा डिम-कुली एण, सज्जन की नहीं तेह्वु, ए दुख भंजइ जेण. १०४६ हैंडां भीतरि दव जलइ, सज्जन-गुण अंगार, नवि दीसइ जेणि उल्हवूं, अवगुण-नीर लगार १०४७ हैंडा पातिग एवडुं, ति न छहूं सिउं कीद्ध, नयणां नइ रस अप्पीउ, तुज झूरेवूं दिद्ध १०४८ पीउ-विरहनल लग्गीउ, हैडा-भुवण मज्झारि, हल्छ-फूल्छवि नीसासडा, नीसरइ वयण-दुयारि १०४९ विरह विछोहियां नेह तजड, नयणां दो घडनाल, हैअडुं रांन तलाव जिम, फाटत तु ततकाल १०५० कुसुम कुतुहरु केलिहर, चंदु चंदन चीर, सजन माणस विरहीयां, एतां दहइ शरीर १०५१ ऊमाहियां ते उचल्यां, पुहुतां पेलइ तीरि, मन मोरू साथई गयुं, जंखर रहिउं शरीर १०५२ वीसारियां न वीसरइ, गुणि गिरूआं रसाल, जिम पिंग भागु कांटडु, खिणि खिणि साल्ड साल, १०५३ खटकइ कवीयण-वयण जिम, सजन-प्रेम अपार, विरह खटकुइ तिणि परिं, जेहवा बोल गमार १०५४ गुणवंता मन भावतां, सञ्जन मिलइ केवार, देखी न सकइ दैव तु, करइ विछोह अपार १०५५ आज ज भागी नींद्रडी, आज ज गया विदेसि, आज ज सूनुं मन थयुं, सेरी मंदिर देस १०५६ प्रीउ परदेसइं चालतां, जेता दिन्न-दीह, खिणि चिणि ते दिन समरतां, मंदिर भरीउं लीहि. १०५७ अंगि वयणे होयणे, सिय नीसासु मेह, विरह विछोहियां अध-घडी, वरस समाणो एह. १०५८

अगनि थकी अधिकु दहइ, वल्लह-विरह विलास, आंस्-जिल नितु सीचतां, वाधइ अधिक ह्यास १०५९ गुण संभारी गहिबरी, हैडा झरि म झ्रि, जस मिलवा अलजु धरइ, ते सन्जन छइ दूरि १८६० चकवी मिलवा टलवलइ, चकवु पेलइ तीरि, घण अंधार रयणि भर, आगहिं उंदूं नीर १०६१ कां तुं झरइ रे हीया, सज्जन तणइ वियोगि, जहीं होसइ दिन पाघरा, तहीं मिल्लसइ संयोग १०६२ सजन विरह विगोइयां, आसार खुइ जीव, कालइ उंबर पाकीइ, मिलइ जीवंतां जीव. १०६३ हैडा कुशल ज मग्गीइ, वल्लह अनि अप्पाण, कबंही मिलड्गां सज्जनां, आशा मेरु समान १०६४ सज्जन विरहानल बलइ, ते मु दुख न होइ, हींइ वसइ छइ सञ्जनां, रखे बळतां सोइ. १०६५ हैडा फटि पसाउ करि, नीटर जीवइ काइ, सज्ञन गुण संभारता, फटावे दृह दिसि जोइ. १०६६ सज्जन पुठव-भवंतरिइं, दो जण वहर किसियांइ, नेह लगाडी मरण दिइ, मरण मज्झे वसीआंइ. १०६७ हैं डूं पंखीनी परइं, मेहिलयां सिव कसीयांइ, कोइ न दीसइ तेहव, जिणि तुह्यो वीसरियांइ. १०६८ विहि वरां सा बिहु परिं, नेह जि सरिवउ कांइ, अहेव सनेहां मांगसां, पंख न अप्पी कांइ. १०६९ जह पिउ मिलिंग उमाही उं, पूरइं पसरइ चित्त, तिम जड पसरइ पांखडी, तु उडी मिलूं नित्त. १०७० जाणउं जै उडी मिलुं, पंख न दीधी दैवि, मनमां रहइ मन-वत्तडी, अति अवटाइ जीव. १०७१ सारसडां मोती चिणइ, मन भावइ सो लइ, एक बार साजन मिलडं. पंख विकाती देइ १०७२ विहि रूठी तु सिडं करइ, पांखडीखांइ चकवां रयणि विछोहीयां, कांठा सायर समान १०७३ चकवां रयणि विछोहीयां, पंख पसाइ मिलंति, पंख-विहुणां मांणसां, नाउं दिन नवि रत्ति. १०७४ दीहा वज्ज सरीसडा, दैविं कीया कराल, तु रयणी सिहानी घडी, विरही-मांणस काल. १०७५ दैव आरांधिउ एक मनि, विरहइं पुत्र्व-भवेण, वरस समांणी अध-घडी, दीधी पणि वंकेण. १०७६ दुखीयां तणे नीसासडे, दीहा न बलइ काइ, विरही-माणस शापवइ, रयणी गली न जांइ. १०७७ विरहिं वाघइ पापिणी, संगमि वहिंत विहाइ, ए निःकारंण वइरणी, रयणी फींटउ माइ. १०७८ रे विह सुणी एक वत्तडी, कइ मुज सज्जन मेलि, कइ दिन रयणी मूलसिंडं, सायर मांहि मेहेलि. १०७९ टलवलतां निसि नीगमूं, पापी दिवस न जाइ, दिन झूरंतां जउ गल्रइ, विहाणउं नवि होइ. १०८० दिवस बलु रयणी गलु, जीविय वीज पडेड. सजन सिउं मेलावडु, जउ हय विहि न करइ. १०८१ हूं तुझ पूछडं हे सही, उत्तर दिउ मूज केण. राति दिवस विमणां हवइ, पीय मांणस विरहेण. १०८२ सजन मन भींतरि वसइ, मिलीउं जीवि जीव. तीह जीविय जे दीहठा, दुणा कियतें दैवि. १०८३ सजन मांसण विछोहीयां, घण-नीसासा होइ, तेह भणी दिन रातडी, अखय अनीठी होय. १०८४ पीउ मण वसतइ मिंलहिउं, नाण अनुव्ववियोइ, अम्माणूं जाणूं नहीं, परि पिछउं पण लोइ. १०८५ पंजर मूंकी मन भमइ, किंहिं न विरहेण करेइ, जिम फल लोमिं सूडली, अहि-निसि फेरा देइ. १०८६ नीसासु ऊजागरु इसाऽरति आरति. भूखा तरस तनु तनु हवइ, विरही लक्षण मित्त. १०८७ विरह थकी वरि विख भहूं दुख नवेइ खीण रे, पणी दवनीं परि नितु बलइ, पापी विरह-विकार. १०८८ विरह थकी वरि विख भछूं जेहनइ माणस खांइ, पापी विरह बीहामणड, जे मांणसनइ खाइ १०८९ विरह थकी वरि विख भछुं, खाधूं मारइ जेह, विखर्थी विरह नहीं भल्ल, अण-खाधु मारेइ. १०९०

विरह थकी वरि विख भलूं, नितु सेव्यां न मरंति, जिम जिम विरह जि सेवइ, तिम तिम अधिक दहाँति १०९१ मित्त न कीजइ जां लगइ, तां सुख हुइ चित्त, दुख लेइ सुख नीगमिउं, जिणि को कीड मित्त. १०९२ सज्जन को तहेवु नहीं, इणइ संसारइ तेह, जस दुखी देखी अप्पण, मन-ठारवण करेइ. १०९३ जेहनइ सज्जन को नहीं, सुख-दुख नउ विश्रांम, रान-तलाव तणी परइं, तस मन रहइ किम ठामि. १०९४ जे अध-बहिची दुख लीइ, तेहनई हुख कहेउ, निरगुण नीरस दुख कहिउं, जग जग हास करेइ. १०९५ जे जाणइ दुख-वेदना, तेहनई कहीइ दुखु, जण हासूं मिन उरतु, जउ मन दीजइ मुन्खु. १०९६ विरला जे दुख सांभलइ, विरला मित धरइ दुखू, विरला पर दुखि दुखीया, विरला भंजइ दुखु १०९७ पेट भरिउं परहंसडे, उपरि बालइ वेध, ठारवणउं एकइ नहीं, किम रहिसइ ए देह. १०९८ दैवइं सरज्यां वेगलइ, केतु कीजइ सोस, कुण लहिसइ रानइं रिडिडं, हैडा करि संतोष १०९९ गोरी कंत वियोगडइ, शिथिल हुइ वली चियारि, त्रणि वाधइ च्यारि उसरइ, त्रणे दहइ अपार. ११०० कंचु १ कंकण २ नेउरी ३ मेखल ४ शिथली होइ, निशि १ वासर २ नीसाणडु ३ त्रणि अखूट सजोइ ११०१ भूख १ तरस २ तनु ३, नींद्रडी४ च्चारइ उछां थाइ, त्रणे रितु असुहामणां, वल्लह विरह न माइ. ११०२ सही ए अचरति एक मुज, कहुनि कहिउं न जंति, साल खटकुइ हैडलइ, नयणे नीर गलंति ११०३ खजन रूठा किम जांणीइ, नवि दुहवइ वयणेण, मारइ नहीं विख आयुधि, परि मारइ विरहेण ११०४ पीउ करइ, मारि म वयण-सरेण, बापीडा ते माणस सिउं मारीइ, जे मारियां विरहेण ११०५ सारसडा तोरी पांखडी, तु जाणिस सुप्रमाण, अड लियावसि संदेसड्, वल्लभ पंख प्रमाणि ११०६

लोक-अयाण अबुज कहइ, डीलिं दूबलां कांइ, जस डीलइं कोउ बलइ, ते किम संदर थाइ. ११०७ को न लहइ मन-दुखडां, जण जाणइ सी दाइ, जे कारणि हूं आवटुं, ते उवेखी जाइ ११०८ सूडा तूं महीयलि भिंम, कुण रलीयामणउ देश, जिहां पीउ सोइ सोहामणुं, अलखामगउ असेस ११०९ वेध लगाडी जे गया, जां ते पीउ न मिलंति, तां मन केरां दुखडां, कुण देखी भजंति १११० सुगण सलज्जह मयण-भड, पसरिड किसिड करेइ, पंजरि-बद्धउ सीह, जिम, अंगच्चियविभव्भिइ ११११ अथ पनिहां : पीउ परदेसि जंत कि सुखु वुलावीयां, नयणे निद्रा भूख कि ए नवि आवीयां, अण-तेडिया आव्यां दुखु किहांथी एवडां, पनि॰ अन-तेडियां आवंति कि नोच सहावडां १११२ अण-दीठईं उचाट कि दीठईं मन कलमलइ, आगिल रहिं दहइ मान कि दूरईं जीउ बलइ, आवटणुं निसि-दीह कि घडीअ न मन रहइ, पनि॰ जेणि कीया सनेह, किउ सुख लहइ. १११३ नयरि अयान अबूज कि बहूआ नर वसइ, सो सज्जन विण रान कि मुज मन डसडसइ, सेरी सुनी चाहत मनि दुख उल्लसइ, पनि॰ सर्जन सोइ परदेसि कि परि परि विहिकसइ. १११४ काज उपाइ सुपरि निसि-दिन आवतां, फेरां देतां छक्ष कि सेरी सोहावतां, एक जि माणस कारणि फिरि फिरि पेखतां, पनि॰ तेह जि सेरी आज न सुहाइ देखतां १११५ मंदिरि मोटइ गुखि कि निसि-दिन खेलतां, मन मोहन जे ठाम कि घडीय न मेहलतां, तिणि थानकी आज कि बइठां नवि गमइ, पनि॰ अबहीं रान समान कि तिणि घरि मृग रमइ. १११६ गाथा गीत कथा-रस पीउ सिउं खेलतां, सही सिउं जे पुर, घडीअ न गमतूं महेलतां, मिं जाणिउं सही गाम कि महिमा एवडु, ब्पनि॰ जिड एह पटंतर पीड तेवडु. १११७

चेंत्तइ मुरिया चंपक मलु-विन महिंमहिंड,	
मलयानिल विख काल कि पंथीकुं गहिगहिउ, संयोगी मन साथि कि तस्यर कृंपलिउ,	
संयोगी मन साथि कि तरुयर कुंपलिंड,	
पनि॰ किशलय विरही चीत कि जाणे दव बलीउ	१११८
मनोहर मास विशाख कि फ़ुलड़ गहिबरिउ,	
वन वाडी शुक मधुकर केोकिल परिवरिड,	
विरहि कू पीउ पंथ कि जोता मन खलभलिउ,	
पनि॰ पीउ आवत अण-अंत कि विरहानल टालिंड	१११९
मुरिया अंब प्रलंब कि मधुकर रणजणड,	
कोइलि कुहु कुहुकार कि पंथी मन कणमण्यु,	
भोगी मास बसंत कि परि परि विन रमइ,	
पनि॰ याके पीउ परदेसी किम गमइ.	११२०
आगइ पीउ परदेसि कि घडीअ न वीसरइ,	
विरहानल दहइ दिह कि रितुपति अणुसरइ,	
कोइलि दाधइ ऌ्रण लगवाइ आंबलइ,	
पनि॰ कुहुनि कहइ पीरि कि भीतरि जीउ बलई.	११२१
देखी मुरिया अंब कि कुहु कुहु कोकिला,	
विरही माणस मारि म गरव न अति भलो,	
वाहळां मांणस संग कि दस दिन गहिगहइ,	
पनि॰ प्रिय-संगम सदैव कि दैव न सांसहइ.	११२२
साचुं नाम सु नाम कि जेठ सवे वडु,	
रयणी दिवस अनीठ कि नावइ छेहडु,	
एक परि खोटुं नाम कि लहुउ गुणि करी,	
पनि॰ विर्राह मिरयां माणस मारेइ वली वली.	9923
	1117
मनोहर मास आसाद कि बादल छांहीया,	
सेजि सुरंगा सज्जन पीउ गिल छांहीया,	
विरही के तनु साथि कि सस्वर सोसीयां,	
पनि॰ कबही मिलइगा पीउ कि पूछइ जोशीयां.	११२४
वन्जइं उन्ही झालकइ डीलई विरहनी,	
हैं दुखि जलंति की आशा नहानी,	
सह नीसासे चलंति रहु हूं किणि परि,	
पनि॰ पीउं विरहि दहइ देह के उन्हालो परिवरिः	११२५

श्रावणि गुहिर गंभीर कि जलधर घडहडइ, रयणी घोर अंधार कि वीजली खडहडइ, वरसणि लागा मेह कि जीउडु तडफडइ, पनि॰ भींतरि खाट कि आंसू-जल वडइ.	
पनि॰ भींतरि खाट कि आंसू-जल वडइ.	११२६
भाद्रवि भरीया नीर कि भूइं चीरवली, झरमरि वरसइ मेह कि झूरइ सामली, एक गोरी दूजा मेह कि दोइ जडि लाइयां,	
पनि॰ वासइ मधुरइ सादि कि रांन कलाइयां.	११२७
पावस पंथी काल कि गयणि अंधारिया, वाया शीतल वाय कि मोर कांगारीया, जिउं जिजं वरसइ मेह कि वीज स धडहणइ, पनि॰ गोरी थइ अचेत कि तिउं तिउं मूंइ पडइ.	११२८
आपसु नांम तणीं पारे कथीअ न वीसरइ,	
सूतां पीउं नीद मांहि कि कबही बीसरइ,	
दाधइ ऌण तणी परि पीउ पीउ सांभरी,	
	0.050
पनि॰ असल सलावइ साल कि बप्पीहा वली वली.	११२५
आया आसो मास कि सम दिन-रातडी, रोइ रोइ थाकी आंखि कि हुइ रातडी, आया अपनइं मंदिरि पंथी खल्रभली, पनि॰ नाया सज्जन सोइ कि जल विण दुबली.	9930
ान भाग राज्यम राष्ट्र मध्य ग्रह्म व्यवस्था	1140
कत्ती मास सुमास कि आया हे सखी, कत्ती मास की अवधि न जाणु विहि लिखी, कात्ती मास मेलापक करुंगी सुनु सही,	
पनि॰ दिन दिन कीं ए वेदन न सकूं हूं सही.	8838
•	,
हॡइ हॡइ पाछि कि नेहली सरवरे, निरमल हूआं नीर कि शालि सुमंजरे,	
निरमल हूआं नीर कि शालि सुमंजरे,	
सजन सरिसा एह शरद सहाइया,	
पनि॰ दुरियन नीपरि काहि कि हम कूँ भाइयाः	११३२
मागसरि मास रसाल कि आस सर्वे फली,	
पींड की जोयुं वाट कि विरहि आकरी,	
साम्राज्या व्याप्त साम्राज्याच्या स्थाप्त साम्राज्याच्या स्थापाली साम्राज्याच्या स्थापाली साम्राज्याच्या साम्राज्याच्याच साम्राज्याच्याच साम्राज्याच्याच साम्राज्याच साम्राच साम्राज्याच साम्राच साम्राज्याच साम्राच	
ळाळ न हइ परदेसि झरइ सामळी, पनि॰ वइरी कूं ए वेदन म हिसिउ वळी.	0.0.5.5
पानर वहरा कू ए वदन स ।हासंड वेला.	ररदर

सोसइ पोस सरीर कि वाजइ गयांइं पीउ परदेसि अनीठी रातडी, पसरइ विरह स हीम कि दाजइ पदमिनी, पनि॰ मित्त गया पर दीपि कि पोडइ यामिनी ११३४ पंथी पंथी चिलंति कि सीयालइ गहिबरिउ, नदीयां नीर तरंति कि गोरी नेह सांभरिउ, हुउ चंचल चित्त कि बूडु नदीअमां, पनि॰ तस विरहानल धूम कि उठइ नीरमां. आविड संखिड माह कि भोग-रसाकुल, मालति विरहि भमंति कि भमरु जस का पान जिहां होइ कि सो तिहां रति धरइ, पनि॰ जस कूं कोइ न सज्जन तस मन किहां ठरइ. फागुणि वाया वाय कि पान खरियां वर्नि, जस मिन साल्ड दुखु कि होली तस मिन, पीड की जोडं वाट कि नींद गमाइयां, पनि॰ जारे म करि विलंब कि जीउ मोकलाइया. ११३७ नामिं शील शिशिर कि उन्हा हम मिंन, पीउ परदेसि गयांइ उतापइ अति तनइं, कीधी अगनि अंगीठि कि शीयालइ बहु निरं, पनि॰ तेणि उन्हा एह कि दाधां ११३८ सुखय संयोगी मांणस सवि रितु सोहामणी, दुखीय विरही जेह कि तीह अलखामणी, सवि जकराटा होइ कि जसका दिन फरिया. पनि॰ जस कुं तूठा दैव कि तस दिन पाधरा इति पनिहां

दुहा

चडमासूं वुलिया पछी, किहां तूं वरसिस मेह, सजन विछोहियां माणसां, तस नयणे मुज गेह. ११४० सीआला किहां वसिस तूं, गयां शीयाला मोस, वाहाला विरह विछोहियां, तस अंगइ मुज बास. ११४१ रे लूयडी सूणि वत्तडी, किहां रहिसि बारइ काल, जस हैंडइ दुख सांभरइ, तस नीसासे जाल. ११४२ अछउ नयन मेलावडु, अछउ तेहनी वत्त, नाम सुणइं जीव कल्पमल्ड, अति अवटाइ चित्त ११४३ है है देव अटारडु, वांकां पाहइं वंक, जस सज्जन परदेसडइ, तीह न दीधी पंख ११४४ पांख सरजी पंखीया, जेह न आवइ कजि, तु जाणत विहि चतुरिमां, जड मांणस नइं हुज्ज ११४५

अथ अणखीयां ः

आगइ विरहानल संतावइ, पीउ परदेशी किम आवइ, वपीहा वली नेह जगावइ, कहु सखी किम अणि न आवइ. ११४६ रातिं नयणे नीद्र न आवइ, अन्न-उदक सहुणइ निव भावि, सही जाणंती कारण पूछावइ, कहु सखी किम अणि न आवि. ११४६ विरहानलि अति तनुऊ तावइ, ए मन-दाघ न कोइ समावइ, दुख अनेरुं वैध जणावइ, कहु सखी अणखी किम न आवइ. ११४८ पीउ परदेशी मेह जिंड लावइ, अंगणि आवी मोर कीगावइ, दाधा परि ॡण लगावइ, कहु सखी किम अणि न आवइ. ११४६ कबहीं नयणे निद्रा आवइ, सहुणइ आवी प्रीउ जगावइ, जब जागूं तव नासीं जावइ, कहु सखी किम अणि न आवइ. ११५६

इति अणखीयां

भमर चितित्त जिम मालति खटकइ, सुहड अंगि बाणावलि खटकइ, नद्-सल्ल जिम पिंग पिंग खटकइ, नवु-नेह तेणी पिर खटकइ. पुहुवी सरोवर अंब रसालइ, धडहड धडहड अंबर सालइ, जिम जिम वरसइ मेह वरसालइ, तिम तिम तुज मिन ते वर सालइ. ११५२ सज्जन विण मुज आहार न भावइ, कंठ थकी आ हार न भावइ, ते विण मंदिर आहार न भावइ, कहुनइं विरह-प्रहार न भावइ. वरसह मेह अखंठी-धारा, प्रीउ मेहली चालिउ निरधारा, मदन-बांण वीधइ वीधारा, तिन वहइ विरहनी करवत-धारा. हाथे न गमइ सोविन-कंकण, नयणे वरसइ सो विन कंकण, झुरी गइ तब सोविन कंकण, चंद चंदन दइ सो विन कंकण. ११५५ वरसइ झिरिमरि मेह कलावी, अंगणि वासइ मधूर कलावी, एणे बापीडे हूं अकलावी, प्रीउडु चाल्यु मुज मोकलावी इणि रिति जाइ घरि बकलावी, प्रिय संगमथी जाइ कलावी, प्रिय विण किम दिन गमूं एकला वी, कंत मेलावु कोइ कलावी वाजइ टाढि सबल हीमाल्इ, बली गइ ते कोमल मालइ, इणि अवसरि प्रीउडु नहीं मालइ, मयण-भील मारइ मुज मालइ.

दुहा

इणि परि झूरइ गोरडी, समरि समरि मनि-नेह,	
तव सहीयर इम बूजवइ, गोरी झरि म देहि.	११५९
रे हैडा झूरि म घणुं, सज्जन मिळवा काजि,	
म मरीनइ जे गाईइ, तिणि पंचिम सिउ कज्ज	११६०
सुख-दुख सही सुजाण सिउं, कीधी जे मंइ प्रीति,	
तेह जि मुज वहरणि थइ, नितु अवटावइ चींत.	११६१
जे सज्जन सुखनि करिया, तेणि मुज दुख दिध्ध,	
कुंण जाणइ ए दुखडो, वाडइ आंबा खद्ध.	११६२
तिणि सञ्जन सिउं कीजइ, जेणइ मन अवटाइ,	
जो सोविन कट्टारडी, तु सिउं पेटि मराइ	११६३
केती कीजीइ राव, जणनहार बीछडया,	
रानि रडिंड रे जीव, लहिसइ कुण वरसेइ.	११६४
इम विलवंती गोरडी, दुःसह पीउ-विरहेण,	
सही सिउं करती गोठडी, दिन नीगमइ दुहेण	११६५
आधु खटकइ नेहटु, जेहवुं दुहउ अद्ध,	
खिणि खिणि आवइ हैअडलइ, जा नवि पूरु किद्ध	११६६
केतु पोखुं विरह-रस, कहितां नावइ पार,	
जे वेसइ ते जाणसइ, दोहिछ विरह–विकार	११६७
रस-सिंगार अनेकधा, तेहथी विरह अनंत,	
ते जाणइ अण सीखविउं, जेहिंन विरह दहंतिः	११६८
सीखइ ते अणसीखविड, अणजाणिडं जाणंति,	
नव नव रस तस उपजइ; जे मनि प्रेम वर्हति.	११६९
बंभ सरीखुं आयु जस, सुर-गुरु सम कहिनार,	
वर्णवतां ए प्रेम-रस तुहि न आवइ पार	
हवि संबंध कहूं नवड, सुणयो सहू रसाल,	
शीलवती मोकलावि करि, चालिइ अजितकुमार	
मनडुं न वहइ चालतां, पग आघा न वहंति,	
पाछडं जोइ वली वली, नयणे नीर झरंति.	
प्रीउडु पंथइ चालतां, गोरी ऊ भी जो इ,	
अर्घ-देह ब्रह्मा तणउ, पंखी बंछइ सोइ.	
पंथी पंथि चालतडां, वलि वलि पाछउं जोइ,	0.0>
भारंडनइ संभारतुं, जल भरि नयणे रोइ	११७४

प्रेम-नदी परगट करी, गौरींइं अंसु-जलेण, तेनइ पंथइ दुखितरी चालतां, प्रियेण. ११७५ पंथी पंथइ चालतां, उडणि लागी खेह. गोरी गुण संभारतां, नयणे वूठउ मेह. ११७६ फटि रे नीठर जोवडां, पंजरि बद्धड कांइ. गोरी मेहली चालतां, हजोअ न उडी जाइ ११७७ पंजरी-बद्धउ जीवडु, कंट्ट किम उडी जिहां जड दीधी प्रेमनीं, किमहि न ढीली थाइ.

ढाल २२

राग देशाख

(ओ पेछ घर माहरू, कांहान आबु तु देखाडु, ए देशी) [तथा शेत्रुज्य जुहारस्यइ रे, तेहनइं इर गित नहीं रे लगार, ऐ देशी] नयनां जलधर दोइ जिंडलाया. बोल न एक बोलाया, गोरी पासइं जीउ भलाया, भींतरि विरह जलयाजी. ११७९ पंथी॰ पंथीडा है पंथी पलाया, नयने नीर चलाया. विरह-दवानिल अति अकलाया, जब गोरी मोकलायाजी. ११८० पंथी॰ हैडा भौतरि दुख न समाया, आंसू नीर न माया, दोहिली प्रेम तणी छइ माया, जाणइ जेणि कमायाजी. ११८१ पंथी॰ गुण संभारो साल सलायां, पापी मोर कलाया, पिंग पिंग पंथ चलंत खलाया, गोरी सिउं जीउ लायाजी ११८२ पंथी॰ सान विना सूनी भमइ काया, चेतन चित्ति गमाया, न गमइ शीतल सरली छाया, हैडा दुखि भरायांजो. ११८३ पंथी० दुखि जीव रहिया झंपाया, विरहिं तनु कंपाया, न गमइ चंद्न शशिर उपाया, सुख तिणि खिणि नवि पायाजी. ११८४ झरी झरी अति तनु करमाया, पंथ अनीठा थाया. राति दिवस का छेह न आया, चिंताचित मुंजायाजी. ११८५ षंथी॰ वीसरतां वीसरी न जाया, जे अविहड नेह लाया. जां लगइ प्राण घरइ ए काया, मन भींतरि गुण घायाजी. ११८६ पंथी० ए किरतार कुबुद्धि जाया, पापी विरह उपाया. अक्षर लिखतां कर न दुखाया, मानव-भव विणसायाजी. ११८७ पंथी० चूकु यूथ थकी करि-राया, जिम जूआरी दाया, जिम पंखी गत-पंख सहीया, तिम थयउ अजित विछायाजी ११८८ पंथी। पंथी विरह-नदीइं तणाया, नेह-जल पुर वहाया, आशा-वाहाणीइ जीव ठराया, दुख-जल पूर तरायाजी ११८९ पंथी। पिंग नेह खटकुइ पाया, जब मिन आवइ जाया, पंथी पंथि जता मूर्छाया, तब मलायानिल वायाजो ११९० पंथी। थइ सचेतन पंथइ जाइ, हैंडइ दुख न समाइ, तेतां पीडा कही न जाइ, सुणतां अति दुख थाइजी ११९१ पंथी।

दुहा

अजितसेनिं चालतां, जे दुःख थयुं ते वार, ज्ञानी विण ते दुःखनु, कोइ न जाणइ पार. ११९२ मन जाणइ मन दूखडां, अवर न जाणइ कोइ, जस कूं दाजइ सो जल्रइ, व्याइ वंदन होइ ११९३ सज्जन जाणइ दूःखडां, मृरिख हासूं होइ, परवेदना, ते नर विरला कोइ ११९४ जे जाणड मृरखडां बलिहार हूं, जस मिन स दा संतोस, आवटणउं निशि-दीस तस, जे जाणइ गुण-दोस ११९५ गाथा दोधक गीत रस, नेह न कहिसिउं जांह, कइ योगी कइ मूरिखां, सुख अनंतुं तांह ११९६ ते सुखीयां निर्दियंत ते. सुखि सूइ सोइ, मन वचने काया करी, जीह न वाहालु कोइ. ११९७ नीसासु उजागरु आरति अरति अभूख, प्रेमराय परिवार अ, विण रोगइ जे दुःख ११९८ अरति नीसास उजागरु, नितु अवटावूं देहि, अतानइ मन मा लवी, करु ते करयो नेह ११९९ हैडा मिं तुज वारतां, प्रेमी वनि करिउ प्रवेश. हवि विरहानल प्रगटीउ, किह तुं किम जीवेसि. १२०० बोलंति अमृत जरइ, हसतां फ़ुल खरंति, ते गुणवंति गोरडी, किम वीसारी जंति १२०१ वीघइ हैंडलुं, वयणे सांघइ नेह, नयणे ते गोरी किम वीसरइ, जां न बलइ ए देह. १२०२

गोरी ते गुण ताहरा, केता समरुं चित्त, दांडिमनी परि हैंडलुं, जिणि गुण भरीउं नित्त १२०३ देखी मुहु मचकावती, नयणे करती सान, ते गोरी तव वीसरइ, जव तनु छंडइ प्राण. १२०४ जे गति हंस हरावती, मृग मारती नयणेण, ते मनि खटकइ गोरडी, मन हरती वयणेण. १२०५ चंपक-बन्नी ससि-मुखी, पीन पयोघर भार, कटि-छंकी क्रुशोदरी, ते मुज प्राणाधार १२०६ अघर प्रवाली दंत-मणि, चंदन-शीतल देह, जे किं मोडी चालती, मुज खटकइ तस नेह. उरवरि नीली कांचली, पहिराणि कोमल वीर, करि चुडी सोना तणी, पिंग सोविन-मंजीर १२०८ कदली-दल सुकमाल तनु, चंदा सोदर मुखु, जां ते गोरी निव मिलइ, तां निव भागइ दुख़ १२०९ जे वाहलां मनमां विसयां, ते निव काढ्यां जाइ, प्राण करी जाउ काढीइ, प्राण-सरीसां जाइ. १२१० जाणउं किमहि वीसरइ, घणुं वीसारुं चित्ति, सायर-जल नीठर नहीं, नीठाडतां नित नित्त १२११ गुण अलगता नु हिइ डीलथी, जण खोडड बोलंति ते वाहलां परदेसडइ, जस गुण अहम सालंति. १२१२ नेह करइ ते दुःख सहइ, खोटा-बोला लोक, नेह करिउ तिणि सज्जनिं, अहम मनि लागइ शोक १२१३ हंस गतिं नितु चालती, गोरी गणनूं ठाम, ते किहि दीठी चंदला, सोभागी जस नाम १२१४ कोइलिं बइठी अंब-विन, मुजसिंखं हासूं छांडि, तूं जस कंठि दासडी, ते गोरी देखाडि १२१५ जस नयणां दल ढांकतां, तंतु न जतु घणांह, ते गोरी कहि कमल मुज, किम रही हिसइ तूं माहि. १२१६ कुसुमराय गुणि अग्गलु, मनोहर तोरी डाल, चापा ले चंपावनी, ते गोरी मुज आलि १२१७

हरिणां राय सुजाण तूं,	जे गोरी मुज मेलि,	
वेणी जस हर-हार सम,	जंघा कोमल केलि.	8387
भमरा विरहिं दूबलु,	मारुति समिर म रोइ,	, ,,,
वाहलां विरहिं दीहडा,	दुखुइ सहिणा होइ.	१२१९
भमरइ सेवी मालती,	छंडी कुसुम असेस,	, , , ,
तेह तणउ वियोगडु,	कां दाखइ जगदोशः	१२२०
भमरा मन गाढडं करी,	दीहा नीगमि केइ,	, , , , ,
वाहालां विरहिं दींहडा,	नहीं जासइ सदेव	१२२१
भमर जीवंतां मांणसां,		, , , ,
कालि सुजाति पाणसइ,	करसइ भमर विलास.	१२२२
विन विन इणि परि पूछतु,	चालिउ अजितप्रधान,	
अवसर जाणी आपणड,	मंडइ मयण पराण [.]	१२२३
इणि अवसरि रयणी तणड,	समय हवऊ सुविशाल,	
खीण-तेज दिनकर थयु,	जागिउ मदन रसाल	१२२४
आधुं–खाधुं कमल-दल,	आधुं चंचु पराणि,	
मित्त परभाव देखि करि,	चक्रवइ छंडिया प्राण.	१२२५
कोकिं कोकी विरहीइ,	तिम मेहलिउ नींसास,	
जिम ते पाछइ नवि लीउ,	समरी प्रेम-विलास.	१२२६
दि आ नं द चकोरनइ,	चकवी प्राण हरेइ,	
है है दैव अटारडु,		१२२७
रोगी विरही दुःखीयां,	रयणी वइरणि तांह,	
नीद्र न आवइ तिहुं जाणां,	जस मनि धीकइ दाह	१२२८
नक्षत्रडां परगट थयां,	उगिउ चंद−रसाल,	
जेहिंन वाहलां वेगलां,		१२३९
देखी चंदउ ऊगम्युं,		
अजितसेन नइ इम वीनवइ,	समरी प्रेम-अपार.	१२३०
चंदा तुं देसाउरी, चंद्र-मुखी ते गोरडी,	हींडइ देसि विदेसि,	
चंद्र-मुखी ते गोरडी,	किहि जाणिउ संदेश.	१२३१
चंदा मित्त सुमित्त तूं,	नितु जाउं बलिहारि,	
विरहिं–दाघां मांणसां,	सुजन संदेशइ ठारि.	१२३२
क्ंत्र-संदेसु ् पठवइ,	दैवइं कीउ विछोह,	
गारा प र दसइ गइ,	मत उतार मोह	१२३३
मनसिउं घरयो प्रीतडी,	नथी मिलवानु संच,	
सरजिया विण तुह्य किम मिलूं,	जा करु कोडि-प्रपंच.	१२३४
कृत-संदेसु पठवइ,	चंदा करेइ साथि,	
गोरी वीसारु रखे,	जीव तुझारइ हाथि.	१२३५
9 3		

वंदा सुणि एक वत्तडी, केतूं कहूं एक मुक्खि, जां ते गोरी निव मिलड़, तां निव भागइ दु:खु. १२३६ ते गोरींनुं प्रेम-रस, एक जीभइं न कहाइ, जिम जिम समरुं हैंडलड़, तिम तिम दु:खु भराइ. १२३७ चंदा बंधव माहरु, मोरु करि अक कांम, जै कहिजे संदेसडु, गोरी हुइ जिणि गामि. १२३८

ढाल २३

राग धवल धन्यासी (मोरई आंगणडइ पीड रमड ए देशी)

तस गणतां जाता हसइ दीहा, दिन दिन करतां लीहा. समरती हसइ सनेहा रे. ... १२३९ तृं तु जेनइं संदेसु, कहि जे तूं तु वाटइ वहिल वहिये, ए तु अध-विच किहिं म रहेये रे, चांदलिया.. मुंहनइ खिणि खिणि तस गुण सांभरइ, मोरइ मनडइ घडीय न वीसरइ, ते विण किहि मन न ठरइ रे. १२४० चां. जिम समरइ चातक मेहा. एतु कोइलि जिम मधु दीहा, तिम समरुं तस नेहो रे, १२४१ चां. मुज रयणी छमासी थाइ, पापी दिवस दोहेल्डइ जाइ, मोरु विरहि तनु कुरमाइ १२४२ चां. तस पासई छइं महारा प्राण, यूंहिन सुहुणडइ तेहनूं ध्यान, हूं तु मागूं छडं तुज मांन रे. १२४३ चां. वाहाली वीसारी किम विसरइ, जां लगइ प्रांण न नीसरइ, जस गुण वेलडी पसरइ रे. तेहना समर् जिम जिम बोल, मन थाइ तिम डमडोल, जेहना अविहड लीधा बोल रे १२४५ चां. जेता वाहाला विण दिन लीजइ, तेहनां हैडलइ दुःख सही जइ, ते दिन लेखइ न कहीजइ रे. १२४६ चां. जेहिंन वाहालां दूरि रसाल, जेहिन कोइ न ठारणहार, अेतु ते किम नीगमइ काल रे. वाहरी दैवि करिंड रे विछोह, तुज मिलवा छइ अंदोह, एत तूं म उतारिस मोह रे. १२४८ चां. ताहारिं विरहिं जे दिन जाइ, एक घडली युग जिम थाइ, ए दुःख मिं न खमाइ रे १२४९ चां.

ढाल २४

राग संधूओ गोडी

(श्री सीमंधर स्वामी०, ए देशी)

इणि परि अजितक्रमार, निसि विलवता ए निसि विलवता ए नीगमइ ए, जब थयं प्रगट प्रभात, तब दिन-नायक तब दीन-नायक उगिमउ ए. १२५० विहसियां कमल सुगंध, भमरा पाखिल भमरा पाखिल रणजणइ ए, करिंड मेळापक सार, चकवा-चकवी ए चकवा-चकवीए सोहामणंड ए. १२५१ परदेश, पंख समारइ ए पंख समारइ ए पंखिआ ए, सोहावा हंस. तुणीन हरिणलां तुणीन हरिणलां वाने रमे ए १२५२ उडणहारा नीसाण, कीच पीआणूंअ कीघ पीआणूंअ सूपति ए, तव वागां चिल्डि अजितप्रधान, हय गय पायेक हय गय पायक परिवरिड ए. १२५३ मरुच्छ दोठउं एक, कटक सहू तिहां कटक सहू तिहां वीसमीउ ए, भूपति रहितु तिणि ठामि, पांचसइ मंत्रीय पांचसइ मंत्रीय परिवरिड ए. १२५४ जिहां नहीं नदीअ नीर, जिहां नहीं तरुवर जिहां नहीं तरुवर फिल भरिया रे, जिहां नहीं कुसुमनुं नाम, जिहां नहीं नागर जिहां नहीं नागर वेलडो ए. १२५५ अजितसेन तिणि ठामि, जोइ कमल ते जोइ कमल ते सोहामउ ए. शील-परीक्षा काजि, जे अति कोमल जे अति कोमल शीलवती आपीउ ए १२५६ सय-हत्थेण, नेह करी जे नेह करी जे सज्जिन ए, वली वली जोइइ नयणेण, तंबोली धरि तंबोली धरि पान जिम ए. १२५७ पंकज-आमोद, पसरिउ सेनई ए पसरिउ सेनई ए सोहामणउ ए. ते देखीनइ राय पूछि अंजितिन, कमल तणउ मूल कमल कमल मूल कारण ए. १२५८ शीलवती संबंध, अजिति रायनि मांडी रायनि मांडी वीनविड ए. ते निव मानइ भूप, कलियुगि एहवी कलियुगी सित किम पामीइ ए. १२५९ अणसंद्हित राय च्यार प्रधानइ, तेडी नइ कहइ तेडी नइ कहइ वातडी ए. निरगुण दूरियन तेह, सर्प तणी परि सर्प तणी परि विख वमइ ए. १२६०

दृहा

सिंहिजि निरगुण नीमचर, सञ्जन गुण न गमंति, जलधर देखी गाजतु, रीसिं सर भमरंति १२६१ नेह सञ्जन जल-दान गुणि, जिम जिम प्रीणइ लोइ, नीच जवासा-कंटकी, तिम तिम मनि विख वहइ सोय १२६२

काल-मुहा गाजइ घणउं, दूरियन मोहा केवि,	
गूज−जेल लेइ वीखरइ, सुजन समुद्र नमेवि	१२६३
जोइ छिद्र पीआरडां, दो-जीहा अति वंक,	
दूरियन साप सरीसडा, पगि पगि देह विखडंत.	१२६४
दीसीता मुहुडइ समा, पूछि विख वहांति,	
गर्ति मनि घरइ आंकडु, दूरियन वींछों हंति.	१२६५
देखी न सकइ दो मिल्यां, अनि तेहिंन न मिछंति,	
नेह त्रोडइ भाजइ मिल्यां, पिंग पींग नींच दंहाति.	१२६६
दूरियन सर्हिजि सदोखीयां, दोख पीयारा लेंति,	
वीज पडु ते दुरियडां, फोकट वइर वहति.	१२६७
काजि न आवइ कंटकीं, दुरियन बाउल एह,	
आडइं आवी वारइ वळी, सु ^उ जन मोहा-तरु जेह.	१२६८
नीलक जाल सामलूं, दुरियन वयण अनिद्ध,	\
भिउडी भीसण रोस भरि, कलीअ न विहसिउ दिद्ध.	१२६९
मिंझ वंका दो मृही, लोहमया जीय लोइ,	
नह मंस नेह विछोह कर, नरहिणि दुरियन होइ	१२७०
जां मृहि भोजन तां मधूर, ते विण नींरस थाइ,	
दुम्मुह अइ अकुलीण नर, दुरियन मुरज सहाय.	१२७१
जे नवि नयणे दीसीइ, सुहुणइ चिंति न होइ,	
जनमंतरि जे नवि हवइ, दुरियन जांपइ सोइ.	१२७२
दुरियन केरी संगति, स ^{ुज} न पामइ दुखु,	
सूका-तरुनी संगति, दाजइ नीला-रुखु	१२७३
दुरियन केरा बोलडा, अछत कठिन सरोस,	
दीसीता वीहामणा, अहि जिम नयण सदोस	१२७४
हंसा थोडा बग घणा, विरला सज्जन लोक,	
सुखी थोडा दुखी घणा, पिंग पिंग दुरियन थोक	१२७५
दुरियन विसहर विस-दमणि, मणि जउ सङ्जन नहत,	
जीहा-यमिं डंकीउ, तु जग किम रहंत	१२७६
दुरियन जनसेवक बींठं, किंठयुगि माणसि मान,	
अजुवि सञ्जन केवि छइ, ऋतयुग तणा प्रधान	१२७७
हरिणां वइरी पारघी, माणस वइरी नेह,	
सज्जन बहरी नीच-जन, बिरही बहरी मेह	१२७८

रुद सदंसणि कन्ह कहीइ, चउमुह पण वइरी वयणेण, त्रणे देवमय, इय नमणिज्जा तेण (?) १२७९ सज्जन कांइ निव लीइ, कुहुनइं न करइ दोस. तुहि दुरियन पापीचा, ठाल आणइ १२८० गुण दोसह कसवहुन्य, सन्जण दुःजण दोइ. गुण विण दोस्नं जाणीइ, दोस विना गुण कोइ. १२८१ अधिहड मंडु नेह जे तीह हूं मागुं मांन. पापी दुरियन बोल्डा, तेंह म धरयो कानि. १२८२ दुरियन जन दोखिं भरिया, केता काढ़ दोस, सदोष. पाप भराइइ, जिह्ना कोइ 1223 दरियन पापी ते सचिव, शील निटोल. विकल भूपति वचन सूणो इसिउं, वस्ता बोल्या बोल. १२८४

ढाल २५

राग गुड मल्हार

भूपतिनि तेएणी परि बोलइ, राजनजी ए नर पाडिउं छइ भोलइ. ते साथि ए छइ अति रातु, गोरी रूप तणइ मिद्मातु...दुपद अिल अिल विहैसिंसिंड माया मांडइ, निलनी त्रिहुनइ प्रेम देखाडइ. १२८६ ते. बाहिरि डाहां नेह तिम आणई, मनसिउं जिम सह साचुं जाणइ. १२८७ ते. नवेरू, हैडाइ चिंतइ छयल अनेरुं. १२८८ ते. बोलइ जुउँ करइ सज्जन दुर्जन भूपति महिला, मननु पार न आपइ वहिला. १२८९ ते. नयण तुलाई जे जग तोलइ, ते तां धूरत कहुनि खोलइ. १२९० ते. जे जेहवां हुइ तेहिसिउं तेहवां, फटिक तणी परिं छयल जाणेवां. १२९१ ते. रंग-पीआरा, ते तु नेह धरइ सविचारा, १२८२ ते. जेता देखइ असुनित जेहवा वयण-विकारा, कठिन न बोलइ वचन रसाला. १२९३ ते. अण-बोलावियां हसीनई बोलई, कुहुना दोस न आणि बोलइ. १२९४ ते. छयल राहिं ए लक्ष्ण हुइ, रत्त वित्त न जाणइ कोइ. १२९५ ते. साहामानइं जे करइ अति राता, आपणपइ निव राचइ जाता. १२९६ ते. साहामानि वसि करइ उपोधि, आपि तेहनइ वसि नवि थाइ. १२९७ ते, छयल तणां मन कुणइं न कलाइ, नेह देखाडी सहूनइं वाहइ. १२९८ ते. रातु हुउ, तेहनां दुखण ते नवि जोइ. १२९९ ते. जे जे उपरि

दुहा

जे जस ऊपरी रत्तडु, ते न जोइ तस दोख, जु नुहइ अंग मेलावडु, दीठइ हुइ संतोषः जस कां मन जिहां हुइ, सो तस विण न सकहइ रही, मुरख न लहइ लोय, वारी थाइ अलखामणाः जस का जीउ जेहाँसउ मिलियाया, ताकइ मनि ते चंग, चंद कलंकी वारे थयु, तुहि न ति(ज)यु कुरंगः १३०२ जाण अजाण किसिडं करेइ, जेहसिडं बाधु जीव, लिहाबु कपूरिं प्रहिउ, ते विण न रहइ १३०३ गुण अवगुण जोता नथी, प्रीति विरोखइं ते मुंक्या जासइ नहीं, जेहिंसउं लागृं चित्तः १३०४ गुण-अवगुण मनि जाणीइ, पणि ते नवि महेलाइ, इस्वरइं धंतुरु प्रहिउ, प्रहिउ तु तिजिउ न जाइ राजनजी ए भोलव्युं, बाहरि देखाडी नव नव परिकरी रंजवइ, महिला माया गेहः १३०६ गोरी वेध विल्वचडी, भूली भमइ सदैव, मिल्रइ न महेर्इ नयण-रस, नितु अवटावइ जीवर १३०७ हैइ अनेरी मुहि जूइ, माया करइ सदैव. मिलइ न महेलइ नयण-रस, नितु अवटावइ जीव. कुण जाणइ मेन वत्तडी, मायावीयां जेह, कइ खोटारडां, बाहिरि देखाडइ नेह. ते डाहापणि भोलडा, जे कहि महिला एह, माहारी महीअलमां सती, मुज सिउं एक सनेहः १३१० वनिता वीणा वाहनह, ए आपणां न कहाइ, जिहारइं जेहनइ करि चडइ, तिहांरइ तेहनां थाइ १३११

ढाल २६

राग आसाउरी

(राम राजा नवविधि मेरे ए देशी)

भूपितनइं ते मंत्री भाषइ, निज अभिमानइं कहुनइं देखइ, १३१२ राजनजी सुणु वात हमारी, किल्युगमां को सती नहीं नारी...दुपद सुर नर किंनर केरी रे नारी, धूरत पुरुखि ते धूतारी, १३१३ रा जनम लगइ ते सुगध अपार, मूमिहर मांहि वाधी रे बाल, १३१४ रा पर-नर केर नाम न जाणइ, सुहुणइ बीजड चिंति न आणइ. १३१५ रा. पातालसुंदरि ते गुण-संची, धूरत पुरुखि मेहली वंची १३१६ रा ते कुण सुंदरि पुछइ भूप, च्यारि प्रधान तस कहइ रे सरूपः १३१७ राः तथाहि १३१८ रा.

नयरि विशाला गुणि सुविशाल, नरनारीइं अतिहिं रसाल जयंतसेन त्तिहां भूपति दीपइ, निज प्रतापि जे त्रिभूवन जीपइ, निज गर्वे सहू लहइ तृण तोलइ, एक दिन सामाजिक नि बोलइ. कोइ कला छइ जे जग माहि, में निव जणउं हूं रे प्रवाहिं ते सबि छांदु रायिंन राखइ, तेमांथी इम को विद भाखइ. सकल कला तुं राजन जाणइ, पणि एक महिला-चरित्र न जाणइं देव दानवनां चरित्र जणाइ, महिला-चरित्र न पणि वखणाइ. मुमिहरिं जालंधर विवरिं, महिला राखी न रहइ किमहि. १३२५ रा. मीन तणां जल मांहइ डगलां, पंखी केरां गर्गानं पगलां. महिला मननु मागज हीसइ, त्रणे वानां ए निव दीसइ. प्रह रिव तारा चार कहीइ, महिला केरु पार न लहीइ. बाहरि कृत्रिम-नेह देखाडइ, करी विळाप निइ मोहमां पाडइ, १३२९ रा. पाइकाना सम पांचसइं खाइ, कुड कपटइं करी चित्त रंजाइ. १३३० रा. क्षणि रात्ति क्षणि हुइ विरती, साचु नेह न धरइ एक रत्ती. आगलिथी पहिलुं नेह देखाडइ, माछी नीपरि जालमां पाडइः मिलइं न ओलालंबि लगावइ, नितु नितु भीतरि जीव अवटावइ अक्षर एकमां छेह देखाडई, वरस सु नी प्रीति ज छांडइ. दीठा नयणनी लाज न राखइ, बोलावी छूटा पाहाण ज नांखइ. हवडानइ समुइ एहवी रे नारी, कलयुगमां अवनरी रे घूतारी अह्मनि कहि स्व राग न रोस, दीठा तेहवा ए कहिया दोस. स्त्री राखीती न रहइ उपायि, असती जाति घणी रे प्रवाहि

१३१९ रा. १३२० रा. १३२१ रा. १३२२ रा. १३२३ रा. १३२४ रा. १३२६ रा. १३२७ रा. १३२८ रा.

१३३१ रा. १३३२ रा.

१३३३ रा.

१३३४ रा. १३३५ रा.

१३३६ रा. १३३७ रा.

१३३८ रा.

एहवां वचन सुणी घणां, चिंतइ चतुर भूपाल, वनिता श्रद्धां-तनी, ते पणि कुलटा-बालि १३३९ असती दोस कलंकीयां, प्राहिं स्त्रीनी जाति, तेहसिउं मिल्यूं निव घटइ, लंपिट अनइ कुजाति. १३४०

जे माणस हुइ एक-मना, जउ दीजइ तस हाथि,	
वरी सहोइ जण-बोल्रडा, मरीइ तेहनइ साथि	१३४१
जे नारो बि-मनी हुइ, बहुया हुइ जस मित्र,	
काना पाकइ कुंभि जिम, न मिलड कुहुनूं चित्त.	१३४२
एक-मनां जे वल्लहां, मिलइ तु बइठां रजु,	
मायावी जग-वल्लहां, तिर्णि सञ्जनि नहां कर्जुः	१३४३
चंचल लोभी माणसां, गुण अवगुण न छहंति,	
गु णिका नइ स [ु] जन तणां, अंतर कुण कहंति	१६४४
जउ दीजीसइ दम्मडां, तु छख मिलसइ नारि,	
पणि सज्जन गुणवंतनु, अंतर किसिउ विचारि.	१३४५
अंगो अंगइ नवि मिलइ, नयणां तणइ सनेहि,	
प्रीतिं साची पदमिनी, दूरि न दाख इ छेह.	१३४६
जउ मंडीजइ प्रीतडी, गुणी लीजइ कमलांह,	
सुख-दुख संघातइं सहइ, पणि न मिलइ अवरोह.	१३४७
मिलइ तु आंबा सिउं मिलइ, कोइलडी सविवेक,	
ते विण वरि भूखी रहइ, बोल न बोलइ एक.	१३४८
सत्तवंति भूखी रहइ, कोइलि अंब-विहीण,	
<mark>ळाज न राखइ नयननी, मां</mark> णसडां सत−हीण	
बप्पीहा तरसिया मरइ, जंखर हुइ सरीर,	
मिल्र तु जलधर सिउं मिल्र , अवर न वंछइ नीर.	१३५०
पंखींडां प्रीति पालवइ, पणि माणसडां न होइ,	
मेह विना बप्पीहडा, मरइ न पीइ तोइ.	१३५१
सजन एक जि कीजीइ, घणां करिं सिउं काम,	0242
अविहड एक मन सुकुलनां, सुख-दुखनु विश्राम	
सुर्वि सुखीयां दुवि दुवीया, मननि ठारणहार,	
एकइ माणस जस नहीं, ते किम करइ संसारि	१३५३
अविहड जाणी कोजीइ, सुगणां सज्जन साथ, साही कुमाणसि रचतां, चठीइ जण जण हाथ.	9340
	1470
हैंडा केरूं हीर, भार न वहितां भज्जजीइ,	0 3 /. /.
मिल्रइ जउ गुण गंभीर, कही वीसामु लीजीइ	रस्पप
जेहिंसिउं छाजइ मान, लजावियां लाजइ वली,	0.24.6
कीजइ सुजन सुजाण, रीस खमइ जे आपणीं.	१२५६
तेह भणी गुणवंत स्युं, कीजइ प्रींति सुरंग,	0.5.
एक-मनां पालीजीइ, किमहि न हुइ विरंग	१३५७

जात मात्र कोइ नृप-सुता, सुंदरि रूप रसाल, करि, विलसुं उत्तम बाल मूमिहरमां वध्धारि १३५८ **लागइ दोख कुसंगति, मांणसनि** प्रांणी प्राणी नीच गति, कुछ वडूं खणइ प्रवाहिः एकजि तुंबी रुधि रलइ, एक तारइ जल ठांणि, <mark>अेक वीणइं महुरू छत्रइ, संगति तणइ विरामि</mark>ः १३६० कुसुमि मिलियां सुर सिरि चडइ, पाय तिल चम्म मिलंति, तणड पटतरु, दोरा प्रगट संगति लहाति. १३६१ धतुरइ ते जल पडिडं, हलाहल विख इक्षु—वाडइं टीप जे, अमी सर्व तोलाइ. १३६२ हंसा छीलरि बइसतां, मनि हुइ बग-शंक, साथइ बोलतां, जग जग दीइ कलंक. ऊछां १३६३ सहो कुमाणिस रच्चतां, त्रणे दाध द्हंति. जण हासूं मनि उरतु, निरवाहू अान हुं(ते. १३६४ इणि कारणि नवि की जीइ, ऊछां साथि सनेह. *रुं*छण लाइ दूरि रहइ, नितु अत्रटावइ देह. १३६५ सज्जन संगति मुज गमइ, जस मुहि अमीय वसंति, जिंग शोभा गुण संपजइ, कसीआं विरस न हुंति. त्यजीइ संगति नीचनी, यद्यपि नुहि विकार, दोखो दुर्जन पापीओ, पाडइ तुहि विचार १३६७

ढाळ २७

राग गुड़ी (संभारी संदेश, ए देशी)

विनता विस करवा नइ, कारणि भूपति चिंतइ चिन्ति दे,
भूमिहर मांहइं राखतां, किम हुस्यइ कुसंगति दे. १३६८
इम चिंतइ भूपालजी, जड विस राखूं नारि दे,
तु साची मित माहारी, नहीतरी सरव असार दे. दुपद
जात मात्र को एक नृप-दुहिता, लक्षण रूप रसालि दे,
परणी उलटि अति घणइ, सरल रूप रसाली दे. १३६९ इ.
निज धवल-गृह हेठलिं करी, एक गृह पाताल दे,
गुपित एकांति भूमिहरिं, राखी तेहिज बाल दे. १३७० इ.

अति बीसासिणि कोइक धाइ, पालइ तस निशि-दीस दे, हावभाव निव शीखबइ, ते पणि राय आदेखि दे. १३७१ इ. इम करतां यौवन-वय पांमी, त्रिभूवन मोहन रूप दे. हइडइ हरख धरई अधिकेरो, ते देखीनइ भूप दे १३७२ इ. तेहनूं नांम दीधूं भूपालइ, पातालसुंदरि नाम दे, पातालसंदरि रूपि जीती, मन-वोसामा ठाम दे. १३७३ इ. जनम लगइ मुगधा ससनेही, शीलिं की रसाल दे, प्रेम-पात्र हुइ राजानई, गोरी कोमल बाली दे पर-नर नाम न जाणइ बाली, सुहुणइ अवर न देखइ दे गोरी पीन पयोधरि नमगी, राजा देखी हरखइ दे. १३७५ इ. सबल नेह वाधु ते साथई, अवर वीसारियां काम दे, ते विण न रहइ पा घडो, किरि किरि तेगइ ठामि दे **१३७**६ इ. नवी प्रीति जे साथिं बाधी, घडीय न ते मेहलाइ दे, नयणां आगछि राखीइ, रखे पासियी जाइ दे १३७७ इ. हाथि लिखावी हींडइ, जिम नहि नयण विछोह दे, आग दीठइ मन आवटइ, जेहिस उं पहिलु मोह दे जेहिन मिन जे वल्लहां, ते तेहनई सुख-ठाम दे, जाणइ त्रिभूवन तेह मय, न गमइ वीजां नांम दे १३७९ इ. नेह सळूणां वल्लहां. मांणस निईं जड नहत दे, सुख दुःख निय-मन वत्तडी, तु कुण आगिल कहत दे. हूं बिलंहारी देवनी, जिलि करियां वल्लभ नाम दे, सुख-दुख कही जस आपणउ, मनडु दइ विश्राम दे

ढाछ २८ राग गुडी

[धन धन साधु मृगापुत्र सोहि, ए देशी]

ते विण भूपित न रहइ घडीय, मूंद्रडो सउ जिम माणिक जडीय. १३८२ सुंदिर रूडी रे मृग-नयणी रे, सुर नर किंनर ना मन-हरणी...द्रुपद एहबइ मणि-दीपथी व्यवहारी, आविउ तेणइ नयिर व्यापारी, १३८३ सु. जेहवुं नाम तिस्युं परिणाम, अनंगदेव रूपइ अभिराम, १३८४ सु. वस्तु तणउ नवि लाभइ पार, करवी आविउ ते व्यापार. १३८५ सु. आमल-प्रमाणि मौतीनुं हार, भेटि करी राय कीध जुहार १३८६ सु. तेहिन प्रसाद करी दिइ माण, तूठउ राजां मेहलइ दाण १३८७ सु. मणि मोती सोविन-विद्रुम, वेची उपराजइ बहु द्रम १३८८ सु.

शृंगारमं**जरी**

चमरहारि छइ रायनि वेदया, कामपताका नामि सुवेशा १३८९ स. द्रव्य वडइ ते निज विस कीधी, सारथवाहिं बेसि प्रसीधि १३९० स. जाणी, वेशानइ कहइ वात विनाणी. १३९१ स सारथपति कोइ अवसर तुह्यारु, सालम दीसइ कांइ असारु १३९२ सु. राजकाजि ए राय मुड़, वहिलु जाइ ए सिउ गुड़, राज-सभाई आवड १३९३ स. कितवादिक अहिं व्यसन न दीसइ, जेहनुं बाधु भीतरि बइसइ. १३९४ स गुणवंत गणिका तव इम भासइ, सम्यग वात न जाणउं तासः १३९५ सु.

दुहा

गणिका कहइ सुणु सार्थपति, सम्यग न रहूं वात, अतःपुरि एहवी, वार्ता छइ विख्यात १३९६ लगइ भूमि-गृहइं, राखी को एक बालि, राजा तेह सिउं एक मन, विलसइ भोग-रसाल १३९७ अनंगदेव ते सांभली, चिंतइ चित्त मझारि, सती बिरुद रावि देखतां, घरइ ते केहवी नारी तेहसिडं गुण रस-गोठडी, करि सिडं केणि उपायि, जेहसिउं नयन मेलावडइ, विहि अंतराइ थाइ. १३९९ नाम सुणिउं जब तेह्यु, तब लगइ लागु नेह, आंखडीयां अलजइ धरइ, मिलवा कारणि देह. १४०० जिम तरसिया सरोवर लहिड, मनि आणंद स थाइ, गोरी नाम सुणिउं तिसिउं, है डइ हरख न माइ. १४०१ तेहसिउं गोठडी, चित्तं चित्त मिलाइ, द्रइं नयणा देखं जड किमइं, तुहइ संतोष थाइ. १४०२ मान घरइ एक नेह निस, दुर्ल्छभ दर्शन जेह, मेटीइ, अधिक वधारइ नेह, जे 8803 भूख तरस निद्रा गइ, तालोवेलि विल्वघडां, पिंग पिंग हुइ संतोपः सांगस बेध १४०४ छांनी लांघण नितु करइ, वेघ विलूघा जेह, पाकां पीपल-पन्न जिम, पंडुर हुइ स देहः १४०५ वेघ-घण काया-आंबलइ, पइठउ अतिर्हि दहैति, खाइ भींतरइ, सूकां साल रहंति फोली १४०६ जेहिस उं लागु वेघडु, जा लगइ ते न मिलंती, तां इव लागु वेडि जिम, भोंतरि जीव वलंति

जयवंतसूरिकृत

आवटणुं निसि-दीह,	वेघ विऌग्गु पापीड,	
न दहइ पूरी देह,	अवटातु न रहइ घणुं.	
तनु अवटावइ मन दहइ, तुहइ आशा पापिणी,	दुल्लह् जण अणुराय,	•
हैंडूं कठिन न कोमळूं,	वाहाला विरहिं माइ,	,
आस न मेहलइ जीवतां,		१४१०
नींसासु उजागरु,		
	परिणामि फल तास	१४११
हैंडा तूं जेहिन मिर्र,		
साली न पडइ एक हथि,	लोक ऊखाणउ जोइ.	१४१२
एकजि तत्त अत्तत्त सिउं,		
सरखइ सरखु जो मिल्रइ,		१४१३
दुइह सिउं अणुराय करि,	हैया विसूरइ कांइ,	
दोस संभारि न अप्पणा,	को जीवइ विस खाइ	8888
दाडीम-फल जिम प्रेम-रस,	एक पक्षि सकसाय (?)	
बीय न रचइ जां लगई,	तां किम महुरुं थाइ.	१४१५
दुल्लह माणिस रजतां,		
आस न मेहरुइ जीवडु,	सःजन न मिल्ड सोइ	१४१६
पापीं वेघ न रूयडु,	दुख दीइ निरवाणि,	
	जण हासूं सय-हाणि.	
कुहिनं वेघ म लागसिड,	दोहिलुं वेघ-बंधाण,	
कुहिन वेघ म लागसिड, नेटि मिल्ड मन भावतां,	तु ते वेध-प्रमाण	१४१८
रत्तां सरिसूं रचीइ,	एहजि सार सनेह.	
निस-नेहइं मन आवटइ,		१४१९
ऊंचा आंबा दूरिं फल,	कांटे कीधी वाडि,	
जे फल किमहि न पामीइ,		
है हैडु बारुकनीं परिं,	जं जं नाम संणेड.	
	नहींतरि जूरि मरेइ	१४२१
कां ते सज्जन सांभित्यां, मन लग्गूं निव ऊखडइ,	जिम पटुलइं चित्राम.	१४२२
रे हैंडा संतोष करि,	ए तूं मार्गुं मांन,	
रे हैडा संतोष करि, कुण लहिसइ ए दुखडां,	जे तूं रोइ रानि.	१४२३

जे न मिलड मन भावतां,	ते तां विरह अपार, दोहिलु वेध विकारि	१४२४
	विरह थकी वली वेघ, अण चाखियां अति नेह	१४२५
ए नयणांनु वधेडु,	वात करइ नयणेण, केवल नयण-रसेण. वयणे मंडइ नेह,	
	नितु अवटावइ देह	
संच नथी पणि मिरुणनु,	वाहाला माहारुं मन्न, परवसि हूंअ सज्जन्न	
	दैवइ सरजिउ कांइ, मिली न संकू हाइ.	
गुणवंत माटिइं तुह्य सिउं,	मि मांडिउ छइ मोह, अहीं म धरसि संदेह	
विषय नहीं अह्य वालहु,	नयण वयण गुण काजि, गुण वाहस्रां संसारि	१४३१
	संच नथी मिल्रणांइ, दुरियन घणा प्रवाहि	१४३२
ते दुःख जगदीस्वर लहइ,	जे मुजनइ छइ दुखु, मिं न कहाइ मुकिखः संभारु संदैव,	१४३३
	तुह्म पासइ छइ जीव.	१४३४
मुज ऊपरि माया नथी, हूं तुह्य उपरि आवटुं,	जाणू छु तु ह्य वा त, ते जाणइ जगनाथ	१४३५
नयणे जु मिली नवि सकुं, आपण निं मिलतां वचइ,	तु किम वात कराइ, विहि अंतराइ थाइ.	१४३६
घण-अंतरि रवि कमस्रिनी,	मिलइ सूं घणुं जणाइ, नेह न तुहइ जाइ.	१४३७
नव नव परि ते वचनथी,	तेहवा वयण कहे इ, वयणां वेध जि <u>ए</u> ह.	१४३८
	नयण–खटुक्कु होइ, नयण घोलंतइ जोइ.	१४३९

नयणां वयणां दुन्नि जण, नेह−रस लेइ जाइ,	* .
काया कूचा कारणि, ताडु कीजइ कांइ.	१४४०
नयणे वयणे जेह रस, सेजि न हुइ सोइ,	
उ रस खटुकइ पहुरमां, जनम लगइ रहि दोइ.	१४४१
सही सुवेधां मांणसां, नयणे वयणि मिलंति,	
अंगो अंगि मूरिखां, तुहइ तृपति न जंति.	१४४२
नयन मिलंति जेह रस, ते संगमि नवि हे। इ,	
मोर जि: नाचइ गाजतां, मेह न वंछइ तोय.	१४४३
अणदीठिं आरति नहीं, दीठिं दुःख भराइ,	
शरदी बध्पीहा मेह जिम, ए दृष्टि-वेधे कहाइ.	१४४४
जे नयणे दीठां नथी, नाम सुणइ देहइ नेह,	
ते अहष्टह वेघडु, जिम जल माहि लेह.	१४४५
नेह सऌणां सङ्जनां, परदेसडइ गयांइ, तस गुण खटकइ साछ जिम, अवर न कोई सुहाइ.	१५४६
	7 10 4
विज तणा गुण समरतु, कुंजर कुंजर थाइ,	0 0010
तिम गुण खटकइ जेहना, ते गुण-वेध कहाइ.	7000
गुण अवगुण जाणइ नहीं, केवल सुरय-रसेण,	900/
वेसा पणि तस वल्लही, विषय-वेध ए हीण	1000
नयणां वयणां गुण तणा, रुडा वेध जि सोइ,	१४४८
चतुर तणा ए वेघडा, विरला जाणइ कोइ	(000
हुट अद्दर नइ विषयना, त्रणे वेध असार,	9 9 6 6
बि खोठा एक पक्षना, त्रीजउ त्रहइ गमार	(070
वेध अधिक नर नइंदहइ, स्त्री नइंविरह दहेइ,	
विरह मिछि वेद अणमिछि, विरला विगत लहेइ.	
निस-नेहां सिउं नेहडु, मुख सरसी प्रीति,	
नीठां साल तणीं परि, खिणि खटकइ चिति.	१४५२
भूख गइ निद्रा गइ, सुपरि करइ विनाण,	
जंड ते गोरी नवि मिलइ, तु जीवित सुप्रमाण.	१४५३
🗦 होहिलां हर्लभ हुद तिहां मिन अधिक उल्हास.	
वाडी पहुरु पाडता, सूडु करइ विखास	१४५४
नंचा अधिकं सिदं करद करूउ प्राण हरेड	
रांजा अधिकूं सिउं करइ, रूठउ प्राण हरेइ, ते तु विपरइं जसइ, जइवि न मिलेइ मिलइ	

लोक हसु दुरियन कसु, वरि ए जीवित जाउ, 💀 वाहाला मांगस कारणि. जे भावइ ते थाउ १४५६ दसशर दस शिर नोंग मियां, जनक-सुता सिउं रत्त, एक शिरनी सी वत्त १४५७ तु प्रिय मांगस कारणि, वरि ए प्राण गया भळा. गुणवंता सिउं वेधि, पाँग निव लहोइ सुवेधः १४५८ प्राण भत्रंतरि पामोइ, चंचल जीवित प्राग ए, अविचल उत्तम प्रीति, . प्राम धरइ कुम चौति १४५९ अविहड उत्तम कारिगई, जां लिंग ते न मिलंति, जस मन लागूं जेहासिइं, मरंति हाथी चूकु विंझ जिम, भांतरि झ्र(रे १४६० मन भोंतरि कोउ जलइ. बाहिरि धूम न होइ. मन गमतां वाहाला विना, कुग उल्हाबइ सोइ १४६१ इधग विग बलतूं बलइ, भय विग तनु कंपाइ, कीया जिलि माइ. १४६२ अगवेचि पत्त्रसि काया. नेइ जग जागइ जिमता नयी, सहिजि सुजन जीगंग, वाहालां सिउ जस वेबडु, ते किम थ(इ चंग बाहिर लोक अयाग अयूज ए, करइ उपाय, पणि मन माहिली वेदना, वाहालां विग नाव जाइ. चंदन विसहर संगि, विस सोयर चंडु दहइ, जङ्कासिउं नहीं मनरंगः अन्न भावह ते विना, १४६५ उपायि तेहिंन. जउ हूं मिलूं एक बार, सरव नहोंतरि थाई छाहार प्राण रहइ तु माहारा, मनवंछित 🦠 पामोइ. जड कर वरसइ दानि, तु उपार्जन आ वारनी. जाणि. एहनी पूर्ठि १४६७ अनंगदेव जाणी इसीउं, वसु अपुरव प्रीति अधिक मांडइः भूपति भेटि करी वली, १४६८ प्रिय देखी मन उल्लसइ, अहांइ कि सिउ तेहना घरना दास जे. तेहसिउं अधिक सनेह १४६९ नितु नितु आवइ रायहरि, भूपति चित्ति, वालइ इणि परि तेणइ ध्रतिं, मांडी अधिको प्रोति. .8800 चरि वइरी सिउं मंडोइ, क्रित्रम प्रीति अपार. काज करेवी आपणउं, कीजइ कोडि प्रकार. १४७१

हंसा कमलिणि वेलडइ, सहइ बग-पगह प्रहार,	9 23.63
सहीइ वाहालां नेहडइ, दुरियन वचन-विकार	रुष्ठ७२
तरुणी करिणी वेधडइ, मूंकइ विंज गयंद, परविस रहइ बंधन सहइ, दुखु छता नेह-कंद.	१४७३
हंसा किहि कदमि रमइ, कारण वसइं रमंति,	
कोमल कमल सनेहडइ, मइल-पगुं सहंति	१४७४
वरि वहरीनि सेवोइ, कीजइ नोंचुं काम,	
सहीइ जग जग बोलडा, वाहालां केरह नांमि	
एहवुं जाणी सार्थपति, राय तणी करइ सेव,	
भूपति भोलइ भावि पणि, तेहसिउं मिलइ सदैव	१४७६
पय पांणि परि प्रातडी, अधिक आणइ रायः	
ते विण न रहइ अब घडों, एक हंस दो काय.	१४७७
भाति पडी पटुलडइ, किमिंह न जूइ थाइ,	
तेह्वी उत्तम प्रोतडी, जेहवो कंबछि राय	१४७८
पहिली घगी थोडी पछइ, जिम विहाणानी छांह,	
तेह्वी दुरियन प्रीतडी, विवरिया अवरांह	
वड-अंकुर गंग-जल, सञ्जन तणा सनेह,	
पहिलूं हुइ थोडिला, पछइ अधिका छेह	१४८०
अति परिचयथी सार्थपति, राजा करेइ साथि,	
अंतःपुरि आवइ सदा, वलगा एकज हाथि	
चित्ति चित्त न जां मिल्रइ, तां लगइ अंतर थाइ,	
लाजा-पड जब उपिंडं, तिब सिव परगट थाइ.	१४८३
कुत्रिम वचन सनेहडु, तां दाखबइ छयल्छ,	
जां बि मनिसंडं निव मिल्रह, तां मिन हुइ ससल्ल	
नेह वचन तां विनय तां, तां भय तां छग्नि छाज,	
साची प्रीति न जां मिळइ, तां लगइ हुइ अगाज	
चंद कलंकी सिरि धरिड, इश्वर कंठि-नाग,	
जिहां मन मानिउं आपगउं, तिहां कुग राजा रांक	
इम करतां दिन केतलइ, भूमिहर केरुं ठाम,	
पाताल मुंदारे जिहां वसइ, ते जाणिउ अभिराम	
मनि आणंद् थयुं घणड, आवी निज अवासी,	
निज धइथी मुंइरा छगइ, सणंग खणाबी सार	8867

जे जस उपरि एक-मन, जांते तस न मिळीते,	
खप-जप कोडी गमें करी, तां ते केडि न तिजंति	१४८८
चडइ सराडइ जां लगइ, काज न दैव विशेखि,	
तिम तिम धीर तणइ मिन, उछा हुइ सविशेखि	१४८९
अगनि माहि जंपाबोंइ, तरीइ सायर - नीर,	
नथी दुल्छंघ सनेहिंन, मरणां गमीइ शरीर	१४९०
जेहनूं मन जेहसिउं हुइ, तीह तस वत्त सुहाइ,	
अवर वात विख-वेळडी, सुणतां चित्त उल्हाइ.	१४९१
गय वाडी गिरिं भीतडी, वयर कपाट करंति,	
हरि-पाहारी दोवारि सीह, रत्ता तुहि मिलंति.	१४९२
जे जेहनु अरथी हुइ, ते तस काढइ केंडि,	•
भुख तरस भय निव गणइ, नेटि करइ नीमेडि	१४९३
आसा-लबंध पतंगिया, दीवइ पडी मरंति,	
वेध विॡ्धां मांणसा, मरणां-भइ न बीहंति.	१४९४
कुंजर-कन्न पहारंडइ, रोइ भमर अपार,	,
के तूं बीहसि मरणथी, जउ रस-चाखणहार.	१४९५
भमर भटकी उसरइ, का केतिक कंटालि,	
मरवुं छइ एक जि वरां, विकुण गमइ गमार	१४९६
भमर बैंघाणो कमलमां, थरहर कंपइ कांइ,	
सुगुण सुवेधा जड मिलइ, वरि मरी जइ तांह.	१४९७
जे सबंध हवु हविं, ते सिव सुणु एक चित्ति,	
राजा वीसारइ रहिंड, न लहइ घूरत मित्त.	१४९८
एक दिन रायवाडीइ, पुहुतु क्रीडा काजि,	
सारथपति नइ मुद थयउ, जांगे लाधूं राज.	१४९९
वात वसी जे जेहिन, तेहिन तेहिज ध्यान,	
त्रिभुवन देखइ तेह मय, नव नव करइ विनाण.	१५००
गयुं सुरंगि भूभिहर, ते अवसर जाणेबि,	
सृती दीठी सुंदरी, वर्णन कहूं संखेवि.	१५०१
त्रिभुवन जीतूं रूप गुणि, तेह भणों मयणेण,	
खांडु उघाडउँ दीउँ, गोरी वेणि छलेण.	१५०२
गोरी चंदन-छोड जिम, वेध विल्ल्घा नाग,	
वेणी छिल सेवी करइ, झलकइ सिरि मणि-चाक.	१५०३
kan dia kacamatan dia kacam	

Z	124.27
चमर भार गोरी धरइ, गरवि चिहुर मिसेण,	
त्रिभुवन रुपि हरावीउं, प्राण न चल्छइ केण	१५०४
गोरी गोर-थोर-थणि, सोहइ वेणी-दंड,	
अमीय-कुंभ दोइ राखवा, जाणे सर्प्प प्रचंड	१५०५
स्रास्ट-दंड मंयणि दीउं, सिरि सींदुरिय मंग,	
ओण मनावी आप्पणी, पइ पाडियां नर-चंग	१५०६
सामिल अठिम सामली, निलवटि आधु-चंद,	
विद्या त्रिभुवन-मोहनीं, साघइ मयण-योगिंद.	१५०७
निलवट चहुडिउ चांदलु, गोरो आणी डं स,	
मुहु ऊपमि ससि किम हवइ, आवइ एणइ अंसिः	
भमुहि कोदंडि जे हणिया, नितु को पीडा तास,	,
भींतरि साल न नीसरइ, जीव न मेहलइ आस	
अणीआणां अइ सामछां, परजीविय हरणांइ,	
गोरी-नयणां खग जिम, जीवी अंतकरणांइ.	
गोरी नयणां जीह पड़, घोलि घोलि विसम किडखु,	
तीह तीह धावइ मयण-भड, शर संधेविय तिक्खु, बाला नइ लोयणि करी, मयण मनावइ आण,	
नयण खटकु जीह पडइ, तोह संचरइ सुजाण	
हरिणाक्षी हरथी अधिक, सिस निःकलंक धरेइ,	04.03
मयण दहिउ हर-छोयणि, सा नयणे सन्जेइ. मयण-बीर सर-धोरणी, विस जल्हर की धार,	१५१३
भयण-वार सर-वारणा, विस्त जलहर का वार,	9690
अमीय मही-रस मारणी, गोरी नयण-विकार	
गोरो नयणां जीह पडइ, विज्ञम भरियां वंक,	
चंचल वलया विज्जु जिम, तीह विणासइ अंग	
बाला नयंणां जिह फुलइ, जीविय तास हरेय, तिणि पापि विहि नयणनइ, कांस्ट्र कज्जल देह.	91.05
नयणां कडजल उपरइं, मारइ तिहुयण लोय,	0.0
कांइ अधकेरं छहत जड, तु जिंग जीवत कोइ. विस नयने प्रणि-दंतडे, चंडु-मुहि थणि हत्थि,	१५१७
वसः नयन माण-दतड, चडु-माह थाण हात्य, अमृत गोरी-होठडे, लीधूं सारय मत्थिः	0.0.4
पइसंता दीसइ नहीं, खिणि खिणि खटकइ चित्ति,	
गोरी नयणां तीर जिम, वीघइ हैउं जिहित.	१५१९
चित्तलेहा वरभमुहि जस, रंभा उरसो माल, नाजा-वंज निलोत्तमा, गोरी रूपि रसाल	9426
नाजान्यज्ञ ।तलात्त्रमाः गारा काप स्माल	7440

उज्जल गोरी-दंतडा, दाडिम-कुली समान, अधर-प्रवाली रातडा, छंडावइ नर-मान.	१५२१
चंडु बीहतु राहुथी, गोरी-मुहि कीड वास, प्रीति विशेखइ हरिणछ, राखिड नयणां पासिः	१५२२
काने नाग विलाइआ, निलवटि चंडु अद्ध, गोरी इसर समवडइ, मयण महा वसि किद्ध.	
गोरी-कंठ सोहमणड, ऊजल कंबु सुरेख कोइलि वीणा किन्तरी, त्रणे जीतां एख	
गोरी-थण दुरियन समा, साम-मूहा अइ वंक, थद्धा कठिन सुपावरण, तुहइ उपाइ रंग	१५२५
नीलकंठ हैंडइ धरिया, नेह-सिस अद्ध रसाल, गोरी-थण इसर समा, तीह हूं करूं जुहार	
गोरी-थणह वष्टला, मयण-राय निहाण, मणि लायणि पूरीया, कंचण-कलश समान	
थण अलीआला उद्ध-मुह, मयण महा-भड भल्ल, जीह उरि लग्गइ सो जीअइ, इअर मरइ ससल्ल	१५२८
नयण-शरा थण-भल्लडी, वेणी तरल तरवारि, त्रिहु हथीयारे मयण-भड, जीपइ तिहुयण मझारि	१५२९
दोइ गौर-थण कणय-गिरि, मिंझ मोती हार, आवित्त नाहि-दहि, नइ फेणु जल-सार	
बालानइ लोयण-जलि, बृडु मयण-मतंग, तीह कुंभस्थ थोर–थण, नेह-अंकुशि सुरंग.	१५३१
गोरी हैंड इ थोर-थणा, करइ सवत्ती क [ु] ज, थण-गिरि सिहरिं दुरि रहइ, पीउ परइ रंभण स [ु] ज.	१५३२
बल्लह जिम हीइ रकखया, गोरींइ गुण-सार, इय गव्विं उद्ध-मुहा, उनइया थाण-हार.	१५३३
जीह जाया जीह वुट्टीया, तीह हैंडूं फोडंति, गोरी-थण दुङ्जण थया, तु कर-पीडन संहति.	१५३४
करि कुंभत्थल अधिक, गोरी-पयोहर हार, गय मोती छांना धरइ, थण धरइ परगट हार	
नीली-कंचु अपावरण, गोरी-थण सोहंति, जलहर-रेखा मज्झ-गय, ससिहर-विंब हसंतः	१५३६

कमल-मुखी इंस-गामिनी, अलि-कुंतल थण चकु,	
मयण महानल उल्हवण, गोरी वाविअ थकः	१५३७
गौरी लावणइ भरी, तिम चंपेविय देहि,	
जिम अणमातुंअ थण मसिं, बाहिरि पसरिउं एह.	१५३८
गोरी थणहर-कोट्ट माहि, मयण-नरिंद रहेवि,	
झुझ करेसि हर सरिस, पुणरवि शर संघेवि.	१५३९
गोरी-थण अमीइ ^भ रिया, सेस रहिउं चंपंता,	
चंछह घडीउ चंदछ, तिहुयण नयणाणंद.	१५४०
गोरो थणहर घड-जूअली, नीर भरइ लायन्न,	
निग्गय रमणह थालिथी, सींचणि रोमवलि वन्न	१५४१
छयल विडुग्गय चिंतडी, जिम हैंडइ नवि माइ,	, 19 1
गोरी गोरा-तुंग-थण, तिम हैंड न समाइ.	9600
	1702
को तीरइ तीह वन्नीउं, थण-गिरि अंतर-सार,	
जीह अंतरि सकन्हहर, निवसइ गुण-भंडार	१५४२
दाञ्च तिन लायण-लय, पल्लिविया हत्थेण,	
फुळी नयणां फुळडे, फली अति थोर थणेण.	१५४४
बाला लायणइ भरी, मारइ तिखु कडखु,	
डाढ गलावइ दूरिथी, जिम चंची फल पक्क.	१५४५
वासुकि रूपा-नेउर मसि, गोरी पाइ पडंति,	
विसहर वेणि बांधीया, छोडणि सेव करंतिः	१५४६
मुहुर झंकार सुवन्नमय, सचित्तलां सुवंक,	• • • •
गोरी नडर वयण जिम, हैंडु हरइ निसंक	96810
कोमल पटुली पहिरणइ, उरि कंचुउ सनील,	
झाझरडां रमिजिम करइ, गोरी चलइ सलील	१५४८
सिस-वयणी मृग-लोयणी, वेणी-दंड भुजंग,	-
मधुर बोलंती हंसली, गज-गामिनी सुचंग.	१५४९
जे जे अवयव जिहां जिसिया, कामिक नइ करइ मोह,	
गोरी अंगइ दीसीइ, ते ते तिहां समोह.	१५५०
सूती देखी सुंदरी, मनोहर रूप रसाल,	
सारथपति मनि चींतवइ, घिन घिन ए भूपांछ.	9660
•	
गोरो गोर थोर थणी, सरस सकोमल वांणि,	
जस अंगणि मंडण हवइ, तस जीवित सुप्रमाण.	१५५२

जे गति हंस हरावती, वर नेउर झंकारि, जिहां जिहां चाल्रइ गोरडी, ते ते पंथ ज सार	१५५३
चंद्र-मुखी चंपा-वनी, जस सिरि चंदन-वास, गोरी दीठी जिणि नयणि, हूं बल्हिहारी तांह.	१५५४
वंकिम चचल नेह भरि, तिखु कडखु सरेण, तस वहरीनूं कज्ज ए, करती हसह अचिरेण.	१५५५
घन घन ते नर-हंसला, पय सकर समतोल, जेहिंसिड सरस सनेहना, बोलती हसइ सबोल.	
रोमंचिय नर घन्न ते, विरह दावानिल-नीर, गोरी कोमल कर-कमल, लग्गइ जास सरीर.	
थाव करंजिय पय-कमल, रिणि जिणि नेडर-सिद्धि, गोरी जस हैइ ठवइ, धन ते लील समुद्धः	
कंच-कुसण त्रदूकीइ, पीन पयोधर भारि, घन ते नर जस गोरडी, दिइ आर्लिंगन सार,	
चिंता संकड हैंडलइ, सोसीय मांस सरीर, सुंदरि समरइ जास मिन, धिन धिन ते नर-हीर.	१५६०
करि कंकण कंचु कसणि, कंचण कंति रसाल, कोकिल कंठि कमल-मुखि, कदली-दल सुकुमाल	१५६१
कुटिल-केश केसरि-कटी, कुच करी-कुंभ कठोर. काम−कराली कामिनी, केसर कपुरह रोल.	१५६२
कव्य कहा कवि कामिनी, केली हरि कलकेलि, कतुहल केसर कुसुम, अहीं वसह कलकेलि.	१५६३
गोरी गाहा गीय-रस, गोरस गयवर गोट्ट, गमती गुणवंत गाठडी, पुण्य तणा ए मोट्ट. गुणि गहिगहिती गजगती, गोरी गोरा गाल,	१५६४
बोछंती गुल्रथी गली, गुरु थोर थण-हार. चंद्र-मुखी चंपावती, चतुर चमक्कइ चालि,	१५६५
चंदन चोळी चीर सिरि, चंचल आंख अणीआलि जस गुणवंती गोरडी, धूली धूसर बालि,	
सप्रसन्न सविवेक प्रभु, तो ह धरि पुण्य रसाल. रूपवती नइ गुणवती मुहि मीठी मनोहरि,	१५६७
ससने ही तु पाम [ी] इ, जउ हुइ देवत सार	१५६८

जयवंतस्र्रिकृत

रुपइ मोहिंच सार्थपति, सूति देखी नारि,	
भय सनेहि कांपतु, चिंतइ हैया मजारि	१५६९
राज-सुता राय-वहुभा, यौवन रुपइ मत, किम कहिसिउं मन-वत्तडी, किम छहिवासइ जचित्ति,	
नव-तन नेह समागिम, थरहइ कंपइ चित्त,	
धगमगती जिम पित्तनी, नाडी वहइ जडित्तिः	१५७१
मारगनइ जल नेह-रस, सजन सभावली जोइ, ए अवगाहियां जिगि नुहइ, थरहर कंपइ सोइ.	१५७२
पीउ दीठिं नहीं सुख नहीं, दीठिं गहिंबर थाइ,	
विसमी गती अति नेहनी, मुहुडइ कही न जाइ	१५७३
पिउ अणदीठिं दुखु जे, ते छइ होक-प्रसिद्ध,	0.6
सुखि म दीठु दुखु जे, जाणइ जेणइ नेह कोद्ध.	१५७४
अणदीठानु उरतु, हैंडई थोडरु होइ, देखइ पणि न मिली सकइ, अति आवटणउं सोइ.	१५७५
अथवा बोलावी जोउं, एहनइ मनि सिउ भाव,	
अनंगदेव इम चींतवी, जगावी सा बालि,	१५७६
ऊठी आलस मोडती, निद्राभर नयणेण,	
मम्मण वयणां बोलती, नयणे जीता एण.	१५७७
अनगदेव देखी करी, मोही मोहण-वेलि,	
विहस्या नयण कपोल-तल, है डइ हुंइ रंगरेली.	१५७८
उद्भूत देखी रूप ते, पूछइ सुंदरि वात,	
पुरुष-भमर कुहु कुण तुह्ये, केही तुह्य विलाति	१५७९
नयणां देखी उल्लिसियां, कोमल वचन सुणेवि,	
हैडां हेजि जाणी करी, हरख हवु मनि हेव.	१५८०
नयण जणावइ हरख भरि, हैंडा तणड सनेह देखी,	
देखी विहसइ कमल जिम, अति उल्लसइ सदेह.	१५८२
पहिलूं मंडइ आंखडी, अण-जाण्या सिंउ प्रीति,	
पछइ मींठे बोलडे नेह जगावइ चौंति.	१५८१
रत्त विरत्तां मांणसा, नयणे वयणि जणाइ,	
नेह वहर घण गोपवइ, तुहि परगट थाइ.	१५८३
रवि अत्थर्मणि कमल जिम, देखी नयन कुरमाइ,	
वांक्ं्र् जोइ विस वमइ, नयन विरत्त कहाइ.	१५८४

र्शुगारमंजरी ः



बोलावियां बोलइ नहीं, साहामूं जोइ न हसंति, देखी छाया पालटइ, अति उधड मुहि जंति. १५८५ देखी उकरादं जोइ, मचकोडइ मुख-राग, एहवे लक्षणि जाणवां माणसडां नीरागः सुरिय देखी कमल परि, विहसइ नेहि सराग, अनिमिख जोइ वली वली. मांणसडां सरागः १५८७ सवियारां विज्झुमि भरियं, घोलिर वंक वलाइ. ससनेहोंनां नयणलां, लक्षमांथीइ १५८८ जणाइ. गोपाविड पणि नेह-रस, नयणे चतुर लहंति, क्षणि मीलियां क्षिणि विहसीयां, पीय सम्मुहा वलंतिः अंबर कस्तूरी परिं, सज्जन तणा सनेह, छांना पणि नयणे करी, प्रगट छहीजइ तेह. देखी मरकलडे हसइ, बोलइ सरस सराग, कहिउं मानइ बोल सा सहइ, ते जाणेवां सरागः १५९१ इत्यादिक जे नेहनां, लक्षण कहियां छइ सार, ते सवि जाणि सार्थपति, हरिबड चित्ति अपार मन जांणी मन दीजइ, ते रुडुं निरवाणि, अणजाणइं जो आपीइ, जण हासूं सय हाणि. जे तु कीजइ रंग, हीसीइ रंग जेतलु, निसनेहां सिउं राचतां, दुक्खि दाजइ अंग १५९४ एक एकनइ वेधइ मरेइ, साहामूं नाणइ रंग, दैवइं इम कां सरजीउं, जिम दीवा-पतंग १५९५ सरखा मन बेहु हुइ, बेहु सरख़ एक एक विण न सकइ रही, तेहिज प्रीति सुचंगः बोल जि कहीइ तेहिंन, जे मानइ निज बोल, वचन उवेखइ आपणउं, ते परिहरीइ निटोल. १५९७ पाणी मांहइ न नांखीइ, सोना केरी भछि. नीरस नइ मन वत्तडी, म कहिस हैआ गहिल्ल. १५९८ त्राटी न खमइ पीटणी, धसी पडइ समूल, <u>ज्ञांनइ मन-वत्तडी, सासु पडइ सबोलि १५९९</u> गयवर केरु भारभर, खरि नव हिणड जाइ, मन आपिउ कुमांणसां, अघवचि महेली जाइ. १६००

	**
छयल अनइ कुणबीयना, ए बेहु एक सभाव,	
साहामु देखइ त्रहेजउ, तु वी मेहलइ ताव.	१६०१
अनंगदेवनइ हइडलइ, ते देखी हुइ आस,	
चिंतइ सीघां काज सिंव, सफल थयउ आयास.	१६०२
जस कारणि मन-भमरलु, आवटतु निसि-दीस,	•,
जस कारणि मन-भमरलु, आत्रटतु निसि-दीस, ते गुणवंती कमल्रिनी, मेली तस जगदीस.	१६०३
जेहिसिडं मिलवा कारणइं, करती कोडी उपाय,	
ते सज्जन सिहिजिं मिल्यां, हैडां छंडि विसाय	१६०४
तपी रहिंच तु जीवडु, जेहिंन मिलवा काजि,	
ते सज्जन जंड पामीइ, तु धरि बइठां राज	१६०५
जे जस उपरि खप करइ, ते तस मिलड निदान,	
जगदीस्वरि जेाडी जडी, कुहुनइ करइ प्रमाण	9808
जाप जपइ अति तप तपइ, खप करइ मेरु समान,	14.4
मन गमतां वाहलां मिल्रइ, तु ते सरव प्रणाम.	95010
	१६०७
अनंगदेव इम चींतवीं, कहि सुणी सुंदर सार,	0.0
भागी-भगर भग्नू भला, नव नव रस लेणहार.	१६०८
अह्ये पंखी परदेशना, आव्या एणइ ठामि,	
पुणी ते हैं डूं ऊलटिंड, गारी तारुं नाम	१६०९
जव लगि तुज्ाुण सांभलिया, अमीय⁻लता रस−कंद,	
तव लगि लोचन अल्ज्यां, जोवा तुज मुख-चंदः	१६१०
हेजइ हैंडूं उल्लसइ, गोरी ते।रइ नामि,	
मेह गजंतइ मोर जिम, जिम चैत्रइ आराम	१६११
जिम दवि दाधां रुंखडा, पल्लवीइ महेण,	
विरहिं दर्धुं हृदय तिम, गोरी तूं दीठेण.	१६१२
	1417
फाटइ ह दय−तलावडूं, पुरिउं विरह−जलेण, गोरी तू ं नेह−पालि करि, दिइ जीवित अचिरेण	0.00
गोरी तुज गुण-मालती, मुज मन भनर समान,	
अवर सुजाती नवि गमइ, फिर फिर ताहारुं ध्यान	१६१४
भूख नहीं नींद्रा नहीं, दिन ते वरस समान,	
भौतिरि जीव तपी रहिंड, गोरी तोरइ ध्यानि	१६१५
नयणे दीसइ नब नवी, रुपवती वर नारि,	
पणि तुजसिउं मुज नायडु, अवर न सुपन मझारि	१६१६

कइ विस कइ अमीइ भरियां, गोरी नयणां तुज,	
न्नाण हरइ क्षणि नयणलड्, क्षणि जीवाडइ मुङ्सि	१६१७
गोरी तुजमां गुण घणा, अवगुण एक अपार,	*,* * =
वेध विळाइ मांणसा, मारइ विण हथीआरि	१६१८
गोरी तोरा पीण थण, अभिनव भल्ल समान,	• • •
जस उरि लग्गइ सो जीइ, अणुं–लग्गा लइ प्राण.	१६१९
गोरी एकजि तूं विना, मुज मनि हती ऊजाडि,	
सफल थयुं दिन आजनु, पहुती नयण-रुहाडि.	१६२०
वली वली जोडं जा लग इ, गोरी तुज मुख-चंद,	
तां लगइ नयन-चकोरडां, पामइ अति आनंद्	१६२१
गोरी तुज विरहानिंह, प्रजलइ मोर् चित्त,	•
रमण-महानइ जल चडइ, तेह बुजावइ जडित्ति.	१६२२
जेहनइ नामि सहू बीहइ, आदि करि एकार,	
गोरी ते तुज उपरइ, मुजनइ दहइ अपार	१६२३
भर अत्यंतरि जे रहइ, बीय सरइ संजुत्त,	
ते तुज उपरि छइ घणीं, ते जाणइ मुज चित्त.	१६२४
चैत्र थकी जे सातमंड, परिहरि अंत्य डकार,	
तुज भणी हूं आवीउ, ते तु परि सुविचारि	१६२५
किहां आंबा किहां कोकिला, किहां मेहा किहां मोर,	
अवसर अवइ नवि मिलड, मांणस नहीं ते ढोर	१६२६
गोरी भुज मनि दुःख थयुं, दुःसह तुझ विरहेण,	
लाख लखंतरि तूं बिना, निव लग्गइ अचिरेण.	१६२७
उरि स्टमा जीवित हरइ, तोरां होचन-बाण,	
विस कब्जल महिमा नवड, दीठां पणि लिइ प्राण	१६२८
पाइ पडूं नुहुरा करुं, गोरी दइ मुज मान,	0.55.0
वाहला तोक दास हूं, मुज साथइ स्युं मान	१६५५
गोरी बिरहो ताहरइ, घडीय न मिं रहिवाइ, जिम जल पाखइ माछिलि, तालेविली थाइ.	0630
गोरी मारि म नय ण मुज, आलाछुंबु टालि, अविहड वाचा नेहनी, तूं दक्षिण करि आलि.	
. •	1445
नेह विण नर्याण निहाल्ला, मांणसडां सूंकाइ, मेहि जवासु सोंचता, सूकी झंखर थाइ	8.E.3.5
नाह जनाष्ट्र जानता, द्वांग संसर साहर	1 7.7

ससनेहां किम जाणीइ, जां निव आवइ नित्त,	
केवल नयण सनेहइ, तनु अवटावइ नित्त.	१६३३
गोरी मुहि केतृं कहूं, तूं नवि जणइ सार	
वइरीनि ए वेदनो, म हिसिउ एकइ वार.	१६३४
आलार्छुंबु लाइ रही, गोरी वरि मुज मारी.	
मरणां दुःख एकवारनूं, विरह तणउ छिख वार	१६३५
वरि वछ-नाग अफीण दइ, जउ नुहइ मिल्रवा मन्न,	
विख खाइ तुज उपरइ, विरि हूं मरुं सुवन्नि.	१६३६
गोरी जड तूं नहीं मिलइ, तु हूं हत्या देसि,	
कंइ झंपावसि नदीयमां, कइ बिख खाइ मरेसि.	१६३७
गोरी ताहरइ वेघडइ, जे दुःख सहूं निसि-दीस,	. , ,
ते जाणइ मन माहरं, कइ जाणइ जगदीश.	१६३८
भूख गइ निद्रा गइ, काया छीधी शोखि,	
ए दोखनी वैद्य तूंह जि छंइ, तुजधी उपनु दोख.	१६३९
जाइफल यौवन एलची, बोलि एक पूरि न हुँसि,	• • • •
तज विरहाली आमला, अति विस दहइ अति हंसि.	१६४०
जीभइं वयण न उपजइ, स्राजइं निव बोस्राइ,	• •
गोरी तुजस्युं वेधडु, कहिया पखइ न रहिवाइ	१६४१
फल पाकां यौवन्न-रस, ए लीजइ ततकाल,	,,,,,
कुही पडसइ कालि के, कुण करसइ संभाल	१६४२
एक यौवन नइ सेलडी, ए जां हुइ रस पुरि,	.,,
तां सह वाहइ हत्थडु, कंचुं छंडइ दूरि.	१६४३
गौरी यौवन तिम गलइ, जिम कर-जल टींपेण,	1101
दस दिन लाहु लीजइ, सहू संभारइ जेण	१६४४
जाग छइ यौवन जसइ, अह्म सखाइ होइ,	.,
काया लाहु तुहि न लिइ, आहा नोठर लोय	9 8 9 6
गोरी अह्मनि खप नथी, वली वली कहिइ तोइ,	1407
अह्म सरखां जंबारडु, परउपगारइं होइ.	9898
साठि सामागण हवड. सयेण रंभ समान	, 404
साठि से।मागिण हवइ, सुयेण रंभ समान, सहसे जारे इन्द्र पणि, अध्धीसनि दिइ मान	१६४७
सुंदरि जे जेहवूं करइ, ते तेहवूं पामेइ,	, 400
एहवुं जाणो जार सिउं, सहु तिम लाहु लेइ	१६४८
	– –

दान दीइ जे जेहवूं, पामइ तेहवूं सोइ,	
इम जाणी यौवन तणां, नाम कहियो काेाइ.	१६४९
गारी जे मानतां नथी, हवडां अह्यारा बोल,	
ते क्षणि क्षणि संभारसिइ, यौवन गइ निटोल	१६५०
तव का साहामूं नहीं जोइ, जब जासइ यौवन,	
त्रिक का साहासू नहां जार, जन जासर वानन,	9 5 7 9
गोरी हठसिंड एवडडं, अरुविं दिइ मुज तन्न	1991
धन हुइ तु संचीइ, यौवन संचिउं न जाइ,	
अधिकुं वाधइ बावरइ, संचीजइ कांइ.	१६५२
गारी मुहुडइ नांम कहिस, मागिउं आपि न अंग,	
	9563
पाइ पडी मोंनित करु, दुक्क्खिइ दाजइ अंग	रवयर
दीन वचन मिं तुज चिवियां, गोरी जेतां आज,	
जउ ते कहुं तो रायनिं, तु ते आपइ राज	१६५४
तूं न छहइ भाव मन तणउ, मिं छाजइ न कहाइ,	
	0 6 1. 1.
गोरी मुज मन-आसडी, फलसिइ केणी उपाय	रदपप
विचित्र बहइ स्राज-तस्रावडू, कुणहि न स्राघु थाक,	
किम करसिउं गुण गाेंठडी, तू चकवि हूं चक्रवाक	१६५६
गारी मुज मन डगमगइ, जीव पडिउ अंदेसि,	
स हूँ मागूं तुज कन्हइ, तेहनी ना म कहेसि	१६५७
	1 7 1 -
मागिउ आपइ आपणु, साचां वाहालां तेह,	
बोल उवेखइ नवि मिलइ, तेहसिउं किसिउ सनेह	१६५८
मागणहारा ते मरु, मागइ नहीं मुद्द जोइ,	
मूरखंडां चिंतामणी, कादिव घालड काइ	१६५९
ना कहितां लाजइ नहीं, नावइ कुहुनइ काजि,	
रान-तस्त्रव सरीसडां, तिणि माणसि सिउ काज	१६६०
जे नितु नितु नयणे हणइ, मन साथइ न मिलंति,	
ते मांणस अंत्यज समां, दीठां दूरि टलंति.	
वेध विराह झूरि हवइ, चल्रती न करइ सार, बीज पडु ते उपरइ, जीवितनां लेणहार.	
गोरी वेध न लाईइ, अहवा जउ लाओइ,	
तु धोरी-सिरि भार जिम, अधवचि नवि महेलुई.	१६६३
सहीइ जण जण बालुडा, मन रंच्यति चंग,	
सहाइ जण जण जालुडा, मन रच्यात चर्गा, चंचल चित्त न' कीजइ, धरीइ सरखुं अंग,	
चचल ।चत्त न काजइ, यराइ सर्खु अग,	* 4 4 8

जयवंतस्रिकृत

नयणे दोठि सुख नहीं, जा निव भीडइ अंग	
अण-वृ्ठिं मेह गाजित, किम धरइ चातक रंगः	
नयणे वयणे गुण करी, रंजइ छयल अपार,	0.000
सोंग-विहुणां ढेार जे, ते किम रंजइ गमार	१६६६
गोरी तुज गुण-फूछडे, मुज मन-भ्रमर सुरत्त, तिम करि जिम प्रीति आपणी, अधिकी वाधइ नित्तः	१६६७
वांका जे गुणवंत सिउं, गुणवंता ते किम,	
सज्जन सिंउ सिंउ आंकडु, गोरी जोइ न इन्म	१६६८
हंसा राचइ कमल-विन, फुल-सुगंधे भृंग, सुगुणां राचइ सुगुण सिउं, राचइ विजि मतंग	१६६९
गुणवंती रुपइ भली, जेहवु चांपा-छोड,	
सजन साथइ निव मिलइ, ए तुज माटी खाेडि.	
गारो ए बि-जण तणा, आर्छि जनम सुजंति, जे सुगुणां सिउं नवि मिल्लियां, जे मिल्लिया विहडंति.	१६७१
गे.री काया काच जिम, अविहड उत्तम प्रीति,	
मणि पइ ठेली काच, कुण मूरखि आणइ चित्ति	१६७२
एणी कायाइ जड हवइ, सज्जन सरिसु रंग,	
तु गोरी काच कटकडइ, लहिउं चिंतामणि चंग.	१६७३
गारी हूं छउं उरसीउ, जउ तृ सुकडि देइ,	
ताप शमइ तु वेधनु, इंछा भाग फलेइ.	१६७४
ताहारिं हाथिं मारि तूं, कइ मुजनइ जीवाडि,	
आंखडीया आलंबडु, वार वार म देखाडि.	१६७५
थोडां मांहि घणुं कहुं, साची माने वात,	
हूं जीवसि जड मिलसि तूं, नहींतरि मरण संघात	१६७६
विसमइ गिरि आंबा फलेइ, हैं हूं हचरके जाइ,	
ते मांणस कां देखीइ, जे दीठइ मन अवटाइ.	१६७७
जे वेळा तुज विण जाइ, वरस समी ते थाइ,	
गोरी मिली तूं एक-मिन, वैध धणउ न खमाई.	
गोरी वाचा आपि मुज, मिलवानी ससनेहि,	
तिम करि जिम थाइ प्रीतडी, रखे आपइ छेह.	१६७९
गुणवंति माटइ तूंहिनि, वाहाली घाती वाच,	
रखे उवेखइ मृंहीन, नेह वधारइ साच	१६८०

जउ मंडीजइ प्रीतडी, मागिउं दीजइ तोइ,	
दुरियन बेालि न छांडीइ, प्रीति खरी जउ हेाइ.	१६८१
गोरी दूरियन छइ घणा, पाडइ अति अंदाेहि,	÷
वाहाला तेहने बेालडे, म करिस प्रीति विछाहि	१६८२
गोरी ख़ूंटा कारणि, अंब न सफल कपाइ,	05.23
दुरियन बोलइ सजन सिंउ, प्रीति न छंडी जाइ	१५८२
गोरी जूंइ परभविया वस्त्र न छंडइ कोइ, दुरियन वयर्नि सजनर्नि, कुण परिहणइ सलोइ.	8578
	, , , , ,
बेाली बेाली रहइ देाखिया, खृटा विण न मराइ, जउ मन मानइ आपणउं, तु लेाकइं स्युं थाइ.	१६८५
गोरी माणिस गरव तू, पाइ पडतां देखि,	, , - ,
सञ्जन सिहिजइ नम्मणा, प्रीति वसइ सविशेखः	१६८६
गोरी ताडु एवडु, सज्जन सिउं म करेसि,	
गुणवतां अरथी घणा, पछइ झुरि मरेसिः	१६८७
सुकवी कवित तणी परइ, सुंदरि सुंद्र ने्ह,	
अति कठिनिं अलखामणां, नादर का मले नेह	१६८८
तुं मुजनइ वाहाली थइ, तु एक मागुं मान,	
रखे देखाडइ छेह तूं, पाले प्रीति सुजाणि	१६८५
जीभइ किमहिं न वीसरइ, सोभागी तुज नांम, केाडी वरस जीवों धरुं, जिम जीविंन हंस ध्यान	9800
	147
ते मुज नामि सुहावीया, तेहजि अक्षर सार माइ विधाता कां करिया, अक्षर अवर असार	9 8 9 9
हूं भमरु तूं कमिल्नी, तूं द्राक्षा हूं सिंहकार	
सरखइ सरखुं छइ मिलडं, तूं वींटी हूं हीर.	१६९२
नव यौवन नव नेहडु, नव रस सरस अपार,	
गोरी कांइ विलंबीइ, रस लीजइ संसार	१६९३
आशा-तरुवर पार्खविड, तोरुं नाम सुणेवि, नयणे दीठिं फुळीड, छेद म करये हेव.	
नयणे दीठिं फुली ^ड , छेद म करये हेव.	१६९४
उन्हालइ तरसाॡआं, वाहालूं जिसिंउं तलाव,	
उन्हालड् तरसाॡ्यां, वाहालूं जिसिउं तलाव, तिम गारो तूं वल्लही, जिम सायरमां नाव	१६९५
गोरी तोरे पगि पडूं, मइ न खमाइ विलंब,	
आरतियां हुइ उतावलां, एक क्षण जाणइ जम्म	१६९६

वाहाळां ताहरइ वेथडइ, जे मइ दुःख सहियांइ,	
ते जाणइ मन माहरू, न्यानो विण न कहाइ.	१६९७
हूं मेोहित्र गुणि ूतोरडइ, कीधां केाडि उपाय,	
तुजनइ मिलवा कार्राण, आस फली हवइ आय.	१६९८
सुभट शरीरइ जे वसइ, धरि उकार करिज्ज,	
गोरी वलतु को न दिइ, को रिसावी अज्ज	१६९९
एहवां वचन सुणी घणां, देखी उदभूत रूप,	
अनुरागिणि सुंदरि थइ, उद्धसीयां राम-कूप	१७००
सारथपतिर्नि इम कहइ, वाहीला सुगुण सुजाण,	
सुणि मुज मननों वातडी, तुजिसिडं थयुं बंधाण,	१७०१
तूं देखी मन उल्लसइ, नयणां अमी झराइ,	
भर भाद्रवडइ मार जिम, मेह देखी कोंगाइ	१७०२
आंखडीयां बलिहारडी, जेणि वाहालां दिट्ठ,	
साकर-चूरि तणीं परिं, केामल शीतल मिट्ट.	१७०३
सुखदुःख संघाति सहू, जीव तुद्धारइ हाथि,	
वाचा दक्षिण कर तणी, जनम लगइ तुज साथि.	१७०४
तूं सज्जन वाहलेसरुं, तूहजि प्राणाधार,	
आ भवि परभवि तुज समुं, वाहालूं कोइ न संसारि	१७०५
तुं माहारइ हूं ताहरइ वल्लभ, जिम जल-पालि,	
सुपतंतरि पणि एकठा, बीजानुं मुहु बालि,	१७०६
आ वाचा साची करे, वहिंडूं नहीं जीवंत,	
जिहां तुज काया जाणि तिहां, माहारी माया कंत	१७०७
तनु घनु यौवन ताहारुं, ए पणि ताहरा प्राण,	·
यौवन-वाडी ताहरी, फुलीफली सुजांण.	१७०८
सज्जन तणा सनेह, ऊंबर-तरुअरनी परि,	
परगट हुइ फलेहि, नयणां ढंबर नवि करइ	१७०९
जे जस ऊपरि एक-मन, तेहिंन तेह मिलंति,	
मेह-बप्पीहांनीं परइ, आशा नेटि फलंति	
·	1
ते तूं उपजइ हेज, जे तूं हुइ वाहालां हैइ, दाडिम-छालइ तेज, तु बी हुइ रत्तडु.	01000
नाम भारत तथा असमि असमि असमि	1911
कुंपाल मेहलि न रे हीआ, अलिंव आस फेलीआंइ, नूं अवटातूं जेहनइ, ते वाहालां मिलीआंइ.	91692
तू जनवार गुरुवर, त नाराल मिलाजाई,	1014

साकर दूधइ स्युं मिली, सेानु ह्वं सुगंध, जे ऊपरि मनडुं हुतुं, ते ससनेहा बंधु.	१७१३
आगइ वाहाला सुजन ते, अनइ वली मधुर बेालंति, आंबा लागा इलूइ, कहु कुण मूल करंति.	
नीर जिम नवइ सिरावल्रइ, पसरी एक-रस हो इ, चितिं चित्ति मिली गयुं, अंतर न ल्रहइ केाइ.	
कहिसिउं क्षणमां मन मिलड, कहिसिउं नहीं सवासि, डुडर न वेइ कमल-गुण, भमरु लि गुणवास.	
गोरी गुण-गढ भेलता, नयणे दीधु भेलि, हैडइ मारग अप्पीउ, भांजी लज्जा-पालि.	१७१७
पूरव-कर्म तणइ वसइ, तेहसिउं बाघु जीव, अनंग तणी आशा फली, विलसइ भाग सदेव.	१७१८
जीवी तास वखाणीइ, घन घन सघन अनंग, दर्शन-दुर्लभ सुंदरी, विलसी जेणइ चंग.	१७१९
सूडा ते फल चालीइ, जे फल कुणिह न लब्ध, विर मरवुं एक जि वरां, जेणि रहइ लाक-प्रसिद्ध	१७२०
कहम छंखी जल तरी, भेदी कंटक-वाडि, हंसा विलसह कमल सिंडं, नेहइं किसिंड असाध्य	१७२१
भमरु केतिक सिउं रमइ, कांटे तनु वीधाइ, मन रच्चतां वल्छहां, दोस न केा देखाइ. जेहसिउं रूडा भावीइ, चतुर वखाणइ च्यारि,	
वरि ते सञ्जन कारणइ, सहीइ बेाछ बि-च्चारि.	१७२३
भमर ते फूलइ रच्वीइ, जिहां गुण दीसइ दोइ, लोक प्रशंशइ जेहथी, आप सवारथ होइ.	
हंसा कइ मानसि रमइ, कइ तरसिया मरंति, छीलरडे कद वाळ्ए,, साहामूं पणि न जोअंति.	
हंसा कइ मानसि रमइ, कइ तरसिया मरंति, छीलरडे कद वाल्र्ए,, साहामूं पणि न जोअंति. मिलीइ तु गुणवंत सिउं, जीह प्रसंसद लोय, निरगुण नींचह सिउ मिली, जनम विणासइ कोइ.	१७२५
हंसा कइ मानसि रमइ, कइ तरसिया मरंति, छीलरडे कद वालूए,, साहामूं पणि न जोअंति मिलीइ तु गुणवंत सिउं, जीह प्रसंसइ लोय,	१७२५ १७२६ १७२७

बाहाली प्रीति ज पालबइ, हैंडइ छइ डमडोल,	
तु मुज मिन सुख संपजइ, जउ दइ अविहड बोल.	
ोरी तोरइ कार्राण, सहियां छइ दुखु अपार,	
नेह-विछोह करइ रखे, वरि मारे तरवारिं.	१७३५
जउ जाणी गुणवंति, तु मइं मंडिउ नेह,	
केलि म थासिउं बोरडी, रखे देखाडइ छेह.	१७३६
अंब न हुइ होंबडु, वायस नुहइ हंस,	
चंद नहुइ अंगीठडी, निव गुण नुहइ सुवंश	१७३७
मंडइ सरिसव जेतलु, पालइ मेरू समान,	
सञ्जन तणु सनेहडु, जिम जेठइ उघाण	१७३८
कुलवंती थोडुं लवइ, पालइ घणु सनेह,	
अकुलीणी बोल्ड घणुं, क्षणमां आपइ छेह.	१७३९
प्रीति करतां सोहिली, दोहिली पणि पालंति,	
अघ-विच भूंकइ आदरी, साहामूं ते बारुंतिः	१७४०
तेतु छीजइ भार, जेतु सकीइ निर्वही,	
प्रीति तणड व्यवहार, जनम तणड व्यवहार.	१७४१
तुजिसिउं कीथी प्रीतडी, हवइ जु आपिस छेह,	
जण–हासुं मनि उरतु, बिपरि दहइसि देह	१७४२
गोरी पाले प्रीति तिम, जिम वि न हसइ लोइ,	
जिंग उस्बाणं जिम रहइ, वइरी जीणा होई.	१७४३
सघलइ बदनामी चडी, वइरी आणइ खेस,	*:
नेह खरु तु जाणसिउं, जेउ अहवइ पालेसि.	१७४४
नेह रयण तिम राखये, जिम न पडइ बीसारि,	
छल जोइ चोरइ रखे, दुरियन-चोर संसारिः	१७४५
जण जण बोल्टि म उभजसि, खेद म आणसि चौंति,	
हुरिचन बोल म हैइ घरसि, इणि परि पालइ प्रीति	१७४६
वाहाळी तुं गुणवंति छइं, घणउं कहिसिउं होइ,	
प्रोत म छोडसि आपणी, थोडइ घणउ स जोइ.	१७४७
प्रीति प्रीति सहू को कह इ, थोडा करी छहंति,	
ते थोडा पहिं थोडिला, कीधी जे पालंति.	१७४८
विगुणां पणि छंडइ नहीं, आदरीआं उमाडि,	
सुख-दुख सही पालीलीइ, हूं बलिहारी तांह.	१७४९

वलतुं सा सुंदरी भणइ, बलिहारी तोरइ नामि, वाहलाजी प्रीति पालवइ, अ स्यु कहिउ सुजाण १७५० जेहसिउं बाधउ जास मन, तें बीकिउ तस हाथि, छांङीतां छूटइ नहीं, सुख-दुख तेहनइ साथि १७५१ तुज साथइ जु मन मिल्युं, वाहाला तैन कहाइ, तुज सिउं जेहवु नेहडु, तेहवु अवर न कहाइ १७५२ मनसिउं जाणे प्रीतडो, जण जाणइ स्युं काम, सहिस अठोत्तर विण मिल्रइ, मनमां जपीइ नांम १७५३ सहीं ते जण जण बोलडा, मन अवटावी आज, तुह्म स्युं कींघी प्रोतडी, ते स्युं त्यजवा काजि १७५४ जे सज्जन अंगीकरिया, गुण जाणी अपार, ते स[ु]जन किम मेहल्रइ, दुरियन वचन विकारि १७५५ कंति बीहीजीसइ लोक-भय, जड मंडीसइ प्रीति, मनगमतूं जनभावतूं, वि न मिल्रइ अेकांति १७५६ रुज्जा तु वाहाला किस्यां, वाहालां तु सी लाज, अेक थंभइ किम बिब्झिइ, सुंदरी दो गजराज १७५७ ळज्जह पेमह किउं मिलइ, तुरय सुचित्र वेउ, गणय अनाडी वेघडु, काहि न रेहिउ अह. १७५८ जिहां मन मानिउं आपणनुं, तिहां मिळतां सी लाज, भरी सभामां सांढीड, इइवर राखइ आज १७५९ चींति पडी सी लोकनि, फिरि फिरि काढइ नीमेडि, जेहनूं मन जेहिंसिउं मिल्यु, ते न तिजइ तस केंडि १७६० मेहलाब्यां नहीं मेहलसइ, जेहसिउं जस अनुराग, तु कां दुरियन पापीआ, बारी करइ बिदाघ १७६१ जिहां वन तिहां पावक दहइ, जिहां डुंगर तिहां खोह, जिहां सनेहां तिहा रुपणां, हैडा म करि अंदोह. १७६२ कइ सिंधु कइ टालडी, कइ तावड कइ छज्ज, ओ छि ओकठां निव मिलइ, वाहलां कइ लोक-ल[ु]ज. १७६३ लोक अयाण अबूज छइ, परपीडा न लहंति, जेहनूं मन जेहिंसिउं हुइ, ते ते विण न रहंति १७६४ 90

प्रीति विछोडी सुगुण सिउं, कुण राखइ लोक-लज्ज, घर बाली कीरति करइ. ते मांणसडां अकज्ज. १७६५ जे विण जीव न रही सकइ, तिहां मिलीइ सु वार, जोंवित कइ जण वल्लहां, हैडइ जोउ विचारि १७६६ दुरियन बोली न नेह टलइ, कांइ अधिकेर थाइ, छासि संयोगि दुध जिम, दहीं-रस अधिक सघाइ. १७६७ उत्तम वाघइ नोंच टलइ, दुरियन वचन सनेहि, वाइ उल्हाइ दीवडउ, अगनि अधिकेरु थाइ. १७६८ जिम जिम दुरियन आवटइ, जिम जिम विंद्य लोय, तिम तिम सजन सनेहडु, अधिक वधारइ छोय. १७६९ दोखी नेह वित्रोडवा, अछता बोलइ दोस, उत्तम दुरियन बोलडे, हैउइ नाणइ रोस[्] १७७० दोखी लाख गमें लवइ, लोक हसइ जो कोडि, तुहइं हूं वाहिंदू नहीं, वाहाला नेह विछोडि १७७१ किमहि कुलाचल कंपीइ, सायर-जल सूकंतिं, उत्तम बोलथी, न चलइ जीव-प्रयंत १७७२ तुहइ नाग-पाश बंधन थिकी, लोह-सांगलथी अहीय, वाचा-बंध क़ुलीन निं, न चलइ जां हुइ जीव १७७३ बोल्डेइ इम सार्थपति, पाम्यु अति आनंद, घरि जातां सुंदरि कहइ, वाहाला सुणि नेह-कंद १७७४ वहिला वली पधारयो, माया घरयो चिंति, वरस समाणी अघ-घडी, तुण विण थासइ मित्त. १७७५ थांपिणि महेलु जेहनी, बाधा आवु मित्त, मन-मणि मेहलिउं तुज कन्हइं, गोरी जाणे नित्त. १७७६ मुज मनि राखिउं गरहणइ, सञ्जन तुहइ धूरत्त, तु मन-मणि अहां मेहलीउं, मइं जाणी तुण वत्त. १७७७ नेह हसइ तु आविसिड, घणड न जाणडं झंखि, नीर तणी तरसालूया, आपइं आवइ पंखि. १७७८

ढाल २९

राग मल्हार

इणि परि नेह करी नवु, सारथपति सुविचार रे, आवइ जाइ संकेतडइ, जाणी अवसर अवसर दोर संचार कि० १७७९ जोउ विषय सनेहडु रे, ते तु नवि गणइ गणइ मरणनु संच कि, मांणस वेध विलुघडउ रे, ते तु नव नव करइ प्रपंच कि॰...दुपद पोयणि परिमल वेधीउ, भमर न वेइ बन्ध रे, नेहइ बंधा माणसां, ते तु दुषण जोवा अंध कि० १७८० जो सगपणि वाहालूं को नथी, वाहलां हुइ सनेहि रे, डील तणु मिल छांडीइ, वनमां फुलडां फुलडां वाहलां होइ कि० १७८१ जो सुंदरि अति धूरति थइ, सारथपति नइ संगि रे, पणि देखाडइ रायिन, ते तु भोलिम भोलिम केरडु रंग कि० १७८२ जो. अवसर पामी अेक दिनिं, गोरी करइ रूहांडि रे, मंदिरि लेइ आपणइ, वाहलां मूहिनं मूहिनं नगर देखािंड कि॰ १७८३ जो संदरि बइसी मालीइ, जोइ नगर रसाल रे. राइ राइवाडीई जतु, देखी चींतवइ चींतवइ हैअडइ रसाल कि० १७८४ जा. लींलाइं कीइं करइ, पापी अह भूपाल रे, हुं अंध-क्रुप तणी परइ, राखी दोहिलइ दोहिलइ पाताल कि० १७८५ जो. मन विरमिउं भूपालथी, सारथपति स्युं स्त रे, घूरत-रुक्षण रायमां, जउ हूं वीचवुं वीचवुं तु खरी मित्त कि० १७८६ जो. वचन करु अक माहरुं, जिमवा तेंडु राय रे, हुं प्रीसृं मारइ हथडइ, वा० रायनि रायनि चमकडु थाइ कि० १७८७ जो. गोरी गहिली कुणइ किरी, बोलइ सारथपति रे, तुं प्रीसइ भूपालनिं, वा॰ तुंहनि तुंहनि असी कुमत्ति कि॰ १७८८ जो. मह-मचकोडी मानिनी, बेालइ वचन विकार रे, भीरु सभावइ विणकडा, तुद्यमा साहस साहस नहीं रे लगार कि॰ १७८९ जा कर कांपइ तुली तालतां, बालतां वलगइ जीभ रे, घरि छोरु स्त्री उपरइ, वा० हाटनी हाटनीं पाडु रीस कि० १७९० जेा. त्रंबक कठीउ नाहासरी, तेहनी जाणु विगति रे, वेची साटी क्रियाणकां, जाणड हाटडइ वइसवा तणी रे युगति कि० १७९१ जो. दहा

कां कांटाथी उसरइ, भमरु केवडीआंइ, सज्जन माणस लोकथी, मिलइ तु वीहइ कांइ. १७९२ तुझनइ नेह तुझारडु, वाहालु छइ अपार, कइ अझारु खप नथी, कइ नेह छोडणहार. १७९३ पहिलु बोल न मानीड, लाघड मननु पार, राज करेयो विर वरस सु, छेहलिंड अझ जुहार. १७९४ भर्द्द ह्युं अक बोलडे, तुझ गुण लिइड अशेष, तुझ सिडं बोळ्या आंखडी, जु मिन होसइ तेख. १७९५ बाहालाइ बोल न मानीड, जीवयो सदाइ काल, जेहिसिडं हसीनइ बोल्यां, तस किम दीजइ गालि. १७९६

ढाल ३०

राग रामगिरि

[भाभानी दंशी, मम करो माया काया. अ दंशी]

सारथपति मन डगमगिउं, सुणी सुणी गोरी केरा बोल रे. व्याघ्न-तटी रे ऊखाणडु, थयुं थयुं चिंतडूं विलोल रे. १७९७ प्रेम लींड दोहिलु वाहलां केरडु, लोपी लोपी जाइ नहीं लाज रे. प्रेम रे बंधाणां ले माणसां, करइ करइ कहु किसिउ काज रे....दुपद. बोल्ड बोल्ड सुंदरी सिंस-मुखी, वाहला आणउ कांइ मिन मुज खेद रे, सनेह रीसिं रें जे तुं बोळीइ, निव थाइ ते सिव साच रे. १७९८ प्रे. दोहेलुं म घरयो वाहाला चिंतडइ, तुह्यनइ देउं छउं माहरडा सम्म रे, हसीडां न हुइ वाहाला साचलां, वहिंडू वहिंडू हूं तुद्ध किम्म रे. १७९९ प्रे. तोरइ तोरइ करि दोरी हीरनी, मोरइ गलि घाली नेह-फांसि रे. जउ हूं ताणूं तु हूं मरु, जोउ जोउ चिंतडइ विमासि रे. १८०० प्रे. हूं सुखिणी सुखि ताहरइं, दुखि मुज दुख थाइ रे, वहिची लीधां सुख दुख तहां लगइ, कीधी कीधी जहीं लगइ प्रीति रे. १८०१ प्रे. बुद्धि विशेखि अहे भोलवूं रे, मोटा मोटा इंद्र उपेद्र रे, किसी माणस वातडी, कीडाला मात्र नरेंद्र रे. १८०२ प्रे. सारथपति इम सांभली, मानिउ मानिउ गोरी केरु बोल रे, मांद थइ रहिड घर मीतरि, जोड जोड कपट कलोल रे. १८०३ प्रे.

साजड थइ वहीं दिनि केतलइ, आविड आविड राज-सभा मांहि रे. घणे दिन देखी मित्र आपणउ, पूछइ पूछइ राजन देइ सांइ रे १८०४ प्रे. घणे दिनि तुद्यो रे पधारीआ, बंधवजी ते कुहू-न विचार रे, माया रे उतारी दिन अंतला, वीसारिउ हुं है उा मजारि रे. १८०५ प्रे. तुह्य विण भाइ मनि माहरइ, हूं तूं हूं तूं सघलइ रान रे, निसि-दिन सार्राण हैडलइ, बधवजी ताहरइ वियोगी रे. १८०६ प्रे. तुह्म मन कहउ किम रही सिकड, अता दिन विण मिलई मुज रे. कांइ कहु डीलइ अति द्बला, भाइजी बलिहारडी तुज्झ रे. १८०७ प्रे. नयन संकोची देइ मरकला, कोटवाली कहइ तव सेठि रे. हूं तुह्य सेवक पाघर, वसूं वसूं तुह्य पाय हेठ रे. १८०८ प्रे. सह साथइ अविचल नेह घरइ, अहुव अहुव सुजन आचार रे, चंदन चंद हुइ उजलां, चीतरियां सहिज हुइ मोर रे. १८०९ प्रे. जे मिन मान्यां है जेहिन, ते तु बाहलां वेगलड इन होइ रे, लोक छानां मन परगटां, नितु नितु मिलण सजाइ रे. १८१० प्रे. कारण कृश-तणं सांभलड, हूती हूती मुज असमाधि रे, यम-घर थकी पाछउ विछउ, बंधवजी ते ताहारइ प्रसादि रे १८११ प्रे. उछव कारणि तेह भणीं, बंधवजी ते वीनती अवधारु रे, भोजन कारणि नहुतरुं, मोरइ मोरइ मंदिरी पधारु रे. १८१२ प्रे. आप्रहिं अति राय नहुतरी, तेडी आविड परिवार साथि रे, सुंदरि करीक्ष शृंगार ते, प्रीसवा आपणइ हाथि रे. १८१३ प्रे.

ढाल ३१

राग सामेरी

आंखलडी जेहनो अति अणीआलि, वर-चांदलु चुढिउ भालि, वर्ली कूंकम गेरिडे गाले, सेहिइ श्रवण सेविन-जालि १८१४ कंठी ठवी मेतिनी जालि, अति जीणी किट लंकालि, पिंग झांझरडां ठमकालि, गेरिश रूप रसालि १८१५ बांहडली जेहनी अति लटकालि, अति केमल कमल सुनालि, चालंती जिसी चतुर मरांलि, जिहां मयण करइ अति आलि १८१६ अतिहिं अमूलिक प्रहिरणि फालि, मद भिंभल मयग चालि, चंपक-विन तनु अति सुकमालि, कंठि सेोहइ चंपक-मालि १८१७ हठ मंडइ अधर-प्रवालि, वर-चित्रित जे पटशालि, मनमेाहन अति सुविशालि, सा प्रीसणि आवी बालि १८१८ करि सोविन करवी झालि, पुहुती प्रगट सभावि चालि, तिहां आसन मेहलियां ततकाल, प्रीसहं बिपहुर करेड कालि १८१० अति सुंदर सोविन-थालि, सहू बहसह हाथ पखालि, वरमोदकनी आवी डालि, कपूर-वासित सोविन-सालि १८२० मनगमती मसूरनीं दालि, जे सुरभित घृत नीकालीं, भव-भूख शमहं विकरालि, बळूटी तिहां घृत-नालि १८२१ सरसीनां जिंम हुइ घडनालि, जाणे वरसेइ मेह अकालि, जिम खलहल जल वहह खालि, तिम प्रोसह चित्त रसालि १८२२ शत सालणे बांथी पालि, प्रीसह सुंदरि सा पातालि, चित्ति चमिकेड ते भूपालि, सीस धुणेह रुप निहालि १८२३

ढाल ३२

राग केदार गुडी

[श्रेणिकराय हुरे अनाथी नीग्रंथ, अदेशी]

ते देखि भूपति चोतवइ, पातालसुंदरि जेह, तिहां थकी किम आवी सको, माने मोटउ रे पठइउ संदेह. १८२४ भूपालजी चिंतइ हैंडा मजारि, देखी देखी प्रीसंति नारि, थयु थयु रे चंचल ते वारि ... दूपद, आंचली. पातालाधिर मेहली करी, हवडां जि आविउ अत्र, जे सार्थपतिनी कामिनी, ते सरखी रे रुपि विचित्र १८२५ भू तस नयन तिल सर्खप समी, दीसीइ सारथ बहूंअ, अथ रुप-लक्षणि समां, दीसाइ दीसइ रे माणसलां बहूय. १८२६ भू ते वात निश्चय जाणिवा, भूपति करइ उपाय, प्रोसीय जातां पूठिथी, नांखइ रे हो तीमननी छांट १८२७ भू ते धूर्त भूपति चित्र लही, चीतवइ हैंआ मजारि, तु छइल पणि मुज आप्रलि, पय-रेखा रे सिर सविचारि १८२८ भू निज काज करवा सीयल, जण लहइ सज्जन मुग्ध, तेणि ज माया निम्मया, निव बोली रे विणासइ विदेग्व, १२८९ भू तेणि ज माया निम्मया, निव बोली रे विणासइ विदेग्व, १२८९ भू

अणजाणतानी परि थइ, भूपत्तिनइ पूछेइ, निज काज करवा सुजन ते, मन मांहि रे अजाण सहोइ. १८३० भूर राजन्नजो रूचतु नथी, भोजन्न विख सम थाइ, अथ विणगने आहरडे, तुझ नयणां रे किम भराइर १८३१ भूर कह केाइ वाहलां सांभरियां, प्रिय परम प्राणाधार, जे विना आहार न उतरइ, इम हसइ रे वचन विकारि १८३२ भूर संदेह विस्मय पर थकी, अति त्वरित ऊठी राय, तंबोल वस्त्र लेइ करी, निज मंदिरि रे वहिलडु जाइ १८३३ भूर

ढाल ३३

राग: मल्हार

(श्रेणिक राय हुं रे अनाथी नीग्रंथ, अ देशी)

ते वस्त्र छंडी कामिनी, पहिरी अवर तद्रुप रे मुहु ढांकी सूती सेजडी, तव आवीउ भूप रे. १८३४ जड जड धूरतनी कला, वंचिड राय सुजाण रे, जे मान हूंती वातडी ते चडी प्रमाणि रे....दुपद तालां सर्वि उघाडोयां, मनि शंशय माटि रे. आवी जाइ नव सुंदरी, सूती दीठीअ खाटि रे. १८३५ जे. जंभा खाती हाथडे, उठी चेालती आंखि रे. अंग सवे मचके। इती, उठी राजन देखि रे. १८३६ जे. वस्त्र मेहलावी आगलिं, बीजां देइ भरतार रे, तीमन केरां छांटडां, जे।इ वार सुवारि रे. १८३७ जे. बिंदु मात्र दीठउं नहीं, भाग शंशय चिंति रे. शीलवती ए सुंदरी, अहीं किसी नहीं भ्रंति रे १८३८ जे. तिहांथी निःशंकितपणइ, वर भागवइ भाग रे, राजन अति रातु थयं, कुहुनु नवि छहिउ ये।गरे. १८३९ जे. गरव धरंती अति धणड, मन मांहि सा नारि रे, सारथपति नंइ इम भणइ, वाहालाजी अवधारि रे. १८४० जे. परविस रहिवू राचनइ, वली भूमिगृह मांहि रे. के। अवसरि मिली न शकुं, थे।डु मिलण प्रवाहि रे, १८४१ जे.

जयवंतसूरिकृत

संज्ज थाउ तिणि कारणइ, आपण जेइइं परदेश्स रे, यौवन-लाहु लोजीइ, दिन गया नव लेसि रे. १८४२ जे. कायर उत्तर आपिवा, तुहइ किह रे अनंग रे, राजन किम जाणइ नहों, सुणि सुगणि सुरंगि रे. १८४३ जे तु वलतूं सुंदरि कहइ, सुणि प्राण-आधार रे, मेाकलावो आवूं रायान, तु मुज मित सार रे. १८४४ जे. व्यापार सधलु संवर, लेड ब्राह्म-कयाण रे, प्रतिबंध टालु लेकिनु, सज करु सिव वहाण रे १८४५ जे. कायर पणि नेह विस थकी, करी सकल सजाइ रे, राजननइ मेाकलाविवा, आविउ कृतम भाइ रे. १८४६ जे. कृतम-लेख देखाडीउ, माय-ताय आलापि रे, राजनजी अहा चालिवा हिव शीखडी आपि रे १८४७ जे.

दुहा

पंख पसारी पाहुणा ह्ंसा उडणहार, सरेावर सनेहा आपणा, समरेयो के वारि १८४८ मात-पिता जाइ वाटडीं, राजन दिउ आदेश, आव्या दिवस घणा थया, हिवि जासिउं निज देस १८४९ वचन सुणो राय गहिबारेड, सजल हूआं नयणांइ, करवत नींपरि अति दहइ, बंधव तुज वयणांइ, १८५० माया मांडी तिं तिसी, बांधवजी मुज साथि, अह अह्यारु जीवडुं, जिम आवइ तुह्य साथि१८.५१ जउ तुह्यो चंचल चित्त हता, तु कां मांडी प्रीति, अह्म सिउं वइर हतू किसिउ, जे अवटाडिउ चींत. १८५२ मिं जाणिउं मंडी जिसी, तिसी पालेसिड प्रीति, जड जाणत खाटारडा, तु हूं न मिलत भीति. १८५३ प्रीति करी जे परिहरइ, नीसत नइ निस नेह. वहरोथी अधिक देहइ, नितु अवटावइ देहि. १८५४ सुरयनि नितु अत्थमण. चंद कलंकी वहालां तणा वियोगडा, दैवइ दुखण दिद्ध १८५५

हे करतार वरांसडु, मोटु छइ तुज मांहि, वहांळां माणस मेळवी, करइ विछोह प्रवाहि १८५६ वलत् सारथपति भणइ, राजनजी अवधारि, जिहां संयोग वियोग तिहां, अहवी गति संसारि १८५७ तुह्म स्यु बांधी प्रीतडो, अवर न कोइ स होइ, तुह्मनइ मोकळावी जतां, हैंडइ दुख न समाइ १८५८ भिं देसंतरि आव्या, घणी उपार्जन किंद्र, तुह्य सरखां सञ्जन मिलियां. मन मनोहर सिद्ध. १८५९ प्रीति मिली तुह्य सिउं खरी, रखे विसार चित्ति. जिम वाधइ अधिकेरडी, ते परि करयो मित्त. १८६० दिन दिन हुइ वाघतो, तेहजि प्रीति प्रमाण, क्षणि वाधइ क्षणमां घटइ, ते प्रोतिं स्य काम. १८६१ नइतरु वाहाण सरावलां, सज्जन तणा सनेह, पहिलुं हुइ थोडिला पछइ वाघइ छेहि १८६२ आसे। मेहा करवडा, नीचह नेह-विलास. छेहि थोडा पाहिल् घणा, वेणी वास अवास. १८६३ जनम लगइ विद्वाह नहीं, कीधी जेहिस उंप्रीति, दिन दिन वाघइ चंद जिम, ओहवी उत्तम रीति. १८६४ छेहइं थोडी धुरिं घणी, चांपी नीरस थाइ, अहवी मींठी सेलडी, पणि प्रीतडी न कहाइ. १८६५ उछां मांणस प्रीतडी, सायर तणा कलोल. क्षणि वाघइ क्षणि उसरइ, मांडो न रहइ निटाल, १८६६ पय छंडइ महुरप्पणउं, छासि ज साथि मिलंति, दुरियन वचिन नेह तिजइ, ते मांणस नवि हुंति. १८६७ दुरियन बोलडे, अधिकेरुं मिलंति, छासि संयोगइ दुध जिम, दहो-रस अेक भलंति. १८६८ दहों अवगुण अक छंडोइ, जड मंडीजइ प्रोति, मथतां मथतां नेह त्यजइ, नींच तणी अ रीति १८६९ प्रीति न कीजइ तेहवी, जेहवी जल कमलांइ, कमल मरइ जल सूकृतइ, जल न धरइ मन मांहि. १८७० 96

सारस सरोवर अलि कमलांइ, हंसा कमल सुगंध, अेह सवारथ मित्तडी, चकवी अनइ दिणंद. १८७१ चंद चकोरह सायरह सूरयनइं कमलांइ, दीठिथी मन उल्लसइ, नयण सनेह कहाइ. १८७२ मेह गजंति मोरडा, पामइ अति उल्लास, ओ निसवारथ प्रीतडी, दीठिं हुइ विलास १८७३ आंबा-वन नइ कोकिला, बप्पीहा नइ मेह, तेह विण न मिलइ अवर सिउं, सज्जन तणा सनेह. १८७४ राती कांबलिनी परइ, कोंजइ प्रीति सुचंग, उखेंडिउ नवि उखडइ, बइठउ अविहंड रंग. १८७५ सज्जन तणा सनेहडा, काळा-उन वरस सु सइं जोइइ, तुहइ तेहवु वान, १८७६ दिणयर नइं दिननी परइं, पाली जइ प्रतिपन्न, दिवस विना सूरय नहीं, दिन नहीं दिणयर विन्न. १८७७ तेहवा कीजइ मित्तडा, जे अविहड परिणामि, किमहि न हुइ पर-मुही, जिम भींतई चित्रांम. १८७८ सज्जन कीजइ तेहवा, जेहवा अडागर-पान, जिम भावइ तिम चांपीइ, तुहइ रंग निधान. १८७९ विरला जाणइ प्रीतडी, विरला करी लहंति, ते थोडा पहि थोडिला, कीधी ज पालंति १८८० दीठइ बोलावइ करी, नितु नितु के मिलणेण, इणि परि वाघइ प्रीतडी, जिम वेलडी जलेण. १८८१ दूरि गईं अवराह कईं, जस हैंडु न चलेई, तेहजि सारी प्रीतडी, परिचय अवर कहेइ. १८८२ अणदीठिं अति देखवइ, दीठे अण बोलंत, अति मानइं विदेसि गईं, इणि परि नेह टलंति १८८३ महिल्य-जणह अदंसणि, अइं-दंसणि णीयस्स, दुरियन बोछिं नेह टलइ, मुकखुस्स य नियस्स. १८८४ जेहवी कोमल आंखडी, तेहवी प्रीति कहाइ, तिल-तुस-मित्ति विष्पअइ, क्षण मांहि कुरमाइ. १८८५

किशलय रत्नां अहिय कुसुम, फल रत्ता यहि रत्त, दाडिमनी इरि सुजनना, वाघइ नेह नित नित १८८६ राजनजी एणी परिं, घणे प्रकारि सनेह, जे परिजाणड रुपडी, चित्रि धरयो तेह. १८८७ रखे वीसारु चित्तथी, माहारा सम छइ मित्तः थांपिणि मोहली जीवनी, समरेयो नित नित्त १८८८ रखे अहवुं जाणता, जे छं हूं परदेसि, जे मनि मान्यां आपणइ, तेहनु हीइ-निवेसं १८८९ अंबरि गाजइ मेहलु, तलिथी नाचइ मोर, जे जेहना मनमां वसिया, ते तेहनइ नहीं दूरि १८९० ते किम कहीइ वेगला, जे मन माहि वसंति, रात्रि-दिवस जब संभरइ, तव हैंडुं विहसंति १८९१ ते वेगलांथा दुकडां, जेहसिउं चित्त मिलंति, ते दुकडांथा वेगलां, जे मन मांहि न हुंति १८९२ कांइ अपराध करिया हुइ, खमयो अमीणा दोस, अति परिचय प्रेमह थकी, चित्ति म धरयो रोस. १८९३ बंधव वोसारु रखे, एता दिननी प्रीति, को अवसरि संमारयो, धरयो अह्यनि चौंति १८९४ ' उत्तम जे पालाइ सदा, धरि 'इ' कार करिजु, अंतिम अक्षर परिहरी, अह्मनइ बेहुंअ धरिजु १८९५ मानव मोहन वेलडी, आद्इं करि एकार, अंतिम अक्षर दुरि करि, धरयो हैया मजारि १८९६ वलतुं भूपति इम भणइ रे, बंधव सुणी वत्त, ते वाहलां किम वोसरइ, जेहसिउं लग्रुं चित्त. १८९७ किहां सायर किहां चंदछ, किहां मेहां बप्पीह, सजन सनेह नवी वीसरइ, वीसारता निसि-दीह. १८९८ ल्वणह-पाणी होइ मिलियां, कीधां जुआं न थाइ, जे सज्जन मन स्यं मिल्रियां, ते किम वीसारियां जाइ १८९९ बंधव तुं जिणि देसडइ, तिहां जाणे मुज प्राण, काया सुनी रहवडइ, किसो न दोसइ सान १९००

सज्जन सिहजिं चोरटा, चोरी करइ नित नित्त, जाइ छइ अह्य देखतां, चोरी अह्यारां चीत्ति. १९०१ रागवती मन मांडवइ, ऊगी प्रीति-लयांइ. नेह-जल्र नितु सींचयो, जिम निव सूकी जाइ. १९०२ तुह्म म जाउ जउ कहूं, तु अमंगल होइ, जाउ कहितां जीभडी, नीठर शत-खंड होइ. १९०३ गरुअडि बद्द्यु जड कहूं, जिम रुचि अदासीन, वाहलां मांणस चालतां, उतर दि किम मन्ड. १९०४ जल-भरि नयण न जोइ सवइ, गद्गद् कंठ सशोकि. गहिंवर थइ रहिउं, वाहलां जातां शोक. १९०५ माया उतारु रखे, गया पछी परदेसि. रे सज्जन गुणवंत वली, तूंह नि कहीइं मिलेसि. १९०६ क्रुशलखेम पंथइ ह्यो, वहिलां वलण करेड. मनवंछित कारय करु. को अवसरि समरेड. १९०७ तुह्ये सञ्जन गुणवंत छउं, मिलसइ सजन अनेक, पणि अहा है अंड तहा विना, ठरसइ नहीं किहिं अंक. १९०८ भमरांनंइ फूळ ज घणां, सरोवर घण हंसाह, मित्त घणा सुमाणसह, परदेसडइ गयांह. १९०९ सार्थवाह उवाच-ठामि ठामि दीसइ घणां, नदीआं वावि तलाव, मेह विना बप्पीहडा, कहि न करइ मन भाव. १९१० विन विन चंदन-तरु नहीं, सरविर सरविर हंस, ठामि ठामि सज्जन नहीं, जेहथी पुहुचइ हुंस, १९११ सरवरि सरवरि कमल छइ, निरमल नीर अपार. पणि मानस विण हंसनूं न ठरइ चित्ति लगार. १९१२ वन-वाडी तरुयर घणा, पणि कोइलि नि अंब, जेहिन मिन जे वल्लडु, ते विण तेह निरत्त. १९१३ सज्जन सभावइ भमरलु, ठामि ठांमि बइसइ, पणि मालति विण ईसन्, न ठरइ चित्ति लगार. १९१४ राजन तुह्यो सुजाण छउ, मिलसइ मित्त घणांइ. गुणवंता अरथी घणा, रखे वीसारु तांइ. १९१५

राजा डवाचअेक जि हंसि सरवरह, जे शोभा जग मांहि,
बगला कोडि गमें मिलइ, तुहि न नयण भराइ १९१६
सार्थवाह उवाचजिम सरोवरनां हंस विण, दिन झूरंतां जाइ,
तिम सरवर विण हंस पणि, झरी पंजर थाइ १९१७
सजन सीलाया-सुहेडी, वैर सुभाषित सारि,
अे मेहलंतां दोहलां, वेध व्यसन संसारि १९१८
राय प्रतिं इम बूजवी, सुभ दिनि शुभ महूंरत्ति,
प्रवहण पूरी सज थयु, जावा सारथपति १९१९

ढाल ३४ राग केदार गुडी

सारथपित हवइ सज थयउ, जावा जाव मणि-दीपगामि रे, राजन आविउ रे मोकळाविवा, पूठइ पूठइ सायर तीरि रे. १९२० राजन करइ मोकळामणी, वरसइ वरसइ आंसूडानी धार रे, सजन जातां परदेसडइ, हुइ हुइ दुख अपार रे. १९२१ दुपद राज० आंचळि.

एणइ समय भूमिहरमां थकी आवी आवी सणग-दूआरि रे, सुखासिन बइसी राय, आगलइ आवी आवी करीअ ग्रृंगार रे. १९२२ राय प्रति धूरित इम कहइ, कीधु कीधु घणडअ प्रसाद रे, राजन देस विदेशडइ, रहिसइ रहिसइ अह्य जसवाद रे. १९२३ तारा तारा चरणप्रसादथी, रहियां रहियां सुखइ ओणि गामि रे, कीधी कीधी घणी रे उपार्जना, सीधां सीधां चितित काम रे. १९२४ राजन तुह्य बहूमानथी, कीधड कीधड जे अपराध रे, खमयो खमयो ते सवि दोसडा, करयो करयो वचन अबाध रे. १९२५

दूहा

अतिहिं सनेहां संग थकी, जे अभ्मीणा दोस, खमयो सवे अपराघडां, मित्त म धरयो रोस. १९२६ सञ्जन सनेहां रूसणइ, जे उलंभा दिध्ध, वीसरतां न वीसरइ, जे मन मांहि प्रसिद्ध. १९२७

१. श्रुभ हूंरित २. सारय

सार्थबाह उवाच-सजन सदा संभारयो, छेहल्जि अह्य जुहार, न जाणुं मिलसुं कहां, विसमुं विहि–त्र्यवहार रे. १९२८

देशी पाछिली

इणि परि त्रणि जण परविरयां, पुहुता पुहुता सायर तीरि रे, राय प्रतिं करीय जुहारडु, सारथपित अति वीर रे. १९२९ सारथपित अनइं कामिनी, बइठा प्रवहण मांहि रे, प्रहवण पूरियां परिवार सिउं, चालियां चालियां सायर मांहि रे. १९३० सुंदिर सारथवाह सिउं, हुइ खटमास रत्त रे, प्रवहण पूरियां जाइ सावारि, सुणयो सुणयो हवइ हवी वात रे. १९३१

बंधव सारथवाहनुं, नाम तिसिडं परिणाम, नामि सुकंठ सुकंठ छइ, गीत गुणइं अभिरांम १९३२ जांणइ ऊपजि रागनी, भाखा रतुनइं वान, तान मान लय मुर्छना, राग वणड निधान १९३३ प्रिय दूती प्रेमह तणी, सेनानी मयणांह, राग जयउ आनंदमय, जे मंडन वयणांह. १९३४ भमर छयल्लह मुह कमलि, गोरी मानस हंस हैडा भावह पोषाणड, किज्जह गीय प्रशंस १९३५ दुखीयां दुख वीसारणाउं, केलीहर सुखीयांह, वाहलां विरहीय उल्हवण, बलि किजुउ गीयांह. १९३६ दुखीया दुख वीसारणडं, मन ठारवणडं मित्त, दुखीया संभारणं, गीय गति अह विचित्र १९३७ राग न वसीया मुहि जस, गीइ भेदिया कन्न, वा पइसैवा विवर ए, एहवूं कहइ सुजन्त १९३८ आघा दुख-पंजरि ठिय, अध हुउं चडभागि, कांइ नीसासे कांइ नयणले, कांइ दूहे कांइ रागि. १९३९ गाहा गीय सुमाणिस, वेधिया झुरी मरंति, घण पइठउ जिम अंबमां, सूकी झींणा हुंति. १९४० बाहलां विरह वीसारणडं, जु जिंग राग न हुंति, तु शरणां विण सरह जिम, हैअडूं फाटि मरंति. १९४१ सायर मांहि वेरडी, भिंछ सरजी किरतार, ·दुख–सायर संसारमां, कीघड राग-आधार १९४२ गीय-रस जाणइ दुन्ति जण, हरिणानइ हरिणांखि, जीवित आइ हरिणलां, तनु अपइ हरिणांखि १९४३ गीय सुणीनइं रंजीया, जे अप्पइ निज प्राण, मांणस पहि ते मृग भला, नहीं मांणस अजाण. १९४४ जेणि न जाणिया गीय-रस, गाहा गुठि न किद्ध, ए मांणस जंबारडु, तस कां देवइ दिध्ध. १९४५ जे दुखीयां प्रिय विरहीयां, को ठारवण न होइ, गीत सखाइ तेहनइ, मन दुख वहिंची छइ. १९४६ अति गुणवंत सुकंठ ते, देअर नइ संबंधि, हसतां बाघउं हैअडऌं, जिम लोढानी संधि १९४७ सुंदरि चिंतइ चित्तमां, विधन समाणउ कंत, एहनइ हवी सुकंठ सिडं, विलस्ं सुख अत्यंत. १९४८ सोंह वकरिंड वध करड, मारइ मथगल मत्त. कंत हणइ वली आपणउ, गोरी पर-धरि रत्त. १९४९ तनु-चिंतांइ सार्थपति, उठिउ तेणी रत्ति. सुंदरि ते अवसरि छही, सायरि पाडिउ कंत. १९५० पडखी वेला केतली, कीघड सबल पोकार, कृत्म विलपइ कामिनी, है है विषय विकार. १९५१

ढाल ३५

राम मारुणी

(काशीथी चाल्या महाराय रे, अ देशी)

वली वली विलवइ नारि रे, वाहाला वीनतडी अवधारि रे, हूं तु एकलडी निरधार रे, तूं तनु प्राण तणउ आधार १९५२ दुपद...आंचली

नाहींन मेलु रे मालु रे.
ए तु प्रीड विण किसिड संसारि रे, मूहनइ न गमइ सोल-शृंगार रे,
मुज भूषण सघलां भार रे, मुहनइ तुज विण सरव असार रे. १९५३
तूं तू पूरव-प्रेम संभारि रे, ए तु करसइ कुण मुज सार रे,
वाहाला तुज विण पीडइ लइ मार रे, ए तु दहइ मुज विरहविकार रे. १९५४

वाहाला वेघडु लाइ म मारि रे, तूं तु वाहि न वरि तरवारि रे, कंता कइ ए दुःख निवारि रे, मूहनइ न गमइ अन्ननइ वारि रे. १९५५ तूं तु जोइ न चिंति विचार रे, ए तु उत्तम नुहइ आचार रे, जे वचनइ कीध उच्चार रे, किम तिजीइ तेहनीं सार रे. १९५६ वाहलां तूं मुज मननु हार रे, मुज मूकइ मदन-प्रहार रे, पापी विरह करइ संहार रे, तूं तु ए दुख-भंजणहार रे. १९५७ कुण आगिल करूंअ पोकार रे, ए वेदन गिरुइ अपार रे, एतु दुतर-सायर पार रे, दोहिलु दैव तणउ ब्यापार रे. १९५८ वाहाला ए मुज कुण प्रहचार रे, कइ को दुरियन वचन-प्रचार रे, एवी वार्ति कोइ न माहार रे, दोहिलु दैव तणउ ब्यवहार. १९५९ मुज विख सम थाइ आहार रे, वाहाला तु ज विण घोर अंधार रे, तूं तु बोल्लि−न प्रीउ एक वार रे, जूरी जूरी हूं थइ छाहार रे. १९६० वाहला पूरव-प्रीति वधारि रे, मुज मिन वहइ करवत-धार रे, मूहिनं दुख-सायरथी उतारि रे, मुज तनु विरिह म दारि. १९६१ पापी धिग धिग ए किरतार रे, कांइ कीधु मनुस्य-अवतांर रे, मिं न खमाइ विरह लगार रे, वाहालु पीडइ खइर अंगार रे. १९६२ काहे वीसारिआ तमसु प्यार रे, हूं वली वली करुं झुहार रे, मेरा गुनह काया वींसारि रे, हूं तु याउंगी तोरी बलिहारि रे. १९६३ तुज आणइ भवि भरतार रे, बीजा कोइ न गमइ गमार रे, वाहाला मुज मिन तूंह मंदार रे, बीजा आक तणा अंबार रे. १९६४ तूं तु अधवचि नांखी रहिंत भार रे, दीधउ आशा-वेलि कुठार रे. वाहाला तुज विण नयर कंतार रे, मिन अवडु न धरीइ खार. १९६५ मुज घडी एक नहींअ करार, पापो पीडइ विरह-तुखार रे, मोरू प्रीउडु जिम सहिकार रे, हूं कोइलि कर' कुहु-वार रे. १९६६ वाहला चडु चंदन चीर रे, मुज न गमइ अन्न नइ नीर रे, शीतल-मलय समीर रे, मोरु झंखर थयुं सरीर रे. १९६७ तूं तु यौवन-फल तणड कीर रे, तूं तु सुरत-समर तणड वोर रे, हूं वोंटी तू नर-हीर रे तूं तु गिरुड गुण गंभीर रे. १९६८ पिंग पिंग निगड समा मंजीर रे, वागइ विरह तणा वली तीर रे, एणइ नयणे नावइंड हीर रे, जीव बांधंड तुज सिडं मीर रे. १९६९ तुज नावी हैंडइ महिर रे, मुज धरणी तूं दिइ वहिर रे, वखाउं वाहाला विण जिहर रे, मि न खमाइ विरहनुं किहर रे. १९७०

दुख-सायर वाघइ लिहर रे, मन माहइ गाजइ गुहिर रे, वली डील वलुरइ नहिर रे, आछेटइ सघलुं सयर रे १९७१ मेरइ तिनथी उडी गयुं रुहिर रे, नोंसासे उन्हा अहर रे, युग सरखा थाइ मुज पहुर रे, क्षण मांहइ आवइ तुर रे १९७२ के इटालु अ मुज विहुर रे, तस दिउगी से विन-महुर रे, निव भावइ अन्न सुमुहुर रे, विरहानल दाजइ ऊर रे १९७३ जिम समरइ समरस शूर रे, जिम चकती समरइ सुर रे, जिम क्षुधातुर वंछइ कुर रे, जिम में।गी केसर कपुर रे १९७४ तिम समर्गु तुज गुण-पृर रे, वा अबला सिउं सिउं जोर रे, इम कांइ जइ रहिउ दूरि रे, तू तु मनह-मने रथ पूरि रे १९७५ हूं मयणइ की धो चूर रे, वा वाघइ विरह-अंकूर रे, तूं तूं इम कां करइ असूर रे, तुज विण गयुं मुज नूर रे १९७६ हूं में।तीनु तुं दे रे, गल्इ साही राखिउ जिम चे र रे, ६९७६ हूं में।तीनु तुं दे रे, गल्ड साही राखिउ जिम चे र रे, ६९७७

ढाल ३६ राग मूपाली

(पीड आपो रे महारो पुत्ररतन्न, अे देशी)

कंतह मारु सायरि पडीउ, इम का दैव ज नडींउ रे, हैडा साथई हूंतु जडीउ, क्षणमां किम ऊजडीउ रे. १९७८ कांमणडूं कांइ कंतइ कीधूं चिंतडळूं चारी लीधुं रे, आशा-वेल्रड करवत दीधू, अेकड काज न सीधुं रे....दुपद० हैडा मांहि आस घणेरी, वालिंम हूती तेरी रे, देव तणी गित कां केरी, ते सिव नांखी फेरी रे १९७९ कंतह मारू दोस ज काढउ, इम कां थइ रहिउ गाढउ रे, तूं वैश्वानर दीसइ टाढउ, वहालां सिउं सिउं ताडु रे. १९८० सुणो केालाहल अति दुखकारी, धाइ आव्या पाहरी रे, नींजामा जोइ नीर मजारो, सुंदरि रठती वारी रे. १९८१ जेातां जेाता शृद्धि पामी, कुणिह न दीठउ स्वामी रे, असती मरण पामेवा थाइ, सहूइं राखी साही रे. १९८२

ढाल ३७

राग धन्यामी

🦠 (भल्ने रे पधार्या तुहमे साधुजी, अं देखी)

इणइ रे अवसरि राखी सुंदरी, पडती पडती जलनिघि मांहि रे, सह रे सुकंठादिक इम वीनवइरे, तूं अह्य स्वामी तणइ ठाइ रे ९९८३ लक्षण रे धिग् धिग् असतो केरडां रे, तिजीड तिजीड राजन कंत रे, सारथ रे नायक सायरि नांखींड रे, अहवी अहवी स्त्रीना वृ तत रे.. दुपदः वनिता साथइ केाइ म राचर्यः अहन् रंग-पतंग रे. कामिनि चूकी जे अंक कंतथी रे, तह इ हुइ बीजइ किम रंग रे. १९८४ मदमंत रे कामाली सा कामिनी रे, वि इ विलस इ सुंकंठ साथि रे, मनमां रे चिंतइ सोइ सुकंठजी रे, अहुन अहुन न कीजड वॉसास रे १९८५ छंडिउ रे लीला लहिर भूपालजी रे, छांडिउ सारथवाह रे, बनिता रे ते सिउं होसइ मृंहनइ रे, देसइ देसइ अवसार दाह रे. १९८६ मनसिउं रे विरमिउ गुणवंत तेहथी रे, विलसइ विलसइ मन विण भाग रे, जिम का काराग्नहमां राखीउ रे, जांणइ जाणइ तेहवु संयाग रे. १९८७ अहवइ रे सारथपति सायरि पडिड रे, कांइ कांइ करम-संयागि रे, पामिड रे किहि अक प्रवहण-पाटीड रे, जिम विरहो प्रिय-संयोग रे १९८८ कांइ रे यभ संयोगि पाटीड , लागुं लांगुं सिंहलद्वीपि रे, सारथ रे नायक तव समतु रे ि इ चिंतइ है डा मझारि रे १९८९

आभां केरी छांहडी, वीजलडीनुं तेज, क्षणमां हुइ विश्राल जिम, तिम कामिनि केरुं हेज १९९० जाणिउं तूं गुणवंति छिं, तु मइं मांडी प्रोति, क्षण अक रंगपतंग नउ, अह्वु नाविडं चींति १९९१ तूं अविहड जाणी हती, वाहालो वहिडी कांइ, जस खालड शिर कांकीड, ते का छेदी जांइ १९९२ जु तुहमें कीया सनेह, तु कां बिछोहा दाखव्या, नाउ वाहलो मूं केाइ, करवतडी आपड गलड़ १९९३ अंब न हुइ आंकडु, रांडणि नुहइ निंब, उत्तम तु वहिंदू नहीं, नीर्र न बुडइ तुंब १९९४

सुद्भुक्तां निगुनां डेक्क क्कड्, बडि कन्त्ं पाकंबि, ते सम्जन मुख इंखीबा, नितु दिगयर डगंति १९९५ कसतां कांसा कस नहीं, दीसइ साविन वन्ना, लाग् हैया भरंसडु, जब गुण लहिया सुजन्न १९९६ तिकां सरजिउ देव रे, उछां साथि सनेह, धडीय न रागइ छांडतां, जिम कातीना मेह. १९९७ सुगुणां साजन थोडिलां, जेहिसउं कीजइ नेह, निगुणां घरणी-तिल घणां, पिंग पिंग आपइ छेह. १९९८ भमरु बइठउ भोलपणि, सींबलि देखि सुरंग, जव जाणियो गुण सेवतां, तव हुउ मन-भंग. १९९९ मोती तणइ वरांसडइ, कांकरडा चिणइ हंस. सज्जन तणइ भोला वडइ, कीध कुमाणस संग. २००० जड दीठ मन तोहरुं, तु मि कीड सनेह, पहिली माया दाखवी, हवई कां आपिउं छेह. २००१ नेहा कीजइ तेतला, जेता निरवहिवाइ, नाउ पर संतापीइ, मेहली आदरीआंइ. २००२ वाइारी मुजसिउं बोलती, जोती नेह नयणेहिं, मुज कारणि सहूं वंचती, ते किहां गयु सनेह. २००३ भमरइ जाणिउं फुल अे हसइ सदाइ सुरंग, मन आशा मनमा रही, क्षणमा थ्यु विरंग २००४ 🕟 सजनीआ थइं ते करिउं, जे वइरी न करत, प्रीति-ढंढेरा जगिदीआ, भींतरि जीव बलंति. २००५ धरि आडंबर कां करइ, जड़ नही निरवहि नार, वइरी न करइ ते करिउ, हैडइ करवत-धार २००६ सोगत मन साचतुं करिउं, सञ्जनि त्यजतां नेह्, करतां मन हूंतू जूडं, जूडं देता छेह. २००७ ताहारइ मनिसिंड ऊपनुं, सिडं वसीड मनि दोस, ते मन तेह सनेहडा, छांडो आणिड रोस. २००८ इछा नयण-मेळावडउ, मेहळंतां जीवि मेहनाइ, जिहसिउं रंग रम्या सइ, ते कहु किम मेहलइ. २००९ मांणसडां नवि धीरीइ, बाहिरि देखि सुरत्त. वरि अंक वरस विलंबीइ, जोइ दीजइ वित्त २०१०

फटि रे पापी हैं अडला, नींसुत नावइ लज्ज, मांणस विरमियां चित्त सिंड, तेहनी किर लालचि २०११ तीह उलंभा दीजीइ, जेहिसिडं आगिल काम, जे मनमांथी उतिरयां, निंव लीजइ तस नाम २०१२ उल्लां चित्त न चालीइ, विर खमोइ दस दोस, इम करतां जह नेह तिजइ, तो तिजीइ तस सोस २०१३ भागी डाल न वलगीइ, निंव कीजइ अंदोह, चित्ति विरतां मांणसा, मिन निव घरिइ मोह २०१४

ढाल ३८

राग धन्यासी

(पहिलु माणस मोह करइं, अं देशी) सारथपति इम चौतवह रें, है है अधिर संसार, का कहिनूं नहीं वल्लहूं रें, कुहुनां स्त्री-भत्त रें. २०१५

त्रक

कुहनां स्त्री-भरतोर सगा नह, कूडु ए संसार, जे स्त्री कारणि पातक कीधूं, तेहनु एह सकार, पोढड पृथिवीपति मिं वंचिड, मित्त-द्रोह वली कीध, वोसासघात कीधड वली जेहिनं, तणइ दुख दीध २०१६ मरणां भय न धरिडं, जस कारणि नाणी कुलनी लाज, नरिक जवानड बोलें ज दीधु, कीधां घण। अकाज रागइ प्राणी दोख न देखइ, दुखण गुण करी जाणइ, जे जेहथी बिरमइ ते तेहनां, अलतां दुखण आणइ २०१७ विश्व थकी मन विरमिउं रे, तूटा बंधन पास, एणइ अवसरि गुरुजी मिलियारे, बुजवइ वचन विलाप २०१८

बुजवइ वचन विलास वाणी, भन्य प्राणी उल्लसइ, जिम ग्रीष्म तापइंया चतु(२) चातक, मेह देखी मनि हसइ, आगइति वल्लभ दुध उजवल मांहि, साकर जिम भलइ, जे सुणन हैंडइ सांभरइ, क्षण मांहि वाहलां ते मिलइ २०१९ सहिगुरु दिउ उपदेसडु रे, कुडउ एह संसार, नेह सवे छइ कारिमा रे, माया दुखु भंडार २०२०

तूरक

माया दुख भंडार सगांनइ, नेह '(स)वे छइ कारिमा, जस काजि जे नर आवटइ, ते मोह नाणइ चित्तमां, संयोग सहुणा सरिस सायर छहरि चंचल घन इहां, कुश-अग्नि जलबिंदु सरिस जीवित, मोह घरीइ कुह किहां २०२१ जस कारणि नर दुख घरइ रे, नव नव करइ उपाय. प्रेम-गहिलु प्राणीउ रे, छडइ मायानइं ताय. २०२२

त्टक

माय ताय बंधव सुत स्वामो, जे अति वल्लभ सुहुद, विनता विसथी सर्व ऊवेखइ, वलो करइ पातिक-वृंद, कामिनि प्रेम तणइ रिस रातु, छडइ बंधव-नेह, ते पणि विनता हैडइ नाणइ, छेहडइ आपइ छेह. २०२३ को किहनूं नथी वल्लहु रे, ठालु म धरिस मोह, भू उपरि कुण न गयो रे, इंद नरेद्र समूह. २०२४

तूटक

इद्र नरेंद समूह गया रे, लीला लहर भूपाल, दानी मानी चतुर विचक्षण, वहरीना जे काल, त्यागी भोगी न्याइ ठाकुर, जस कीरति जग बोलइ, ते पणि नयणां बारि पधारिया, तुिह न प्राणी बुजइ. २०२५ जे वाह्लां विण घडीय न जाइ, ते विण वरसह जाइ, मोटा मोटेरा जिनवर सरखा, ते पणि हवा किह्वाइ, इम संसार असार ज जाणी, जड मिन कांइ न्यान हुइ, धर्म करतु वली भवंतिर, भव-भय दुख जिम न हुइ. २०२६

ढाल ३९

राग मारुणी

(महेलो भव तणो राग न...)

मुनि नायक रे एहवा सुणी उपदेश, हैडइ थयु विराग न छीधूं चोरित्र सार, महेलड भव तणु राग न. मु. २०२७ तेहिजि देव संयोगि, तेणि दीपइं आव्या वाहाण न, ठेसि वागइ पग दुख तइ, उसीयालइ वली मेटि न २०२८ ते सुंदरि सुकंठ, आव्या करता केलि न, ते देखी मुनि रुप, लाजिउ चित्त सुकंठ न मु. २०२९ आपणूं कहीअ चरित्र, जाणी बंधु—सरुप न मु. दीक्षा लेइ सुकंठ, पृहुता बेहु देवलीकि न २०३० असती सुंदरि सोइ, बंधव मिल्या देखि न, पूरावी सिव वाहाण, पुहुती को एक दोपि न २०३१ वेशा थइ तिणि दोपि, विलिसया नव नव भोग न पुहुती नरक मजारि, भमसइ काल अनंत न २०३२

दहा

सारथपति वज्लावि करि, जयंतसेन भूपाल, हैंडा मांहि दुख धरइ, गुण समरइ ततकाल २०३३ पाछां पगला नवि वलइ, नयन न खंडइ धार, सजन वुलावी आवतां, सुनु भमइ ढंढार २०३४ सज्जन साथइं जीव जा, जीवों किसिडं करेसि. ते सज्जन विण झूरतां, दुखुइ दिन्न गमेसि २०३५ कहिंसिउं हसोनइं बोलिसिउं, कहिंसिउं करिसउ रंग, चित्ति चमककु लाइ गया, ते सन्जन अति चंग. २०३६ सज्जन आज वूलावीयां, जासइ केहि विदेसि, क्षणि क्षणि हैंडुं चीतवइ, वाहाला कहीइ मिलेसि. २०३७ आज ऊमां इणइ आगणइ, कालइ करेइ गांमि, परमइ को परदेसडइ, मिलसिउं किहि किणि ठामि. २०३८ परदेसी सिउं प्रीतडी. हैंडा मंडी कांइ. आज आंहां कालइ जसइ, चित्ति चमकु लाइ. २०३९ सूनां मंदिर सेरीआं, खावा धाइ वन्न, सजन विछोहियां मांणसां, जिहां जाइ तिहां रन्न २०४० जूरतु हैया मजारि. राजा गुण संभारत, जव आविउ भूमिप्रहिं, तव नवि दीठी नारि २०४१

हाल ४०,

राग रामगिरी

राजन विमासो चतडइ रहितु, विनता न दोठो अति विहसि थयु २०४२ जो रे भाइ कुणि रे धूतार्डइ घूतु, मोरी मोरी वाहाली लेइ परदेसडीइ पहुतु...दुपद राजन प्रधानई इसिउ कहावइ, कोइ कोइ वोर छड़ जे धूरत नइ लियावइ. २०४३ जो सेवक सहू जोइ भूमिहर पीठी, मांहि रे जोतां जोतां सणगडी दीठी. २०४४ जो बोलइ रे राजन नि सेवक स्वामी, एक दुख चिंतडइ नइ विस्मय पामी २०४५ जो राजन सा उल्ली नहीं रे जोती मोटी मोटी घूरतडी जे तुझने वहाती. २०४६ जो पड़ रेम पहामी दोउ राजन बोलइ, दाधा रे उपिर वली ल्एगडा तोलइ. २०४५ जो एकन् कूंच बलइ एक दीवडु खूलइ, एक मिन दुख दहइ एकनइ रे दूलि. २०४८ जो राजनजी नीजामानि कहइ रे विचार, प्रवहण सज करुं मलाउ वार. २०४९ जो नीजामा कहइ नहीं भेखज-गोली, जे क्षणमां सज हुइ रे विहली २०५० जो दिवस घेणरेड ए सज थाइ, तेतले दिहाडे परदींडिं रे जाइ. २०५१ जो

ढाल ४१

राग मारुणी-धन्यासी

वचन सुणी विरुख थयु, चितइ चतुर भूपार रे, अेणइ धूरति हूं वंचीउ, कीधड गरव विशास रे. २०५२ राजन चितइ चितडइ, है है अधिर संसार रे. मिं जाणिउं सहू माहरुं, ठालु हउ अहंकार रे... दुंपद माया ममताइं निडिय, माहारुं माहारु करी देखइ रे, जां रस पहुचइ जेहनुं, तांते तेहिन लेखिइ रे. २०५३ रा. सगपणि वाहालू को नथी, वाहालु स्वार्थि प्राणी रे, नमरू छडइ फलनइं, परिमलन क्षय जाणी रे. २०५४ ग. ते जउ माहारो निव हवीं, गूंहनई वाहालो हती अपार रे, तु माया कुण उपरइं, घरोइ एणइ संसारि रे २०५५ रा. मनवइं रागिइ पूरीचं, नाणिउ मोह लगार रे, एहवइ चारण केवली, पहुता सुर परिवार रे. २०५६ रा वृद्धि हवो विण आभले, इद्ध कहिं वैधि रे, जेहनइं निसि-दिन साभरतां, तेहजि मिलीयां सहजि रे. २०५० रा. कुलटा चरित सुणी करी, राइ संयम लीध रे, सत्तम दिनि केवल लही, कालक्रमइ ते सीध रे. २०५८ रा. इति पातालसंदरी संबंधः

ढाल ४२

राग सोमरी

(अक दिन अनुचरि वोनव्यो, अ देशी)

जड तेह सरखी सुंदरी, निव हवी सीलइ चंग, पाताल मांहि जउ रही, तुहरे, देही अनंगि. तु विणगनो कामिनी, किम रहइ जे स्वछंद, **अे मुग्ध भोल्र भोल्रविड, दाखवी माया-वृंद. २०६०** रागीया सम्चुं छेखबइ, ते नारि बोछइ बोछ, कामिनी कैरा बोलडा, जेहवा ति पोला ढोल. मुह्दि बोरुतां वाधइ घणउं, जिम जरुधिना कल्लोल, साचं न बोलइ अं करती, मिन नेह नहीं निटोल. २०६१ एहवां रे वचन सुणी घणां, तत्वार्थ विरहित राय, कहि मंति तेहवू कीजीइ, जिम कपट परगट थाइ. तु सचिव कहइ ए सोहिलुं, अह्य प्रगट करिसउ कुंड, सजन्त दिउ आदिसडउ, जिम एह जाणइ भूढ २०६२ त अह्ये सेवक ताहारा, जड तास टालड शील. तां लगइ फणगर फ़ुकूइ, जां मोर न मिलइ नील, इम सुणी रोइ ए प्पीड, आदेश मननइ रंगि, सचिव च्चारइ हरखीया, परनारि केरइ संगि. २०६३ विख अनइ वली वधारीउं, ोंबडे चडी कारेलि. एक भावण नइ वली हडक्य, ऊधाण मांहि रेलि, पंखाल वली पन्नग थयड, शाकिनी राडल मान, ऊगट्टि कीधो मिस तणी, हबिसणी कालइ वानि २०६४ मांजार नइ पय भालविंड, वानरा वाडी मांहि. ते वलो राउल वाहीया, लंपट्ट सर्विव प्रवाहि. आदेश लही पाछा वलिया, मन मांहि हरख न माइ, ते शील-सायर सोसवा, घट-पुत्र सरखा धाइ. २०६५

> **ढा**ळ ४३ राग धन्यासी

रायना इम निसुगो रे बोल ज सार. हरिखया रे मिन धगउ सिचव ते चार....दुपद लहोय आदेश नइ काज उपाइ, आव्या आव्या मंदिर ते नरक सरखाइ २०६६ रा. च्यार ते मनमथ रूप समान, जे देखा मानिनी मेहल्ड रे मान, २०६७ रा. वेस-आभरण अनोपम सोहइ, विनता-वृंद ते देखी मोहइ, २०६८ रा च्यारि ते यौवन रूप सिउं, माता परनारी प्रेमइ अति घण राता, २०६९ रा कुसुम-आभरण नइं वस्त्र ज वीटी, सज करी पेखइ कोइक दूती, २०७० रा

द्हा

बहु गुणवंती लोहमय मुहि अति तीनी हुंति, दुती सुइ विण किम मिलइ, माणस केरी संधि २०७१ मन वल्लभनि मेलवइ, घाणी साकर-चूरि, एहवी दूती जिहां नहों, परिहरि देश सदूरि २०७२ सही पडोसी सुगंधिका, न्यापित मालाकारि, प्रव्रजिता एणी परइ, दुती तेर प्रकारि २०७३ पहिलइ दिनि वार्ता करइ, बीजइ गुण कहइ तास, रूपकला गुण चतुरिमा, लीला वचन विलास. २०७४ वृतीय दिने सुंदरि तूं गुणवति छई, मुरख कंत विलास, अहवा दासइ निव घटइ, गोरी तोरइ पासि २०७५ अहवे बोलडे, जोइ तेहनूं चित्त, मन देखी वार्ता कहइ, नहीतार तिजइ जिंदित. २०७६ वलतूं जउ सुंद्रि कहइ, मेहली दीर्घ नीसास, सिंह अ दैव अटार्ड, कह सिउं कीजइ तास. २०७७ इम ते चंचल चित्त लही, केता पडखी दीह, प्रगट करइ गुण छयल्छना, देखाडइ तस नेह. २०७८ दुर्भग दुर्गत कामिनी, प्रोखित कृपणह नारि, स्वब्रंदा कौतुकप्रिया लोभिणि सुलभ संसारि २०७९ द्ती च्यारे मोकली, चिहु अ पृथग प्रघानि, आवी शीलवती प्रतिं, बोलइ मधुरी वाणि २०८० गोरी तुज गुण सांभली, मोहिउं चित्त सुजाण, जड उवेखिस बोल तूं, तु ते तिजसइ प्राण २०८१ शीलवती उवाच-जउ ते गुण-रागी ज छइ, तु सि न जाणइ चिंति, जे पहिल्लं असती हवइ, तस गुण किसिउ लहंति. २०८२

२०

दुती उवाच—
तुह भूख्या गुण तरसीया, छंघणि पंडुर देह,
अक वार तनु रिव दइ (?), जीवाडि-न गुण गेहि. २०८३
शीलवती उवाच—
अन्न न आवइ अह्म धिरं, जलनउ न केरु संग,
तनु कुहनई आपिउं नथी, मागु अनेरां चंग. २०८४
तरता देखी हंसला, बगला तुडि म मंडि,
हंस विना अणइ सरोवरई, कोइ न जीलइ मृट २०८५

ढांळ ३९ राग रामगिरी

परनारी सिउं प्रेम न धरीइं, चंचल चित्त न करीइ, देखी रे अंबरि आंबा फिल्या, हैडइ दुख निव धरीइ. २०८६ बंधवजी परदारा परहरीइ, जेहथी नरिंग रे पड़ीइ...दुपद आरित अनीद्र अभूख, आठे पहुर उचाट, अे परनारी प्रेम तणा सुख, नरक तणी छइ वाट. २०८७ ब. उत्तम कुलनई खांपण लागइ, वइरि धरइ रे उल्लाह, भूपित डंडइ सुजन सी दाइ, परनारी उमाह. २०८८ ब. त्रिभुवनमां बलवंत विख्यात, मोटउ रावण राय, परनारीनइ वेधि विद्धधड, पामिड मरण उपाय २०८९ ब. आ भिव प्राणी यौविन मातु, परदास सिउं रातु, नरक तणा दुख जे छइ दोहिलां, ते पणि वेसइ जातु. २०९० ब. शीलइं सुर नर सेवा सारइ, वंछित फलीइ आस, जयवंत पंडित कहइ शील सुवा, सुर नर तहना दास. २०९१ ब.

दुहा

एहवां वचन घणां किह्यां, तुिह नवेइ प्रधान, अंध न जां किहिं आफलाइ, तां निव आवइ शांन. २०९२ पीड करी देखी कमल ते, अणसिट्टिहितु राय, शील-परीक्षा कारणइ, मंडिउ एह उपाय. २०९३ तु देखाडू पास्खूं, जिम मिन चमकु थाइ, एहवुं जाणी दूतीने, सुंदिर ∦कहइ उपाय. २०९४ सुंदिर न घटइ पर तणड, कुल विनतानइ संग, तुहइ धन लोभई करी, माणस मांडइ रंग. २०९५

ढाल ४५

राग भीली मल्हार (समोसरण बइटा श्री जिनवर, ए देशी)

एक लख टंका लेइ आवु, जड अह्य सिउं हुइ काज रे, लाल, जे अति विसमां दोहिलां, द्रव्यइ सीजइ काज मेरे लाल २०९६ सुंदरि बुधइं आगली, कामिनि सगुण सुजाण मेरे लाल, च्यार नइं प्रतिबोधवा, सियां सियां करइं विनाण मेरे लाल...दुपद् आज थिकी दिन पांचमइ, निसि अंधारा पूरि मेरे, दूती-वयणि ते तेडीया चिहारइ, जूजूह प्रहुरि मेरे २०९७ सू. धरि खणावी उरडइ, अति एक खाड मेरे, विस्न ढांकी खाट मे॰ २०९८ स ते उपरि एक अणवणो, एक लख लेइ पहिलु आविड, यामिनि पहिलइ पुहरि में॰ द्रव्य लेइ खाटइ बइसारिंड, तब ते पडीड बिहुरी में. २०९९ स्. इणि परि च्यारे चिहु ए पहुरे, पडीया विवर मझारि मे• वेळ विवरइं पाथरी, ते अनुकंपा माटि में० २१०० स. नरक तणी परि विवरइं पडीया, च्यारे ते निज पापि मे, किमहि न सकइ नीसरी, है है विषय-संताप २१०१ स दोरइं बांधी श्रावऌं, मेहलइ जल आहार मे थोडे दिहाडे तेहन, टालिड विषय-विकार मे २१०२ स्. दुहा

सचिव पिडिया ते विवरमां, जुरइ निज निज दोस, सुंदरि प्रीड गुण सांभरी, हइडइ आणइ सोस २१०३ सजन-गुण जव सांभरइ, तव मन दुखि भराइ, सरोवर जिम आसाढथी, बेहु कंठइ पुराइ २१०४ सज्जन गुण तुद्धारडा, जिम जिम समरइ चित्ति, तिम तिम हैंडुं आवटइ, नयणां गलइ जिहित्त २१०५ सज्जन गुण संभारतां, काया परविस थाइ, हैंडइं डीबु जांमीइ; नयणे नीर न माइ २१०८ इंणि अवरि मेह आवीइ, विरही केरु काल, वापीडु पीउ पीउ करइ, वरितड वरखा-काल २१०७ वरिस म वरिस म महला, पोयइं सांमल थाइ, आदिंइ वइर सल्लण-जल, सही सल्ल्ण विलाइं २१०८

ढाल ४६

राग मेध मल्हार

आवोड आसाढ कि वादल वापरिया रे वापरिया रे. षरसइ मेह अखंडिक सरोवर जील भरिया रे भरियां रे. पीउ पीउ करइ बपीह कि बादलं छाहियां रे छाहियां रे, असल सलावइ साल कि वाहलां विरहीयां रे विरहीयां रे. २१०९ मांडिउ तंडव-नाच को गाइ मोरडे रे मोरडे रे. क्षणि क्षणि आवइ सज्जन, हैंडइ मोरडइ रे मोरडइ रे, आंसूंडइ भोंना चीर कि गोरी उरडइ रे उरडइ रे, क्षणि क्षणि मुंइ क्षणि खाट कि अंगणिउ रडइ रे रडइ रे. २११० जस धरि वाहला होइ कि लहिकइ बांहडी रे बांहडी रे, षाहलां विरहिय मांणस किम गइ रातडी रे रातडो रे, एक दुःख बाहलां बिरह कि संभारइ बप्पीहारे रे बप्पीहा रे, राति अंधारी घोर कि, झिरिमार मेहला रे मेहला रे. २१११ उडणहारा हंस कि सरोवर छांडीयां रे छांडीयां रे. विरह-विगोयां निज घार माणस आविया रे आविया रे. गाजइ गुहिर गंभीर कि, रयणी सामली रे सामली रे, झरमारि वरसइ मेह कि, झबकइ वीजली रे बोजली रे २११२ सूकइ देह ज वास कि नयने, मेह गलइ रे जलइ रे. षाधइ बिरह-अंकुर कि नीसासा धूमलइ रे धूमलइ रे, झबकइ वीज-सनेह की चिंता पुर रे पुर रे, आविउं वर्षाकाल कि, विरही हइडलइ रे हइडलइ रे. २११३ जे जे पडइ सुधार कि लइ मेह-जल केरडी रे केरली रे. ते ते विरही चित्ति के करवत जेवडी रे जेवडी रे, जिम जिम झबकइ वीज आकाशि धृहलइ रे धृहलइ रे, तिम तिम विरही-माणस भींतरि परजल्ड रे परजल्ड रे. २११४ दाडुर मोर बप्पीह कि, जिम जिम सांभरइ रे सांभरइ रे. तिम तिम वागइ तीर कि जस पीउ सांभरइ रे सांभरइ रे. सजल आसाढी मेह, वाहालां विण निव गमइ रे गमइ रे. विरहानिल दाधी देह कि जल बिंदु छमछमइ रे छमछमइ रे. २११५ जाणी मेह आवत कि, तोरण बांधीयां रे बांधीयां रे. सारस हंस बलाहक निज घरि चालीयां रे चालीयां रे. पहिली लाव्या मेह दादुर वधाइयां रे वधाइयां रे. करइ कड़वार कळावी नाचीयां रे नाचीयां रे. २११६ चातक

सुणी डोल नीसाण कि गर्याण गाजतां रे गाजतां रे, ऊनइ आविड मेह कि चिंहुं दिसि गाजता रे गाजतां रे, खडहड सुणीइ अपार कि झबकइ गीरडी रे गोरडी रे, बलगी रहइ पीउ-कंठि कींगारइ मोरडी रे मोरडी रे. २४१७ आवी पहिली काल कि, विरही वयणले रे वयणले रे, पछइ मेह आवंत कि वरखा गयणले रे गयणले रे, दोडे रही जोइ वाट कि गोरी नाहनी रे नाहनी रे, जोइ जोइ थाकी आंखि कि शृध्धि न नाहनी नाहनी रे. २११८

दुहा

हूं निस दिन झूरी मरुं, ते जाणइ जगनाथ, नीठर कंत न मोकल्इ, कागल कुहुनइ हाथि. २११९ कागल पडी अनोंठडी, कइ मिसि ढली अशेष, कइ लेखण कटकइ थइ कंत न भेजिड लेख. २१२० मांणस आंणइ नेह तां, जां दीसइ नयणेण, थोडा पालइ प्रोतडी, परदेसडइ गञेण. २०२१ गाढी प्रीति ज वीसरी, परदेसडइ वसंत. जिम अंजलि जलनी परइ, टीपे टोंप गलंति २१२२ लाज न आणइ नयणर्नीं, केतां मांणस नोंच, त ते परदेसइ गयां, सिउं संभारइ प्रोति २१२३ अंणइ अवसरि तव अजितनइ, जागिउ दुख अपार, दिवस घणा थया विण मिलि, कही मिलिसर्ड किरतार. २१२४ विरहानिल अति आकलु, जाणइ कहीइं मिलेसि. लेख लिखो पीउ पाठवइ, गोरी छइ जिणि देसि. २१२५ अथ अजितसेन शीलवती प्रति लेख लिखंड छड.

स्वस्ति श्रीवर वीनवइ, वाहली छइ जिणि देशि, सुंदिर सुगुण सुंजाण छइ, वांचइ लेख-संदेश २१२६ कुशलखेम छइ मूंहनइ, गोरो धरये चित्ति, तिम करये जिम आपणी, अधिकी वाघइ प्रीति २१२७ लेख संदेश न मोकलुं, अेता दिवस मझारि, ते दुख मुजनइ अति दहइ, जिम करवतनी धार २०२८ गोरी तइं का टालीउं, संदेशा-व्यवहार, दास किसिड अह्यारडउ, माया तिजी अपार २१२९ तुह्म गामइ कागल नथी, कि मिसि नथी त्रिलोकि, कइ खप नथी अह्यारडु, लेख न लिखड अेक २१३० जड तुद्यनइ आलस थयं, अद्यनि लिखतां लेख, तु को हाथि संदेसडु, सिं न कहाविड अक २१३१ कागल मिसि लेखण तणी, जड लिखतां हुइ हाणि, तु संदेसु कहावतां, तुद्ध-सिउं थाइ अतयान २१३२ जउं एक आंगल चीठडी, मोकलतां धरी नेह, त ते वालत चडगणी पाड न राखत एह. २१३३ गोरी तुज विरहानिल, मुज मन बलइ अपार, कागल जल-करि मोकली, करये माहरी सार २१३४ भमरु समरइ मालती, हाथी समरइ विंजी, मरुथल समरइ करहड़, तिम समरुं हुं तुज्झ २१३५ रागवती मन-मांडवइ, वाहाली राखे प्रीति, नेह-जिंछ नितु सींचये, जिम नवी एकी जंति २१३६ वलत कागल मोकले. जिम मनि हुइ संतोष, गोरी तूं जड नहीं मिलड़ं, तां नहीं भागइ सोस. २१३७ कागल देखी कंतनु, गोरी थइ रलीआति, हृद्य-कमल तव विहसोउं, ऊलट अंगि न माति २१३८ सज्जिन सइ-हथि भेजीउं, नेह धरी मन मांहि, जिमि जिमि ते विल जोइंइ, तिम तिम ऊलट थाइ. २१३९ सञ्जन तणा संदेसडा, सुणता तृपति न थाइ, वाळी वाळो पूछतां, हैंडु हरख वहंति. २१४० किहां हूंता कहोंइ मिलिया, सिउं कहाविउं तुद्ध साथि, कांइ मुजनइ संभारतां, पूछी माहारी वात २१४१ रूडा सुजन संदेसडा, वइरोनी विपरोत, वाली वाली पूछतां, हेजइं हींसइ चींत २१४२ कागल ऊवेली कंतड, जिम जिम वांचइ नारि, तिम तिम मिन गुण सांभरइ वरसइ आंसू सु-धार २१४३ सखी उवाच-तेन लख्या सुलेखमां, प्रगट नवां वाचइ जेह, शीलवती उवाच-नेह गया सज्जन तणा, पंथ निहास्त्र तेह. २१४४

सखी उवाच, कथं शीलवती प्रेमासव मद धारियां, सुद्धि न होवइ तेह, आखर सुघा लेखमां, जाणूं सिथिल सनेह २१४५ दूत उवाच गोरी गहिली कां थइ, जे समरइ निसि-दीस, ते सूधूजइ तेहनइं, मनथी छांडे रीस २१४६ जिम तरसियां सरोवर छहिउ, मनि आणंद-सुधाइ, सुजन संदेसा सांभली, हैअडइ हरख न माइ २१४७ जिम रयणायर चंदनइ, नेह सदूरि ठियांह, तिम दूरि ठिय सज्जनह, गुण सल्लइ हैयांह. २१४८ वली वली पूछइ वत्तडी, अवर न वात सुहाइ, संदेसु जिम जिम सुणइ, तिम तिम ऊलट थाई. २१४९ सजन-संदेस लखलहइ कागल कोडि लहंति, दीठं कोटी शत लहइ, संगमि मूल न हुंति. २१५० सजन दीठिं सुख जेतळ्, ते हुइ कागल देखी, लाख जोयण वाहाला वसइ, नितु नितु मिलवूं देखिः २१५१ लियावइ दूरि संदेतडुं, छांनु कागल जेहसिउं बोली न सकीइ, तेहसिउं लेखि वात. २१५२ कागल वांची कांमिनी, अधिक हवी ससनेहि, ऊवेली वली वलो जोइ, जिम बापीडा-मेह २१५३ कामिनि कंतह कारणि, वलतु लेख लिखंति, लेखइ वाधइ नेहडु, अधिकी हुइ खंति २१५४ अथ शीलवती अजित प्रति प्रत्युत्तर लखि छइ. स्वस्तिश्री सोहामणड, वाहालेसर गुणवंत. कंत-संदेसु वांचयो, गोरी लेख लिखंति २१५५ सानंदइ सस्नेहपणइ, वीनवूं छडं श्रेयोत्र, अहीनूं तेह जणाविवूं, कंता कार्यचात्त. २१५६ यत आंहां खेमकुशल छइ, ते तुद्धे चरण-पसाई, तहींना कुशल जणावयो, जिम अह्यनि सुख थाइ. २१५७ अपरं दिवस सघणे लेख तुह्य तणउ, पुहुतो एक आहांइ, सर्व समाचार जाणीउ, हर्ष हवु मन मांहि २१५८ सज्जन लेख तुह्यारडइं, भागु विरहनु सोस

अक मन जाणइ माहरुं, जे मुज हवु संतोस. २१५९

दु:स्सह विरह-दवानिंह, स्कंती तनु-वेलि, ते तुह्य कागल मेह-जलि, पल्लवीयां रंगरेलि २१६० दिवस सधणे लेख मोकलिंड हैइ संभारी आज, घणूं कहूं स्युं एक मुखि, जांणडं आपिडं राज. २१६१ जाणी दुह्वण मन तणां, लिखी हती जे लेखि, एक अपरांध अह्यारंडउ, वाहाला खमयो एक २१६२ वांक नथी कागळ तणउ, आलस नहीं मुज रेख, पणि एकइ को ते नहीं, ते तुह्य आपइ लेख २१६३ लेख लिखिउं जव वल्लहा, समिर समिर गुण तुज्झ तव मन मारुं गहिबरइ, दुख न समाइ मुङ्ज. २१६४ तुह्य गुण लिखतां लेखमां, दुख-नींसास थाई, ते नीसासा−धूअडइ, कागल बली सजाइ २१६५ वली हूं लिखवा अलजइ, रही नीमास खंचि, तु आंसू झरइ आंखडी, कागळ तेण गलति २१६६ बली लिखावूं को पहिं, मनदुख कहूं तस देखि, ते पणि माहरी परिहवइ, तु किम मेजू लेख २१६७ किम दुख भागइ विण मिलिं, पीड संदेस-सएण, गडजंते मेहेण २१६८ वन-दावानल किम शमइ, न सकूं कुहुनइ मोकली, आवी न सकू हूंअ, वांहाला ताहरइ वियोगडइ, कोऊ दहइ विण-धूंअ. २१६९ वाहलानइ अलखामणा, सज्जन गुण-भंडार, जाणडं वली वली हूं स्मरुं, समर दहइ अपार २१७० रे सञ्जन गुण ताहरा, समरूं जेणी वार, तव हइडइ सार्राण वहइ, न छहूं नीसासा पार २१७१ नीसासडे, हैंडूं संकड होइ, उपरांपर अवर न उपजइ बोलडा, लेख न लिखीइ तोइ २१७२ कुहुनइ कहू मन-वत्तडी, तुज विण सघलइ रांन, वाहाला हूं गहिली थइ, एक जि ताहरइ ध्यान. २१७३ सेरीं सेरी रडवडू, सूनी तुज विरहेण, सान गइ सवि सयरनी, जूहवू कु-जिमएण २१७४ सजन-संदेस कहावइ, वसइ विसई नेह, जे वाहाल्लं हैडइ वसइ, सिड संदेच तेह २१७५ वाहाला मांणिस हैडलइ, आपण दूरि रह्यांइ, दुरियन छोक तणइ भइं, तूं राखिड मन मांहि २१७६ भागइ नहीं संदेसडइ, मनि अलजु मिलणांइ, आंबा-फलनी आसडी, न टलइ अक-फलांइ २१७७ बाहलां कांइ विणासीइ, मिसि कागली असार, थोडा मांहि प्रीछयो, तुह्यो छउ प्राणधार २१७८ डूंगरनइं नाणां घणां, अंतर दो नयणांइ, सजन मनि अंतर नथी, जोयण कोडि गयांइ, २१५९ नेह त्रूटइ दूरि गया, वाहला माणिस मन्नि, किहां सूरय गयणंगणि, किहां जिल पंकज वन्न, ११८० तिख्थी विहसइ फूलडा, उपरि सिस ऊगंति, दूरि थकां जे ढूंकडां, जे मन मांहि वसंति २१८१ जेहनइ मनि जे वल्लहां, ते तस दूरि न होइ, चंद वसइ गयणंगणइ, सायर वाधइ तोय २१८२ मोरा डूगरडे छवइ, ऊपरि गाजइ मेह, दूरि गयां न वीसरइ, सज्जन साथि सनेह २१८३ सज्जन तणा सनेहडा, ऊगी नवी को वैछि, पान पडइ परदेशथी, जउ विणसइ तस वेलि. २१८४ वाहालां विस विदेसडइ, विचि नइ नाला वाडि, जर सिरि हुइ पंखडी, तु पहुचाडु रुहाडि २१८५ पंख तणइ परमाणि, बाहालां नइ ऊडी मिलइ, पंखी भळा सुजाण, पंख विना नहीं मांणसां (?) २१८६ भमरा विण जिम कूलडां, पंकज विना निवाण, शोभइ नहीं घर आंगणउं, तुह्म विण वाहाला रांन २१८७ तेहजि मांणस तेहजि घर, ते सेरी ते वाट, वाहालेसर एक तुज विना, मुज मनि सरव ऊजाडि, २१८८ सुजन सुखनि कारणि, वीसारु घणीवार, पणि तुद्धे वीसरता नथी, देखु नयणा-बारि २१८५ सजन म जाणिस नेह गयुं, घण दीहा रहइ दुरि, वरसह छेहडइ मेह मिलइ, नाचइ हराख मेह मयूर. २१९० घणडं कहूंसिउ वल्लहा, तूं जै रहिउ सदूरि, सुहुणामां हूं तूंहिनं, निव देखुं चिहु-पहुरि २१९१ सज्जन नामि तुह्यारडइ, हुइ अति संतोष, पणि तुज मुख निहालिया विना, किमहि न छीपइ सोसः २१९२ वाहालेसर एक तुज विना, क्षण वरसां सु थाइ, दिन जाइ अति इरतां, टलवलतां निस जाइ २१९३ गुणवंत अति वल्लहां, विसयां ते हैया मझारि ते नवि जाइ वीसारियां, जां काया परिहार २१९४ अन्न विशेख हय बल्लहा, सीयालइ हुइ वन्नि, तस आदइ 'इ'कार करि, ते तुह्म पासि सुजन्न. २१९५ जे ऊगइ वाविया पछी, तिणि नामि जस नाम, तिहां नयणां मेेस्रावडउ, करसइ चंद सुजाण २१९६ विवर्गर य छप्पय वास, अंत्यक्षर तस छेहि, ते सज्जन एक तुज विना, मुजनइ दहइ आति देहि. २१९७ सज्जन अति सभरित भरिउं, मुझ मन तुझ गुणेण, अवगुण पइसी नवी सकइ, तुह्य वीसारु जेण २१९८ रे सज्जन गुण तुह्य तणा, दहइ जिम खइर िअंगार, निव छब्भइ जिणि उल्हवउ, अवगुण नीर छगार. २१९९ सज्जन विरहइं तुसारडइ, मुज मनि कोऊ जलंति, चोली चरणा चीरडां, टीं।पेटीपि गलंति. २२०० तुह्मनइ समरुं राति-दिन, वहूं ते मनह मजारि, तुहि न हुइ समाधि मुज, दीठा विण एक वार. २२०१ मुनि मन विण सूर सर विना, अह पीडइ मुज देह, एकवार सज्जन मिली, तूं वि नेवारे तेह २२०२ वार वार तुद्धं वातडी, वार वार तुद्ध चींति, तुह्म दरशनि ऊमाहलू, फलसइ कहींइ मींत २२०३ ध्यान तुह्मारु चितडइ, गुण सृणि सवण संतोस, नांमि पवित्र स जीभडी, दो नयणां धरइ सोस. २२०४ अर्नुदिन समर हइडलइ, निसि-दिनि तोरु जाप, नयणि न देखुं तुह्मइं, ते कांइ पूरव पाप. २२०५ हृद्य-कमिल एक तूं रिड, गूंथी तुझ गुण-माल, श्रेय−मित अभिधान तुज, जपतां जाइ काळ २२०६ केतूं लिखीइ लेखमां, के तूं कहूं एक मुक्खि, तूंहजि जाणइ वेदना, तु ज विरहइं जे दुक्खु. २२०७

५. खरइ.

म जाणासे तूं वीसारेड, गया विदेसि अपार, भुज जीवित तुज पासि छड्, सूर्नू आहां ढंढार २२०८ प्रोति-स्ता थासूं करिडं, तुद्ध मन-मंडपि स्नग, दुरियन वचन कटारडइ, रखे छेदाइ सुरंग. २०९ जिहां तुं तिहां मुज प्राण छ्इ, केवल आहां सरीर, यंत्र योगि जीवित र्धारडं, जिम सरवरमां नीर २२१० ठामि ठामि दोसइ घणां, सरोवर जल संजुत्त, पणि मानस विण इंसन्, किहि न ठरइ चित्त २२११ किहां सूरय किहां कमल-वन, किहां कमुदाली चंद, वाहस्रां वसइ विदेसडइ, समरियां देइ आनंद. २२१२ थाइ मणोरह तुरिया, दूरिति सज्जन वेधि, नवि वीसमइ नवि खलइ, नवि मूंजाइ निखेद. २२१३ नयणां जोवां अलजयां, तुह्म गुण सुणवा कन्न, गोठि करेवा जीभडी तुह्य समागमि मन्न २२१४ रे सज्जन गुण तुह्य तणा, मुजनइं करइ वाचाली, खांची राखुं न व रहइ, जिम कोइल नि रसाल २२१५ दिन फीटी थाइ वरसडां, घडी टली थाई मास, सजन ताहरइ वियोगडइ, झरो थइ पलास. २२१६ जिम विसहरइं मोरडी, जिम सरभलां सु मेह, जिम हरिनइं सारिंग नइ, तेहवु मुज तुज नेह. २२१७ जिम कठ-पंजरमां पडिंड, पावसि कालि आरामि, के ले संभारइ मोरडउ, तिम हूं तुद्ध समरामि २२१८ तरसाॡउ, जिम बप्पीहु हेव, अति जोइ मेह वाटडी, तिम तुह्य वाट अद्वेवि २२१९ ते वेला तेह जिं घडी, तेहजि दिन सुप्रमाण, जही तुह्मसिउं मेलावडाङ, करसइ देव सुजाण २२२६ ते दिन वेस्त्र कहों इसइ, तुझो मिलसिंड जणि बार, सुख-दुख कही नइं मन तणउ, करसिउं प्रेम अपार २२२१ **अेकबार हवि ज**ड किमहि, वाहारा तुज देखेसि, नविं सिराविं नीरं परि, तेउ अंतर टालेसि. २१२२ कमाले बंधाणड भमरलड, जिम ससिंहर किरणेण, जोइ सूरय बाटडी, तिम हूं तुह्य नयणेण. २२२३

किम प्रिय विरह कराही है, चकवु धण-अंधारि, र्खिण खिणि समरइ सूर्यनइ, तिम हूं तुद्ध संसारि. २२२४ जिम अति तरसिउ पंथीउ, उन्हालइ भर लूइ, वंछइ सजल सछाय सर, तिम वंछू तुह्य हुइ. २२२५ मानस सरोवर हंस जिम, भमरा जिम कमलाई, मह संभारइ मोर जिम, तिम तुह्य गुण समरांइ २२२६ गयवर समरइ बिंझ जिम, कोइलि समरइ अंब, तिम समर्रु हूं तृंहनइ, समरइ भमर कदंब २२२७ धन वंछइ दारिद्रीड, भस्यु वंछइ अन्न, पंथो वंछइ छांहडी, तिम तुह्मिन मुज मन्न. २२२८ सुरभी समरइ वछनइं, कोइलडी मधु-मास, तिम समरु हूं तुहनि, चंद चकोर विलास २२२९ घणउं कहूं सिउ कारिमूं, सम कीधउ सिउ होइ, तूं अक समय न वीसरिंड, थोडाइ घणूं सजोइ. २२३० भूतील वासी अंत्य-विण, रत-कलहइं ते होइ, ते बि केवल तुह्य कन्हई, घणडं कहई सिउं होइ २२३१ सजन तणा सनेहडा, वीसारिया नवि जाइ, जिम जिम विरह घणेरडु, तिम तिम अधिका थाइ. २२३२ सजन संदेसइ ताहरइ, नयणे कीउ संतोस, कोऊ लागी भीतरइं, हैडा करी संतोस २२३३ रे सज्जन गुण ताहरा, जउ स्रख-जिहवा थाइ, कोडि वरीस जीवी धरुं, तुहइ कहिया न जाइ २२३४ अक्षर बावन गुण घणा, केता लिखीइ लेखि, थोडइ घणुं करी जाणयो, सुख होसइ तुह्य देखि. २२३५ जीवित थोडूं मणूय-भवि, चडता पडतो दिन्न, विचि विचि रयण अंघारडउं, तुझ गुण छिखइ किम्म. २२३६ भूंमंडल कागल करं, सायर सवि मसि थाइ. सवि डूंगर कांठा हवइ, तुह्म गुण तुहि न लिखाइ २२३७ सवि अंबर कागल हवइ, गंगा-जल मिसि होइ, जउ सुर-गुरु तुह्य गुण लिखई, पार न आवइ तोइ. २२३८ तुह्म गुण ऊजल-दूध जिम, मिसि अति क ली होइ, एहवूं जाणी चितडइ, लेख न लिखींड तोइ. २२३९

पहिला गुणं कैता लिखं, केहा पछइ सार, तुह्म गुण सघला सरिखा, मुज मन पांडडं विचार. २२४० सज्जन जेहनू सिर छेदिया पछी, पुणर्वि सिसिहर विज्ज, तस आदेई 'ए'कार करि, ते मनि घणड धरिक्क २२४१ शिशिरह आदिम मास जे, धरि एक मंत्र जि देइ, तेह म उतारसि चित्तथी, दिनि दिनि अधिक करेइ. २२४२ सन्जन सनेहा आपणा, अधिक वधारइ चीर्ति, मत वीसारसि वल्लहा. परदेसडं प्रीति २२४३ मनमां छड् घणी वातडी, के कागिल न लिखाइ, दोखी दुरियन जिंग घणा, मिलिया पखई न कहाइ. २२४४ सञ्जन कांइ कहाव्यो, आहां अहा सरखुं काज, घणडं लिखं सिडं लेखमा, लिखतां थाइ हाज २२४५ रखे वीसार चिंतडइ, धरयो मोह अपार, वहिला मिलवां आवयो, लेख लिखूं लखवार २२४६ हलदह नामई नांम जे तीहचर अरि तस छेहि, 'ख'म[ु]झ करे संठवी. मोकलयो धरी नेह २२४७ वली संदेश कहावयो, वहिलु लिखयो लेख, जुहार अमारु मानयो, जा नाव मिलीइ मेख २२४८ आंधकुं उछउं जे लिखं, कुडू कागल माहि, ते अपराध अहमार डउ, रखे धरु मन मांहि. २२४९ भाद्रव वदि दशमी गुरौ, कागल नेह विशेख, जयवंत पंडित ंवीनवइ, अ वाहालानु लेख २२५०

सात-दीप कागल करुं, जड मिन्सि सायर च्यारि, तुहइ गुण वाहाला तणां, लिखता नावइ पार २२५१ लेख लिखीइ इम सुंदरः, भेजइ प्रीउनइ पासि, दिन थोडइ मेलावडउ, हबइ हसइ तील विलास २२५२ अंक दिनि पुढी शिंद्र-मुखी, सेजइ रयणी छेहि, सुहुणामां प्रीउ देखीउ, तब उठी ससनेहि. २२५३ सही ए सुहुणइ ते करिडं, जे बहरो न कराइ, सुजन देखाडी रंगभिर, क्षणमां अपहरीयंइ. २२५४ लाख जोयण सज्जन वसइ, मिलीयां सुपन मझारि, फट रे पापिण आंखंडी जागी करिड परिहार. २२५५

सुविण मंत बलिहारडी, पज्जनां इयरेण, क्षणमां बाहलां वेगवां, अकर्रासंडजइ जेण २२५६ रे सखि सणि मिं पिउडउ, दोठउ सुपन मझारि, थोडामां प्रोउ आवसइ, अणइ सुपन विचारि २२५७ हवइं अरिमर्दन भूधणी, मोडी वइरी-माण, बइरो-दल चकचूर कारे, देसि मनावी आण २२५८ सपरिवार पाछा वलिया, अजितसेन नइ राय, निज मंदिर भणी आवता, ऊलट अंगि न माइ. २२५९ मन भमता भागइ नहीं, हेइडु दइ अति हेलि, जिहां आपणां वाहलां वसइ, ऊजातां तिणि देसि. २२६० वाहला दरशनि दूरि छड, ते सुख कहिउं न जाइ, तस गामह जे रुखडा, ते दीठि सुख थाइ २२६१ दूरि थकी ऊमाहलउ, हैइ तेह्वु न होइ, जेहवड आवइ दुकडां डग जोअण स होइ. २२६२ हीरे जडावुं चांचडी, सोनइ मढावूं पंख, कागा तोरी बलिहारडी, जु मुज आवइ कंत २२६३ रे सिख सुणि अंक वत्तडी, दुखुइं दाजइ देह. आज जि जीमकइ पीउडु, करसइ विरइनु छेह. २२६४ सही मागइ वधामणी, बहिनी आविड कंत, आपुं नवलख हार तुझ, जउ अे साचुं हुंति २२६५ भुज-तोरण बांधी रही, टोडे जीइ प्रोड वाट, कंकण- चूडी-पडण- भइ, ऊभवि हाथ. २२६६ तृपति न पामइ आंखडी, जोतां सज्जन वाट, वास कीउ घर आंगणइ, बइसणि उंबर-पाट २२६७ घम घम से।विन-घूघरी, चामर वन्नरवालि. आवी पीडनी सांढडी भरती जोयण पाय. २२६८ मरकरुडइ मन मोहतां, हल्लुष्फर हरिसेण, हैं डूं विहसइ वल्लहां, जव दीठां नयणेण. २२६९ भमरा बाहालां फूलखां, बहालां विझ गयांइ, सङ्जन वहालां लोयणां, वाहाला गीयमीयाइ. २२७० वहालां दीठिं दूरिथो, नयण-कमल विहसंति, देखी चंद चकोरडा, निलनी जिम विकसंति २२७१

निरमल नयणां मधुर-वच, सजन-कथा अनुराग, संभ्रम-दर्शन मुख-प्रशन, रत्तां चिहूनह माग. २२७२ उजल^९ सरला^२ स्तडां³, वंका^४ नयणां भेय, मित्र पत्र अरि³ कामिनी संगति छहीइ तेह. २२७३ प्रिय-दंसण महिमा नवु, अवर न दंसणि तेह, दिठे नति संजोय विण, निच्चुइ होइ सदेहि. २२७४ : वरि सहीइ दुख दोहिलुं, बाहालां तणइ संयोगि, पय उभरातुं तव रहइ, जव पामइ जल-योग. २२७५ सही अ अविनासी वसइ, जाइसर नयणांइ, कुरमाइ अरी मिलइं, विहसइ देखी पीयाइ. २२७६ बोल न बोलड मीठडा, न देइ दान न मान, तुहइ मांणस केतलां, दीठां अमृत समान. २२७७ मनडां डूंगर भूंहडो, बाली प्रोउ-विरहेण. पल्लवीइ सुख-वेलडो, मिलीइ सुजन नेहेण २२७८ साल ठवी सजन गया, जां लगइ ते न मिलंति. तां लगइ मननु उरतु, निव भागइ जीवंत. २२७९ सज्जन दीठइ आपणइ, हैं हूं हरित्र भराइ, विहसइ विहांणइ कमल जिम, ऊलट अंगि न माइ. २२८० मेह भरइ सर ऊलटूइ, सायर पूनिम-चंदि. सजन दीठे आपणे तिम, ऊल्टइ आणंद २२८१ देखवि सज्जन आपणा, अति रोमचंइ काइ, जाणे अंगि अमायत्, उल्लट बाहिरि थाइ. २२८२ ढेाल वजावि न रे हैया, तुज चिंतित्त फलायांइ, निसि−दिन जेहनइ समरतां, अलविते मिलीयांइ. २२८३ छान्ं मिलत्ं जेहसिउ, हैंडूं रयण मझारि, ते वाहलां परगट मिलियां, नयणां तुज बलिहारि. २२८४ निस-दिन उभा सेरीइं, जेहनी जोतां वाट, ते सज्जन सहिजइ मिल्रियां, हैया उघाडिउं हाट. २२८५ वाहालां विरहइं दुख हवूं, तुहइ वाहलां साथ, मूंइ पडियां पणि ऊठीइ, भूंइ देइ हाथ. २२८६ बहुत कालि सञ्जन मिलियां, हवउ हूं छोडूं किम्म, कंठि विखग्गी तिम रहूं, इसर-गिल अहि जिम्म २२८७

हैं डूर हरिख गहिगहइ, साचां सजन देखि, गुजर-वाइ पांनडी, परिमल घरइ विशेखि २२८८ कज्जल दीजइ नयणलां, दीजइ मृहि तंबोल, सांइ दीजइ सञ्जनह, कायडि दीजइ चोल. २२८९ चित्त चोरी गया चोरटा, लाघा दिवसि घणेहिं, दोइ भूज पासइ बांधोंया, राख्या सिहरि घणेहिं. २२९० चांपो देतां सांइडु, सज्ज सिउं नेहेण, त्रिहुं रूपे हुउ हारडु, कंठि थकी हरिखेण २२९१ सुरुक्षण विखि रुक्षणमां, सजन आरिंगन संधि, बहिरंग सबल विशेखवा, ऊतरि पुरव-बांधि २२९२ गोरी चिंतइ चिंतडइ, कंत मिलिउ घण दीहि, किहारइ पडमइ रातडी. किहारइ आथमसइ दोह. २२९३ अण दीठइ अति उरतु, दीठइ तालोवेलि, राती सुडा-चांच जिम, अति वांकी नेह-वेलि २२९४ गोरी पूछइ कंतइ, मुज समरता केवार, हुं तुहुनइ संभारती, सहिस अठोत्तर वार २२९५ सांज समइ सर अत्थामड, ऊगिड पूरण-चंद, गोरी कंत मेळावडु, हुउ अति आनंद २२५६ कंत कहइ सुणि वल्लहो जड तू पूछइ साच. हूं तृ्हनइ नवि समरतु, खोटी सो करुं छाज २२९७ जे हेडाथी वीसरइ, ते समरी जइ नित्त, जे पणि घडीय न वीसरइ, तस समरणि सी वत्त. २२९८ गोरी कहइ सुणि कंतडा, परदेसडइ गयांइ, मुझ विरहि दिन अेतला, दोहिल्ड किम गमीयांइ. २२९९ कंत कहइ सुणि गोरडी, अह्ये गया विदेसि, मिं दिन जाता निव लहिया, ताहारइ विरहि विसेसि. २३०० इम करतां गुण गोठडी, भागूं हैडा-दुख, रयणि जती जाणी नहीं, मन मांहई थयु सुख. २३०१ हबइ हूं भागी विरह्थी, वेयां दुखु अपार, हवइ मुजनइ अ वेदनी, म हिसउ अकइ वार. २३८२ मीनित करीनइ वीनवडं, षंछित देजे दैव, हवइ म दाखिस विरह तुं, वाहाला केरो दैव २३०३

भांजिउ वहरी विरह मद, हुइ हरख आणंद, सज्जन मिलियां जब आपणां, जाणे आब्या वहाण. २३०४ दिनि दिनि सुख विलसइ घणा, शील्वती भरतार, हबइ कहूं संबंध सचिवनउ, जे आव्याता च्यार. २३०५ निज निज चिरत कहियां सवे, स्त्रीइ नइं भरतारि, आव्या सचिव भूपालथी, ठवीया खांड मझारि. २३०६

ढाल ४७

राग धन्यासी (बंभण वार्डि मारकलीड, के देसी)

केडि न लाघी रे चिहारे सचिवनी, चितवइ चतुर भूपाल, श्रुद्धि न पामी रे वलती तेहनी, किहां गया बुद्धि-निघान २३०७ चिंतडइ चिंतइ रे भूपालजी, अ किम टलसइ रे संदेह, हैड' रे पडीउं अति डमडोलडइ, जोवराव्या निज गेहि...दुपद अक दिन बोलइ राजन रूयडु, अजित तिनं परिषद माहि, भोजन करबा तुह्यो नवि नहुतरिया, तुह्यो दिन अतला मांहि. २३०८ चि. वनितानइ वचनइ तव नहउतरिउ, भोजन करिवा रे राय. कांइ एक लहीसइ रे श्रुद्धि सचिवनी, राय मनि हरख सु थाइ. २३०९ चि. जिमवा रे जै घरि अजितनइ, केतला परिवार साथि, अवसर जोवा रे चर आपणउ, मोकालेड ते धरणी नइ नाथि २३१० चि. मंदिर जोइ चर आवीउ, बोलइ बोलइ चर अपार, राजनजी सी कहूं सामहणी, नहीं धूम मात्र लगार २३११ चि. राजन चितइ रे अति विसमियं, दीसइ दीसइ अदभूत ओह; घणे रे परिवारइ जांड परिवरिड, सिडं हसइ जोड रे छेदिः २३१२ चि. ओगेड़ रे अवसरि चिहारइ सचिवनइ, बोलइ बोलइ गुणवंती नारि, तुह्मनइ रे काढडं हूं अ विहरथी, जड कहिडं करू मुझ सार २३१३ चि. जु किमहिं तुह्ये माहारा बोलथी, करिसड इतर लगार, वली तुह्मनि क्रपमां खेपसि बीजी वार २३१४ चि. तेणइ रे बीहतइ सहू ए पडिवजिउ, काढिया कुपथी रे बाहारि, तेहिंन नवरावी अति उर्लाटं, चरचिया चंदन घन सारि २३१५ चि. २२

चंदन कुसिम ते अति चरचोंया, कीधा कीधा यक्ष समान, ये हूं मागूं ते तुह्मनइ आपयो इम कहों थापिया घर मांहि २३१६ चि. को नर अवर्रान देखतां, म करिस मेमोन्मेष, पछइ रे महेलिस तुद्धनइ मोकला, एहवी दीधी रे शीख २३१७ चि. एहवू रे कहीनइ मंदिरि जूजूइ, राखिया च्यार प्रधान, छांनी रे नीपाइ सवे रसवती, सीखन्या अतिहिं सुजाण. २३१८ चि.

ढाल ४८

राग मेवाडु धन्यासी

(सहिजि सद्रणी रे कोश्या कामिनो, अ देशी)

एहवी रे जाणों मित कामिनि तणी, हरिखंड अजित प्रधान, मंदिर तेडी आव्यं रायनइं, गुणवंति बुद्धि-निघान २३१९ जोड जोड कामिनि मति सोहामणी, शीलइ सीता समान, गुणवंति गोरी गंग सरीसडी, गोरी चंपक-वानि...दुपद नाही धोइ आसन मांडीयां, जिमवा बइठउ रे राय, जे जे जोइइ भोजन भावतां, ते ते दइ यक्ष राय २३२० जो. राजा साहामें च्यारे ऊरडे, साहामइ कांइक अंधारि, च्यारे देखइ यक्ष सोहामणा वंछित पूरणहार. २३२१ जो. राजन चिंतइ गुह्यक एहवां, वंछित पूरणहार, जड हुइ ओहवा मंदिर माहरइ, तु मुज सफल जंबार २३२२ जो. ते एक चिंतनि राय मनि वीसरिउं, च्यारे सचिवनूं नांम, भोजन की धूं सूनइ चिंतडइ, अक जि तेहनइ ध्यानि २३२३ जो. भोजन अंतरि राजन ऊठोड, आपियां वस्न-आभर्ण, राजन मागइ च्यारइ यक्ष्मइ, रुज्जा छाडी रे मन्न २३२४ जो. अजित कहइ तब वनिता सीखविड, राजनजी सुणु अेख, किम निब दीजइ मुद्धुद्ध प्रार्थींड, वली निज प्रभूनि विशेख २३२५ जो. अथवा स्वामिनि ओ सवि ताहरुं, हूं पणि ताहरुं वियोगि, घिरि पधारुं स्वामी आपणइ, अहनुं मिलसइ योगि २३२६ जो. पणि ए स्वामी च्यारि मंजूसमां, खेपीउ पदा करेसि, भरी सभा भांते ऊघाडयो, उछव करी सिवसेस २३२७ जो. राजा मानी वचन प्रधाननूं, पुहुता राजसभाह, ते पण पूछइ च्यारे मोकल्यां, धाती मंजूसह मांहि २३२८ जो. भरी य सभामां जव मंज्रसडी, ऊघाडी जोइ भुप, तव ते दीठा काल कंकालडा, अति विकीराल विरुप २३२९ जो. विसमयिं, काइ प्रीति-प्रभावि, कांइ भयथी कांइ राजा जोइ च्यारे यक्षनिं, क्षणि अनिमेष स्वभावि २३३० जो उनमेख चंचल तनु मन रोमथी, दीसइ मानव-चिह्न, अति कौतुहल विस्मय पर थकी, तस बोलावइ नरिंद २३३१ जो. ते पणि च्यारइ कामिनि बोलथी, बीहता लज्जावंत, किमपि न बोल्रइ सम्यग जोअता, उल्लिया राइ हसंत २३३२ जो ल^{ड्}जा प्रीति विखादथी, पूछिया राइ सामंत, लाजंता पणि सर्चिव निवेदीड, रायनि सरव वृत्तंत २३३३ जो. जेहवूं कीधूं तेहवूं पामीउं, स्वामी अहमेइ छोकि, शीलवतीना शीलनी वर्णना, कीधी परिखद लोकि २३३४ जो राजन सचिवइं स्त्रीनईं खमावीउं, आपिउं पूरव-धन्न, ते प्रतिबोधी च्यारइ सचिवनइ, दीधा परनारि−नीम २३३५ जो अहवइ तिणि पुरि मुनिवर परवरिया, पुहुता धर्मघोष सूरि, वंदणि पहुता अजितनइ रायजी, अवर सु नागर भूरि २३३६ जो

ढाल ४९

राग मारुणी

(माजी रे पाछा वीर गोसांइ, भे देसी)

सिंह गुरु वाणी-रस विस्तारइ, जिम प्राणी सुख पावइ रे, जेहवी साकर दुधइ मिलइ, परिखद नइ मिन भावइ रे. २३३७ प्राणी कांइ चेतु रे दोहिलु मनुष्य-जंवारु रे, तु हो माया ममता वारु रे, कांइ आप सवारथ सांरु रे. २३३८ तु हो माया ममता वारु रे, कांइ आप सवारथ सांरु रे. २३३८ तु हो हिल्डं लहिउ उवारु रे, कांइ सबल पुण्य वधारो रे. २३३९ कांइ हइडा सिउं अवधारु रे, ए तु पापी मयण-धूतारु रे, मनथी मोह उतारु रे, भगवंत ध्यांन सभारु रे...दुपद लाख चडरासों योनइं भमीउ, तुहइ न लाधु पार , निगोद तणां दुख दोहिलां, वेया अनंतीवार रे, २३४० प्रार

सूक्ष्म बादर तस थावर, जाति पंचेद्री अवतारइं रे, चउद राज पुदुगल परियट्टइ, फर्या अनंती वारइ रे. २३४१ प्रा पंचेद्रीपणूं छइ अति दोहिलूं, ते मांहइं गति च्चार रे, सूर नर तर्यच नरक जंबारु, भवि भवि दुख अपार रे. २३४२ प्रा पसूय तणइ भवि भारइं जूतु, सहइ वध बंधन छेद रे, अंतर न लहइ दिवस निशानु. न लहइ पुण्ण विभेद रे. २३४३ प्रा. देव तणा भव विखईं जाइ, कलह करइ वली माहि रे, सुरपति किहारइं रीस विश्लेष्ट, मारइ कुल्शि-प्रहारि रे. २३४४ प्रा वेदन वेइ नरिक पहुतउ, छेदन भेदन ताप रे, सहिजि दर्शावध दुख़ जि लहीइ, समरइ पुरव पाप रे. २३४५ प्रा. मानव भवि आरय-देश दोहिल, दोहिल श्रावक-जंबारू रे, साध-समागम धर्म सामग्री, लाभइ को एक वार रे. २३४६ प्रा. धरम लहीनइ आलिं न गमीइ, पातिकडां परिहरीइ रे, अस्थिर भाव सर्वे भव मांहि, कहिनी माया धरीइ रे २३४७ प्रा स्वारिथ सहु को दीसइ वाहाळुं, कोइ न सगूं सहाइ रे, कुहुना मित्र कलत्र सुतादिक, मात पिता बली भाइ रे २३४८ प्रा. इणि संसारइं कोइ न रहिसइ, राजा रोर विख्यात रे. यमनइ मंदिरि सहू को सरखुं, सहुनी छइ एक वात रे. २३४९ प्रा. पर प्राणीनी पीडा तिजीइ, विण अपराध न हणीइ रे, पिश्रनपणउ पर मर्म न मोसा, वचन अलीक न भणाइ रे. २३५० प्रा. थापणिमोसु पतित वीसारिड, परनु द्रव्य न प्रहीइ रे, पर-स्त्री-सहोदर बिरूद धरीजड, लोभ न अधिकु वहीइ रे. २३५१ प्रा. पांचइ इंदी निज वसि कीजइ, राग न रोस न धरीइ रे, न्याय तणड पंथ किंमहि न तिजीइ, सिव प्राणी सुख करीइ रे. २३५२ प्रा.

द्ह।

दान शील तप भावना, मुक्ति तणां सउपान, चिहु परि भाख्यां जिनवरइं, धर्म तणां अहिठाण २३५३ दानइ दूरित सवे टलइ, मन वंचित पामंति, पुण्य—दुमनु बीज ए, मुगति तणां फल हुति २३५४ गरुयिंदानिं नवि घनइ, संचि म मूढ गमार, दानइं उंचा मेहला, नींचा सायर खार २३५५

प्राहक दायक आंतर्रं, गिरूउं मेह मझारि, जल लेतां हुइ समला, ऊजल देतां वारि २३५६ दानि झरइ कर-मूल जड, तु पामइ बहुँ भोग, जिम मयगल तिम माणसां, मानइ भूपति छोक २३५७ दायक भाव धरी दीइ, ब्राहक पात्र ज हुंति, भावइ भाव अनेर्ड, त्रणे दानि तरंति २३५८ वसुधा-मंडन सुजन-जन, सज्जन-मंडन धन्न, दान जि मंडन धन तणड, दानह मंडन मन्न २३५९ शीलइ शोभां दानथी, महीमंडलि गुणवंत, नरनारी शीलइं भजइ, शीलइं सवि सुख हुंति २३६० शीलइ सुखसेव करइ, सुख संपति सौभाग्य, लक्ष्मी लीला लवणिमा, भूतलि अद्भूत भाग्य. २३६१ कुसुम−माल अहिवर हवइ, जल हुँइ जे दाव, विसम सहूं अरि सुहृद सम, ए श्री शील-प्रभावि २३६२ बइरी न सकइ परभवी, दूरि दलइ सवि कलेश, मनवंछित सवि संपजइ, नुहइ दुखु ठवलेश २३६३ शील पलई इंद्रीय वसिं ते तपथी वसि थाइ, मन-चित्यां सुख पामीइ, दुगु तिनां दुख जाइ २३६४ रोगी विरही दुखीयां, सुजनिं परभषीयांइ, एतांनइ तप-शरण दइ, सुख दिइ परभवीयांइ २३६५ वैया विण नवि छूटइ, कीधां पुरव पाप, तपथी कांइ छूटइ, जिम छांहीडइ ताप २३६६ जे दूरइं नवि पामीइ, अति दूरलभ होइ, ते सवि तपथी पामोइ, दुरित पणासइ लोय २३६७ पांचे इंद्रिय वसि करी, दुस्तप तपतु थाइ, जु होइ भाव घणेरडु, ते विण निःफल जाइ २३६७ दान दीइ शील अणुसरई, तप अति घणु करेइ, ते तुख पवन तणी परइं, भाव विना जाणेइं २३६९ भरतेश्वर केवलि लहिउं, भाव तणइ परमाणि, मरुदेवी मुगती गइ, एहती भावन आणि २३७० इणि परि घरमं समाचरइ, चिहु अ भेदि रसाल, मुक्ति-रमणि ास दूकडी, न पडइ भव-जंजालि २४७१

ढाल ५०

राग धन्यासी (भमरा सुडानो, अे दंसी)

एहवी देशना साभली, पूछइ अजित विनाणी रे. पूरव-भव तप आपणु, गुरु कहइ तेबु चोनांणी रे. २३४२ सांभिल सांभिल अजित तूं, भाषइ परिषद साखि रे. वाणी साकर समविंड, जेहवी मींठी द्राख रे...दुपद पुष्प-पुर नयर सोहामणडं, सुलस वसइ व्यवहारी रे, न्यायवंत गुण पूरीड, तस धार सुयशा नारी रे. २३७३ सां, कर्मकर तेहनइ मंदिरइं, भद्रक स्त्री भत्तार रे, द्रप्रादुगे सुहामणां, प्रीतिवंत अपार रे. २३७४ सां. अझआली पांचमी दिनइं, दुर्गा सुयशा साथइं रे, पहती साध्वी मंदिरिइ, भद्रक सभावि रे २३७५ सां. सुयशाइ तिणि दिनि करी, ज्ञान तणी पूजा, ते देखीनइं सुंदरी, साघ्वीनइं पूछइ दुर्गा रे. २३७६ सां. साध्वी कहइ ज्ञान पंचमी, एहनुं फल छइ बहुल रे, दुख दुर्गति दोहगपणूं, पाप पणासइ विउछ रे. २३७७ सां. इणि दिन पुस्तक-पूजना, जे करइ वस्त्रनइ फुलि रे, नेविज्ज ढोइ आगलिं, दई अनुकुछि रे. २३७८ सां. शक्ति सारु वली तप करइ, भाव घणेरु आणी रे, तेहव, सर्वज्ञ केवलज्ञानो रे २३७९ सां. चतुर सोभागी आरति चिंता सवि टलइ, सुपनंतरि नहीं घरइ दुखु रे, ए तप महिमा अति घणड, पामइ वंछित सुखुँ रे २३८० सां दुर्गा कहइ सुणु स्वामिनो, भाग्यंइं धर्म-संयोग रे, अह्य सरखां जे दासडां, ते किम पामइ योग रे. २३८१ सां. तुहइ शक्ति अह्यारीइं, पालीसइ धर्मप्रकार रे, दान अनइं तपशक्तिथी, पालसि शील अपार रे, २३८२ सा सघलो पर्व-तिथि वली, कंत तणड मुज नोम रे, आवी मंदिरि आपणइ, पडिवजी धर्म ज इम रे. २३८३ सां. सुख दुख मननी वातडी, वाहलां आगलि कहीइ रे. जेहवूं जाणी कंतनइं, स्रोइं निज धर्म भाखिउ रे. २३८४ सां.

ते पणि दुर्ग प्रशंसड, पर नारी नीम लीध रे, दुर्गाइं जेहवु आचरिड, तेहवु धर्माज कीध रे. २३८५ सां. तेहिज नियमनइ पालवइ, पामिडं समिकत सार रे, सफल भूंइ बीज वावीडं, अधिकु विस्तार रे. २३८६ सां. दुर्गाइं ज्ञान-पंचमी, आराधइ एक चित्ति रे, मनसा सुद्धइं तप करइ, पुस्तक पूजइ भक्तइं रे. २३८७ सां.

ढाल ५१

राग धन्यासी (वीरा रे वधामणी, क्षे दर्शा)

इणि परि बेहूं जण एकमनां, आरोधी जिन धर्म, काल करी दिनि केतलइ, पुहुता पर सौधर्मि रे. २३८८ एहवां रे फल पुण्यनां तु, जोड भलीयण प्राणी रे, किहां ते कर्मकर पाघरां, सुरवर संपद आणी रे...दुपद तिहांथी होइ जण ते च्यव्यां तो, अजित थयु दुर्ग जीव, शीलवती दुर्गा हवो, तेह भणी प्रेम अतीव रे. २३८९ ए. ज्ञानारांधन कीध रे. दुंगीइ पूरव-भवइं कुशलपण् अति तेह भणी, डाहापण बुद्धि प्रसिद्धि रे. २३९० ए. पुरव-भव अभ्यासडइ, समक्ति शीलई दढता रे, ते पणि पामो संपदा, पूरव-भवि पुण्य करतां रे, २३९१ ए. वचन सुणि सहिगुरु तणां, जे जातिस्मरण संजात रे, प्रतिबोधणा बेहू जणां, शीलवती नई कंत रे २३९२ ए. वलतूं श्रो सहिगुरु भणइ, देश शोल–फल एह रे, सर्व व्रत हवइ आदरु, चारित्रथी हुइ तेह रे. २३९३ ए. एहवूं जाणी दंयती, ते मन परिडं वइरागि रे, चारित्र-व्रत अंगीकरिड, धर्म तणइ अनुरागइं रे. २३९४ ए. पंच महाव्रत अणुसरइ, सुधी पाछइ समिति रे, निर्दुषण संयम घरइ, मनथी छांडी कुमति रे. २३९५ ए. इम करता दिनि केवलइ, च्यवीयां पुण्य संयोगि रे, ब्रह्मव्रत रहता थकी बेहु, पुरुतां ब्रह्मलोकड़ं रे. २३९६ ए. तिहांथी कालकमइं च्यवी, पाली निर्मल शील रे. अजितसेननइं कांमिनो, मुगति जसइ सलील रे. २३९७ ए.

दूहा

सोलइं विघ्न सर्वे टलइ, मनवंछित फल होइ, नरवर सुरवर संपदा, घर-अंगणि सवि जोइ २३९८ कल्पद्रम श्री शीलन नवविधि वाडि रसाल, मनवंछित सुख पुरवइ, सुर-सुख मुगति विशास २३९९ मयण महा-भड जीपत्रा, जे धरइ शील-सन्नाह, जय-लक्ष्मी तेहनइं वरइ, घरनी अंगि ऊमांह. ३४०० दिनि दिनि उदय हुइ घणउ, सघलइ जयजयकार, ए सबि महिंमा शीलन, मानइ सबि भूपाल २४०१ चरित्रइं करी, ओह वखाणिउं शोल, शोलवती भवीयण पालु अेक मनि, जिम पामु सुख लील. २४०२ वीर जिणेसर सीसवर, सुहम-सामि गणधार, साधु गुणइं सोहामणो, जेहनु वंश-विस्तार २४०३ श्री कोटिक गुण चिरंजयु, वैरी शाख रसाल, चंद्र तणी परि ऊजल, श्रो चंद्रकुल सुविशाल २४०४ जाणीइ. श्रीरत्नाकर वृद्धतपापक्ष कल्पलता जिन वाघती, दोसइ जिहां गुण-गच्छ २४०५ श्री तपगच्छ उधोतकर, श्रीविजयरत्न सुरिंद, जिम सूरपति सूरवंदमां, जिम प्रह-गणमां चंद. २४०६ श्री विजयरत्न सूरिंद् गुरु, पट्ट महोद्य भाण, धर्मरत्न स्रीश्वरु, केतूं करूं वखाण २४०७ वादीकरि-कुलकेसरी, मुनिवर कुल-शृंगार, वल्लभ संयम-कामिनी, गुण-गणमणि भंडार. २४०८ तास सोस सुर-तरु समा, सेवइ नरवर पाय, श्रीविद्यामंडन सूरीश्वरु, श्री विनयमंडन उवझाय. २४०९ श्री विद्यामंडन सूरिंद गुरु, सीस सोभागी सार, श्री सौभाग्यरत्न सूरीवर, विजयमान गण धीर. २४१०

श्री विनयमंडन उवज्झाय, गुण गणतां न स्रहूं पार, श्री विद्याइ सूरगुरु समा, रूपइ मयण अपार २४ ११ भवियण-जन मन-मोहनी, जस वाणी-विस्तार, लिंधं गौतम गुरु समी, सुद्ध सामि परिवार रे४१२ जे श्री गुरुनु वंश पणि, पसरिड अति सुविशास, सकल सळाय सोहामणु, जिम तरु माहि रसाल २४१२ ते श्री सिहगुरु गुण तणा, कहितां नावइ पार, मुझ मुखि एक जि जीभडी, गुण तु घणा अपार. २४१४ कागल ससिहर ऊजलु, जेहवूं निर्मल रूप, जस यश लिखीं दीसीइ, मिय मय सिस सुरुप २४१५ प्रथम सीस सोहामणां, सघला गुणनु ठांय, विजयमान कुलमंडनइ, श्री विवेकमंडन उवझाय. २४१६ परिवाधता, बीजा सीस सुविचार, श्री सौभाग्यमंडन पंडित, चतुर सोभागी सार २४१७ अवर सवे परिबार जे, श्रीगुरू तणड विशेखि, ते चिरनंदु भूतिंह, साधु साध्वी अनेक. २४१८ नामइं श्रृंगारमंजरी, शीलवतीनु श्री विनयमंडन गणि सीस कीउ, जयवंत छघु सीस तास. २४१९ मंदमतिं अति ऌघु वईं, अतिरस सरस प्रमाणि, कांइ अणघटतूं कहिउं, खमयो तेह सुजाण. २४२० आगई जे कवीयण हवा छइ, वली होसइ जेइ, हूं सविनी पग-रेणुका, हैयडइ धरयो एड. २४२१ श्रो विनयमंडन गणोंद्रनु, लघु सीस भूमि प्रसिद्ध, जयवंत पंडित अभिनवी, श्रृंगारमंजरी जां रवि सायर चंद्रमा, धरणी मेरू-प्रमाण, तां चिरनंदु ग्रंथ ए, जां पृथ्वो मंडाण, २४२२ २३

जयबंतस्रिक्त

संवत सेाल चउदोत्तरो, आसो सुदि गुरू बीज, कीधी शृंगारमंजरी, जयवंत पंडित हेजि

इतिश्री शीलवतीचरित्र गर्मिता श्रृंगारमंजरी नाम्ना, सुभाषिता समाप्ता, संवत १६८५ वर्षे पो॰ सुदि र बुधे लखितं, हबदपुरे मध्ये, प्रेमसागर लिपि कृताः, श्री रस्तुः, श्रुमंभवतु, कल्याणमस्तु छ श्री, ठ, छः, श्री. कडुआमती गछे श्राविका बाई मटु पठनार्थे.

श्रुंभम् भवतु छः

पाठान्तर

अ नो आरंभ : श्रीगुरुभ्यो नमः, दुहा.

ख नो आरंभ : सकल वाचकसमाभामिनीभालस्थलभूषणायमान महे।पाध्याय, श्रीशांति-सागरगगुरुभ्यो नमोनमः, धुरि दुहा

ग नो आरंभ : सकल वाचकसभाभाभिनी भालस्थल भूषणायमान महोपाध्याय श्री२१सत्य-सौभाग्यगणि गुरुभ्यो नमोनम:.

घ.ना आरंभ नथी

१. गं. जसी आ, पणमूं २. ग. करह का.आ.घ. घरि आ.खा.ग. उरवरि. आ.खा. पह गं. झाझर झनकार ३. ग. जिसो; ध. जैसु. अ.ख. अभंग अनगनु; ग. अंग अभग अनंगनी ४. अ.खं; झीणु; ग. झीणो अ.ख ग. विकसित अ. पंज ख.ग. खंजन अ. घणुंह ६. ग. जुग ७. खे.मं समान अ.घ. अभिराम ८. अ.ख.म. सचराचरि अ.घ. गुणमणिनुः, ख.म. गुणमणिनो ९ ग. पणमुं ग. नांण अ.स्त. दखवो ग. टालओ स्त्र.ग. मोहनो अ. चुपह, स्त्र. डाल चुपहनु; ग. हाल बीपाइना [मेांध.—हाल, राग अने देशी अंगैनो पाठ निर्णय सामान्यत: प्रत 'क'ने ज अनुसरीने हे. पण जरुर जणता प्रत 'ख' अने 'ग'नी ते अंगेनी विगता अपनावी हे.] १०. अ पुरुचिंद्र, ख.ग. पुरुचंद्र अ.ख.ग. धर्म ख.ग. विचार ख.ग. संयल ११.ग. झीणो; घ. झीणड घ. किम ख.ग. कीजइं स्वाग. राहुनो १२. ग. खारी आ.स्व.घ. आकर ख. मणिपाथरू; ग. मणि पाथरो; ঘ. पश्च मणिनु अ. सुरतुर अ. जांणीइ; ख. जणीइ; ग. जांणीइ ख.ग. वखाणइ; **ध** वैक्कखोणीइ १३ अ. लहुं ग. सङ्गुरुनो अ.स्त्र. कहु अ. रतु स्त्र.ग. कोयलि स्त्र.ग. <u>हो</u>य. अ.स्व.ग. सोय १४. स्व.ग. वडतपगच्छ अ. ऊवझाय स्व. सीलि; ग. सीलई अ.स्व.ग. लेख्यी १५. अ.ग उजली ग कीरति अ चिहुविसि अ. सौमागि; ध. सोमार्गि ख.ग. जलहली; घ. जिलहली आ. अहनसि; च अहिनिसि अ.ख मारि १६. आ गाथा 'घ'मां नथी. अ.ख मीठी अ.स्त.गः तेहवू अ.स्व ग. निरमल १७ स्व.ग.घ. जयवंत पंडित ग. थाय अ.ग. धंगारमंजगी आ. बोद्ध; ग. बोछ ग. शीलवनीनुं १८. घ. करता आ.स्त्र.ग.घ. अक चित्ति आ.स्त्र.ग_{ुः}थाय अ.ग. होय अ घ. पहि; ख. पाहि ख. दोहिला अ.ग. महिमंडिल अ.ख.घ. जोय १९. अ. विस्तारइं ग. दिहुं अ. दिसि; अ.ख.ग. दिसि अ.ख.ग. सरवर; घ. सरुवर अ. प्रसविद; ग. ध्रसवइं अ. कमलि; ख्. कमलि; ग कदुमिन; घ. कमलिनि अ. समीर ग. वधारइं: २०. अ. अनि; ग अनइ ख.ग. वांणी अ. चमित्रइ चितङ्क २१. ख.ग. सुरंत्म अ. चमित्रइ; ख.ग. चमित्र खू.ग. हरइं. २२. आ.ख.ग. ससामला ग. कुकवी; घ. कवी २३. ख ग. मांगसां आ. विण क. सुगत अ ख बहुय २४. अ.ख.ग. अणरसीञे ग. जणाय अ. केलविइ; ख.ग. केलवह अ ग_ःथाय २५. अ.ख. विण ग. वय अ. हेअडच्र ; ख.ग. हेअडच्र अ.ख.ग. करि २६. ख.ग. सुउजन खाञ्च. गाहा सरस विलास अ.खा.ग.घ. नीसासे खागा बल्ह खा दिइं २७ गा. समितिनां आ गा समय खागा हैयह घा छयलडा २८. गा. १भणह, घा पभणह खा छंद गा. छेदिल आ. जाणह, खाग. जाणि खाग नही २९. ग. तेहनइ ३०. खाग. लहि; घ. लहिइ आ भूडा अनइ;

ग. भूडा अनइं. ख.ग. अलखांभणा अ ख. कोडि ३१. ख. सुमाणसः; ग.घ. सुमाण सह घ. दहीडां अ.ख.ग; नीगमीआ; घ. नींगभींआ ३२. ख.ग. सादू सोकवि घ. करण अ.घ. वयणलां ख.ग. जाणइं अ. दंसिइ; ख. दूसिं; ग. दूसइं ३३. ख.ग. लहइं ख.ग. काढइं अ. कामिनि अ.ग. पर्योधरा ख. सोइ; अ.ख.ग. सूं ग. घरइं ३४. अ.ख.ग जु अ.ख.घ. तु सिउं: ग. तो प्रिड अ.ख तिजिउ ग. तजउ अ.ख.घ. तु सिउ; ग. तो सिउ ३५. अ. सहजि; ग. सहजिइ; घ. सहिजि अ. वांजी स्व. सरसजडं; ग. सरसजिड अ.ख.ग. किस्ं ३६. ग. गमिउ ख. उगिड ग. तो सिउ अ. स्रिय स्व ग. स्रिज अ.स्व. गयु ग. गया अ. सघिल, स्व. सघलई; ग. सघल्ड स्व. हड ३७. औं. केंहेंई; खा.गा. केहिं ओ कहड़ खा.गा. कहड़ खा. सोहड़ खा.गा. प्रबंध गा. गरि; घा. गिरि मोटड़ अ. सोहि ख; सेहिंग ग. सोहइ; क. संघ; ख. सींघ ३८. अ. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. पयडण खारा, दासिणि जिम्म रा. विषयत्छवि ३९. आ. जोडनइ; खारा, घा जोडनइ आ. वीनवू; खारा, वींनेवूं औं. कोये; खें. कीर्ये; गं. कोय गं. धरज्यो. गं. सुकवीनो अ.खं. नहीं गं वातनि नहिं ४०. र्जी केंडी प्रत 'अ.खं.ग.'मां नेथी. ४१. ग. सुकवीन, ग. वस्तासिंड अ. सड्रीन. अ. हुइ ग. ढाल, रामें कैंदरो, श्रेमिक रवेवाडि चंडियों से देशी ४२. ग्. पृथवीय अ.ग्. कहीय अ.घ. माहि अ.खः मुँचेंगू; गे. मूँचेंगुं अ. माहि; घ. माहि अ.ख.ग. चिहु ख.ग. निरमल ख.ग. जीणि; ग. जीणिं स्त्री गे पुरि ख. गे केल्लं अ.ख.ग. जित्त घ. गतिनि अ. दूपद ग. इपद ग. इपद ४३. अ. चुपट्ट **अं. चिंहुदसि: खं. चिंहुदेसि: ग चिहुदिसि घ.** मालिया अ.ग. सप्तभूमि खं. खेर्लात अ. नयननली सर्विकासि; स्त्र नयन-निष्ठिनी विकासः गा. नयन-निष्ठिनि विकासि: घ निष्ठन विकासि अ खागः अक अ मीनैंव रवे. चिंतई ग. चितई अ.घ. किसु घ. आकासि ४४. ग. चल्लई अ. कर-ब्रहित अ. अेक्सेकि अं. स्व.ग. तंबील अ.ख. किहि; ग. केहि ४५. अ.ख. चहुटइ; ग. चोकीपट्टि; ग चहुटइ: भी. मैनैंगमीत खा. नंसति.अ. जिसु. अखा च्यारिवि. खा. चहुंटइ; खा. चहुंटइ; गा. चहुँदैंदः ४६. अ.स्व.ग ध. रणकंत. अ. कलसिं. घ. मलपंति. ग. मकु नयन. ४७. स्व.ग. केलेंस केलेंस ऑ.स्व. महितलिं. अ. कनकदंडि. ख्र.ग. जलहल्ड्ं. ग. लहड्ं लहड्. ख्र.ग. औरति. अ. गहेंद्र गहेंद्र. ४८. घ. चर. ख. कम्मु. अ भणेति. अ.घ. वर्णमाइ. ४९ जिहां अ.स. व्याकर्ण, स्व. किही, अ.स्व. कर्कश तर्क क. साहित, अ चपामालिका; गृ. चपूमालिका; ख. वर्षामा लिके. ५०. अ.ख.ग. चमकंति; स्व. चहुंटड; ग. चहुटड अ.ख. राजमंदिर अ.ग विहुपक्षे; स्व. बिहुपक्षे. ग. मानवे. ५१. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी ग. चरम–चंडा, स्व.ग. ब्रैंटल् टा: घ. ख्टे छंटा. ५२. अ. चहुदिसि; घ. चिहिदिसि अ. चित्रति. ग.घ. पोलि अ.स्त.ग.घ. कीजि. खं और्लि. अ. पोलिं: ख. पोलि पोल्ड्रंग. पोलिं दानशाला. ५३. अ.ख. सुगण. ख. अर्थी. ख.ग. धरइं. ग. जांण. अ.ग. वनिता. अ.ग. छइल. ग. ठांम. ५४. ख.ग. सर्वर. अ.ग. नीरि. ख. मनिरुली. अ अलस. अ.ख. चमकति. अ पाल; ख. पाले; ग. पीर्लि. ५५. आ. प्रेलबंगा; घ. प्रलंगा. अं. तुबया; ग. तुबिया. अ. केतकि . ग. चंच. आ ख.ग. विमेला. ५६. अ. खील. अ. वजुला. खंग. नवग्कत. घ. वरनलमाल. अ.घ. शालक. ग्र. आरोम. ५७. अर. जाइ जुइ घ. जुही आ.ख.ग.घ. जमलि. आ. हइ. ग कांमिनी. खें. कुर्डम सारि आ.ग. मामिनी आ आरुत. ५८ सिंहका सूत. अ.घ. कलित. ५९. अ.ख.ग. हैंवेगैपाहि. अ. कूया. ग नाम अ. जणाइ; ख जाणिइ; ग जाणइअ.ख. वरखाणीइ; ग. वर्खाणिई. क. देशी अंक वीसानी: खं. राग देशाख. डाल ३, देशी शूलिभद्रनी अंकवीसानी; ग-

हीत ३. राग देशाख, यूलिभद्रना क्षेकवीसानी देशी; घ. राग देशाख. ६०. अ.ख. भलो. अ. नामि: ख. नामि: ग. नामि र; घ नामि. ग. सामलो. घ सामलु. आ ख. परणामि; में. परिनामई अ. जीणि. ख.ग. भज्यो. ग. जननो.अ.ख. आंमछ; ग. आमछो. ख. त्रिभुवन माहि जश. अ. माहिइ. ग. निरमलो. ख. त्रिभुवन. ख. पुहवि नाहि. अ.ख. पाहि अं.खं.गं. निरमेलु ख. थाप्यो. ग. भुवने अ. व्यापित, ग. व्याप्यो. ग. शापित ग. कशंमला. ग. अणुसरेंडे. स्व. कापडे. ग. थापडे ग. कापडे ग. थरहरड. ६१. अ. नयरि आ.ग. धांम ग. अभिराम अ. केहं; ख.ग. केर् अ ग. ठांम. अ ख.ग. नहीं अ. जडमावतुं; ख. जडमावतुं; ग. जडभावनो खाग् नाम रे. ग. अंगि. अ. नही. अ. मुहि; खाद्य मूहि. अ. गुणिहि जैठउ सुजनि दींठेट चेंगिमीं; खं. गुणिहि जैठेउं सुजीन दीठउं; ग्. गुणाहि जेठेउं संजने दीठउं चेंगिमा; खं. अंन्या-भंजन. ख. मंग्रदा. ग. राखंइ. ख.ग. दाखंइ ख. भाषह. ६२. ग. नासह; ग. नामि ख.ग. हैंपि: घ. रपिं, गें, भूमिं, गं जांण, ग. वामन, ख.ग. वासन पाप नासन, ख.ग. सासन. अ.ख. बोह्रइए; ग. बोहर्ड के. अ.ख ग. कमल-नयनी. अ. मधूर- बांणी. ख ग. मधुर-वांणी. आ.ख.ग. साकर-वांणी ख.ग. प्रांणी अ. मोहइक्षे अ.ग. श्री नांमि. ६३. ख. त्रिभूवन माहि; ग. त्रिभूवन माहि; ग. देखाड्ड खग पाखइ. ख.ग. झुरइ. ख.ग. झुरइ ख.ग. चुरइ ख.ग. पुण्यई अ. पुरि पदमीनी; ख.ग. पुरइं पदिमनी. ख. ग. धरइ. ख रुपिं ग. रूपिं अ ख कांनिनी अ. बिहु-पक्षे; ख. बिंहु पक्ष; ग. बिहुं-पक्ष. अ.ख. नहीं. अ. भांमिनी ६४. ख.ग. परिहरेड़. अ. चितइ; ग. चिन् अ.ग. श्री जिन. ख ग अनुसरइ. अ. दिवसि; ग. दिवसइ. ख.ग. करइ खा. पाखड़, ख. मीहि; ग. मीहि . खाग धरहे. खाग धरह, खाग, समलहड़, आ.घ. अति मिह्ह, अं.मां पंक्ति नथी. ग. अति गिह्ह, ख. नव रे. ग. निरवहड, अ. पंक्ति नथी. ग.च. नहींअ. अ पंक्ति नथी. ख. चिति कुंडी समलहई; ग. चित्ति कंदर समलहई; घ, चित्ति कंदर समरलइ, अ. सोइ सहई ग. सोइ, सहइ, ६५. अ.ग. जिस्यूं. अ. यम. ग. जिम ख. जिसकः, ग. जिन्धुं. अ.ग जिम. ६६. अ.ग. भांग. घ. सरुवर. ६७. अ.ख. जिसिनं; ग. जिस्यु. अ. शोभीअ. ख. शोभइं. ख. नहींअ. अ. पामीइ. ख. पामीइ. ग. पामीइ. घ इम. ग. कहइ . अ.ख.ग. वेद-पुरांणि. क. एह आसाट ज आव्यो, से देशी, राग सामेरी. ग. ढाल ४, राग सामेरी, तथा गोडी, दशरथ नरवर राजीउ, से देशी. घ. राग सामेरी ६८. ग.घ. निय-मिन; ग. निअ-मिन. अ. अहेबुं. ख. अहेबुं. ख. चीतवइं. ग. ची तवइं अ. विनताइ: ग बनिताइ अ.ख.ग. ऊमाह रे. अ.ख.ग. निअ-मिन. ख.ग. चितइ . ख.ग. पोतइ अ.ख. ा. तेणि. अ.ख.ग. जोति. ग. म ति) लही. ग. मूर्ति. अ. गा. ख.ग. महिम गाजड ग. तूर. ख.ग. वाजइं. अ.ख.ग.घ. पुरति. अ.ख.ग. सरित अ. वंछिअ. ख.ग. वंछित अ.ख. चूरति. ६९. अ.ख.ग. सासन. ख.ग. सुरि ख.ग. सारइं. ख.ग. पुरइं. ग. कामजी. દ ९. ग. महीम. अ. क्षेक चिति. अ.ग. थई. अ. नैई. घ. न अ.ग. जड़: अ. नई. अ.च.ग. देई. अ. मई. ख.ग. जागईं, ख.ग. लागईं. अ. तस्य. ख.ग. मागईं. अ.ख. नहीय. ग. नहीं य ग. दानधी. ७०. ख.ग.घ. अनुभावि. ख.ग. सेठि नइं. अ.ख. हव. ग. हवो. अ. सर-भवनि. ख.ग. सर-भवनि. घ. सर तर. ख.ग. जैसिडं. अ.ख. इड. ग. हुवो. ख.ग. अतिहि. खे. लहुउ. ग्. लहुओ. ग्. बहुओ. ग्. वडी. अ.ग. सोइ. ख. कुसुरि. ग्. सुमित. ग्. केवडी. **ख.**ग. सोइ. ख.ग. शेठ-नंदन. अ. गुण-निल; ख.घ. गुण-निल, ग. गुणनिलो, ग. दाल्डि.

अ. मुत जन. ७१. ग्. महोशव. ख.ग. बारमईं. ख.ग्र. दिवसइं. ख.ग. करइं. ख.ग. अभिरांत्रकी. अ. अनुभावि; ख.च. अनुभाविं, ग. अनुभाविं; अ.ग. हवुं. अ. अति. ख.ग. नांमजी. ख.ग. नाम दीघूं. अ. नांम दीघू; घ. नाम ख.ग. कीघुं अ. काम सीघू; ग. काम सीधूं. ख.ग. तणुं. अ.ख.घ. ढिमकया. ख.ग. धणुं. अ.ख.घ धमिकया. अ.गै. सोइ. ख. वाघइ; ग. वाघई. ख.ग. साधइ. अ. आराधि; ख.ग. आराधइ. ग. इसिड. अ. मंदर. अ.ख.ग. इति. अ.ख.ग. सगुण. अ.ग. जिसिडं, ७२. ख.ग दीइं. ख. दिन दिन. ख.ग. वाघइं. अ.ख.ग. कलाइं. ग. पूरीक्षा. अ. रयणा रे. ग. रयणाय. ख.ग. जोइंजी. अ.ख.घ. नील-दिलिनी, अ.ख.ग.घ बेहु-पक्षि, अ.ख. नहीं, अ. अधूरु; ग. अधूरी, अ.ग. सोइ. क. जडिम. ग. गुणि. ग. सरखो; घ. निरखो. ख.ग. परिख्यु ग.घ. क्षेवडो ७३. ख.ग. वाघइ; घ. वाघइ. अ.ख. श्रदि; ग. श्रदि. ग. केरो. अ.ग. कलाइ. ग. अलंकार्यो. अ.ग. त्रिभोवन. ख.घ. नयण-नंद. ७४. ख.ग. चिंतइ हैड्ड. ग. जिंगे. अ. कमिल लंसइ. खु.ग. भिलसइं. ७५. खु.ग. केहवइ. ग. तणो. घ. तणउ. अ.ख.ग. दिवस. आव्यो. अ. कपूर हुइ अति निरमल रे, अ देशी. ख. ठाल , कपूर हुइ अति कजन्द्र, ए देशी. ग. ढाल ५, राग केदारो गोडी, कपूर होइ अति उजलुं रे. अ देशी. ७६. खं कहिं. ग. कहइ. ख.ग. मीठडा. अ.ख. संयंगला. अ. नयरीइ; ख.ग. नगरीइं. ग. गयु ग. गयो. ग. इतो ग. व्यापार. अ. वातडजी. अ. माहरा मननो. ग. तुं तो दीन तणो घ. तृतू. ग. तणु. आ.ख. ऊदार. आ. दूपर ख. बध.८ दूपद तथा आचली. ग. बंधवजी० दूपद तथा आंचली. ७७. अ.घ नामि. ख. नामि ग. नांमइं. अ. तीणइ. ख.ग. तिणि. अ. पुरिरे. अ. जांणीइ. ग्. जांणीइ. अ. सजन नइ. ७८. अ. हईड्छ; ख. हईड्छ; ग.घ. हैड्यू. अ.ग. त्रीजू अ. सोइ. अ.ख.ग. लोचन. अ. मानसि ग. बांधू. ७९. अ. जेहवु ग. नेहलो. अ मंजीठ. ग. जेहवो. ख. सोई. ग. तेहबो सोई ग. नेहलो. ग. अहवो. ८८. ख.ग. दिन. अ.ख. नहतरित्र; ग. नहतया. ख.ग मइं, अ. मइ; ग. कर्या अ.ख.ग.घ. प्रेमि. ८१. अहीं प्रत 'अ', 'ख', 'गा', 'घ'मां वधारानी कडी आ प्रमाणे छे. प्रत 'अ' जिहां मन मानिउं आपणुं रे, तिहां सउ करीय विचार, आक धंतुरा सिव गमइ रे हर उरि विसहर हार. ॥ ७९ जिहां मन मानिड आपण्रे, तिहां सिड करीय विचार, आक धंतूरा सवि गमइं रे, हर ऊरि विसहर हार. ॥ ८० जिहां मन पानिउं आपणुं रे, तिहां सिउं करीय विचार, आक धंतूरा सवि गमइं रे. हर ऊरि विसहर हार ॥ ८० जिहां मन जानिउं आपगूरे, तिहां सिउ करीइ विचार, आक धत्रा सिव ठाम रे, हर उरि विसहर हार. ॥ ७९ अ. दोइ. अ लोय; ख.ग. लीइ. अ.ख.ग. कहीड. अ.ख. घरइ. ग.(घ) रइ अ.ख.ग घ पत्नि. अ. निमइ; गृ. निभि; गृ जनांहि; घ. निपाडइ अ. घरि; ख.ग.घ. घरि अ. तणू; स्वाग तम्. स्वाग चित्र ८२. अघ. घरि अ, जमवा हू ग. गयो. स्वाग. दोठो एक

बालि. ख. त्रिणि; ग. त्रिणि; अ त्रिभुव(न) अ.ख रुपन् ग. रूपन् ८३. अ. सकू घ सकुइ. ग. श्रोकुल तत्र थयो. ८४. अ. गयु. ग. युगति. ग. पार्मि अ. मनहः, ख.ग. मनइ. अ. थयु, अ. मह ख. मह ग. पुछिउं ग. निसासो अ. मूकी अ.घ. कहई ख.ग. कहड अ.ख दुखि ग. दुखें घ. दुखि ग. भरीओ मंडारि ८६, अ.ख. सूंदरी ख.ग. मोरहं घ. मोरह मोरह अ. हइलई ख. हइडलई; ग. हइडलई ८७. अ. विदेसि; ख.ग. विदेसि ग. भिमड अ. मलिंड; ख. मिलंड; ग. मलिओ अ.ख.ग. सरखी को जोडि ८८. अ. किहि ख. किहह ; ग.घ. किहि. ख.ग. पामीइं घ. सयोग ख.ग. कीजइं ग. विण; घ. वण. ख.ग सिउं घ. सिंड ८९. ग. जाइ ग. मूरल खाग. थाइ ९०. ग. रुपवती. ख.ग. नइं अ. प्रिडं ख.ग. जाणइं ९१. अ ख.ग. रसीआ घ. रसीअ ख.ग. मूरख अ.ख.ग. निरगुण अ. प्रीडं ग. तिसिडं अ. सुदरी; ख.घ. सुंदरि नु; ग. सुंदरि नो ९२. ख.ग. सालइं ख.ग. फलइं क. मानइं ख.ग. मानइं ९३. अ.ख. परणिया; ग. परिण्या अ. पाखि अ. भऌअ; स्व. भऌ; ग. भलो अ.स्व. नहीं स्व.ग. ओक ज स्व. कडुइ: ग. कडूइ ख.ग. बोलडइं अ.ख.ग. दिन दिन अ. दहइ; ख.ग. दहइं ९४. अ. नइ अ.ख.ग. गुण अ.ख. अगल्ड; ग. आगलो अ.ख.ग. सुजांण अ.ख.ग. अहिनांण ग स्वगतिणु ९५. अ. कोटि; ग. कोटइ स्य खाग. करइ खा. कामिनी; घा कामिनी आ. जू; गा. जो ९६. ख. सिउ ग. स्यं अ.ख. थाय; ग. थाइं ९७. अ.ख.ग. सुगुण अ.ख. नाह्छ; ग. नाह्लो ख.ग. मल्हं ९८. ख.ग. पूरव ग.घ. सुगुण अ. जोड; ग. जोडि लहुहं ९९. अ.ग सगुणां अ.ख.ग. सरिंड ख. मल्ड; ग. मिलंड १००. अ.ग. परिण्या अ. पाखि; ग. पाखड़ ख. २७; ग. मलो अ.ग. नहीं ग. मूरख ख.ग. भरतार अ.ख. त्रिय; ग. प्रीय ग. मूरख आ.ख. माहिं; ग. मांहिं ख.ग. सो वार, १०१. क. जुरइ आ. थोडि; ख. थोर्डि; गृ. थोडइ अ. ठाम जि देखीइ; ख. ठामिं देखीइ; ग. ठांमिं देखीइ १०२. अ. मुजिन; ख ग. मुजनइ अ.स्त.ग. किहां; घ. किम्हि स्त. पांमीड; ग. पामीओ; घ. पामियुं १०३. अ.ग. वांणी अ स्त ग.घ. इम ग. बोलिउं क. जुरि आ.ग. घणुं आ.ग विंत; ग. चित्ति १०४. ख.ग. लहुइं आ. नहीं; ख. नहीं अ. जेहिन; ख. जेहिनइं अ.ख. घटतू ग. घटतुं ख.ग. हुइं अ. मेलइ; ख.ग. मेलि १०५. अ.ख.ग. रतनाकर ख.ग. अछइग. हरख्युं १०६. अ. हेयडा अ. चिंति; ख. चिंति अ.ख.ग. सरखि, अ. सरख्; ग. सरख्; घ. सरखां अ. मेलसइं; ख्रा.ग. मेलसइ १०७. अ.ख.ग. सुगुण अ.ख.ग. सोय अ. दैवि ख.ग.घ. दैवि १०८. ग. मोकलिओ अ. करि; ख. केरि; ग. करइ; घ. केरइ. अ.ख.ग. मू साथि सोइ; घ. साथि. ग. आवीओ १०९. अ. वलतू; ख. बलतु; घ. वसत् अ. तइ; खाग. तइं आ.ख. हुवु; ग. हुवो; घ. हुवड आ.ख. घणु; ग. घणुं ख. ढाल ६ राग धन्यासी, पीउडु रे घरि आर्वि, आषाढमूतिना रासनी देशी. ग. ढाल :६, राग धन्याशी, पीठडठ रे धरि आवि, आषाढभूतिनां रासनी देशी. घ. राग धन्यासी. ११०. ग. सिंड मोकल्यो. क ख ग. कयगिल. अ. अजित नइ; ख. भजित नइं; घ. अजितनी अ गुणवंती; ख. गूणवंती. ग. शील्ड. अ.ग. जौड. अ. होसि. ख. दुपद् तथा आचली ग. दूपद तथा आंचली. १११. ग. आव्यो. अ.ग. विलसहं; घ. सविलसह अ.ख. परइ. ग. अधिको साथि. ११२. ख.ग. दिन. ग. बिंपहुर; घ. बिपहुर. ख.ग. समइ. ग. पोढियां. अ.ग. दोय. अ. तसइ; ख.ग. तसइ. अ. पथू. ख.ग चिंतइ. ग. ภะสุ. ११३. ग. फेरो अ.घ. भेहवइ; ख़ाग भेहवइ अ. चिति; ग चितइ. ग. मनडा. खा. मांहि; ग. मांहि. ख. आवइ; ग. आवि. अ. छिइ; ख. छि; ग. छे ग कुणपैको.

अ. पुरि; खं. पुरि अ. तांणिउ; ग. ताणिओ. ख. मांहि; घ. माहि. ११४. खं.ग. दीसँह अ. छि. ख.ग. छिंह, अ. देई नि; ख. देई नि. अ.खग. माहाह, अ.ग. कोइ. ११५. अ.ख. वितिह. ग. सुर्जीणि. ग मन-भावतुं. अ. महिल रे; ख. महिल रे; गं. मेहाला रे. औ. मोरिं; स्व.गे. मोरि. खग. मंदिरे. ग. आणि कि. ११६. औ. साचू; ग. साचूं. खं.गे. मिंह्य. अ.मे. विशेखंड; घ. विशेखंड ख.म. सीयाठि ख.म. जोईई अ.ख. तु में. तो अ. जांगीई; स्व. जाणीइ ; ग. जाणीइ अ. वाति; ख्र.गं. वातइ ग. पंपालसी याल कि ११७. अ ख. बीजु खे. नहीं अ. मीनसिंह; ख.गं. मानसिंह; घ. मानसिंह अ. जोड़ स्वमेर्व ख. जींड जेंद्र स्वयमेर्व गः. जौंन जह स्वर्धमेव ग. आणी अ. शकुननु; ख. शुकननु; ग. शकुननो ख ग. सुँदेरी ११८. औ. जॉणिइ; ख.ग जाणई अ. काइ ग. कांइ ११९ अ. शिव ग. मने अ.ख.ग. हरस अ.म. सुपेच थर्ड आ, सीआलिणि नइ; खु.ग. सीयाली नइ दीउं घ. शीओलि नि आ. दीघू; ग. दींचूं अं. जेसे भोज्य; ग. तस भोज्य; घ. सभीज्य अ. घन्यासी; खे. ढाल ७, रांग धम्यासी; सार्लिंग मंद्र मोगी होइ देशी ओहनी छड़ . ग.डाल ७ राग धन्यांसी सालिमद्र भोगी रे हों, के देशी: घ राण धन्यासी १२० ग. पंच-रत्न धरि अ. आणिया: ख.ग. आणीयां अ. चिंतिहि; ग. चिंति घ. विहाणामां अ. प्रीति; ख. प्रीक्रित अ.ख.गे. कहिल अ.ख. जौतः गः जुल अ.ख.गे. कर्भनी आ.ग. त्रिभुवन; ख. त्रिभूवम. अ.ख. जेहतु; ग. जेहनां अ. मीटन; ख. मीटो; गै. मीटा खाग. छई आ. माहि; ख बाहि गा. माहि आ. ब्रेपद खा. ब्रुपर गा. दुपर १२१ अ.स्व.गं. घणु; घ. घणुं गं. हुवो ग चितवहैं ग्. मोलो १२२ ग्. राति गं. अंधारे अ गं. जांणतु; गं. जांणतो गं. अशाती १२३. घ. विरमिल गं.घ. थिकी आ. भेहनि; गं नेहनेई पीहरि मौकलो १२४: अन्त हुईडि; घ हिड्ई कोईअ खुन, विमासी है है. विमासी अ. किंधू; ग. कीघू; खग. तणहं क. प्राणडं; खग प्राणीओ; घं प्राणीं खंग. लहेंहैं ग. करतो १२५. अ कुडु; ख. कुडु; ग कुडो ग. देखाडीओ. ख ग. जिमदत्त नई अ ख.ग. तुही; ध. तुम्हे तेडिया; ख.ग. ते तेडियां अ.ख. स्त्रींनि कहि; ग स्त्रींनि कहि १२६. अ.च. आकारि घ. नयणा अ. चेघ्टाइ ख.ग. बोलावइं ख.ग. लहीइं ख. मर्गनुः, ग. मननाँ. १२७. अ. सीइ ख. ओलल्यु खाग. चितइ आ. कर्मनु; खाग. कमनो आ. कर्म; खाग. कर्म न कुटइं ख. कहुनु: गा. कहुती ख.गा. कीजइं १२८. गा. पहिंछुं; घ. पहिन्हुं गा. वर्रीसङ्ग स्ब. परि नि अ.स्व. हिव तु; ग. हिव तो अ.स्व. अहेवू संपेनु; ग. संपती अ.स्व. हिवै; ग. हिंबें जो उन्छेह १२९. ख.ग. छेहड्ड खे.ग. ऊपजई खे.ग. सा पहिलों ग. जो ख.ग. होय आ. जग हुसु खू. नइ गृ. हाणे खू. बिपरिंग. बिंपरि; खू.ग. होय १३०. गृ. रीसाव्यां स्थाने. दीसहैं ख. कहैं ग. कहें अ.ख.में अमीणा अ ख.ग. कहें वयरी कांन; गू भरांह घ. कांन भराइं १३१. अ. मे. भर्गा सज्जन; स्त्र. भेगां सजन स्त्र. चाल्डं स्त्र. नहींअ अ.स्त्र. पेराणे अ.स्त्र.ग सींगिंगि थ्या.ग. लगह था. बींग १३२. प्रत खागमां आ कड़ी अने ते पछींनी कड़ी ऊर्लंट कर्म 🕏. प्रंत घ.मां आ कड़ी नंथी. पाठान्तरी संपादित प्रथपोटनी कड़ीना कर्म ने हिसा 💆 ग. रूसंगडां ख.मइं ख.ग. हहइं अ. खटुकइं; ख.गं. खटुकइं ग सात जिम्म अ. मण्युं; गं. भंत खं. सजन अ.खं.ग. मेन्न १३३. बॉलि; खं.ग. बॉलइं अ. चिति; खंगे. चिति ग. उत्तरीआहं अ. समाणां अ. दीसई कांई; ख.ग. दीसई कांइ १३४. ग. विहिड्यों ग. जाँगे खं. पखी ग. वंधी अ. जोहं; ख.ग. जोहं ख. अंधा अ.ख.ग. दीसीहं ग. थाई १३५. अ.ख. जोयत: ग. जीअता

१३६. अ.ग. पाडुं; ख. पाडू अ.ख.ग. दीहा तणा अ. नही १३७. ख.ग. देखहं अ.ख. नहीं १३८. ग. मांणसां अ.घ. लोयणां; ख.ग. लोअणां ख. चित्रोडीयाः ग. वितोडीयां ख.ग. अंधपण् अ.स्त.ग लहुंति १३९. स्त. कार्डि; ग. कार्टि अ.घ. जाहारि; स्त.ग. जिहारइं १४०. ख. मह: ग. महो अ. हवूं ग. हाथो मननो ग. सज्जन ख.ग. छइं ख.ग. छेहुडइ . अ. ह्यां; ख हुयां; ग. हुआं अ. सार; ख.ग. छार १४१. दुर्जन खग. अवसरि अ. लहिवाई; ख.ग. लहिवाई अ. अपराधि; ख.ग. अपराधी अ.ग. निव अ. ऊभजइ; ग. कभजइं अ. कहुइंबाइं; ख. कहेवाइं; ग. कहिवाइं १४२. ख.ग. कर्म ख.ग.घ. वसइं अ.ख. जु; ग. जो ख.ग. त्रटइं ग. तो अ.ख.ग. मन मांहि ख.ग. झुरीइं ख.ग. नीच घ. पेम १४३. ग वहिडीयां ग. मिलसि अ.ख.ग. मीठउं; अ.ख. स्यु अ.ख. जु; ग. जो ख्.ग. करइं १४४. स्व. ठज्छां; ग. ओत्छां अ. छांडीइ; ख.ग. छांडीइ; घ. छंडइ स्व.ग. वणसाडीइ; घ. वणवाडीइ ख.ग. रहीइ १४५. ख. परीइ; ख. परीइ अ. तजाइ; ख.ग. तिजीइ अ.ख.ग. सायरनां लहिरडां ख.ग. कीजइं १४६. अ.ख. जो; ग. जो ख.ग. छईं ग ज नीरमली ख.ग. टलसइं अ.ग. नीय-मनि अ. चीतवी; ख.ग.घ. चींतवी अ.ख.ग. रथ-मांहि आ. कीघ; ग किंद्र १४७. अ. वाटि; ख. वाटि; ग. वाटह अ. घणा ग. शकुन हवा ग्. श्रुभनो आ. कहू; ग्र. कहुं १४८. आ कडी प्रत 'घ'मां नथी. ग्र. वस्वर्णिनी ख. क्ष्म ज गाइं; गु. वेण्या वृषभ गाइं गु. दुर्वा गु. फलिफूल खाग्. जाइं १४९. आ कडी प्रत अ. ख, घ,मां नथी. ग. रूप्पमणि ग. छात्र-चामर ग. सोवन ग. महिमावैत १५०. खग. गोमय ग. दीवो, अ.घ. दिवु ख.ग.घ. वीणि अ.ख.ग. वृद्धापन क. पंडिति अ.ग. सुक १५१ ख.ख.ग. अेतां ग. मेहलेवां ख. जिमणाइ; ग. जिमणाइं अ. पामीइ; ख.ग. पांमीइं ख. अणांइ; ग. अणांइं; घ. अणाइं १५२. अ.ख.ग. रगत ख.ग. कुंभ अ.ग. दोइ; ख. दोइ; घ. दोइओ ख.ग. होय ख.ग. करह अ. क्इवार जु; ख. क्इवार जु; ग. केर जो १५३. अ घ. जिमणाथा: ग. जिमणांथां ख.ग. वल्ड; घ. (डा)वां वल्ड अ.ख.ग. सजीय; ख.ग. जांई ख.ग. ऊवडू ग. सहोय १५४. ग. सिखी; घ. शिखा ख. सीचांयडु; ग. सीचांणडो अ. वायसनइ ख.ग. सावडू अ.ख.ग. पंथइं १५५. अ. बोलिइ; ख.ग. बोलइं खु.ग. जिमणइ' ख. टीटोडी ग. चील्हडां; चीहुडां १५६. ग. लाटि कुरंगी नोलीओ ग. धन-संपदा १५७. अ.ख.ग. शाहि अ.ख.ग. डावां अ.ख ग. ज ख.ग. करहं घ. सभाव १५८. ख.ग. लवइ' ख.ग. होय ख.ग. मधु अ.ख.ग. जोय १५९. ख.ग. लगाडि ख.ग. स्वभावि ग्. तेहनो अ.ख. पूठि भछ; ग. भलो ख. भेहनु; ग. भेहनो अ.ख.ग. स्वभाव १६०. ग. . छुडी खु.ग. भइरव अ.ख.ग. गमनि घ. तेह अ.घ. स्यु अ. लहसई ख.ग. लहसइ घ. क्षेह ख.ग. लहइं; घ. लहइं अ.ख. त्रणि १६१. अ.ख.ग. पीआंणडइं घ. प्रीआणड ख. स्वरं ग करइ अ.ख, आसन अ.ख.ग. डावि ख.ग. पासई ख. सोहांमणा; ग. सोहांमणी ख.ग. हुई आ. आसन; ग. आसन्न १६२ अ. पंथइ; ग. पंथइं ख. हर गति जिमणीली ग. हर गति जिमलीणी अ.ग. उपाईं; ग. ऊपाईं १६३. अ.ख.ग. च्यारि; घ. च्यारे ख.ग. जोईं ग. जांतां डाबा स्वर करइं आ. तु मुख; ग. तो मुख संपद होय. १६४. प्र 'ख' अने 'घ'मां आ कड़ी नथी. अ. परि; ग. परि ग. परिणांम ग. पंथ हवा ग. चिंति १६५. अ. वहिछ;

ख. वहिल्ल, ख.ग. हसहं अ.ग. महुत अ.ग. चालहें ग. उतावलो ग. हविं जुओ अ.घ. शुक्रननु; ख. श्रुकननु; ग. शुक्रननो क. राग केदारु अ. राग केदारु ख. राग केदारु पूरवी, ग. राग केदारो, पुरवी गिं सुकमालना चोढालीयानी, क्षेणि परि राणी देवकी क्षे, क्षे देशी घ. केदारु १६६. अ. चिंति निवारीइ; ख. चिंति नवारीइअ अ. देवनइ; ख.ग. देवनइं ख.ग. बुद्धिं १६७. अ.ख.ग. कीधु अ. जलन्धि. अ.ख. जाणे; ग्. जांणे. अ. अहवुं; ग्. अहवो. अ. नही अ.ख. तरि; ग. तरिं. ग. स्यदनथी सह ख.ग. उतरइं; घ. उतारी ख. जोतरइं; ग. जोतरिं आ.ख. हरुखं; ग. हलवो हवो थे. १६८. अ.ख.ग. वहू खभा. प्रति खग. बोलि ख.ग. मर्ति ग. रमित रे छंडो ख.ग. वह ख. अही ग. आगिल ख.ग. छंडां अ.ग. पांणीय; ख. पाणीय अ.ख.ग. जांणीय स्व.ग बोहणीय ग. उतारो स्व.ग. याय १६९. अस्व.ग. वहांणी ग. उतारीअ अ.ख.ग. निवारीय ग. सारीय. अ.ख.ग. चलाणे. अ. चिंतइं; ग. चिंतिं. अ. वली बोल ज कीधा वामाओ ख. पण: ग्र. पणि. ख. रमकती रे अ. १७०. ग्र. निम खग. ऊतर्या. ख.ग. घूळीओं ओ. अ.ख. जगदीश्वरतुं: ग्र. जगदीशतुं. अ. स्मरंतां ख. वोलीओं; ग्र. वोलींआ. १७१. अ. अंगि. ख.ग. सेठि. ख. प्रसंसीड के; ग. प्रसंसीओ ख.ग. कहुइं ग. सुणो. अ.ख.ग. किसु; घ. किस्युं. अ.ख. वखाणु; ग. वखाणुं. अ.ख.ग. किंहि ख. नासीठ, ग. नासीओ; ग. के नासीट. १७२. ख.ग. दीसइं ख. चिंतइं; ग. चिंतिं. घ. मनइ; अ. मनेइ: ख. मांनइं; ग. मानं ख.ग. अती ग. चिति ख. मनिमां अ.ग. अनुसरीअ; घ. अनुसरी. अ ख ग. मौनपणुं. ग. मारग विल्ञे. १७३. ख.ग. दीठवं; घ. दीह. ग. वोलसिरी अ.ग. भरिर्युः; ख. भुरिर्यु व.ग. वखाणइं. ग. सुंदर. ख.ग. जाणे अ.ख. मंदर. अ.ख. जिस्यु; ग. जिस्यु. १७४. ग. वहअ ख.ग. कहइं. अ.ख.ग. तम ख.ग. छइं ख. बंधूर. खा, मुजनइ वहुइ घ. मुजनइ अ. मांहि; खाग मांहि थे. खाग कहुई ग नीपरि. अ. लिवके; ग. लिव. १७५. अ. जिसइ. अ.ख.ग. आविड. घ. तिसइं. अ. हरिख रे; ख ग. हरखंड रे; घ. हरिसंड. ग. सेठि अ. वसांणीड; ग. वसांणीड भे अ.ख.ग. अवतरिंड. घ. इन्द्र-भुवन अ. थिकी; ख.ग. थकी अ.ग. जांणीड के; ख. जाणीऊंके. १७६. अ.ख. वखांणइ; ख. वखाणइं अ. अेहनु ख.ग. जोइंइं ख.ग. मनइं अं ख.ग. चाल्यां अ. वेगिं घ. निपुर अ. तजइ ओ; ख. तजइ ओ; ग. तजइ ओ. १७७. ग. मेहल्यो तव देसडी ग. नेसडो. ग. वेसडो ग. अभिनवो अ.ख.ग. थोडूं ख.ग. कहुइं अ.ख.ग. केंदुं. अ.ख.ग. नहीं नवुं भे १७८. ग. वहूअ ख.ग. कहइं ग. सुणो ख. उत्तम ख. सायर परि ते मनोहरं झे, ग. सायर पइरि अति ख.ग. वंकी ख. नन समी. अ. घणु हीनइ; ख. घणु हीनइ; ग. घणु हीनि ख. विसहर थे; ग. विसहर्थे. १७९. अ. शिखित ग. तुरंगी ख. हुइं ख.ग. उरंगी ख. मानइ अ.ख. अम ग. जो रंगी अ. कुट ख.ग. बोलइं ग. अखूट ग. तणो. १८०. अ. किहइ: ख.ग. किह. ख. अहवइं; ग. अहविं ख. आविट ग. आव्यो ख.ग. शीलवतीनु ख.ग. रहइ अ.ख.ग.घ. सरसी अ. सुंदरि; ख. सुंदरी अ.ख. आविउं; ग. आव्यो ग. निज धरि. ख्र ग. करइं. १८१. ग. ऊपरि ग. सूंदर ख्र.ग. वस्त्रु अ.ख.घ. वुलावीय; ग. वोलावीय. ग. मंदिरह अ. वल्यु के ख. विलिओ; अ.ग. वल्यो १८२. अ.ग. दुख. अ. गया **क.** आतापि अ अणुंसरी; ग्. अणुसरी अ.ग. वरतरुं ख. वर ग. देंठिलि अ.ग. छोडिअ; ख.

छोडो ग. ऊत्रयां ख.ग. मोडीप ग. नारीय. अ. लटिकेह; ख.ग. लटिके ख.ग. लोडावइं अ. राग, राम गिरि. ख. ढाल ९, राग, राम गिरि, ऋषिदत्तानां रासनी, ऋषिदत्ता पंथि संचरइं. भे देशी. ग. ढाल, राग, राम गिरी, ऋषिदत्ताना रासनी, ऋषिदत्ता पंथ संचरइ, भे देशी घ. राम गिरि. १८३. ख. बइठां: ग. बिंठा ग. हेठिंठ. ख. छांहीडइ: ग. छांहीडइ: अ.ख. चीतवइ: ग. चींतवइं १८४. अ.ख.ग. कर्म अ. क्ट्रीइ; ख.ग. क्ट्रीइं. अ.ख. जोड; ग. जोओ अ. हिद; ख.ग. होदय ख. नहो. ख.ख.ग. चिति अ. दुपद; ख. द्रपद तथा आंचछी; ग. दूपद तथा आंचली; १८५. आ. करमि. ख.ग. मुंज; ग. मोटओ नम्यो. ग. वर्नि. आ.ख. जीड; ग. जुओ. अ.ख.ग. कर्म. १८६. प्रत 'ख' अने 'ग'मां आ गाथा अने ते पछीनी गाथा कलट कर्म छे. अ. लक्ष्मण. ख.ग. साथि. ख. करमनइं; ग. कर्भनइं. १८७. अ मंदिरिइ; ख. मंदिरिं. अ. करइ; ख.ग. करइं. अ.ख.ग. निथ-तनु. ग. सूरित. अ. छाबीड; ख. छाडीड; ग. छावीओ. अ.ख. जौड; ग. जुओ. अ.ख.ग. कर्म. १८८. अ. चह रे; ख. चंह ; ग. चंद रे. अ. करमि; ख. कमइं. अ. शीलवती नइं. १८९. ख.ग. वहइं. ग. सिंह. ख. अपवादि. अ. साथइं कुलइं चल्लइ; ख. नवी चलइं. ख. की जइं. ग. किस्य. १९०. अ. रिखिदत्ता. अ ख.ग. राक्षस केरं. घ. छेरा. अ.ख. जौड; ग. जुओ. १९१. अ. मलया-सुदरी; ख. मलया-सूंदरी; ग. मलिया सूंदरी. ख.ग. निव. ख.ग. पांम्या. अ.ख. सहयां. ख ग. दुकल. ख.ग. ढंढण-ऋषि. अ. लगइ; ख ग. लगइं. १९२. ख. देस. ग. परिहर्यो पतिनो. अ. मांहइ. ख. मांहि; ग. मांहिं. ग. जनमीओ. ग. जुओ कर्मनो. १९३. ग. मुखनां ग. दुखनां ख.ग. होय. अ. खिणी खिणी; ग. खिन खिन अ.ख.ग. जोय. १९४. अ.ख.ग. मालीयां अ. संध. ग. वनि-आवास. १९५. ग. तेलाइं स्यु. अ. रहिवू. अ. घाट. १९६. अ.ख. आविडं. ख.ग. महारइं. अ. जु. ख. जुड; ग. जुओ. अ. चहू रे;ख. चहूं रे; ग. चढ्यूं रे. ख.ग. कुटइं. ख.ग. दहा. १९७. घ. कर निअम अ. वालती. अ.ग. सीलवती. क. गुण-गौण. ख. अवहड ; ग. अहर्वि. अ. पाराइ; ख.ग. पासाइं. अ.ख. बोलिउ; ग. बोलिओ. खग. बोलि. १९८. ग्. सम. अ.ख.ग्. जांणी घ. मुजारी अ. वायस नइ; ख.ग्. वायस नइ ख.ग. भणइं. ग. भाई तुं. १९९. अ.ग. चरित्र [बचन]; ख. चरित्र. अ. सोहांमणु; ख.ग. सोहामणू अ. कुल्युगि. ग समो. ख.ग. तुं. ख.ग. सिरखो. ख.ग. नहीं कोय; ख. नहीं. २०: अ. निगम. ख.ग. लहइं अ.ख.ग. सुजांण. ख.ग. कहइं. अ.ख.ग. वांणि सुवांणि. * २०१. अ. आंही; ख.ग. आंहां ख.को नही. अ. परणमइ; ख.ग. प्रणमइं (परगमइं). अ. स्यु; ख. सूं. ख. करइ; ग. मूं कि प्रयास. २०२. अ. विण गुण कुण; घ. गुण कुण. २०३. अ.ख. म दाजि. २०४. ग. आप्पीओ. २०५. आ कडी प्रत अ'मां नथी. अ. जुरइं; ग. सूरइं. २>६. अ. हैइ. ख.ग. हैइ. २०७. ग. भलो. घ. कारेली कां बहु फली; २०८. अ. सुवेघ्यां; ख. सुदेघां. ख ख. हैइडि; ग. हैंडिं. २०९. अ. कह. अ. भाजि: ख. भाजड: ग. भांजह भूख; ग. सरिंख सरख. २१०. ख.ग. तेहवो. अ. जेहिन कह. ग. आघो २११ अ. जार. ख.ग. जाय-न्तु; घ. जाहइ-नतु. अ. कोय. २१२. अ.ख. करितः ग. ताहरो. २१३. ख. सुंणी. ग. रयरइं. अ. अकसूं. २१४. अ. बूजइ; ख.ग. बूजइं. अ.ख.ग.

^{(*} सूचना.—कडी १थी २०० सुधीना बधा पाठान्तरा नोंध्या छे, पण हवेशी भाषा, अर्थ के अन्य कोई हुव्टिथी महत्त्व धरावता ज पाठांतरो नोंध्या छे.)

भेड २१५. अ.खं. किरतारि; ग. किरतारि. २१६. अ. जांह; ख.ग. जीह. अ. पूठि; ख.ग. पूछि अ ख.ग. देयंति अ. पांहि; ख.ग. पांहि. अ.ख.ग होअति. घ. को अति. २१७. अ.ख. प्रीति; ग. प्रीति. २१८. ग. सरखो. ग. संदेशो; अ.ख. प्रष्ठु; ग. प्रथो. २१९. खी. शुकनशास्त्र. ग. छे. ग. मुखइं; अ. अंक जीभडी. ख.ग. अथ दिशि प्रहर विचार. २२०. अ. कहिई; स्त्र. कहई; ग. कहिं. अ. मेहागम. २२१. अ.स्त्र.ग. मेहागम ३. ग. कहई ७. २२२. घ. अभ्यासत ४. अ.खं.ग.घ. मेहागम ५. अ. राया माना दि ६; खं. मान दि ६. खं. राज विंड्रंर ७. २२३. अ.खं.ग. प्र ३. ग. होय ४ अ. रायभय ५. अं.खं.ग.घ. भयवार्ता. गं. अभ्यासगत कोपं घ. असागत कोइ ८. २२४. ख.ग. चिहुं थे. ख. पंहुरे; अ.ख.गं. बाणि. ख.म. श्रव्धि गुणे. २२५. अ. ऊचु; म. ऊंचो चठी. अ. कार्ग. २२६. अ.खं. मृत-विचारि. २२७. अ.ग. बंध-संहार. ग. तणो. २२८ अ.ग. जातां अ.ख. होय. ख.गे. जाइंतो न वलइं; घ. न वणइं; अ.ख.ग. सोप. २२९. ग जो सावदुः ख.ग. हुई वहुँ २३०. गं. तो ते. अ. वाटि; ख्र.गं. वाटिं. गं. घणेरो हुंति. २३१. अ. भेहबु; ख्र.गं. भेहवी शंकुन, ग. घणो. २३२ अ. खडगि; खं.ग. खडगि वैर अथमणि. २३३. ग. साचो. खं.ग. २३४. अ. निष. अ.घ. फल्ड स्त्री लाभ; ख्र.ग. फल्ड स्त्री लाम. २३६. अ. आगम; ख्री.गी. आगमि. २३७. घ. शबंद न करति. खं.ग. वरसहं नहीं. २३८. अ. कारिनु; ग. जांणिवी. २३९. ख. गृह २४०. ख. पंखि. अ.ख.ग. दिस जोय. अ. उपद्रव्य. ख ख. होय. २४१ अ. महर: ख.ग. सहवं सरईं. ग. संजुत्ति. अ. नंघि ग. झत्ति. २४२. ग. साहमो ग. जोईं ग. बोलेइ. घ. तु धन्य. २४४. ख.ग. थोडा मांहि. ख.ग. ल्रह्इं धूण्इं अ. कचड नीय लीबी; ख. कचडिइ नीय सीसि; ग. कचडिइ नीय सीसि. २४५. मंगल. ख.ग. जयवि. अ.ख.ग वंबेइ; घ. जइ विवंबेइ. २४६. अत्रे प्रत ख्रागाचामां वधारानी कडी नीचे प्रमाणे छे.

प्रत 'ख'—अरुणत्छमणि बारथी, मौनपणि ऊडी जाय, राय गणि जइ बिहुहबई, तुहि खित्ति विवाय.

284

प्रत 'ग'-अरुणत्छमणि बारथी, मौन पणि ऊडी जाइ, रायंगणि जइ विहु हवइ. तो हि खित्ति विवाय.

285

प्रत 'घ'—अरुणत्छमणि बारश्ची मौनपणि ऊडी जाय, रायंगणि जइ विदुहवइ, तुहि खित्त विवाय.

२४४

ख. जिंग पण; ग. जिंग पणि. अ. जग मांहि; ख.ग. मांहिं. घ. अगेय. २४७. ख.ग. सरसइं ख. ढाल १०, राग, केदार गुडो, छानो छपी. ओ देशी. ग. ढाल, राग केदारो गोडी, छानो छपीनई कंता किहां गया रे, ओ देशी. २४८ अ.घ. तुझिन; ख.ग. तुझिनं. ख.ग. संसारे. २५०. ग. तिम मइ. अ.ख.ग. सह्या घ. सह्या. २५१. ख. वाछ; ग. वाछो. २५२. ख. पंडिया. ग. पड्या सुजांण रे. २५३. अ. हूया अ. तमिन; ख. तमिनं; ग. तुमिनं ग. कर्यों ग. लहयो. २५४. अ.क. सानिधं; ग. सांनिधं. अ. पतन. २५५. ख. किस्पो कर्यो. अ. अगज्ञान. २५६. आ. वयस. अ. मुलगो. अ.ख.ग. मुहुर. २५७ अ.घ. अछ;

्या. अंग्रेह ग. अरथि हुई अरथनो. स्व.ग. ल्यो. २५८. अ.स्व. भूखिउ; ग. भूख्यो. ग. दिओ. ग. वंणो. अ.स्व.ग. माहरां. ग. करसिओ. अहीं प्रत 'ख', 'ख' अने 'घ'मां वधारानी गाथा और प्रमाणे छे.

अं. — मज रे महडूं दुख-जिल भरीडं, कुल आगिल कहुं मन तणी वात रे. स्व. — मुंज रे मनडूं दु:ख-जिल भरीडं, कुण आगिल कहुं मन तणी वात रे. ग — मुज रे मनडूं दुख-जिल भरीओ, कुण आगिल कहुं मन तणी वात रे. स्व. — दाल १९ राग देशाख. ग. टाल १९ राग देशाख. घ. राग देशाख

रे ५५. औं गे. बोलिंग. सुणो. ग. गुणवंता मानु रे. अ. हरव्या. ख. नारि अपार र्खें. ढुंपर्वं; खें. ट्रैपर्वं: गं. ढूंपद. २६०. अ. काकण सार रे; घ. कांकणित. खाग. सो मकरंद रैं; चैं. सुँ मुकरंद. ग चिंतइं चिंतरे. खु.ग. पूरिडं पूरिडं मनि. २६१. आ कडी प्रत 'अ'मां नैंबी. खें गी. चित्य. खं. आण्य आण्य नगरथी आयुध, गा. आण्य रे नगरथी आयुध क्षेक रे: घ. औष्णित्र ओणित्रं, गं. हेठिलि रे. ख. बीठ दीठ; ग. बीठो दीठो; घ. दीठु दीठु. २६२. गे. मनमा रें ऊलंड. ग ऊपनो; ख. धननुं अंबार; ग. धननो अंबार. २६३. अ.अ.ग. बोलावि. में. पाछी वालि रे. में. बली म. मंदिर आपणइं. अ. बोलिअ वांणी; म. बोलि ससरो वांणि रसाल रें. २६४. खं.गघ. दूहा. अ.ख. अविचार्. ग. अविचार्य अ. कांइय न कीघ; ख. कोंड़ ने कीर्घ. ग कोंड़ न कीघ्घ. २६५, अ ख.ग. मन-भगुं; ग. कहो. अ. सांभिरि; ग. सीर्भिरिइ. २६६ अ.ख.ग. सोविन नि. ग सधि संधि. अ.ग. मिलाय. अ.ग. ठाय. २६७. अं. फूटुं ग. फूट्ड . अ. तेह. २६८. ग. छेहडो. २६९. अ.ग. भम. घ. भरु; ग. रोक्षिण र्ध, रेमेंजि: अ. मही करीआल ग्र. नहीं करीआलि. २७०, अ. मांनस ख. जो न तजी दिउ नेह: में. जीन तर्जिविड नेह. अ गीम निस नेह; ग. गीम नि स नेह. २७१ अ. (ओ)रतु: ग् र्जीरंती. जे. ॐहांणी; ग. भोल्हांणी; घ. उहँलाणी, अ. छार: ख.ग. छुछार. २७२. ग. नेहलो. था. शिंगे; गा. वेंगि. अ.गा. विख. २७३ अ.ख. मिलि; गा. मिलि. अ.ख. कतर्; गा. कतर्थु. र्खी. मेलि; गं. मिलंइं. २७४. अं. त्रुटी ख. विस्या; ख.ग. वस्या. २७५. गं. पालवीइं. अ.वं.गं. मुरेंगं, २७६. अ ख.ग. छोडतां. ख. तणो. २७७. अ ग.घ. विरला. २७८. अं. सीरि वृहिः, २७९. ख.ग. दोष (रोस); ग. दोस (रोस). अहीं प्रत 'अ'. 'ख' 'ग' 'घ'मां बंधारानी कहीं आ प्रमाणे छे.

- अ. हैंयडा घणुंय निझ्रीइ, सजन मिलवा काजि, तहनि मनि जु तु नहीं, तु कांइ झ्रिं आज.
- स्व. हैडा घणुंय न झरीइं, सज्जन मिलवा काजि, तेहनि मनि जु तूं नहीं, तु कांइ झरइ आज.
- ा. हैडा धणुंय न झरोडं, सज्जन मिलवा काजि, व तेहींने मनि जो तूं नहीं, तो कांइ झरइं आज.
 - घे. हैंडी घणूं अ न जरींड़े, संज्ञन मिलवा काजि, तेहिने मेनि जेड तूं नहीं, तुं का माज.

२८०. अ. जन माहिथी, ग. मन माहिथी. २८१. ग. मननी कु ग. उत्यां. अ. ंबण्पीउ; ग बण्पीओ. घ. करहं. २८२. ख साधीइ; ग. साधीइं. २८३. प्रत 'ग'मां अत्रे वधारानी पंकतिओ आ प्रमाणे छे. कुसंपा दुख देह. नव आमिख मेला सुख दई इअलगा अति दुख देह. २८५. आ पछी तरत नवी कडी (२८६) शरू थइ छे. जेना चरण १, २, ३ अनुक्रमे ग्रंथपाठनी कडी २८३ना चरण २, ३ अने ४नी साथे क्षेक्ररूप छे. ज्यारे कडी (२८६)ना चोथा चरणनो पाठ लखनानो रही गयो छे. पाठान्तर अत्रे प्रत 'क'ने अनुलक्षीने नेांध्या छे. ग. कुसंपां अलखामणां २८४. अ. मिलवु; ख.ग. मिलवृ'. अ. नस-नेह सिउ'; २८७. अ. बोलावि; ग. बोल.विं. अ.ख.ग. घडीय. २८८. अ ख. तुहि; ग तोहि. अ.ग. मनामणि. २८९. आ.ख. मनावि पांग पड़ी; ग्. मनावि पांग पड़ी. [प्रत खंनां 'उपर वली वली' क्षेम छेख छे.] अ. सविचार. अ.ख ग मुकुलीणी. ग मांन्यो. २९२. अ आकिरां. अ.ख ग. अवगुण. २९३. अ. क्षण. ख. रुख; म क्षण (रुख); घ. रुख; अ.ख म.घ. बोरुणा; घ. बोरुणा. २९४. अ, सहजि; ग. सहजिं. अ. मङ्लीइ; ख. मिलीइ; ग. मिलइं. २९५. अ. जल-रेहा; ख. जल-रेहा [असना]; ग. जल-रेहा [असनइ]. अ ख ग. होय २९६. अ. मुहहि; ग मुंहड्इ. अ. हंसा; ख.ग. हंसि. २९७. अ जनगर ग नित्यहं करहं. ग. वयरोड्हं कुपहं. २९८. ग. ऊपगार. ग. संसार. ३००. ग. भर्या. अ.ख.ग. तोय. ३०१. अ ख ग तोय. मः करति. ग. बहुलो हुंति. ३०३. ग. छेयां. ३०४. अ. लत्तरहं; ग. ऊत्तरहं; ३०५. ख. जि; ग. जइं. ग. जिवोसय कर्या, ग. सुयणां ग. कर्यों. अ. समरंति. अ. राग गोडी. ख. ढाल १२, श्याम प्रद्यम्नना रास नी देशी, समोरण देवइं रच्युं ओहनी. ग. ढाल १२ राग गोडी, श्याम पद्यम्नना रासनी देशी; समोसरण देवइ रच्युं, अ देशी ३०६. ग. पाछो वाल्यो. अ. शीलि; ग शालि आ. जलनुहि जल समविड ख. जलनुहि जल न खोमविड; ग. जलनो समोविडि स. सारइं ग. दूपद तथा आंचली ३०७ ख अबद रे ग. कांइ बोल्या अबद रे. ३०९. अ. कारणिइ; ग. कारइं ख. अ ग. धरीय अ. लीजइ; ख.ग लीजइं ३१०. अ. ऊडी अ.ख. ग. दोयंशम अ पंथ दृष्ट रे अ.ग. पंगे ३११. अ बाहणही; ख्व.ग. बाणही; घ. वाहांणी अ वाहणी; ख. वाणही; ग वांणही ख.ग वणठां अ उद्भूत ग. थाय ३१३. अ.ख. तभ्यो: ग. तुम्यो ग. वखांणीओ ३१४. अख ग. धाओ अ. रान मल्हार ख. ढाल १३, राग मल्हार, मम करो माया काया, अे देशी ग.-ढाल १३, राग मल्हार, मम करो माया कारिमी, अ देशी ३१५. अ. दीठं , ग. दीठं ११६. अ. द्भुपद; ख. दूपद आंचली ग. दूपद आंचली ३१७. अ. वानमां अनट वियट हे विश्राम; अ. घटि ते समाणसां; ग. रहिवूं न घटि तिहां ३१८. ते भणी देउ(ल) मइं: अ वर्णववूं; ख. वरणवूं; ग. वरणव्यूं. अ. मइ वखाणूं ख. मइ न ग. वखांणिउं ३१९. अ. बोलडी, ग. बोलडी अ. पि भम्या; ख. परि भम्यां; ग. परि भम्या अ.ख. दहा घ. दहा ३२०. अ.ख.ग. कोय ३२१. ग. अंक वाहला सज्जन विण ग. भरीओ देस रांन परि जांणीइ ३२३. जल भर्या अ. संघित ३२५. अ.ग. कारेली वरि आप अ. अनेरां गोरां नवलाख ३१६. अ.ग. क्षारथी ३२७. अकि भलो ग. पुहचि ख. बहुया; ग बहुया अ.ख. वसि अ. तेहनु; ग. तेहनो ख.ग. सहवास अ. देसी चालती: ख. देशी पाछली चालती छई; ग. देशी पाछली चालती छइं ३२८. अ. तणि अ. आगिल दीठउ नेसडु; ग्र. आगिल दीठओ नेसडो ३२९. ग्र. पुरइं

आ खा माहरि ३३०. आ गा. सीय आ.खा. ते नयर गा. रांन समान रे गा. न सज्जन खा.गा. बोलावइं ३३१ अ. महः ग मइं अ.ग. छांह रे अ.ख.ग.घ. वटतरु छांह ३३२ ग. हरख्यो अ. राग रामगिरी स्व ढाल १४, राग रामगिरि, सगुण सल्ह्रणा सीमंघर, अ देशी ३३३. ख. रीझतु; ग. रीझतो ३३४. आ पछी वधारानी पंक्ति ख. तस गृण सळ्णी रे, मनस्यं नहीं अविखादर; गं. जस गुण सल्ल्णी रे मनस्युं, नहीं अविखादरे आ ख.ग. कुतिग जोइंती आ आवि; ख.ग. आवि ते ख.ग. आंचली ३३६. घ. भम ज़ंकार रे ३३८. अ. सुडला ख.ग.घ स्डला ३३९. ग. विघ्घडां अ. सरस तिमाल रे सरयर पाल रे; ग. वइठी ते सरयर पाल रे ३४०. ग. सिखी पिच्छ चरणां सार रे. अ. वन मांहि खेलि शबरली; ३४१. ख. ताल तमाल; ग. किंह सरस ताल अ. तरुलता प्रलंब; अ.ग.घ. बोरि ग. बदाम बाओ तो; अ. अंब जंबू निव कुदंब रे खा. जंबू सिंब कंद कुद रे; गा. जंबू निबक कंद रे; घा. जंबुनिब कंद ज रे. ३४२. अ ग. करणी कुसुम; ख. कुसुम (किश्रुक), ग. केतकी तो ३४३. अ. पुनाग; ग. पुनाग ३४४. अ. चतुरा अ. चेतकी ग. मरूबक वाल रे ३४५. अ. विछाह रे; ख. विच्छाय; ग. विच्छाह रे ३४६. अ.ख.ग. जब देखीयां ग. रुठो तेणीवार ग. भे स्युं कर्यो. ३४७. अ. कांहि खग. लोभिणी ३४८. ग. मांतण कांइ देखीई ३४९. अ. उल्लेसि; ग. उल्लेसई. ३५०. घ. अहवा व(च)न अ.ग. धरि-लक्ष्मी अ. राग असाउरी, ख्र. ढाल १५ राग असाउरी; ग्र. ढाल राग असाउरी ३५१. अ. दूपद; ख. दूपद तथा आचली; ग दुपद तथा आंचली. ३५२. वरसरल शय्या; ग. वरसरल सप्पा छपरि अ. जो-नि पांचि रत्न; ख. पांच रत्न; ग. जो नि पंच रत्न रे. आ. अणीइ आणिड अनिड रे; ख. आणड अनि रे; ग आणिओ अन्नि रे. ३५३. अ.ग. गुणवंती ३५४ ग. वात रे. घ. (पू)छइ वात. अ.ख.ग. सोय; ३५५. अ. तस्य बुधि; ग. तस बुद्धि. अ ग. सुपशांत ३५६. अ. वीसरि हइडि रोस रे; ग. वीसर्थो हैयडिं रोश रे. ३५७. अ.ख.ग. कोय. अ. जस्य आस पुहुचि. अ.ख.ग. होय ३५८. अ विछा(य)रे; ख.ग. विच्छाह रे. ३५९. ग. कितव चूको; अ. चूको अ.ख.ग. यम करि राय रे ग. हरिणलो ३६०. अ. धरि; ग. धरि ३६१ क. जूरतां ३६२. ग. पारिंख जोइइं ३६३. अ.ख.ग. अज्ञान्यान अ. तस्य ३६५. अ.ख.ग.घ. प्रश्ति ख.ग. प्रेम-रस ३६६. आ कडी प्रत 'अ', 'घ'मां नथी. ख.ग. वड वछेद रे ख.ग. हरि आलिका अ. अथ प्रेहेलि अधिकार, दुहा; ख. अथ प्रहेलिकाधिकार, दुहा; ग. अथ प्रहेलि-काधिकार, दुहा. ३६७. अ.ख.ग. होश अ ख.ग. सोय ग. मधुकरः, ७. व्यस्त जाति २. ३६८. ख.ग. हैइ विलगी निव गमइं ग. शीलवत्योवाच ख. शी. तलवारि; समस्त जाति ३६९. ग. अजितोवाच ख.ग. सारय-सुत; घ. सायर सुतम ग. हवइं ३७१. आ गाथा अने ते पछीनी गाथा प्रत ख.ग.मां उलटक्रमे छे. ३७३. ग. पवन वपरी अ.ग. गणिका पर अ. मुजंगाडलिक त्रिव्यस्त जाति; ख. शी. उ. मुजंगाडाल ६ त्रिव्यस्त जाति; ग. शील. मुजंगा डिलिं ६ त्रिव्यस्त जाति ३७४. प्रत अ.ख.ग.मां कडीना क्रममां फेरफार छे. पा अहीं अंथपाठ क्रम पाठान्तर ने।ध्यां छे. अ.ग. सो ग. कहेवो अ. विरही न न राकेन; ख. वरही न न राचेंड; ग. विरही न न राकेड ३७५. अ.ग. दुयंगम ३७६. अ.ख. शी० ग. शील. अ.ग. होय आ.ग. सोय ३७७. आ.ख.ग० अ. ३७८. ख. कहु किहा; ग. कहो किहां कहेवुं ग. नि(जं) करि ३७९. अ. इठि अ.ख. भमोत्तर जति ग. शी. भमोत्तर जाति १३. ३८१. ग.

कृतण अ.ख.ग कथितापहनु जाति १५ ३८२ अ. दोहा ३८४. ग. नयनख्यु ३८५. ग. हवइं ग. दिसि ग. हुइं अ. उत्तरने स्थाने मात्र १८नी संख्या ठखेठ छे. अ.ग. उत्तरने स्थाने मात्र १८नी संख्या ठखेठ छे. अ.ग. उत्तरने स्थाने मात्र १७नी संख्या ठखेठ छे. ३८६. अ.ग. निज्जेति ख.ग. नववधू. वर्णात्तर जाति ३८७. अ.ग. शर. ग. पीछष अ ख.ग वस्त्रांग अ शी. जातिसमन्सिसादर, १८, अष्ट दठकम् ठ जाति; ख. शी. जातिसमनिससादर, १९ अष्टदठठकम् ठ जाति १; चरिय प्रतमां चित्र ग्रंथपाठ प्रमाणे. ३८८. अ. वहइ ३९०. अ ख ग शी. मदनवेदनासाकुठः, मंजरी सनाथ जाति, १ अष्टदठ कम् ठ. गोमूत्रिका, ३. व्यस्तसमस्त. ४. बिह्नापिका, ५. दिचित्रगर्भितं १९. चरिय प्रत अ.ख.ग. घ.मां चित्रो ग्रंथपाठ प्रमाणे छे. ३९१. चरिय प्रतमां चित्र ग्रंथपाठ प्रमाणे छे. ३९२. चित्र चरिय प्रतमां ग्रंथपाठ प्रमाणे छे. ३९२. चित्र व्यास्य प्रतमां ग्रंथपाठ प्रमाणे छे. ३९३. घ. अहितर वास री क्षेत्रांत वच ४. ३९४. वर्णाक कुण ८; अ. वर्णाक कुण ८ ३९५ आ. कमला पति कहेत्रु दोहिछ १५; स. कमलापति कहेवा दोहिलो १५. ३९६. अ.ख.ग. शी. सर्वतोमद्र जाति २३. प्रत अर्थां आ प्रमाणे चित्र छे:

प्रत 'अ'मां चित्र आ प्रमाणे छे:

विहर १	हरवि २	बिल ३	र ह ४	
हिर ५	रवि ६	विहरू ७	ह: ८	ļ
विर ९	वि १०	अह ११	हल १२	₹
वि १३	हवि १४	अ: १५	विद्यु १६	विह
२७				, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,

प्रत 'ख'मां चित्र नीचे प्रमाणे छे:

\ -	विर ह १	हर वि २	बि ल ३	₹ ह ;	हर '५	रवि ६	ल ७		1 5 1	10
विह	(अह १ १	हल १ २	वि; १३	हवि १४	आ १५	बिह १६	₹; ¶%

प्रत 'ग'मां चित्र नीचे प्रमाणे छे:

्र	वि र	इ र	बि '	र ह	ह ^र	(वि	वि ह	हु:	वि	वि
विह	ह [ी]	वि २	ब ३	४	५	६	ल ७	८	र व	१ ०
				अ ह १ १	हरू १२	बि: १३	हिव १४	સ : ૧૫	विह १६	₹ 90

प्रत 'घ'मां चित्र नीचे प्रमाणे छे:

विरह १	हरवि २	बिल ३	रह ४
हर ५	रवि ६	विहल ७	ह: ८
विरह ९	वि १०	अह ११	हल १२
वि १३	हल १४	अ: १५	बिह १६
₹ 90			

३९७. प्रत अ ख.ग.घ.मां चित्र ग्रंथपाठ मुजब ज छे. ३९८. अ. शी॰ मेखलयो; ख. शी. मेखलयो: ग. कांड्र नथी. ३९९. आ. शी० नीरजसिहिति, श्रुखल जाति २३; ख. शी॰ निरजसहितु श्रुगला जाति २३; ग. शी॰ शृंखला जाति २३; घ. शी॰ छः श्री. ४००. प्रत ख अने ग्र.मां आ कड़ी अने ते पछीनी कड़ी ऊलटकमे छे. ग्र. कोण. अ ग. योग. प्रत 'क'मां 'अकांतरित शुंखला जाति २५' अ लखाण नथी ते अत्रे प्रत 'अ.ख.ग.' मांथी अपनाववामां आंव्युं छे. ४०१. क २४ अकांतरित श्रृखला जित २५. आ. शी० सरसजठाम २४; ख. शी॰ सरसजवास २४; ग. शी॰ सरसजठाम २४. ४०२. प्रत 'ख' अने 'ग्'मां प्रस्तुत कडी वे कडी छोडीने छे पण अत्रे ग्रंथपाठना कमने अनुसरीने पाठान्तरो नेाध्या छे. ४०३. ख' प्रतमां कडी-क्रममां फेरफार छे. अत्रे प्रथपाठ प्रमाणे पाठान्तरो नेाध्या छे. अ.ग. जणावि ग. कही अ.ग. सीय अ ख.ग. शी० नयन ४०४. 'ख' प्रतमां कडी-क्रममां फेरफार छे. अत्रे ग्रंथपाठ प्रमाणे पाठान्तर नेांध्या छे. ग. अक्षर. ४०६. अ.ख.ग. शी॰ चंदन ४०७. अ.ग. शी० कनक: ख. शीलवती उ० कनक ४०८. अ. शी. कज्जल; वरधमानाक्षर जाति २७. ख ग. शी० कज्जल वरधमानाक्षर २५. ४०९. आ ख. किसिड हरि नारिनुं घ. हरि नारिनूं अ.ख ग. शी० मालती ४११. अ. शी० पयोधरः हीयमानाक्षर जाति; २८, ख.ग. शी० पयोहर अ हीयमानाक्षर जाति २६. ४१२. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. ख.ग.घ. केवि सपिय जंपाय ख.ग. शी॰ कलह; चजलिय जाति. ४१४. ग. देखी देखी नहीं सकई अ. कांइ नथी; ख. चीर: ग. चीर ४१६. अ.ख.ग. शी० जाल. ४१७. अ.ख. शी० चोली अ० दत्तमात्राधिक जाति २७. ४१८. अ. शी० बाला, मात्राधिकारक्षर जाति; खु.ग. शी० बाला, मात्राधिकारक्षर जाति २८. ४१९. अ शी० मंदरः, च्युतमात्राक्षर जाति-; ख.ग. शी० मंदर: च्युतमात्राक्षर जाति २९. ४२०. अ. स्तु जांणि; अ शी. मेहः, च्युतदत्ताक्षर जाति; ख शी॰ मेहः, च्युतदत्ताक्षर जाति ३०; ग. शी. मेह, च्युतदत्ताक्षर जाति ३०. ४२१. अ.ख. तुख; घ. तुख. अ ख ग. शी० कमला. ४२२, अ. बिहि पाबलि लिहालऊअ; ख. बिहि लाबिल लिहालऊत्र; अ. सो**सी** अविछटिम; ४२३. अ.ख. सबिखनत्री ग. सविखनत्री घ. सबिखपत्र अ.ख.ग. तिखहा अ.ग. भरी खु. तथी अ.खु.गू. छड कडखान अ खिविमि गू. चिमि अ. कसरान्झु. अ.गू. टाखी डोकि; ख. बापीडोकि आ ख ग. शी० आस, श्रद्ध मूलदेवी ३२ ४२४. आ.ख ग शी॰ ईश्रु दृष्टि ४२५. अ.ख.ग. शी० हार ४२६. अ.ख ग शी० कंचुक; ग कंचुकी ४२७ अ.ख.ग. शाब्स्कि प्रहेलिका आ.ख.ग. गति .ग. ओपिन जहे आ.ख.ग. शी. मातंग ४२८. ग. मण मज्झिम य सावसइं अ,खू.ग. शी० मसाण ग. शी० मसाण अ. कवित्त ४२९. अ ख. वरनेश

ग. गेइ. अ. चित्तुह; ग. चित्तह. ग. रूठई ख. ठाहीठइ; ग. ठाहीवइं. ग. कहो कोय अ.ग. होय. अ.ग. वल्ली वन केरीअ. ख. वल्ली वन केरी. अ. तेणइ; ग. तेणइं; ग. तुडहं. ग. खेलइं वासहरी. अ.ख. शी० सुंदरी. ग. शी० मुदरी. ४३०. अ ख.ग. शी० धनुष. ४३१. अ.ख. शी॰ सोइदोरु; ग. सोइदोरा. अ. इत्यर्थप्रहेलिका जाति. ख. इत्यर्थप्रहिलिका जाति; ग. इत्यर्थप्रहिलिका जाति ४३३. अ ख.ग. शी (१) अ. पूर्वहरेणकांमोद्रश्य: हरिलिंगा: ग हरिलिंगा. ४३४ ग घणेर ४३९. ग झांखर थाइं. ग. गांमिनि अ. उद्घन्भण; ग. उध्वअब्भुअ; घ. उध्वअबुज ४४० अ.ग. रथा सम्महु सज्जन ग. लाजइं चतुरां. अ.ग. विखडह. ४४१. घ. रसइ अ.ग. कवण ग. अंतरइं. ४४२. प्रत 'अ', 'ख', 'ग', अने घ'मां प्रस्तुत कडी नथी. ४४३. ख. करिउ, ग. करिओ अ. ह्यालिका जाति, केचितु गृह, जाति प्राहु, ३४; ४४४. अ. वाहीइ; ग. वाहीइं. ४४५. अ.घ. मधुर सरिं ग. मधु-कर सरइ ग. तेहनइं लीण अ. नाजीवीणि ४४६. घ. ब्लुवंत नीसरइ हैंडूं. अ. नागांभछ. अपहुति जाति (पंक्ति पछी तस्त); स्व. नाजीभल्ल (४४) अपहुति जाति ३५; ग्र. नाजीभल्ल (५८) अपहनुति जाति ३५. ४४७. ग नल्लाइ अ. सिरोखी पीउं. ख. शिख; ग. सिखा पीउं ४४८. अ. रुससंस्तिसर; ख. इससंित्सिर; ग रुससंरित्सिर. अ. ससरिस्सिरिहिस्सं; ख. ररिरिसिर्मिर्म्साः; ग. ररिरिसिरिह्सिरां. अ. रास्त्रसार; ख. रोरिस्त्रसीर; ग रारिद्रस्सार अ. इत्यादि मूलदेवी, सहदेवी, करपल्लवी, नेत्रपल्लवी, अंक पल्लवी, बिंदु पल्लवी, नाद पल्लवी, ऊषध पल्लवी, ध्यान्य पल्लवी, वर्णपरावर्तीदिभाषां, बिंदुमंती प्राह, इछालिपि प्रमृती निष ३६; ४५०. अ.ख.ग. शी० सिंहलंकी, हंसगमनी ४५१. ग. छण्यय. ४५२. ग. नारिं अ. ज हुइ; ख.ग. जो हुइं अ.ख.ग. प्रेम अपार ख.ग. गंगायां ४५३. अ ख.ग. हार ४५४. ग. वल्लही, ग. कहो ते अ. नागवल्ली, नाटाशिलाजाति ३७; ख नागवल्ली, नाटशिलाजाति ३७; ग्र. नागवल्ली, शी० नाटशिला जाति ३८ ४५५. अ. शी० वधावु; ख. शी० वधावु; ग. शी० वधावी ४५६. ग. वाव्युं उंगति आ शी० केशपास, समस्याजाति; ख. शी० केशपास. समस्याजाति ३८; ग. शी. केशपास, समस्यांजाति ३९. ४५७ ख. सोइ नाम; ग. सोइ नाम अ.ख. बहल्लेन; ग. बहलेन ४५८. घ. चात(क) अ. विरहि हुं दुबलि; ग विरहि हुं दुबली अ ख.ग. प्रिय क ...मां नथी; घ मां नथी. ४५९. प्रत क.आ ख.मां आ कडी नथी ग तणें नामें सो ख.ग. क्रहः अ. इति प्रश्नाधिकार, ३९; ख. इति प्रश्नाधिकार, ३९ छ; ग. इति प्रश्नाधिकार, ३९ छ. अ.ख. पुनरजितः पृछति, अंककलावेछि शीलवर्ताह; ४६०. अ.ख.ग. शी० घ. शीलवर्ती **उ**वाच. ख.ग. अवं चंनके आ. अणं सर्व वन चंपके; ख. अवं सर्व वन चंपक आ. १ कोडि ९ लांख ९१ सहस ७६४८ अ.स्व ग. शी० अ. ९ शत, १२ इति मास सख्या अ.स्व.ग. शी० चित्र चारेय प्रतमां ग्रंथपाठ प्रमाणे छे. अ.ख.ग. अ ग. त्रीजइं मूहं पडीओ ख. कर-क्रमिछ; घ. करमिल ४६१. अ.ख ग. चप्पु अ. रसलहरि ख.ग. रसलहिरि घ. चउथउ रस लहिरि **४६२ अ.ग.** विक्षिप नाठां अ. चुथइ; ग. चोथइं अंशि आ ख. शी॰ ४०; ग. ४० अ. श्री. ख इति गणित अंक पुच्छा, छ श्री श्री. ग. इति गणित पूच्छा श्री ४६४. घ. जिस नाई विजलधार ४६७ ख. इध क. सीता ४६९. ग. नांहा नाइं सुविचार ४७१. ग. बालो-रवि वंदाइं ४७२. ग. नांहानइ ४७६. ग. वेध्यो फुल ४७७. अ. उ भमरु उ कमलिनी; अ. उ द्राक्षा, ओ वीर क. साजन अ.ख. उ नर नवरंग होंग; ग ओ नर नवरंग होंग ४८०. परिसंपमा:

ग. हीर तणी परइं सैयमां ४८५. अहीं प्रत 'ख' अने 'ग'मां वधारानी कडी आ प्रमाणे छे. ख. थोडा बोल्हं बोल्डा, घणा करडं उपगार, संभारणूं सज्जन करडं, थोडइं घणूं संसारि. ४६५ ग. थोडा बोलड़ बोलडा, घणा करहं उपगार, संभारणूं सज्जन करहं, थोडह घणूं संसारि. ४८९ ४८६. अ.घ. रंस रमी घ. सालस थापइ ४८७. ग. नयिन क्रूटइ नीर ४९२. ग. किहस्यूं कीजइं ४९४. ग. तणइं विछोह ४९५. ख.ग. झूरि मरि सनेहडा ४९६. आ कडी अने ते पछीनी कड़ी प्रत ख.गमां उलटकमे छे. अ. मिलिउ; ख. मिलियु; ग. मिल्यो ४९८. ग. सुहणां सिरस सजोगडा अ.ख ग. विसराल ४९९. प्रत 'ख' अने'ग'मां आ कडी अने ते पंछीनी कडीनी उलटकमे छे. ५००. अ.ग. सदैव ५०१. ग. प्रीछीलीइं ख. अस्थि सिउ ५०२. अ. चक्वा-चक मेलीयां आ.ख. सोलवु ग. शोचिव्यो ५०३. ग. सेांचीइं ५०४. ग. प्रीछन्यो ५०५ ग. विछोहां अ.ख ग. दिन दिन ख. उहल्लाइ; ग. ओहलाइं ५०६. अ.ग. तिम तिन; ख.ग. तिम तिम तिन ५०८. अ.ख.ग. जाओवा अ. अथ फाग; ख. ढाल १६, राग काफी, देशी फागनी; ग. ढाल १६, राग काफी, दंशी फागनी. ५०९. क. निरमछ ग. मदन-संहार ५१४ स्यूं लिइ ग. कांभिनी नव मेह ५१५. आख.ग. कन्रतीयार ५१७. अ.ख.ग. ताडिम ताडिम अ.खग. संतना ५१८. ग. तपइं सोभा ख. ताडि-तापि: ग. ताढि तापइं ५१९. ग. वेलडी खाग. बकुल ५२०. ग. जम कामिनी अ. जगामिनी अ. सिन धामिनी ५२२. क. वनराज ५२३. ग. नव नव ५२४. घ. भमरइ जलइ ग. शोणि नीसरइं ५२८. ग. प्रीउडो ग चांपई ५२९. ग. बेंटा पास आ. क्षणि बारि क्षणि वसि तह्रयरि ५३१. ग. बाल ग. तुं ५३७. आ खाग. मंडीय खा. इम (म)नी ५३८. आ गा. संगति ५३९. आ. सरसङ ग. सत्छाय ग. वीरहि सामोल्ड ५४०. अ.ख. सुसंपन्तु; ग. संपन्नो ग. मसि रोमंच उपन्नो ५४१. अ. ६ ऊल्हास; ग्र. दिंओ ओल्हास ग्र. तावड ५४२. अ.ख. कोयवुल; ग्र. कोयवोल ग. राता आगइं आजि ५४३. ग. खलडी; घ. वे(ल)डी ५४४. ग. हरिणांक्षी भीड़ ग. कांति खग. माण(स) ५४५. अ. रहीय न कह ख. रहिय न केहर ग. मझारि ५४७. अ. भांजसइ; ग. भाजसइं अ. नु हुइ; ग. नो हुओ ५४८. ग. फूली. ग. रमइं ग. वीसारइं ५४९. अ.ग कुंद ५५१. ग. वोलिसरी वालो ख.ग. कुहु कुहु ग. करति ५५३. अ.ग. जेणीय ग. वेणीय ख.ग. कुंभत्थिल ५५४. अ. झालिउ; ग. झलिओ अ.ख. पाझे पाडिंग, ५५५. अ. नय सिडं. ग्. जीत्या ५५६. अ. बालिंड. ग्. लीचन बोल्यो ५५७. ग. योवजन अ. ऊनजइ;ग. उपजदं ५५८. अ ख.ग. दोय ५५९. ख. कचण-कलश पयोधर ५६०. ख. नवेरु; ग. नवेरो अ.ख.ग. नितु तेणि मुखि; घ. नितु नेणि मुखि ५६१. ख. मुणाल रस कोमल ५६२. ग. स्यूं चांपइं गाढुं ५६३. अ. पहूंलीय; ग. पहूलीय ५६४. अ ख.ग. किंड अ सालि; ग. साल्हं ५६५. ख. सुचराणि ५६६. अ ख.ग. कोंड मझारी अ. सिइथु: ग. सिंथो ग. सोहइं अ.ग. नलबिट टीली नीलीय; ख. नलबट टीली नीलीं; घ. ५६७. टीली नीलिय क. जबूकइ सालि ५६८. अ.ख.ग. विखाण ५६९. अ.ख. कांटड; ग. कांटओ ५७१. घ. धाइ तनु सरइ ख.ग. चंदन अ.ख.ग. चरची अ. रिदयनि ठाय; ख. रिदयनि ठाय; ग राका रिदयनि ठाय ५७३. ग. मझारि क. जांजर अ.ख.ग. रंगीय अ.ख.ग. रंगीय ५७४. अ. कांचड; ख.ग. कांचुओ ५७५ अ. प्रेमि; ग. प्रेमइ' ५७६. ग. ठमकावइ' ५७७. ख. कोइ हींचालडी; ग. कोइ हींचोलडा खाइ ५७८. ग. करइं; अ उछीलिइ क. जालई ः५८१. अ. चीर–पालवइ ग. बांघी गांठि ५८२. ग. कोइं ताकड़ अ.ग. कुहु कुहुँ कहीनि अ. (री) सबई ५८३. अ.ख.ग. तेवड तेवडी ग. पइं भांगु सही कांटडो ५८४. ख. उ सही तुनइ तेडि; ग. ओ सही तुंनईं; घ झालि ५८५. ख. बंधन कारण तेह ५८६. ग. वाजसइं स्व ग वनिता को सहीनि हसइं ५८८. स्व.ग. उल्हसइं ५८९ अ.स्व.ग. भारीअ ग. ओलभडा दिइं ५९०. अ.स्त.ग. तुझ पयोधर ५९१. ग. ससि तुझ स्त्र. भमइं मुख पाखिल ५९२. ग. आंतरुं ५९३. ग. हासो हसइं ५९४. अ. थोडेरू सिन भीडिउ; ग. थोडेरू न मीडिओ ग. हइ झिंग रिलाणो; घ. हइई गि रिलाणउ ५९५. ग. सधलह देखह वन-मय ५९६. अ. रहइ रहइ समय; ग. रहइं रहइं हुवडां ५९७. अ. चुवटई; ग. किहिं चुवटइं ग. झाझर निं झमकारि ५९८. अ. ऋतु-वसंत जाणे अ. भलि अ.ख.ग. मांनव निं मनिं भावीओ ५९९. ग. समारीय ६००. ग. कांनिनी दोइं अंतरि थाय ग. अडतो कोइ जाइं ६०१. अ.ग कोओ ग. थण; घ. थणहि ६०२. ख. कानिनी-गुण ग. जेर्णि धान कि बोलि ग. कल्खी; ग. ओल्खी ख.ग. कोओ ग. कामुक रहिं तेणि ओलि ६०३. अ.ग. केवलि-दलि घ. घमली ग.घ. कामुक ६०४. ग. भमरलो कांमिनि नइं ६०५. अ.ग. कोयलिं; ख. कोयलिं ग. सुणी अति आंबला ग. देई मुझ ग. दुहाडि ६०६. ग. कानि हसिउ अ.ख.ग. कहिनि कुंचकः तह सां फल काम्यां ६०७. अ. सीवलि; ग. सीविन अ.ग. सीवलि; घ सीविलि ख. माणसह ग. मांणस ६०८. ग. सांमलो ग. विरहहं आ. दुबछ; ग. दुववो ६०९. ग. उलंभडा **६१०. अ.स्त.ग.** पटंडली घ. माहिणीरी लजवाणी ६११. अ.ग. शीलवती पति—संयुत ६१२. ग. वड्ड रूं भी रहह वाहिं ६१३. ग. मुरी नव सहकार ग. सेवीइ अ.ख. आलवि; ग. लिब ६१४. ग. रिसिकनइं मिन लागईं रणीयामणी आ. इति वसंत वर्णन १ छ; स्व. इति बसंत वर्णन श्री ख; ग. इति वसंत वर्णन श्री. ६१५. ग. जोगवह अ. दोगंदग अ. दुहा ख. बुहा ६१७. ग. सइं दैव आ. धन दे जे दैव; ख. तु धन दे जे दैव; ग. तुं धन दे जे दैव ग. मिनि ६१९. अ.ख. पसाउली; ग. पसाउलइं ग. झ्रिवु तेर्णि नेहलई ६२०. ख. सनेहडु; ग. सनेहडो ६२३. अ. सोहामणुं; ग. सोहांमणो खाग. केलि-कलाप ६२३. अ. जल अति दुध अ. राग सवा लाखी सीधनु. ञ्च. ढाल १७, राग सवालाख सींधुओ समुद्रविजय रायां कुंयरु रे, अ देशी ग. ढाल १७, राग सवालखी सिंधूओ समुद्रविजय रायां कुंयरु रे, अ देशी. ६२५. अ. वाहलाजी कीजइ सुगुणा संग; ख. कीजइं सुगुणां संग; ग. वाहलांजी कीजइं सुगुणां संग ग. बाहलांजी वाघइं प्रेम सहंग अ. दुपद; ख. दुपद तथा आचली; ग दुपद तथा आंचली ६२६. घ. दुरिय नयन नि कपावीई ६३४. अ. रिव-सुत सरिखा ६३६. ख.ग. राज-सेवना रे ६३७. ग. दिइं अ.ग. सीखडी ख.ग. होय ग. तुहुइं कहइं ख. डाहांइ; ग. डांहिं अ.ख.ग. सोय ६३८. प्रत 'घ'मां आ कडी नथी. ६३९. अ. राग काल हिरु, सासू पूछि सुणि नव बहुआरी, अ देशी ख. टाल १८, राग काल हरिड, सासू पूर्छि सुणी नव वहुआरी, अ देशी. ग. ढाल, राग काल हरो. सासू पूछिं सुणि नव वहुआरी, के देशी. ६४०. ग. सिं च्यारनई अ.ख. दुपद ६४१. अ. नइ बुधि निधान अ पांचिसिइ; ग. पांचिसिं ६४२. ग. विसामो घ. प्रंचि अ. पट्टहाथिउं; ख. पट्टाथिउ; ग. पटहाथीओ ६४३. अ. अजिति पूछी ६४४. अ प्रवण ग. तीणि फलहिं ६४५. अ. आंकि; ख. आंके ६४६. ख. अजि(त) तिण; ग. जांणि ग. रंगिजिड ग. तुठो दृइं ६४७. ग. बइंठो ६४९. ग. तुझने अहनो ६५०. अ.

कनई; ग. कनई ६५१. अ. मान-मुहुत ग. मोहोत ६५२. ग. अमीअ ग. वाहिल के बोलि किस्युं ६५३. ख. दुहिता ६५४. अ ग. कोय सुहाय ६५५. ख. क्षण दीठूः ग. क्षण दीठूं ते ६५६. देखइं ग. हुइं अ. बोलि; ग. बोलइं ग. जांणइं चंग ६५८. अ.स्व. तेहिनि; ग. तेहिन म(न) गुणवंत ६६०. ग. छांडइं ६६३. अ. प्राण ज धरीय; ग प्राण ज धरीयं ग. किर्स्य ६६४. ख.ग. क्य वयरी ग संहिलो ६६५. मनवड; ग. मनवड अ. हड्डा ग. जोय ग. तेह स्यं केहो सोस ६६८. अ. विच; ग. विच अंतिर थाय. ६७० अ ख.ग. विणियवि. ६७१. ग.ख. प्राहि; ग. प्रांहिं. ६७३. अ. रा रंगीड; ६७४. अ. राग मारुणी धन्यासी, पदमरथ राय वीतशोकपुरि राजीउ रे, के देशी. ख. ढाल १९, राग मारुणी धन्यासी, पदमथराय वीतशोकपुरि राजीओ, अं देशी. ग. ढाल १९, राग मारुगी, पदमरथराय वीतशोकपुरि राजीउ रे, अ देशी. घ. राग मारुणी धन्नाश्री. ६७४. घ. बोर्लि विधृत. ६७५ ख.ग. दूपद. ६७६. छइं विक्जात. ६७७. अ. मिहे सिउं मन सिउं माडी प्रींतडी रे; भिं तो ते सु मांडी प्रीतडी ६७८. अ.ख.ग. दूहा. ग आरतो. ६७९ अ.ग. फूलडे. ६८०. अ. भोलविड; ग. भोलब्यो. ६८१. अ. ढाल पाछिली; स्त. ढाल पाछली, देशी चालती; ग. ढाल पाछली, देशी चालती: ६८३. अ. आविड; आ. खेलि. ६८४. ग. आंबो दीठ अकालि. ६८५ आ. साचु; ग. नहींतरि हूं. ६८६. ग मित्रे कहीइ. ६८७. ग. वंचीओ. ६८८.अ गूडी. ग. मुत्र नइ छोडवो. अ. शरणागत. ख ढाल २०, राग गुडी, झांझरिया मुनिवर, अ देशी ग. ढाल, राग गोडी, झांझरीआ मुनिवर, धन धन तुह्य अवतार, अ देशी. ६८९. अ. नानडली; ग. नानड रे नारि, ६९१. ग. नीसरणी. अ. अतिभारजी, ग. अर्कि पासि मुकावि. ६९२. अ.ख. लेयसिजी; ग्. लेयसिजी. ६९३. अ. होमइ सत्य संघान; ख.ग. होसइ सत्यसंघान. ६९४. अ.ख.ग. दृहा. ६९५. ग. तिहांथी ध तहीं ६९६. अ.ख. धाम. ख.ग. मानसहं समइं; ग. मुझ मनि मानसहं समइ; घ. मुज मन मासि. ६९८. अ.ग संदेसडु रे अ.ग. कोय. ग. थोडरं. अ. घणुं. अ ख ग. सजोय. ६९९. ग. हैंडूं घरडं अ. उल्हास. ७००. ग. पूनिम-चंद. ७०१. ग. लागे. ग. थोडि. ७०२. ख. पाहणि-रेह ग. पाहण-रेह ७०४. अ. माडु; ख. मांडुं; ७०६. अ ग समयेण. ७०७. क. मुज. ग. सुहणां मांहि. ७१०. ग. रोमंचिओ ७११. घ. रोगी नेह. ग किं गइ सांन. ७१३ अ. वयण सविसिड; ख. वयण सवि (यु; घ. वयण सविसिड. ग मिलड़' ७१४. ग. कांपि. ख.ग. शेष सलसलइं. ग. चूकइं. ७१५ अ. कामिनि नई पूर निइ; ग. कांमनि नि नइ. ७१६. अ. तु सोनू परिमलि मलिड; ख तु सोनू परिमलि मलिड; ग. तुं सोन् परिमलि मल्युं; घ. सोन् परिमलि मिलिङं ७१७. अ. पाइङं; ग पाइट. ७१८. ग. स्युं करेइं. ग. असाडो-मेइ. ७१९. अ. पहाण सिऊं; ७२२. ग. चित्रह; चित्तहं. ७२३. घ. अस्मारि ग. मंडइं ७२४. आ ख. सुहणि ग. दीसइं ७२५. ग. केहसिउं आ. मलिइ; ७२८. आ ख जो नर वंक्रु अन; ग. जो नर वंछ इं अन्न ७१९ ग. जो शील इं हुं ७३०. ग. चमक्यो चीत्ति ७३१. अ. हिंद्र ग. चांपि ७३३. अ. फरइं ७३४. अ. पतिनु म(न); ग. पतिनुं अ.ख. मुख विलसइ ए काति; ग. मुख विलसइं भेकांति ७३५. अ ग. खद्र भाषा ७३६. घ. नयमणां ७३८. अ. दीन विची; ख. दिन विची; ७४१. ग. तथुं विहसीं ग. सवाय रुकख अ.ग. विकुविय ग. सुहाय ७४२. अ. स्सणु ग. हसणुं अ. तो सिवि रोसि वसलडु: ख्व. ता सिवि रोसि वसलडु; (तिसि मर्सि मवसलडु;) ग. तो सिवि म रोसि वलसडो (तो सिम रोसि म वसलडो) ७४४. अ. पयड हैई ग. पयडई हैई ७४५. ा. प्रेम-गहिलां इणि अ. परि; ग. परिं ग. मनावइ सो वार ७४७ आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. ७४९ क. जीलतां ७५०. अ. न सकें ख विच्छोहु, ग. विच्छोहो ७५१ अ. उनइ; ख. उनइओ: ग. अनइओ ७५३. अहीं प्रत 'अ', 'ख', 'ग'मां अत्र वधारानी अक कडी आ स्माणे छे.

प्रत 'अ' ठालो दि हुकारडा, स्ना बोलइ' बोल, कहिंसिड निव बोलिड गमइ, सान गइ निटोल. ७३३

प्रत 'ख़' टाला दि हुंकारडा, सूना बोल्ड्रें बोल, कहिसिंटं निव बोलिंडं गमइ, सान गइ निटोल ७४९

प्रत 'ग' ठाला दिं हू कारडा, सूना बोलइं बोल, कहि स्युं निव बोल्युं गमइ, सान गइ निटोल. ७६०

७५५. आ. मूई; ग मूइं. ग. नीठइं ७५८. आ. घूया; ग. घूंया ग. देहिं देह आ. उल्हाइ; ख.ग. उल्हाइं ७५९. आ. खिजता आ ग. अधर-रस ग. नवयौवन ग. छांडता ग हैंडं न फाटइं कांइं ७६०. ग. वित्छोद्यां ७६१. ख.ग. मणुअ—भिव ग. जो देखाडिस छेह ७६३. ख.ग. मणुअ ग. सिव ७६४. ख. विरिह न लइं हूं सु असई ७६५. ग बोलई न हसई रमं ग. हैंडइं करि विखास ७६६. आ. मुहिंड बोल ग. मुंहिंड ग. सकई ७६९ ख. अप् ७७०. ग. कई अमांन्यो आ दुहविउ कवोलि; ग. दहन्यो बोलि ग. मार्यो नयिन त्रिश्रूल. ७७१. ख.ग. मिन—दुख आ. मज; ग. मुझ. ७७३. ग वज्रघात ख.ग. आपणि. ग. वइंरी ग. चालीसईं ७७४. ग. तेणे ग. मुझ ग. थयो आ. हेइडि ग. हइडई अधिको आ. हिव ग. केतइ मिलस्युं हवइ आ. ययु ग. तुंज स्युं थयो ७७५ ग. मेहलंती ग. सांन गइ घरणी ग. हुइ नीरास ७७६. आ. वाघि; ग. वाघि ग सु लहरडें आ. ग उघाण, ग लघांण आ मागु आस्या—वाहाण ग. आस्या—वाहाण ग. सायर

७७७. ग. पर्सथा वीसर्या ७७८. आ ख.ग आस्या—डाल ७७९. आ विल ग. साल निव माइं ७८१ आ. प्रीछिवि; ग. प्रीछिवि ग. जिम इदं-जाल आ ग. विसराल; ख विरराल ७८३ आ.ग. सरिज्या ख ग. दुख तणा आ विहाय; ग. विहाइं ७८४. आ.ग. हल्लहल्ल ग. विरह इं शीज्वती-हीइं ७८५. ग प्राण हरइ आ. जासि; ग. जासि. ७८६. ग. कमल बंधाणो भमरलो ग. उग्यो वंछि ७८७ ग विरहीओं ग वंछिस सित्त ७८८. आ. (स)िस सूरिन; ख. सिस सूरिन; ग. सूरनइं ग. प्रीड जासइं ७८९. घ. रयणी मूं ७९०. अते प्रत आ.ख.ग.मां नीचे प्रमाणे वधारानी वे कडीओ मळे छे.

प्रत 'अ' कागा कृकड वीनवू, रखे करतो साद,
प्रहिवसी रिव ऊगित, प्रीड जासि परभाति. ७७०
रे सही उठि उतावली, प्रगट थयुं प्रभात,
चूिं आकासि अरीसडु, मोतीडानी भाति. ७७१
प्रत 'ख' कागा कुकड वीनवूं, रखे करता साद,
प्रहिवसी रवी उगतइं, भीउ जासि परमाति. ७७०

रे सिंह ऊठी ऊतावली, प्रगट थयुं परमाति, चूढि आकासि अरीसडु, मोतीडानी माति. ७७१

प्रत 'ग' कागा कूकड वीनबुं, रखे करतां साद,
प्रहेंबसी रवी उगतइं, प्रीओ जासि परभाति. ७८८
रे सहि ऊठी उतावली, प्रगट थयो परभाति,
चोढि आकासिं अरीसडो, मोजीडानी भाति. ७८९

अ. करि अमंगल; ग. करि अमंगलि अ.ग. सांति ৬९१. ग. किंइ मंगलि कांइ ग. छत्र-चांमर ७९३. ग. करइं ग. सोना केरी ७९४ अ. झलझलहइ; ग झलहलइं ७९५. अ. ख.ग.घ. पवन वेग ७९७. ग. स्भट घ साला लोह सजोडि ७९८. ग. छाहीओ ७९९. ग. आरोह्यो भूपति ८००. ग. मोकल्यो ग. आगिळथो ८०१. ख.ग. मोकलावा आवीओ अ. राग सीधूड गुडी; ख. ढाल २१, राग सींधूड, गुण गिरूआ, तणा ओ देशी. ग. ढाल २१, राग सींधुओ गोडी, गुणे गिरुआ तणा अंदेशी. ग. आपो नई अ. आ. द्रूपद; ख आ. दूपद तथा आचली. ग. आ॰ दूपद तथा आंचली. ८०४. अ. किहां रे वचनइं दूहन्यां ८०५ अ. माणिस; ग. मांणिस क. तुझ ८०६. ग. तयू ख. जिम नुहिं विहर, जिम नोहिं विरहनी अ.ग. झालो रे ८०९. ग. बीजइं ८१०. ग. समरि न विचलडं ८११. ग. नलिनी निं चंदलो ८१४. ग. बोल्यो न जाइं ८१५ अ. आंसूर्डि भीनो कांचुओ ८१६. आ. विण डाला रे ८१८. आ. मनाविस आ. आ पंक्ति नथी. ख.ग. ओलंभडा ८१९. ग. कां समज्यां प्रीऊ ८२०. ग. जिल वेलडी; ८२२. ख.ग. केवारों रे. ८२३. ग तुह्मयो मुझने अ. तमनि; ख. तमनि समरेसि ग तुहानि समरेसि. ८२५. अ ख.ग. स—हथि ८२६. सायरइ ८२७. अ.ख.ग. थायो रे ८२८. ग.द्यो. ८३० ग. राल्यु जाय ८३१. अ. कह्आवीयां ८३२. ग. आदेशडो ८३५. स्निल ख. स्नइ ८३६ अ. कित, ख. कित ८४०. ग. वीसार्या ग. जे गिरुआ ८४१. ग. रांन थयो आदेसडो ग. दूरें गञ्जेग ८४२. क जूरी खग प्रीयो रे ८४३. ग दुल्र्हम दुझ मुझ मुख-बंदलो ८४४. आ कडी प्रत 'घ'मां नथी. ग नेहें ग. टलवलइं ८४६. अ.ख नइ-पाणी परवाहि ८४७. ग. मुझवणुं ८४८. अ. जू जांइतु जातु; ग. जाइस ग. जाय छुं. ग. हो अनंगल पंथीयां ८४९. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. ८५०. अहीं प्रत 'अ', 'ख्य', 'ग'मां वधारानी कडी नीचे प्रमाणे छे:

प्रत 'अ'—गोरी मुज डलंभडा, कां दिइ तुं सुविचार, दिउ उठलंभा देविन, जेणि कीट विरह अगरो रे. ८३१ प्रत 'ख'—गोरी मुज उठलंभडा, कां दीइ तुं सुविचार, दिउ उलभा दैविन, जेणि कीघड विरह अपार रे. ८४४ प्रत 'ग'—गोरी मुज उठभडा, कांचि सूं सुविचार, दिन उठभां दैविन, जाणे कीडिवरह अपारो रे. ८४५

८५१. प्रत 'अ'मां प्र•तुत कडी नथी. ग जोसइं ८५२. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. ग. करज्यो; घ. करजो ८५३. घ, आ० कुशल अ. मलसि ८५४. प्रत 'घ'मां आ कडी नथी. ८५५ ग. वाहला वहिला अ. न सुजाण; ग. जतन करी ८५६. ख. बुलाविवा ग. वोलाविवा ख. तामो रे; ग. तांमो रे. ८५७. अ.ख.ग. नयनां धरि जल ८५९. आ कडी अने पछीनी कडी प्रत 'ख' अने 'घ'मां ऊलटकमे छे. ग तिणि दुखिय दुख. ८६०. ग. खूचइं ८६२. खग मसि जेती ८६३. ग. रांण मसाणी ८६४. ग. वोली ग. वीनवइं. ८६५. ग कटकको ८६७. सारो रे ८६८. अ. वच अ अ. कुमुदिनी ग. घणि ८६९ ख. वछोडीवो अ.ख. जु जाअस; ८७० ख. जलंनइ; ग. जलंती देह अ. राग मारूणी माहि, दृहा. ख. राग मारू मांहि, वीरही, दृहा. ग. राग मारू मांहि वीरही, दृहा ८७४. ग. जुइ ग. रंकडो; घ. रकडुं क.अ ग. जाप ८७५. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. ग. मेहलीया ग. वादछं ख. टाती; ग घ. टाली अ.ख.ग. वाय सवाय ग. सज्जन सुहालां सांचरइं ग. छंडइं छांह ८७६ अ.ख.ग. गुण-वेली ८७७. ख.ग. संइ न सरज्यो ८८०. अ बीज दिने; ग. बीज-दिनि ग. विद्यां मेलि ८८४. ग माइ स्युं मेलि घ पुण्य सइ वली तुंह ८८५ ग इणि परि ख.ग. विलाप करेइ ८८६. ग. ओ पेलो वाहलो जाइ ८८८. अ.ख.ग जो अस ८९१. अ. अलजु ग. अलजो ८९२. अ.ख ग. सुमनस ग. आडल-फूल ८९४. अ. मानस माय ८९५. सज्जन वाबाइउ ८९६. अ.ख. बुहुरति ख. बुहरावीया. ८९७. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. ८९८. अ.ग. पालडी ८९९. अ.ख.ग. सोंसि ९०० खग. भृहडी ९०१. अ.ख.ग. सुअण-गुण ग. क्षेपांण ९०३. ख.ग. दीवी बलड़ं ९०६. अ. जु ग. जांगत ९०८. अ.ख. नेहि रत्तिव पडुरां; ग. नेहि रत्तवि पंडुरां ग. तन पाणुयंति; घ. तययंति ९१०. अ.ख.ग. नलिन ९१२. घ. कयछप अ.ख.ग. वृलावि करी ९१४. अ.ग. रोआवीआं अ. नवि मरइ ग. जाइं झ्रंत ९२१. अ.ख.घ. वनि भुवनि किहि ग वने भुवने किहि अ. क्षण बाहरि क्षण भीतरि; अ. ख. क्षण भूइ क्षिणि खाट ९२३. अ. पुह्रवि; अ. पोह्रवी ९२४ अ.ग सोहावता ग. मृगचरिं ग्. सज्जन देस गक्षेण ९२५. अ.ख ग्. कुसुमा सजीणि मंदिरि अ.ख नाम ते; ग. नांम ते ९२६. अ. तेह जि नते ठाण; ग. तेहि ज अ ते ठांण ९२७. ग. कहीइं माइं. ९२८. ग. सज्ज स्युं ९३० अ. किहि अही सरिज्यां ९३१. क.अ.ख. मूरछाइ; ९३२. अ.ख ग नीर समीर चंद चंदनह अ तिव वेली थाइ ९३३. ख.ग फूटेणी ९३४. ग. पन्नडे ८३५. अ.ख. ऊषघ खा रोम लगार ९३६. अ नयणराय अ.ख. सुमनस-दंसण ९३८ आ स्थाने प्रत 'ख', 'ग' अने 'घ'मां वधारानी गाथा नीचे प्रमाणे प्राप्त थाय छे.

प्रत 'अ'—कुंअर विनां भाण गल्ड, मुज तनु दहइं तस आहार, तस अरि-बंधन मुहि वसइ, ते विण दुख अपार. ९९१ प्रत 'ख'—कुंअर विन भागुं गल्डं, मुझ तनु दहइं तस आहार, तसु अरि-बंधन मुहि वसइं, ते विण दुख अपार. ९४७ प्रत 'ग'—कुवर विना भाशुं गल्डं, मुज तनु दहइं तस आहार, तस अरि-बंधन मुहि वपइं, ते विण दुख अपार.

अ. ताति तेलि शीतल जर्ल्ड; क. शीव-जल ग. ताति तेति ख.ग. छमछम अधिक सथाइं ९४९. ग. जेणि के लायो वेषडो ९४५. ग. साल्डं प्रीडं ९४६. ख.ग रडडं ९४७ अ. बुलाविया ग. थानिक ९४८. अ.ख.ग संचर चेइ ९५०. ख कुदु ९५१ ख.ग. कड़ंरी; अ ख ग घ. होड़ं [अन्य फल न सफल न हो ख. पाठान्तर] अ.ग. सगुण सङ्णां ९५२. अ. डोलीइ; अ ग.

कोलीइं ९५३. ग, मिलइं ९५४. ग, बापीडो ९५५. अ.ख. प्रुर-तर ग. प्रुर-तर तणइं; च. सुतर् ९५७. ग. मांछिली १५५. ग. तेणइ स्यु काज ५५९. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी ख. नेह विछोह्या ग. नेह विछोह्यां ग. विछोह्यां ९६०. अ. जुन भंजाई, ग. न जो भोजाइं अ. सहाय ९६२. ग. पाहि अ.ग. दुदर, ग. इदर ख. भणां, ग. भलां अ. प्रांण अ. त्यजयंति ग. तजांति अ.ख.ग सनेहां साणसां अ. मरणा ख.ग. मरणा ९६३ ख. तेहवो ग. लगाडीइ अ. जांहि; ग. जांह अ. बप्भीह नि; ग बप्पीहर्नि ग. जाइ ९६४. अ.ख ग पांखडी ग. सो टड् अ. अटजु भांजु मन तणु; ग. अटजो भांजो थत तणो. ९६५. ख.ख है चंदा चतुर तुं ग. संदेशो ९६६. ग. समाणा अ.ग. सुतु ९६७. अ.ख. ग. तेह ९६८. अ.ख.ग. मिलये ९६९. ख. कोओ स करयो ९७०. ग. कहीइं आवसइंगः विच्छाहीं ९७१. ग. ओरतो ९७२. ग सज्जन नहं सुहुणइं ९७३. ग. विरहहं न आवहं ग पहड्लो नींद्र विमोगि ९७४. अ सुहणइ, ग. सुहणइ सिछ ग. नार्वि नींद्र ९७५. ग. ग. दोइ ९७६. ग. विरहहं स्व ग. कसरारिय नयणेहिं ९७९. अ. जिजइ ९८०. घ. तस तनइ ग्. दिन दिन ९८१. आ गाथा प्रत 'अ'मां नथी. ग्. छांटो नयन-जलेहिं ग्. तो हिं सहइ क.घ. पथरिय दिन दिन पंडरे-देय. ९८२. वडनाल ९८४. ग. विराहानलि आ. मृहि धूयां ग. आंसुडे ९८५. खग. अंकंति अ. हैंडूं; ग. हेजि हसंति ९८६. ग. कचाइंगे अ. केडि कजाय; ९८८. ग. सुनो भमइं ९९३. ग. मुच्छा ग. दहइं ९९४. ग. चिंति आ. रतिइ; ग. रक्खुइ ९९५. ग. भमीय ९९६. ग. मिलइं ९९७. अ. हाथि विजिनि; खाग विसवनि ९९८. अ.ग. सहाय ९९९. ग. कहइं अ. तेहनी १०००. ग. दोहिला नीडः १००२ ग् गुणकीर्तिना ३, उद्वेग ४, अ. अताःस्मरदशा प्रोक्तः अतअवः ग्. अताः स्मरदशा प्रोक्ताः अ. अत अव पृथम् व्याख्याता, म. अत अवद् पृथम् व्याख्याता; घ. अत अव ६ पृथम् व्याख्याता छ;े १००३. ग. दहैं वली देहिअ घ. चंदहइ वली देहि १००४. ग. दहें मयंक १००५. अ. तुं सिउं करइं १००६. अ.ग. सिस-मुखि ग. मुज; ग. मुज साथिं. ख.ग. केरइं; ग.ें आधार १००७. अ. विरिह पडियां अ. विरिह पड्या सुख सोधीइं [भुआ पछइं वयर साधीइं; ख पाठान्तर] ग. विरहइं पडयां दुख शोधीइं १००८. ग. तां ससिनइं झंपेइ ग. आवहं मोरो वल्लहो. ख.ग. सिहस करेड १०१०. ग. कहेओ १०११. अ.ख.घ. तीह हुइ: ग तीह हुइं १०१३. अ. कहुनि; ग. कहो विमांसि ग. पर्गि पर्गि वाधि १०१४. अ. उत्तर ग. इत्तर [आ वे कडी प्रत आ स्व.ग.मां छे. प्रत क मां नथी, अहीं प्रत आप नो पाठ स्वीकार्यो छे.]ं ग पिंग पिंग वांधइ खु.ग. सांसि १०१५. खु.ग खिणि खिणि खटकइं तेहींइ १०१६. अ.ख. जे० स० ग. संभारता ग. स्कुं सालइं साल १०१७. ग. वरसा सो समी १०१९. अ.स्व. जेह० लोहार १०२०. ग. सोद वींघी मेलई १०२१. (प्रत 'क'मां ३ अने ४ पंक्ति अन्यथा छे. ग्रंथपाठमां प्रत 'अ'नो पाठा स्वीकार्यो छे.) अ.ख. भाव ग तोहइ न जाइ सभाव १०२२. (प्रत 'क'मां पंक्ति । अने २ नथी, अहीं प्रत 'अ'मांथी ते लीघी छे. १०२३. अ.ग. सडजन क.ख. पाप १०२४. अ.ख. कलिमछ; ग. कलिमलो १०५५. ग. ऊपराटा. अ.ग. जोय १०२६. अ. सालि; ग. सालइं १०२७. ग. तनमइं १०२८. ख तु परवेसि किम रह्मा; १०३० आ.स्व. जे पहिन्न करिंड सनेह १०३२ आ.स्व. बाडल-कंट स्व.म.

सङ्जन सविसाल १०३३. प्रत अ.स्त्र.ग.मां आ कडी अने ते पछीनी कडी उलटकमे छे. १०३४. स्त्र उखडू: ग. ऊखेडो १०३९. स्त्र. नह करीओ; ग. जिहीं सनेह करिओ १०४१. ग. जेनो हुई सनेह ख.ग. नेह १०४२. ग बलतुं जोय १०४४. ग. दह क. जाल अ. विरहानल जाल १०४७. ग. हैडा मींतिर १०४८. ख.ग. नयणांनी रस १०४९ अ.ग. हल्लफुल्लवि स्व. दुयारि १०५२. ग. झंखर रह्रयु १०५५. ग. मिलिं के वार १०५८. स्व. विर(ह) विछोहियां १०५९. ग. अधिकों दहइं ख. हयास १०६०. अ.ग. झ्री म झ्री १०६१. ग. अंधारु १०६२. अ.ग. झ्रि रे अ. ग. मिलसइ योगं १०६४. अ.ख.ग. ज गमीय १०६५. अ. मुझ १०६६. अ.ग. फट्टवि अ. अ. दहइ दिसजाह १०६८. ग. कोय दीसइं तेहवो ग. जीर्णि तुह्यो स्व. विसरि १०७९. स्व. सरिजु; ग. सरिजो १०७०. अ.स्व.ग. नित्य १०७१. ग. दैव १०७२. स्त्र. चणह; ग. चुणहं १०७५. विकराल आ.ग. तु रणी ख. सिंहानी १०७६. ख.ग. अंक घडी अ. दाघी वंकेण १०७८. ग. फठीआ १०७९. प्रत 'ग'मां आ पंक्ति नथी. १०८१. ग. बलो रयणी गलो १०८३ ग. हुणा कियते दैव १०८५. ग. वसतइ मिल्युं अ.स्व.ग. अनुव्ववियोइ १०८७. स्व.ग. इसा रित १०८९. प्रत 'अ.स्त.'मां आ कडी अने पछीनी कडी उलटकमे छे. ग. बीहांमणी १०९१. प्रत 'अ'मां आ कड़ी नथी. १०९२.ग. जीणि को कोउओ मित्त १०९३. घ. मन भारवण करेइ १०९४. अ. किम रहि ठामि १०९६. अ.ग. दुख ग. दीजइं सुखु १०९९. दैवि सरया वेगलां ११०•. ग. त्रणि दहें घ. अणाहामणा ११०३. ख.ग. अचरिज ११०४. अ. मारवि. ११०५ अ. पीउ पीउ; ख.ग. पीउं पीउं अ.ख.ग. मारि मयण-सरेण ११०६. अ.ख.ग. पंखडो स्त्र. लियाविस अ.स्त्र.घ. वल्लह स्त्र.घ. पंथ पमाणि ११०७. अ. ऊबिल; ग. उबल्लह ११०८. प्रत 'अ'मां आ गाथा नथी. ११०९. क. रूडा १११०. आ ग.घ भज्जंति ११११. ख. अंगच्चियब्भिब्भेइ १११२ अ. २१ अथ पनिहां; अथ पनिहां; ग. अथ पनिहा; घ. अथ पनिहां, ग. पीउ परदेसि घ. सुक्खु ग. वालावीया ग. तेडचां आध्यां, दुक्खु किंह्हां १११३. क. आबटडु अ.ख.ग.घ. सो किउं सुख लह्हं १११४. ग. राण कि १११५. अ.ख.ग सुख परि ख. पाठान्तर) घ. मुधरि १११६. ग. तिणि थानिक ऊचाट कि घ. उलाट, कि बइडां अ. थानडि उच्चाट कि; ख. तिणि थान किउचाट १११७. अ. मि नांणिउ ग. पाउकुं तेवडो; १११८. ख.ग. झाल किं गहगहचो ग. कूपल्यो ग. किंशालय ग. दव बल्यो १९१९. ख. मनमोहन मास ग. गिहुबर्या. ग. विरही कूंपीउं परदेश किं जोतां मन खलभल्यो. मास वस वसंत कि ग.घ. सो दिन किम गमइं ११२१. ग. घडीय विसरइं ग. कहीइ पर पीर किं ११२४. ग. गले वाहीयां स्त्र. बाहीयां ग कदही मिलड्ंगा पीउं पूर्कु ११२५. घ. जाल कि ख.ग.घ. मुहु नीसासे यलंति ११२६. आ ख.ग.घ. जलहर ग. भोंनी ११२७. घ. चोखली ११२८. ग. घडहडइ ११२९. ग. कदीयअ न वीसरइं ११३२. ग. शालि सुंमंज रे ११३४. प्रत 'ख' अने 'घ'मां आ कडी नथी. ग. दाक्षि ११३५. ग. घूम कि कठिं नीरमां ११३७. ख.ग. दिन गमाइया ११३८. ग. गवाइं उतापइं ११३९. ख. माण(स) सिव आ छ.ग इति पनिहां; ग. इनिहां; घ छ.आ.ख.ग. दहा ११४०. ग. वोल्या ११४१. ख. सीआला किहां खाइसतुं (पाठान्तर) ११४४. ग. परदेसइं ११४४. घ. पांख ज सरजी. ग. तो जांण विहि घ. छः ११४७. अ.ख. ग. आवइ सुहणि; ग. सुहणि ११४८. प्रत 'घ'मा आ

कडी पांच कडी मूकीने छे. अ. समवाइ; अ.ख.घ.ग. कहो... ११४९. अ.ख.घ.क.. ग. कहो . . ११५०. क. नाहासीयावइ अ.ध. नासी थावइ अ.ख.ध क कहे। अ.ख. इति अणखीयां; ग. इति अणखीया घ. छ: ११५२. ग. साल्इं ख.ग. निव भावइं ११५४. ग. अखंडीत-धारा ११५५. ग. झूरी झूरी ११५६ चाल्यो मुझे ११५७. ख.ग. रति घरि जाइं ११५८. अ.स्व. कोयमल मालइं अ. सबली ११६२. घ दुखडां ११६४. स्व.ग. जाणन हींरा. ११६६. ग. नेहलो ग. दुहु अध ११६७. घ. जे वेसिइ जे ११६८. ग रस-ग्रंगार ग. ग. जांणइं अण-सीखव्यं. ११६९. ग सीखिं ते अण-सीखव्यं. ११७३. π. प्रीउडो पंथि ११७४. ग. पंथि पंथ ११७५. अ. गोरी तुं सज्जलेण. ११७६. ग. पंथी पंथि ११७८. अ.ख. पंत्ररि-वध्धु; ग. बद्धो जीवडो ग. कही ग. ऊडी जाई अ. किमहइ अ. राग देखाख ड पेत्र घर माहरू काहान ओ देशी. ख. ढाल २२; राग देशाख. आ पेलु घर माहरू काहान ओ देशी. शत्रुजय जा हारस्ये रे तेहनइ दुरगती नहीं रे छ्गार. ग. ढाल २२, राग देखाख, अ पेलो वर माहरा कांहान तथा शत्रुजय जहारस्पइ रे तेहनइं दूरगित नही रे लगार अं देशी. घ. राग देखाख, उ पेरं घर माहह काहान; अ देशी. ११७९, अ विरह लायाजी; ग विरह्य रोलायाजी; घ. विरहय लावाजी. ११८३ अ.घ. सरसी ११८४. अ.ख ग. शशिर चदन उपाय ११८५. ख.ग. तनु काया क. पंथनी दोहिल्ड ठाया घ. पंथ (अ)नीठा थाया. ११८६. प्रत 'ग'मां चरण २, ३, अने ४ नथी. अ.ख.घ. भायाजी ११८७. प्रत 'ग'मां चरण ५ अने २ नथी आ. तक्षतां. ख.ग. लखतां ११९०. आ. आवि; ख.ग. आवी; घ. अवइ ग. पंथि पंथि हतां अ. मूरलाया; खाग. मूरच्छाया ११९२. खा.ग.घ. दूहा ग. अहितसेनिनं ११९४. हांणइं दुखड़ा ग. हीस्युं ११५९. ग ऊजागरो आ ख.घ. अेता नि; ग. अेतानि क. मना लवी; ख.घ. मन भालवी: ग. मन सालवी ग. करो ते करजा १२००. पत 'अ' अने 'ग'मां अहीं वधारानी कड़ी नीचे प्रमाणे छे.

> प्रतः अ. हैंड्रं हेजि आवटि, व्यसन वसाही आप, करतां कीधु नेहुडु, निरवहितां संताप. ११७९

प्रत : ग. हैंडुं हेजइं आवटाइं, व्यसन वसाइ आप, करतां किथा नेहडो, निरवहता संताप. १२१०

ग. कथी प्रवेश ग. हवे ग. प्रगटीओ १२०१. ग. झरहं ख.ग. मुक्ख ग भांह हं १२१०. घ. काढा घ. त्राण करी ग. जो काढहं ग. जाएं किमह इं वीसरहं १२१२. ख. ख. तुिह डीलथी. ग. तोिह डीलथी १२१४. ग. हंस गतइं ग. गुणनुं काम १२१५. ग. मुझ सुं हास्युं छांडि १२१६. ख. तूत; ग. तूतु घ. तंनु १२१७. मुझ आपि १२१९. ग. मालती म रोय घ. समिर रोइ ख.ग. दुखिः घ. दुकिख सिहणे १२२५ ख. जाधूं—खाधूं, ग. खाधु ख.ग. खाधू १२२६. ग पाछओं न विलीओ १२२७. ग. अटारडो १२२९. ग. उग्यो ग. लगईं झाल १२३०. अ.ख. चंदु ऊगमिंड १२३१ ख. हीिड देसि ग. किहिं जांणिओ १२३३ कत—संदेशो पठवइं १२३४. ग. मनस्युं घरज्यो १२३६. ग, तां भिव भागईं; ख.ग. भिव १२३८. ग. कहें जे संदेसडो अ. राग धवल धन्यासी, मोरई आंगणडइ

प्रीऊं रमीड, भे देशी ख. ढाल २३, राग धवल धन्यासी. मोरई आणडह प्रीऊ रमीड, भे देशी. ग. राग २३ धवल धन्यासी, मोरइ आंगणडइ प्रीटरसीओ, के देशी. घ. राग धवल धन्यासी मोरइ आंगणडइ प्राउइ रमीउ, अ देशी १२३९. ग. समरंती हसई ससनेहा रे: ख. वलड़ जे ख.ग. म रहे जे रे अ. चाद; ख. चांद; ग. चा॰; घ. चांदलिया १२४०. ग संभरइ ग. मोरइं मनडें १२४१. ग. अ तो कोयिल १२४३. ग. पार्सि ग. माहारा १२४६. ग. डेखिं न कहिजइं १२४७. ग. अंतो किम नीगमसइं १२४८. ख. विच्छोह ग. अंतू तू मूतारिस मोह; ग. अंतो तूं मूं तारिस मोह; घ. अं तु तूंह म उतारिस मोहा रे १२४९. ग. ताहरि विरहइं दिन जाईं ग. घडळीयुग जिम थाहं ग. मइं न खमाइं र अ. राग सीघूड गुडी, श्री सीमंधरि सामि, के देशी. ख. ढाल २४, राग सीघूड गोडी, श्री सीमंघर सामि, अं देशी. ग. ढाल २४, राग सींघुओ गोडी, श्री सीमंघरे सामि० अदेशी. घ. राग सीधूइ गोडी, श्री सीमंधर सामि, अ देशी १२५१. ग रणझणई १२५२. ग. पंथीआ के ग. रमइं रे १२५४. ग. विसम्यो ग. रह्यो तेणइं ठांमि १२५५. नदीय न नीर १२५८. ग पसर्था १२५९. ख वीनविड; ग. वीनविओ से ख अहवी न सती ग. विख दिने अ.ख.ग.घ दृहा १२६९. अ.ख ग. नीठचर १२६२. अ.ख.ग.घ. मेह सज्जन १२६३. ख.ग. गुह—जल छेवाकर लेइ वीखरह अ.ख.ग. सज्जन १२६७. ग.ख. दूरियतां १२६८, ग. काजे न आवइं १२६९. ग. नीलां कडजल सामल् ख. कथीयन विहारिंड दीठ १२७०. ग नरहिंणि अ.ख.ग. दीय १२७१. घ. इ-सह १२७२. ग. जेंन मंतरि १२७४. ग. दींसीता बींहामणा १२७६ अ.ख.ग. विस-दमणि १२७७. अ.ख.ग. अज्जवि १२७९. क. सुद अ.ग. सदंसणि कन्हर्होइं; ख. दस दंसणि कन्हहोइ; घ. रुद्ध सदंमणि कन्हहोइ अ.ख. नमणिजा; ग. नपणिज्जा १२८०. प्रत 'ख्र'मां आ कडी नथी. १२८१. अ. गुण दोस १२८३. ग. पापि १२८४. अ. राग गुंड मल्हार, तुं सेती मेरा मन लीणां, अ देशी. ख. ढाल २५, राग गुड मल्हार, तुं सेती मेरा मन लीणा, अ देशी ग. ढाल २५, राग गुंड मलहार, तुं सनी मेरा मन लीणा, ें देशी. ध. राग गूड मल्हार, तुं सेथी मेरा मन लीणा, क्षे देशी. १२८५. अ. दृपद ख. दूपद ग. दुपद घ. दू ११८६. ग. विहंस्युं ग. मांडईं अ. त्रिहुनि; ग. त्रिहूंनि ग. देखाडहं १२८७. प्रत 'ख'मां आ कडी नथी, १२८८. ग. बोलइं जूनुं करइं नवेरू आ.ख. छयल्ल घ. छयेल ग. अनेरूं १२९१. ख. परिच्छयल १२९३. अ.ख.ग. अमुनित जेहनां १२९४. ग- बोलाव्यां हिसिनि बोलि १२९६. घ. आपणि १२९७. अहीं प्रत अ.ख.ग घ.मां वधा-रानी गाथा नीचे प्रमाणे छे.

प्रत: अ. साहमानि जे दुखमां पाडइ, आपणिप निव दुख देखाडइ.

प्रत: ख. साहमांनि ने दुखमां पाडइं, आपणपि निव दुख देखाडइ.

प्रत: ग. साहमांनि जे दुखमां पाडइं, आपणाइं निव दुख देखाडइं.

प्रतः घ. साहमानि जे दुखमां पाडइ, आपणि निव दुख देखाइ.

अ. वसिकरि ऊपाई; ग. करि ख़ ग. ऊपाइ आ आपि तेहिन ग. आपि १२९८ सहुर्नि वाहइं १३०२ ग. जिंड जेह स्युं मिल्या आ ख.घ. तुहि नतियु कुरंग १३०३. आ. जांण अजांण किस्युं करइ ग. लिहावो कपूरइं प्रह्यो १३०४. ग जे हस्युं लागो चीत्त १३०७. ग. भिलि न मेहलई आ ग. नयण-रस ग. अवटावइं ११०८. η मिलिं न मेहलहें ११०९. ख. मन (व)त्रडी ग. जांगइं ग. बाहिर देखार्डि सती अ. राग आसाउरी, राजा राजा नव निधि मेरे, अ देशी. स्व. ढाल २६, राग आसाउरी, राजा राजा नवनिध मेरे अ देशी. ग. हाल २६. राग आसाउरी, राजा राजा नवनिध मेरे, ओ देशी. घ. राग आसाउरी, राजा राजा नवनिधि मेरे, से देशी १३१२. ग. कलियुगमां को... ग रा० अ. दुपद; स्त्र दूपद; ग. दूपद १३१७ ग. कुंण ग च्यार ग. कहइं रे सरुप अ. तथाहि; ख. अथ पातालसुंदरी संबंधो कथ्यते, तथाहि; ग अथ पातालसुंदरी संबंधो कथ्यते, तथाहि; घ. तथाहि १३१८. ग्. सुविशाला ग्. रसाला १३१९. ख.ग्. जयवंतसेन १३२०. घ. गरवइं घ. गई ग्. सामाजिक नि बोर्लि १३२२. आ ख.ग. क्षेक कोविद १३२३. आ.ख ग. महिलाचरित ग. महिलाचरित्र न जांगई १३२७. घ. माग हींसइ १३३०. अ ख.ग पांचिस १३३३. आ कडी प्रत 'क्रोमां नथी. ग्रथपाठमां प्रत 'ख्य'मांथी लीघी छे. १३३४ आ कडी प्रत 'क्रोमां नथी. ग्रंथपाठमां प्रत 'खंमांथी लीधी छे. ग्र. सोनी १३३८. ग्र. नरहिं उपाइं अ ख.ग्र.घ. दूहा १३३९- ग. सुंणी १३४१. अ ख.घ. अंक-मन ग. मरोइं तेहिन साथि १३४२. ग. हुईं अखग. बहुआ ग. हुइ ख. कांता; ग पाखइ १३४२ अ.ख.ग. रज्ज १३४५. ग. तो लक्ष मिलसि ग अंतरि कर्यो विचार १३४७. ग. जो मंडीजइं १३४९ ख.ग.घ. सत्त-वंती ग. रहइं खग. माणसडां तस हीण १३५०. ग तरस्यां मरइं १३५३. ग. अेकईं मांणसज्जस नहीं १३५४. ख.ग.घ. सही ग.घ. रच्चतां ग. हाथि १३५५. घ. हीया केड़्ं हीद १३५७. नुहि विरंग १३५९. ग. फुलबड्डं खण्डं १३६०. अ. जि; ख. ज; ग. जं; अ.ख तुली रुधिर १३६१. ग. कुसमि मिल्यां अ.ख.ग. चम्म मिलंत १३६२. घग. पड्यउं क. उछ स्व. इक्ष्, १३६३. ग. मर्नि हुइं वग शं(का) घ. ओछां साथि १३६४. अ.ख ग. यांन १३६६. घ. कसीया १३६७. ग. नोहिं ख,ग. विकार अ. राग गुडी, संभारी संदेसडु के देशी खा. ढाल २७, राग गुडी, संभारी संदेसडु, के देशी ग. ढाल २७, राग गोडी. संभारी संदेसडो, अ देशी घ. राग गृडी संभारी संदेसडु, अदेशी. १३६९. ग नहींतरि सर्व अ.खग. इम १३७१. ग वीसासणि को अेक घाई १३७४. ग. शीलई १३७५. ग. नाम न जांण ग. न दाखइं दे १३७६. ग. बांध्यो ते साथि १३७८. घ. नुहि मयण १३८१. ग जिंग कर्या ख आपण्; ग. आपणुं आ.ख.ग मन ड्रेलिंड विश्व भेद घ. मनडु लिइ विश्राम दे आ. राग गुडी ख. ढाल २८, राग गुडी ग. ढाल २८, राग गोडी घ. राग गुडी १३८२. ग. तेह विण ग. न नहिं १३८४. ख.ग. तेहव्ं १३८७. ग. तुठो राजन मेहरुइं दांण १३८९. का चमर हिर ग. छइंग. नांमिं सुवेरया घ. चमरीय हारी १३९२ ग. साल न दीसइं कांइ असारुं १३९३. ग. वहिलो जाइं अे स्युं गुडो १३९५. स्व भा(स)इ; ग. भासइं अ.ख.ग.घ. दूहा १३९७ प्रत 'क'सां आ कडी नथी. प्रंयपाठमां प्रत 'अ'मांथी लीधी छे. १४००. खागा आंखडीआं खा. अलजु; १४०१ गा. हइडइं हर्ष न माइं १४०२. गा. दूरि तेह्मुं; घ. दूरि तेह्सिंडं अ. संतोख स थाइ; ख संतोख न सथाई १४०४. अ.ख.ग. प्रलाप ग. मांणस वघ विक्धडां १४०५ ग कर ग. पड्ठो १४०७ ग. जेहस्य लागो वेघडो ग. तां दव लागो वेडि १४०८. ना. दहइं पूरी क. घणी १४०९. गा. अणुराय १४१०. ख.गा.

वालहां ग. विरहइं माइं ख.ग. न विलइं घ. नवि लजाइं १४११. ग. नी(सा)सी उजागरी ख.ग. अंकुरा १४१२. प्रत 'ख' अने 'ग' अने 'घ'मां आ पछीनी त्रण कडी ऊलटकमे छे. पण अत्रे ग्रंथपाठमां कमे पाठान्तर नेांघ्या छे. १४१३. π. तत्त अतत्त स्युं π. संदि संदि मलाइ १४१४ व्रत 'ख'मां आ कडी नथी ग्. झूरइं कोइं ग्र. संसारि न अपणा १४१५. अ ख.ग. पक्षि स कसाय १४१७. ख ग. सय-हांणि १४१८. अ.ग. लागस, ग. लागसो १४१९. ग. हसारत १४२० ग उंचा आंबा १४२१. ग मागई आडि करी अ.स्त.ग मरेय १४२३. ग.घ. रे हैडा १४२५. ग. बिरह-दोहिलो ख. चांखियां; ग. चारूयां ग. थोडिलो १४२६. ग. मरकलडि हसइ १४२९. ख. दैविं ग. दैवइं सरज्यं: ग. हाय १४३०. अ.ख.ग. सुपनं ।रि १४३६. आ.स्व. विचि; ग. विचिं १४३७. अ.ग. मिलसिंड घणू १४३८. η. जागइं बोलडइं १४३९. अ.स्त. मयण-खटुकइ होय η. मयण खटकें होय १४४०. अ.ख दुनि-जन घ. काया कूची ग. तादु कीजई १४४२. ग. अंगो अंगि मूरखां १४४३. अ.ग.घ. जेह सुख अ. मोर गिं नाचइ गाजतां ख ग. मोर नांचइ १४४४. अ.ख ग. कहाय १४४६. म. परदेशडइं गयांइ १४४८. म. वेरया १४४९. म. विरलां जांणइं १४५०. दघ्ट अदघ्टिन ग. लहइं १४५१. अ.ग. दहेय १४५२. ख. खदकइ; ग. खदकई १४५४. ग. करि विमांग १४५५. ग. अधिकं स्यं करहं १४५६ ग. कसो ग. ते थाओ १४५७. अ.ख ग. दशाननि दश शर नीगम्यां १४५८. ग. विल क्षे प्रांण १४५९. ग. प्रांणि धरइं १४६० ग. जां लगइं ते न मिलंति १४६१. अ.ख. कोऊ जलिइ; घ. कोऊ ग. जल्हं अ.ग. उल्लावि; ग. ऊल्लावि १४६२. ग. बलतूं लड्डं ग. ततुं कंपाइं अ.ख.ग. अण-वेचि ग. जीणि माइ १४६३. खाग. जिण जाणि जमता स्व सिउं नि जे वेघडु ग. सु नि ज वेघडो १४६४ ग. बाहिरइं १४६५. अ.ग. चंदु ग. दहइं १४६६. ग. रहि तो माहरा अ.ख.ग. छाइ १३६७. अ ख.ग. उपारजन १४६८. ग ऊल्लसइं ग. अहींइं किस्यो संदेश १४७१. ग. विल वइंरी स्यु मंडीइ १४७२. ग. कमिल नह वेघडई खाग सहीय घ. वालाहां १४७३. ग. परवस रहइं ग. मूंकि विझगयंद १४७४ ग. किहि ग रमइं अ. नेहडइ अ.ख. ग. मयल्लपण्ं १४७७. घ. अघि घडी १४७८. अ. पटलडइं; ग. पटओलडइं १४७९. ग्रंथपाठमां प्रत 'ख्व', 'ग्न', 'घ'मां वधारानी कडी आ प्रमाणे छे-

प्रत: ख.—ऊज्जल पणीय जिम ससिकला, दिनि दिनि वार्षि सोय, तेहवी उत्तम प्रीतडी, विवरयां खलि होय १४६०

प्रत: ग — उत्तम पणय जिम ससिकला, दिन दिन वार्घि सोय, तेहवी उत्तभ प्रीतडी, विखरीयां खलि होय. १५०८

प्रत: घ.— ऊजल पणि मि जिम ससिकला, दिन दिन वार्घि सोइ, तेहवी उत्तम प्रीतडी, विवरीया खलि होय १४६१

१४८०. ख. अेक ग. अेकि १४८२. आ ऊखडिउ; ख ऊखडिउं ग. उखडिगुं ग. भव सिव १४८५. ग. सिर धर्यो १४८६. केरो ठांम ग. जांगुं अभिरांम १४८७. ग. खहावी खास १४८८ आ.ख.ग. खप ज(प) १४८९. ख. उच्छा हुइं १४९०. ग आग

मांहिं झंपावीइं ग. तरीइ अ. मरह आगमीइं १४९१. ग. जेह स्युं होइ ग. विख-वें छडी ग. ओल्लाइ' १४९२. ख.घ. हरि-पाहरी ग. स्ता तोहि १४९३- अ.ख. निमेडि १४९१. ख.ग. आसा-लुबच ग. दवह पडी मरंति १४९५. ग. पहारडई १४९८. अ. लहुंजओ; लहुयो १४९५ ख.घ. मुद थयु; ग. मुद थयो १५०१. अ कहू ग. से खेवि १५०२. ख. जीत (जीत्या ख. पाठान्तर) छवाडुं दीउं १५०३. ग.ख. छोडि जिम १५०५. ख.ग. थोर थणि १५०६. घ. मयंक अ. नवचंग क. नवरंग १५०८. ग चाहुड्यो; १५०९. ग. हण्या ग. भींतरि. ग, नीसरइं ख. मेहलिं, ग. मेहलइं. १५१०. ग. परजीवीय ग. खगा जिम गृ. अंतकरणांइं १५११. आ स्थाने प्रत 'अ', 'ख', 'गृ' अने 'घ'मां वधारानी कडी नीचे प्रमाणे छे. प्रत 'अ' जीहसिणे हा तीह, सियर दीहर कसिणांइ, मुडु मुहु, कोष्ट वलंतडइं, तणुं अंगी नयणांइ. प्रत 'स्व' जीहिसणे हा तीह पडईं, सिय दीहरीह कसिणांइ, मुहु मुह कोष्टं वलंतडइ, तणुं अंगी नवणांइ, प्रत 'ग' जीहसिणे हा तीहपडइं, सिय दीहर कसिणांइ, मुहु मुहु कोष्ट वळंतडइं, जाणुं अंगी नयणांइं. प्रत 'घ' जेहसिणे हानीह पडइ, सिय दीहर कसिणांइ, मुहु भुहु कोठे वलंतडइ तणु अंगी नयणांइ. अ.ख.ग. कडख. ग. शर संधिविय. ख. तिकख; ग. निकख. १५१२. क. बाला पणि जे करी; अ.घ. बाला लायणि करी; ग. बाला-नइं लोयणि करी. ग. संचरइं सुजांण. १५१३. ग. सज्जेईं [तिज्जेहं;] १५१४. ख. विस जलधरकी. १५१५. अ. विज्ज; ग. विज्ज. अ. विक्षम. ग. भरीयां. ग. तीहं विणासइं. १५१६. ग. जीवीय. १५१७. तिहूण; ग. तिहूअण. ग. तो जिंग जीवित. अ.ग. कीय. १५२२. ग. हरीणलो. १५२३. अ.ख. इसर. ख.ग. समवर्डि. ग. कीध. १५२४. ग. ग. सोहांमणो. ग. ऊज्जल कंबु. ग. त्रणे. अ.ख.ग. पंख. १५२६. ग. हर्इ ध.ग.घ. नह सित अध्धर साल. १५२७. ख.ग. थणहर. अ.ख. मयणां राठ. अ.ख.ग. निहांण. १५२८. ख.ग. भडमल्ल. ग. सो जीइं. १५२९. अ. थण-मथडी. ग. त्रिहं हथीयारे. १५३० अ. नाहइ-दिहइ; ख.ग. नाहइं दिहइं. अ. जलधार. १५३१. घ. मत्तंग अ.ख.ग.घ. नह अकुंश. १५३२. ग. परिरंभण, १५३३. ग. हीइं. अ.ख.ग. रकजीया. १५३४. ख ग.विहिठयां. १५३७. अ.ख.ग. वाविअ थकु. १५३८. ख. अणमातू; ग. अणमाणु, घ. मसि. १५३९. ख.ग. कोट्टं महि; १५४०. ग. रह्यो. अ.ख.ग. चपंत. अ. उछह; ख. उच्छह; ग. उच्छह ख ग. निहूयण नयणांणंद. १५४१. प्रत 'ग'मां आ पछी अंक कही वधारानी आ प्रमाणे छे. प्रत 'ग' अणीआला उठता थंभ, नेजा थरहरता, चाकलीया चउगठा, नीगड गज-दित नीकलतां, में मत्ता मारका सिर तीखा तीनाला, सिंगाला सोगटा कठिण काका कुंभाला. र्पालो रलीआंमणा, स्दरि सुत्थ उमट्या. कसी ओपम कवी दासहिं, जे पर्वतरहंग प्रगटया. १५४२, ख.ग. विडुगाय. १५४३. गृ तीरइं. ख ग. वन्नीडं. ख.ग. सद्रहर. ग. निवसइं गुणभंडार. १५४५. अ.ख. लायणि. १५४८. अ.ख. पटउली; १५५३ क. ज काडि ग. झंकार. १५५४. ग. सरि चंदन-वास. १५५५. अत्रे प्रत 'अ', 'ख', 'ग' अने 'घ'मां वधारानी पंक्ति आ प्रमाणे छे. प्रत 'अ' जे नर जोया धन ते, मद घूमिअ नयणेण, १५३९ गोरी जस जोती हसइ, सिव सनयण शरेण प्रत 'ख' जे नर जायी धन्य ते, मद घूमिअ नयणेण. १५३८. गोरी जस जोती हसइं, सिव सदय शरेण. प्रत 'ग' जे नर जोया धन्य ते, णद घूकिअ नयणेण. १५८७ गोरी जस जोती हसई, सवि सनयेण शरेण. प्रत धः जे जोया धन ते, णदं घूमिअ नयेण, १५३१ गोरी जस जोती हसइ, सन्बि सनयण १५५६. ग. (स)तोल.

१५५८. क. सिंध्य. १५५९. अ कंचुं-कसण; १५६० अ. सास सरीरि. १५६२. ग. कटी, १५६४. अ.ग. गोट. घ. गमयंती. १५ ५३. ख. गहिबरि. १५७४. अ. पीट, ग. अणदीठइं. १५७५. अणदीठानो ओरता. १५७६. ग. अहुनि मनि स्थो. १५७८. घ. मोहण-वेलि. १५७९. स्व.ग. अद्भुतः घ पुरुष भरतः १४८०. क. हरुः १५८२. ग. मयण जणावईः १५८३ खग वयण १५८४ ग वांको १५८६ उफराटो १५८७ ग. सुरिज ग. नींराग. १५८८. अ ख.ग. ससनेहानां. १५८९. आ कडी प्रत 'घ'मां नथी. १५९० आ कड़ी प्रत 'अ' अने 'ग'मां नथी १५९१. ग. हसइ १५९२. ग. हरख्यो चित्त. १५९३. ख. निरवांणी; ग निरवांणि. ग. अणजाणुं. अ. सहांणि; १५९५. ख. वेधि; ग. वेधे; घ. वेधि. अ ख.ग दैवि. १५९७. ग. कहीई तेहनई १५९८. ख. मल्लि. ग. झल्ल. १५९९. ख.ग. सासहु. ग. ओच्छ नइं. १६००. घ आण्पिउ. १६०१. अ. छयल. ग. साहमी देखइं. अ ख. गेहजु; १६०३. ग. भमरलो. ४क जगदीस १६०५. क. काजि. १६०६ अ.ख.क. निदांनि ग. कुहुनइ कोइ प्रमांण. १६११. ग. तोरइ नामें. अ. गर्ज ति; १६१२. ग. दिवे १६१३. ग. कर. १६१४. ग. सुजाति. ग. गमइं ग. ताहरूं. १६१५. क. ध्यानि. १६१६. ग. नेहडो. १६१७. अ.ग. नंयणले. क. मुज्झि. १६१८. क. हथियारि. १६१९ अ. करिलगइ से। जीइ, ग करि लगई. १६२०. अ.ग. क्षेक्र ज तुं अ.ग. रूहाडि. १६२२. क. लड्ड. १६२३. ग. दहइं: १६२४. ग. बीय सरिं संजुत्त ग. ते जांगइं मुझ चित्त. १६२६. ग. मांगस. १६२७. क. मुझ विरहेण. १६२८. ग. उरि लगां. ग. हरइं. १६२९. अ.ख. नुहरा.; १६३०. ग. विरिह्रं ताहरहें ग. मान्छिली. १६३२ अ. जवासी सींचता. क. जंखर. १६३३. ग. तनु अवटाई नित्त १६३४. अ.ख. जांणि; १६३५. ग. आलाख व्. अ.ख.ग. लक्ष-बार. १६३६ ग. बलि बच्छनांग अफिग. अ.ख. जुं नुहि; ग. बलि हूं मर्. १६३७ क. जपांवसि. १६३८. ग. ताहरइ वेघडइ. ग. निर-दीस. १६३५. अ. अंहनी वैद्य ज तुह जिछई, ख. अनही वैद्य ज तुह जि छई ; ग [अने। वैद्य–ग. पाठान्तर] १६४०. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. ग. तझ विरहालीं–आंत्रलां १६४१ ख. छपडहें, ग. ऊपजहें . ग. कह्यां. ख.ग. पाखईं ग. रहिवाईं. १६४२. ख पडसिंह किलिके; ग पडसिं कालिके. १६४३. ग. वाहर हत्यडो; १६४४. घ. वा हत्यडु. १६४५. ग. लाही तोहि न लई. १६४६. ग. जंबारडो. ख.ग. उपगारि होय १६४७. अ.ख.ग. मुझे रंम. १६४८. अ. पांसइ: ग. पामेय. घ सकति लाहु छेय. १६४९. आ कडी प्रत 'कु'मां नधी. ग्रंथपाठमां प्रत 'अ'मांथी रज् बरी छे. खाना दांन दीई . गा सोया खाना घा तणी . खाना कोया १६५० आखाना संभारति. १६५१. ख. अलवि; ग. अलवहं दिइंसुझ. १६५२. अ. संचीयह; ग. संचीजइ; अस्व ग. वाथि; अस्व ग. वाबरि; १६५३. ग. पाय. ग. माग्यो आपि न तन्न. १६५४. अ,ख. चिवयां ग. चव्यां. ख. जु ते कहु; ग. जो ते कहु. ग. तो ते ते आगई. १६५५. अ.ख. फलिस केणि उपाधि; १६५६. ग. लाघो. ग. करस्य. १६५७. ग हूं मागु तुझ किह. १६६०. क. काज १६६३. नोंध. -- प्रत 'क 'नी कडी १६६३ थी १६६७मां विकतओ अञ्यवस्थित छे. ते ग्रंथपाठमां प्रत 'स्व'नी सहायथी व्यवस्थित करी छे. क. लाई-भेय. १६६४ नोंध.-प्रड 'क'मां पंक्ति ३ अने ४ आ प्रमाणे नथी ते प्रत 'ख'मांथी रजू वरी छे. ख रच्चति १६६५. नेांघ.-प्रत 'क'मां पंक्ति १ अने २ नथी ते प्रत 'ख'मांथी अत्र रजू करी छे. ख.ग.

अगबूठ्ह'; १६७०. ग. रूपिं. ग. जेहवो चंगा-छोडि. १६७२. ग. पइं टेली काच कुण. १६७४. क. सोकडि १६७५. ग. आखडीआ आंत्रंबडी १६७७. अ.घ. फलिया १६६८. स्त्र.ग. जांइ तुझ विण आस्त्र. मिलविंड. १६८०. अ. माटि तुहनि १६८१. ग. माग्यडं दीजइं १६८२. ग. अंदोह १६८३. अ.ख.गघ. ख्टी १६८४. अ.ख ग. सलोय १६८५. ग. न मराय ग. मांनइं आपण्ं १६८६. ग. सहिजइं नन्मणां १६८७. ग. ताडो अवडो ग. रयुं ज करिस १६८९ ग. तुं मुझनें १६९० ग. जीमि किम दिन वीसरहं १६९१० अ.ख.ग. जे तुझ ग. नामइं १६५२. अ ग. हूं कीर १६५३. क. संसारि १६९४. ग. पालन्यो १६९५. अ. तरसाल्यां १६९६. ग. तोरइं परे पडुं ग आर्रात हुईं १६९८. ग. मोह्यो १६९९. ग. वलनुं कां न दें १७०२. अ. भाद्रविड, ग. भाद्रविडें १७०३. ग. बर्ला-हारडी १७०४. क साथ १७०६. अ.स्त्र.ग. मूहि १७०७. ग. जांणि जिहां १७०८. स्व. तन मन धन १७१३. ग इधि स्युं १७१४. अ.ग. आंबां लागां इख्इ १७१६. ग मन मिल १७१७ ग. नयणे की घो क. भेय ग. भांजी लजया १७२०. ग मरवी क्षेक ज वसं १७२१. क बहुन छंत्री ग. नहि किस्यो १७२३. अ.ख.ग. च्यार १७२४. अ ख. रचीइ १७२५. अ.ग हंसा किं; अ. मांतसिर १७२७. घ. निर्गुण सिउं १७२९. ख. कां बलडो १७३१. सगुणां संगति कीजइं १७३२. ग. कीथो नवो सनेह; घ. नवउ सनेह १७३३. ग. चडि प्रमांणि क. सुजाण; अ.ग सुजांणि १७३४. ग. पालवई १७३५. ग. तोरइं कारणइं ग. करें रखे १७३६. ग. तो मइ मंड्यो नेह ख. म थाओस; ग. म थाओस १७३७ ग. न होइं घ. नुहि हंसु क. निवभुग १७३८ ग. जेडि अ.स्व. ऊधांण; ग. उधान; ग. ऊधाण १७३९. ग. पालइं घणो समेह १७४१. ग ते तो लीजइं क. जनम तणंडं व्यवहार; ग. जनम तणो व्यवहार १७४२. अहीं प्रत 'अ', 'ख्र' अने 'घ'मां वधारानी कडी नीचे प्रमाणे छे. प्रत 'अ'—जु घट मांटी केंग्डु, जोई लीजई सुवार, माणस सरखा रतनतु, जनम तणु व्यवहार. १७२५ प्रत 'ख'—जु^{्घट} सांटी केरडु, जोइ लीज**ई सुवार, मां**णस सरखां रतनतु, जनम तणुं व्यवहार. १७२४ प्रत 'घ'—जड घड माटी करडु, जोई लीजइं सुवार. माणस सरखां रतनसु, जनम तणु व्यवहार. १७१५. गृ. मन आरतो गृ. बिपरि दहसि १७४३. अ.ग. जिम वि न हसईं लोय १७४४. ख. खरो तो जाणिस्युं ग. पाळेस्व १७४५. अ.घ. नेह रय तिम १७४६. अ. छनजइ; स्व.ग. छमजईं घ. उतजसि १७५०. घ. भेसि तूं सुजाण १७५१. ग. जे हस्युं वाघो १७५२. स्त्र. साथि सु जू मन मिलिडं ग. साथि सुझ मन ग. कहांइं आ ख. तुझ सिउं मलिउ जे नेहलु १०५३. घ. सहिस अहोत्तर ग. भिलई १७५५. ग. अंगीकर्या १७५६. अ. बीहीजइ सइ; ग. बहीजइंसि; घ. बीहजसेई ग. जो मंडी सइं १७५७. अ.ग. वाहलां अ.ग. थंभि १७५८. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. ख.ग.घ. लाजहं प्यमह कयुं ख.ग. गणयन नाडी ख.ग. सुचित्ता [प्रत ख.ग.घ.मां आ कडी समजावा माटे समजुति आपवामां आंबी छे जे नीचे प्रमाणे छे.

[प्रत 'ख'मां आ रीते आकृति आपी समजुति आपी छे) अमकृ रोमृ आपुपुओ मपूउहचि स्वाविअज्येमूपुड श्रधशप[ु]रे ।

रुडनेति, अन्यार्थ रुडनाकारकः कथं मिलति परम्परं विगोध । यत्र मा न तत्रे दर्यनेहं न तत्र

सा सौख्या-भावांत्र भिलतियत; विशेतो शस्त्रु छो. । तरमा गछती तुरंगः यत्र प्रेमतंत्रि वियाति चित्ताऽवशः ठउज्ञया चित महचसित वचन प्रत्यय स्विह गणय विचारय । अपा स्नेह लक्षणविधोः नाडी लोक भाष्या असाध्य केहा-वेधः कस्मात् खंड शो न छतः, यथा पुननांति भवति पक्ष पंकस्याधित्य परस्परं चित्रां उभयोर्भि न नाडीत्वध्धेषः न नाडिवेः. हे गणक क्षेष प्रेमलक्षणो वेध केकरेख्या कस्यात्र रेखितः. यथां लज्जा प्रेम्नो न विरोधो भवति । क्षेक नाडी स्थिता यस्य, गुरु पत्रीश्वदेवता, तबहेषंदु जंगत्यु, कमण फलपादिशेतः प्रभु पण्यांगना भित्रं, देशोग्रामपुरं गृह भविश्वदेवता, तबहेषंदु जंगत्यु, कमण फलपादिशेतः प्रभु पण्यांगना भित्रं, देशोग्रामपुरं गृहः, क्षेक नाडी वधेभव्या. विरुद्धावेधवर्जिता. ॥२॥ हनाडी वधतो भर्ता, मध्य नाडी व्यधेदयं, पृष्ट नाडी व्यधेकत्या, व्रियते, नावशसय. ॥३॥ सभांसत्रे वेधेशीग्रां दूर वेध चिरणतत् , वेधांतरानुमानेन, वर्षदु हटः प्रजाय ते. ४ क्षेत्रक्ष जायते यत्र विवाहे, वरकत्ययो, मूलवेधो भत्सोह महादु ह्यकलप्रदः ५ इति नाडीवेध कलानि क्षेक नक्षत्र जातानां, वरेषां प्रीतिष्ठत्तमा दंगत्यो मरणं इयं, पुत्रो जातो रिपु भवेत ६ ग्रामे वा नगरं वापि, राजसेवक्ष्यी स्तया, क्षेक कक्ष भवेत्र्राति, विवाहेदुकखमादिशेत. ७ क्षेक नाडी गतौ यत्र, स्वाभिष्टत्यौतु संरिधती, वित्तलाभो महा प्रीति, तयोक्षेया विपिश्वता ८ ४१, इति श्लोकनं उत्त देखाडिउं छ.

प्रत: ग. (आ रीते आकृति आपी समनुति आपी छे.)

अभक्त रोमृ आपुपुअ मपुसा हचि स्वावि अरव्ये मृपूउश्रधशपुरे. लाइजोति ॥ आस्यार्थः ॥ लाइजाकारक: कथा भिलति परस्परं त्रिरोध: । यत्र सा न तत्र दंयश्रह न तत्र स सौख्यांमावात्र मिलनितयः विशे तो शस्त्र छोः॥ तरसा गछंती तुरगः यत्र प्रेम तंत्रि वयाति चिताऽवशः लङ्जया चित् महचसित वचन प्रत्येयस्तर्हि गणय विचारय । अयां स्नेह लक्षण विद्यौ: ॥ नाडी लोकभाषया असाध्य अहावेद: ॥ कस्मात् खंडशो न कृत: । यथा पुननांति भवति । पंकत्याश्रितक परस्पर चित्रां उभयोर्भि न नाडीत्वा षेष: न नाडिवे: । हे गणक क्षेष प्रेमलक्षणो वेध क्षेक रेखयो कस्यात्र रेखित:। यथा लज्जा प्रेम्नो न विरोधो भवति..... १७६०. ग. चित्रसी लोकनइं १७६१. निव मेहल से विदाय १७६२. अ.ख.ग. सनेह क, बोलणां १७६३. अ.ख. कइ सइथु कि टालडी ग. कइ तावडि क, कछजु १७६४. ग. जेहनो मन जेहस्य हुइं १७६५. क अज १७६८. ख. होय १७६९. अ.ख. नंदइ लोय ग. नंदइं लोय १७७१. ग. ताहि हूं वहिं हुं नहीं. १७७४. अ.ख.ग. बोल छेइ इम क. नहीं कंद १६७६. ख. मणिसय क मेहलिंड (मन-मणि' शब्द नथी.) अ. राग मल्हार; ख. ढाल २९. राग मल्हार; ग. डाल २९, राग सल्हार, घ. राग सल्हार १७५९. ग. मरणनी संचिक आ ख.ग. द्रुपद १७८१. ग. फुलडलां फुलडलां १७८३. अवसर पांचि १७८४. अ.ख. रायरवाडीइ; १७८६. ग. जो ह वीचलो वीचवो १७८७. ग. केरो क्षेत्र साहरूं ग. चमकडो थाइकि १७८८. ख. तुहनि अह सी कुमंत्ति १७८९ क. वणकडा १७९०. क. वगलड घ धरि छोरू असी कपरिंग, हाटनी पाडो रीस कि १७९२. ग. भीलतो बीहइं कांइ १७९३. अ.ख.ग. तमनि जीव १७९४. क राय. आ. राज्य क. करेयो वरस स प्रत 'क'मां वरि शब्द नथी. ते अंगे प्रत 'ख्र'क्षां मूक्यो छे. १७९५. अ. भन्न हुनू ग. लह्यो अशेष क. जनुसनि (!) ग. जो मनि अ.ग. हुसि १७९६. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. अ.घ मानीओ ग. जीवज्यो ग. जेहत्यं अ. राग रामगिरी, भाभानी देशी ख. ढाल ३०. राग रामगिरी, भाभानी देशी. मम करो माया काया अ देशी ग. ढाल ३०, रांग रामगिरी, भाभानी देशी, मम करो माया काय कारमी, के देशी १७९७. अ. ऊखांणडु; ग. ऊखांणडों ग. प्रेम लीओ दोहिलो वाहलां केरडो १७९८. अ आणुकां; ग. अणुकां १७९९. अ. म घरिसु ग. स घरस्यो ग. हींसाडां १८००, जूहूं तांण् ग. जोहूं १८०१. अ. तोरि दुखि मुझ ग. जहीं लगइं १८०३. क. मांडु १८०४. ग्. साजो ग्. दिन केति क. सन १८०६. ग्र. हूंनी हूंती १८०८. अ.ख ग्र. कोठवाली तव किहं अ.ख.ग. हेठिय १८०९. ग. हुइं ऊजलां १८१०. ग. मांत्यां है १८११. ग. यन घरथी पाछो वल्यो १८१२. अ.ख. बीनतडी १८१३. ग. आम्रहे[ं] घ. आपण्ड साथि रे अ. राग सामेरी ख. हाल ३३, राग सामेरी ग. हाल ३१, राग सामेरी; घ. राग साईरी १८१४. अ ख. चुहाँ अ. सोहि; घ. सोहइ अ.घ. श्रवणे सोविन झालि १८१५. ख. ठविअ घ. सा गोरी १८१६. अ कम(ल) १८१७ अ.ग. पहिरणि क.अ.ख.घ. छालि १८१८. प्रत 'ग'मां आं पंक्ति नथी अ. सा प्रोसणि 'ग मां आ पंक्ति नथी १८१९. प्रत 'ग'नां ओ पंक्ति नथी. अ. प्रमांवि चालि. प्रत 'ग'मां आ पंक्ति नथी. अ.ग. श्रीसं ख. बिपुहुर केरि कालि, ग, बिपुहुर के कालि १८२१. सुरमिश्रुत ग. भव-मुख समइं विकराली १८२२. स. हुई घडनीली १८२३. स. चमक्यो ते मूपाली अ. राग केदार गुडी स्त्र. हाल ३२, रांग केदांर गुडी गा. हाल ३२, राग केदारो गोडी. श्रेणिकराय हु रे अनाथी नीग्रंथ से देशी (देशी कौसमां लखाय छे.) १८२४. ग. चींतवइं अ. दुवह, ख दूरद आंचली; ग. दुपद आंचली १८२५ ग. पाता छे धरि १८२६. प्रत 'ग'मां आ कडी नथी. आँचा अथ रूप लक्षण; अथ रूप लक्षणि १८२७. आ.ग. नांखइ नांखइ १८२८. क. धूर्तर्मि अ.ख.ग. ते धूर्न म्यति आ ख.ग. छेपल १८२९. अहीं प्रत 'अ'.'ख', ग'.'घ'. मां वधारांनी कडी आ प्रपाणे छे. प्रत अ — ते व्यूर्तनइं कुण भाळवइ, ज नयनि सन भाव, सन माहि सहं जांणी रहृइ, पणि कृत्रिम रे हुगध समाति १८५० प्रत ख-ते घूर्तनइ कुण मे। लबइ, जे नयनि लहइ मन भावमन साहि सहू जाणी रहइं, पणि कृतम रे मुगन्न सभावि. १८१३ प्रत ग - ते धूर्तनइं कुण भालवइं, जे मयनि भाव, सन सांहिं सह जांणी रहट, ५णि ऋतुम रे भुगध सभाव. प्रत घ — ते धूर्तीर्न कुण भालवइ, जे नयनि लहइ सन भाव, सन मांहि सहू जाणी रहइ, पणि कृतम मुगव समावि. १८०१ १८३०. ख. पूछइ सोइ, अ.ख.ग. सहोय ग. तुम नयणा १८३२. ग. कोय वहालां सांभर्या अ. राग मल्हार: ख. डाल ३३, राग मल्हार; ग. डाल ३३, राग मल्हार, क. राग मल्हार. १८३४. ग. द्रपद; घ. दू १८३५. संशय माटई १८३९. ग. राता थयो. १८४२ क. संज ग. जेड् १८४५. ग. सधलो संवरो १८४८. ख.ग. पंख समारी. अ. प्राहुणा १८४९ ग. हिंवे जास्युं क. देसी १८५३. अ.ख पालेख; ग. पालेसो क. मींत १८५४. ख.ग.घ. बहुइं १८५६. ख. मीट छि १८५८. ख.ग. सहाय १८५९. ग. उपार्जन १८६२ अ.ख.ग नइतर १८६३. अ.ख.गघ. करघडी ग. मेहो १८६४. ग. जनम लगे विहर्डि नहीं १८६५. क. धरि धणी अ.स्व धुरि घ. धर १८६६. ग. उसरि ख.ग मांडी त्रीति निटोल १७६७. अ.ख.ग.घ. महुरण्जूं क. मिलंन ग वचिन नेह तिजई १७७१ ('हंसा' शब्द प्रत 'क्र'मां नयी. अहीं प्रन 'ख्व'मांथी मूक्यो छे.) आ.ख. नि दिणंद ग. चकबी नइं १८७२ क. कमलांह १८७४. ग. मिलइं अवर स्युं १८७५. ग. उखेड्युं ऊखडइं १८७६. अ. सो वरिस जु जोईई; स्त्र. सु वरसई जु जोईई; स्त्र तुहि; ग. तोहिं; ग. तेहवो वांन १८७७, घ. दिन्नियर-विन्न १८७८. क. भीतिर परम्मुहा १८८२. ख.ग.

जिस हैंगड़ १८८३. अण दीउइ अति छेखवई १८८४. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. अ.घ. दसणीणाय यस्स ख. दंसणिणीय यस्स; ग. दंसणिणीय यस्म १८८५. क. तिल उस मित्ति. १८८६. क रत्ना आ. फल रत्ता परित्त १८९०. ग. अंबरें गाजइं नेहलो ख. तर्लि नाचइ भूतिल नांचई १८९६ अ.ग. आदि अ. करी १८९९. ख ग. दो मिल्यां १९०२. घ. रागवती मनमां वसइ १९०४- अ.ग. गहअहि आख.ग.घ उदासीन्य १९०५. आग. गहिवर १९०६. ग माया उतारो १९०७, ख.ग. समरेड १९०८. आ. गुणबं(त) छउ ग. छो ग. टरिस १९८९. क. सज्जव अ.ख.घ सार्थ. उ; ग. स.र्थवाहोबाच १९१० ख. नदीआ वावि. १९११. घ. वनि चंदन ग. ठांभि ठांभि १९१३ घ वहसेह १९१४. ग. वनवाडि तहअर ग. जेहिन क. वलहु ग. कोइिल नि १९१५. ग. मिलसर्ड भित्त घणांई आ.ख.घ. राजा उ. ग्. राजाओवाच १९१६. अ.ख.घ. सा. उ. ग्र. सार्थवाहोवाच १९१८. प्रत 'अ'मां आ कडी नथी. १९१९. अ.ख.ग. मुहरति घ. मुहरति अ. राग केदार गुडी; स्त. ढाल ३४, राग केदार गुडी; ग. हाल ३४, राग केदार गुडी, घ. रांग केदार गुडी १९२०. क. करह अ. आविडिरे घ. आविरे ख्र.ग.घ. पृष्ठि पठि अ. तीर रे १९२१. अ.ग. सोकळांमणी अ. दूबद; ख. दूबद, आंचली; रा. ग. दुबर, राज० आंचली १९२२. अ. सुगुणरूआरि; ख.ग, सणगुण दूआरि रे १९२५. ग. बहुनांनथी १९२६. ग. सनेहां संगथी अ.ख.घ. रा॰ उ० ग्. रा० ओवाच १९२७. आ ख.ग्, सा० उ०: ग्. सार्थवाहोवाच १९२८. आ.घ. मिलसिउ क. सारथपति अति वीर रे अ. विचि-व्यवहार ख.ग. दैव - व्यवहार घ. विहि-व्यवहार अ. देशी पाछली; स्त्र. ढाल, देशी पाछली चालती; ग. डाल, देशी, पाछिली चालती; घ. देशी पाछली १९२९. आ. करी जुहारडो १९३१. ग. पूर्या जाइं १९३२. ग. गुणे अभिरांम १९३३. क. शतुनइं १९३६. अ.ग.घ. किञ्जड १९३८. घ. राग ज वसीया मुर्हि अ.ख. पइसेबा अ.ख.ग.घ. गाइ घ. भेदिया १९४०. क. झीजा १९४१. ग. हुंति ग. भिरंति १९४२. क. किरतारि १९४३. ग. आपि ग. तनुं आपइं; घ. अध्यइ १९४५. अ.ग. जांण्या (क्षे त 'ग'मांथी) १९४९. ख. वकारिड; ग. वकार्यो १९५०. ग. पाड्यो कांति १९५१. अ. राग मारुणी ख. डाल ३५, राग मारुणी, कासीथी चाल्या महाराय रे, अ देशी ग. डाल ३५, राग मारुणी, काशीथी चाल्या महारांय रे, के देशी घ. राग मारुणी १९५२. अ. दुपर ख.ग. दूपर, आंचली घ. दू० १९५३. ग. क्षे तो प्रीऊ विण किसिओ १९५४. ग. से तो करसइं ग. मुझ ग. तुझ ग. पीडइं छइं ख. दहि; ग. दहि मुझ १९५५. अ.ख. वाहिन वरि आ.ख. अन नइ वारि रे; अन्नर्नि वारि रे १९५७. घ. मंत्र-हार १९५८. ख. ग. कहुं अ. दैव्य १९६०. ग. विजय सम ग. तूं तो बोल १९६१ ग. मूंहनइं १९६३. ग. हम सुं अ. हूं तुयां ऊगी; हूं तोयां उंगी तोरि १९६४. ख. भिवतुं १९६६. ग. विरहनो खार ग. मोरी प्रीडडो १९६७. अ.ख. झंखर थयुं १९६८. म. फल तणो १९७०. नांवइं हैडई ग. भइ न खमाइं (न खमाइ अम बेवडीवार लखेल छे.) १९७१. मांहिं गार्जि घ. नहिर रे १९७२. मोरि तिनिधी ग. गयुं १९७३. अ.ग. देऊगी १९७४. घ. समरइ सस्र १९७५. ग. समरूं ग. बाहला अबला स्युं स्युं १९७६. ग. कां करइं अंस् १९७७. ग. जाओसि अ. राग भूपाली देशाख ख. ढाल ३६, राग भूपाली. देशाख, [पीड आपो रे महारो पुत्ररतन के देशी] ग. ढाल ३६, राग भूगल तथा देशाख, पीड आया रे माहरो पुत्ररतन्न, के देशी.

घे. राग म्याली देशास १९७८. अ दूपद; स्त्र. दूपद ग. का० दू्रद घ. दू० १९७९. ग. गति अति कां केरी १९८० अ.ख. दोस काठउ; ग. दोस कांढो घ. मोद्देर ख. ताढउ; ग. ग. ताडो; घ. टाढु १९८२. ग. श्रुधि न पांसी अ. राग घन्यासी; ख्. ढाल ३७, राग धन्यासी ग. ढाल ३७, राग धन्यासी भले रे पश्चार्या तुद्धा साधु जी रे. अ देशी घ राग धन्यासी १९८३. अन्य ग. इपद घ. इ. १९८८. ग. प्रवहण पाटिओ रे १९८९. ग. श्रम संयोगि पाटीओ ग. ससतो अ. थयुं अ.ख.ग.घ. इहा १९९०. ख वीजलडीनू ख.ग. विसराल ते १९९१. ख पतंगनु ख. छइ;ग. छइं अ. मइ मांडी: खग. मिं मांडी १९९२. अ.ख. यश खोलि शर मूकीइ: ग. यश खोल्हें सर मुकीइं १९९३. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी ग. जओ तुहमे १९९४. ग. न होइं आकडी १९९६. अ सोवन वन १९९७. ग. ओंच्छा सार्थि १९९८. ख.ग.घ. सायन घ. घरती तर्छि १९९९. ग. भमरो बहुरें भोलपणई ग. सुरंगी २०००. नेांघ: ग्रंथगठनी कडी २००० थी २००९ प्रत 'घ'मां उलटकमे भळे छे. अत्रे प्रयपाठना कमे पाठान्तरो नेांघ्या छे. १ ग. तणइं भोलावडइं २००२. आ कडी प्रत 'अ'માં नथी ২০০३. आ कडी अने आ पछीनी कडी प्रा 'अ' अने 'स्व'मां डलटकमे छे. २००५. आ कडी प्रत 'अ'भां नथी. ग. सजनीआं ग. कर्युं. २००६. प्रत 'अ'मां आ कडी नधी स्त्र.ग. कां कर्या; घ. कां करिउ ग. हैडइं ২০০৩. ছুत 'अ' सां आ वडी नथी. घ. साचूं करिंड २००८. अ. ताहरिंग, आण्यो रोस २००९. प्रत 'आंमां आ कडी नथी. ख.ग. मेहणिता ख.ग. जेह स्युं रंगप्याससइ; घ.रंग्या-सइं २०१०. ग. वरि शत वरिस विलंबीइं २०१३. (प्रत' क'मां 'चित्ति चालीइ' छे, अत्रे 'चिति न चालीइ' पाठ प्रत 'ख्र'मांथी लीघो छे.) २०१४. अ. राग घन्यासी; ख्र. राग ३८, राग घन्यासी, पहिछुँ भाणस मोह करइ रे, झे दंशी; ग. राग ३८, राग धन्यासी, ५हिल्लं भांणस मोह करइं रे, झे देशी; घ. राग धन्यासी २०१५. अ.स्त.ग. त्रूटक २०१७. ग. नरकह जावा नि २०१९. स्त्र.ग. बूटक घ. बू ग. प्राणी उल्लंसइं ग. हसइं २०२१. ग. कुश अग्र जल-बिंदु २०२२. ग. मायिन २०२३. ख. बूटक ग. त्रू ग. स्वांगी अ.ख.ग. सुहद ख. हैंड्या नांणइ ग. करइ पातिक-वृंद

৭. प्रत 'घ'मां ग्रंथपाठनी कडी २००० थी२००९ नीचे प्रमाणे मळे छे.

य्रंथपाठ—कडी क्रमांक	प्रत 'घ -'कडी क्रमांक
₹ 0 0 0	१९७ ९
२००१	9800
२००२	१९८३
२००३	9828
२००४	१९८२
२००५	9966
२००६	9824
२०० '9	१९८६
२००८	9920
₹00€	१९८१

ग. कांसिनी प्रेम तणी रसइं राती २०२४. गं. किहिनो ग. दल्लहो ग. ठालो अ.ख.ग.घ. छण छण गया रे २०२५. अ.ख. त्रूटक ग. त्रू. ग. वहंरीना जे ग. तोहि न प्रांणी २०२६. अ. राग मारुणी; ख. ढाल ३९, राग भारुणी; ग. ढाल ३९, राग भारुणी; घ. राग मारुणी २०२७. नेांघ —२०२७—२०३२. अत्रे प्रत 'अ','ख' अने 'घ'मां प्रंथपाटने अनुसरती चार पंक्तियुक्त कडीओ छे. परन्तु प्रत 'ग'मां आने स्थाने वे पंक्तियुक्त कडीओ [कडी क्रमांक २०७१-२०८४ प्रत ग.] मळे छे. अत्रे सर्व प्रतीना प्राठान्तरो ग्रंथपाटनी चार पंक्तिओवाळी कडीओने अनुलक्षीने नेांध्या छे.] क. रुध्यां नरक-दुवार व. २०२८. अत्रे प्रत अ.ख.ग. अने 'घ' वघारानी कडी नीचे प्रमाणे छे.

प्रत 'अ'—टाल्ड विषय विकार, पांलि संयम भार न मु॰२
जाणिड अधिर संसार, रुधिया नरक दूआर न० २००३ मु॰
प्रत 'ख'—टाल्ड विषय विकार, पाल्ड संयमभार न. मृ. २
जाणिड अधिर संसार, रुधिया नरक दुआरन. २००२ मु॰
प्रत ग'—टाल्ड विषय विकार, पाल्ड संयमभार प. २०७३ मु॰
जाण्यो अधिर संसार, रुधिया नरक दुआर न. २०७४ मु॰
प्रत 'घ'—टाल्ड विषय विकार, पाल्ड संयमसार न. मु० २
जाणिड अधिर संसार, रूधिया नरक दूआर न. २००३ मु॰

अ.ख. उसीआलि; २०३२. खगः; वेश्या अ.ख.ग.घ. इहा २०३३. खगघ. जयवंतसेन २०३५. आ. जीवता ख. किसू ग. सज्जन निव झ्रतां २०३६ ग. किहसूं करिसू ग चिन्न चमको ग. गयां २०३८. ग. इगि आंगणइ ग. कार्लि ख.ग केहि ग. मिलिस्युं २०३९. घ. इहा कालि २०४०. ग. सेगीयां २०४१. ग. संभारतो ग. झरतो अ. राग रामिगरी; ख. ढाल ४०, राग रामिगरी; ग. ढाल ४०. राग रामिगरी; घ. राग रामिगरी. २०४२. अ. विहस्त, ख. विहइस्त. ग. धूत्ररिं धूत्यो अ.ख.ग. इन्द घ. इ० २०४३. ग. कोय कोय वार छई अ. ज २०४४. घ. आ पंक्ति नथी. २०४५. ग. बोल्डं अ. राजन मि सेवक; ख. राजन मि सेवक; ख. राजन मि सेवक; ख. राजन मि सेवक; ख. राजन मि सेवक; स्थ. राजन मि सेवक; ख. राजन मि सेवक; स्थ. राज मारुणी तथा धन्यासी; घ. राग माहणी धन्यासी. २०५७. अ. जेहिन; ग. जेहिन अ.ग घ. समरतां, ग. सिहजइं २०५९. अत्रे प्रत 'अ', 'ख', 'ग' अने 'घ'मां वधारानी कडी आ प्रमाणे मळे छे.

प्रत: अ. मुनिवर चरण नमी करी, बहुठड राय सुजांण रे, कुलटाचरित्र पूछी करी, लीसुं सरव परमांण रे. २०३३

प्रत: ख. मुनिवर चरण नसी करी, बहटइ राय सुजाण, कुलटाचरित्र पूछी करी, लीधुं सरव परमांण रे. २०३३

प्रत: ग. मुनिवर चरण नमी करी; बिंठो राय सुजांण रे, कुलठाचरित्र पूछी करी, लीधू सरव प्रमाण रे. २११२

प्रत: घ. मुनिवर चरण नमी करी, बहुठाउ राय सुजाण रे, कुलठाचरित्र पूली करी, लीधूं सरव प्रमाण रे. २०३३ ग. सक्तन दिनि ख. इति पाताल सुंदरि संबंध ग. इति श्री पाताल सुंदरी संबंध समाप्ट; अराग सामेगी; ख.ग. डाल ४२, राग सामेरी; घ. राग सामेगी. २०६०. ने ध — कडी २०६० श्री २०६५. प्रत 'अ' अने 'घ'मां ग्रंथपाठने अनुसरती आठ पंचियुक्त कडीओं छे परन्तु प्रत ख्रांना आने श्राने प्रथम वे कडोओं चार पंक्तिवाळी तथा प्रत गंभां बधी कडोंओं चार पंक्तिवाळी (कडी कसांक २०१५—२९२५) मळे छे. अत्रे सर्व प्रतोना पाठान्तरों प्रथपाठनी आठ पंक्तिशोवाळी कडीओंने अनुलक्षीने ने घंघ्या छे.] घ रही तुहिइ दही. (प्रत 'ख' अने 'ग'मां कडी पूर्ण') ग. मोलो मोलन्थो. प्रत ख अने ग कडी पूर्ण २०६२. ग. मंत्री तेहतू कीजिइ अ.ख.ग.घ. सचिव ग. राजन दिओ. अ आदेसडु. २०६४. ग. मध्यमे ग. कारिली. २०६५ अ.घ. स(र खा ग. थाय अ. राग धन्यासी. ख. डाल ४३, राग धन्यासी ग. ढाल ४३, राग धन्यासी अ.ख ग. दूवट. घ. दु. २०६९. परनारि २०७६. ग. तजि झडित २०७७ ग देवअ टारडो २०८१. ग तो ते तिकसि प्रांण. २०८२. अ शी०उ; ख. शी०उ; ग. शील्वत्योवाच: घ. शी०उ. २०८३. अ.ख. तनु रिव देइ २०८४. अ. शी० उ. ग. शी. वाच; घ. शी. उ. अख.ग. जलनु न करुं. अ. राग रामिगिरि; ख. डाल ४४, राग रामिगिरि ग. डाल ४४, राग रामिगिर, घ. शारति अरति अनीव २०८८. ग. धुजनन सी दाई २०९१. अहीं ग्रंथपाठ करता केटलीक वधारानी पंक्ति मळे छे.

प्रत 'अ'भां आ कडीने स्थाने नीचे प्रमाणे कडी मळे छे:

शीलि सुर नर सेवा सारइ, मनवंछित सिव फलीइ,

दुगतिना दुख दोहिला नावइ, सुख संपित सिव मिलीइ. २०९१

प्रत 'ख'मां आ कडी पछी वधारानी पिक्तओ नीचे प्रमाणे मळे छे:
शीलि सुर नर सेवा सारइ, मनवंछित सिव फलीइ,

दुगीतिनां दुख दोहिलां नावइं, सुख संपित सिव मिलीइं. २०९१

प्रत 'ग'मां आ पछी वधारानी पंक्तिओ आ प्रनाणे मळे छे:

शीलि सुर नर सेवा सारि, मनवंछित सिव फलाइं

दुगीतिनां दुख दोहिलां नोवई, सुख संपित सिव मिलई, २१५३

प्रत 'घ'मां वधारानी पंक्तिओ आ प्रमाणे मळे छे:

शीलि सुर नर सेवा सारइ, मनवंछित सिव फलीइ,

दुर्गीतिनां दुख दोहिलां नावइ, सुख संपित सिव मिलई, २१५४

ख.ग.घ. ज्यवंत पंडित ख.घ. शांिल जे सुधा २०९२. ग. आवइं शांन २०९३. अ.ख. अणसदिहतु २०९४. क. दूतनइ २०९५. अ. राग मिल्ली मल्हार; ख. ढाल ४५, राग भीली मल्हार; ग. ढाल ४५, राग ४५, राग भीली मल्हार; घ. राग भीली मल्हार. २०९६. ग. च्यारि निं २०९७. अख. च्यारि; ग च्यारि २०९९. प्रत 'गंभां आ कडी नथी. २१०१. ग. विवरि पड्या २१०४. घ. सरो तिम अ. बिहूं के पूराइ. ख. कंठे २१०५ ग गलि झिमित्ति २१०६. क. बुजांमीइ; २१०७. ग आब्यो घ. मे आवीड घ. वर तनु २१०८. अ. व सि वरसि महेला ग. पार्य सांसल थाइं अ. राग मेघ मल्हार; ख.ग. ढाल ४६, राग मेघ मल्हार; घ. राग मेघ मल्हार २१०९. अ. सास असाड ग. वापर्या रे वापर्या रे; ग. सवालि प्रत 'घ'मां आ पंक्ति नथी. २११० अ. की गाइ; ग. के गाइ मोरिडे. प्रत

'बंसां आ पंक्ति नथी. ग. किं है कि मोरडइंर कि सोरडइंर प्रत 'घ'मां आ पंक्ति नथी. ग. अंगणि ओरडे रे कि २११२. ख.ग. विगोयां सज्जां अ. झरमर वरिस; ग. झरिमरि वरसई; ग ग. झबकिं २११३. झबकइ; ग. अविकं ग. चिंता चिंता पूर्द रे किं. २११४. घ. केरडि केरडि २११५. ग. बप्पीहा २११६ क. मेह दादुर २११८. ग. विरहीयणले विरहीयणले २१२० ग. कि लेखिणि कटके २१२२. क. अंजूल २१२५. अ.ख. आक्लिंड, ख. अथ अजितसेन शीलव**ी** प्रति छेख लिखइ छइ. २१२८. ग. व मोकल्यो ग मुझ मनि अति दहइं २१३४. ग. करजे २१३५. क. विजै २१३८. ही दय-बमल ते वहिसी डंग. उलट अंगिन मात २१३९. अ. स हथि २१४०. अ. न हुति क. अ.घ. हेजइ २१४१. अ. काही विडं. २१४३. ख. उखेळी; ग्. उखेवी २१४४. अ.-, ख.-, ग. सखी ओवाच; घ. सखी उवाच क. मंत ख तिन अ.ख.ग. शी॰ उ॰ अ सखी; ख. सखी कथं शीलवती; ग. सखि आवाच कंप शीलवती: घ. सखी कथं शीलवती. २१४५. अ.-. ख. इती उ० ग. दुत्योवाच; घ. इत उ० २१४६. गहीली क. स्धूज़ २१४८. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. चैरने २१५०. ख.ग. लखलहर्ड २१५३. ख.ग. उवेली २१५४. **श.** अथ शीलवती अजितसेन प्रति प्रत्युत्तर लेखि छइं; ग. अथ शीलवती अजितसेन प्रतइ प्रत्युत्तर लिखई घ. छ. २१५६. अ ख. श्रयोत्र अ. कार्याचात्र २१५८. अ.ख.ग घ. अपरं. अ.ख. पहुतु २१६०. ग मेह-जल्डं २१६३. ख.ग अंकि को ते नही. २१६४. अहीं प्रत अ.ख.ग.मां नीचे पमाणे क्षेक वधारानी कडी छे.

> प्रतः अ. मिसि नयरे दीठी नथी, लैखिणि न गमइ क्षेक, भुजनिव तुद्ध सरिखा नहीं, तु किम भिजड लेख. २५३४

प्रत : ख. मिसि नयणे दीठी नथी, लैखिण न गमइ अेक, भूजनि तुझ सरिखा नहीं, तो किम भेजड लेख. २१३४

प्रत: ग. मिसि नयणे दीटी नथी, छेखण न गमइं अंक, भुज्जिव तुह्य सिरिखा नहीं, तो किम भेजुं छेख. २२ ६

२१६७. ग. बहूं ग. तो किम मेजुलेखि. २१६८. अ. गजते; खग. गाजंति २१६९ ग. कुनि २१७०. अ.ख. गुण-अंबार २१७३. क. ध्यान २१७४ अ. कु जिमेए २१७५. ग. विसे विदेसय २१७७. ग. मने अलजो ख अंक फलाइं २१८०. ग. जल पंकज २१८४. ग. विणसई २१८७. घ. पंथी २१९०. (अत्रे 'हरिख' शब्द प्रत 'ख'मांथी मूक्यो छे, २१९२. निहाल्या विना २१९३. ग. सो थाइं २१९४. अत्रे प्रत 'अ', 'ख', 'ग' अने 'घ'मां वधारानी कडी आ प्रपाणे छे:

प्रत: अ. जे रणि नासि अध्यं विण, काहनु अति तास, ते आहां सूनी रडवडइ, तस प्रीउं छितम पासि. २१६६.

प्रत: ख. जे रणि नासि अत्यं विण, काहानु अंति तास, ते आहां सूनी रडवडइं, तस प्रीडं छि तस पासि. २१६६

प्रतः ग. ने रणि नासि अंत्य विण, याहनु अति तास, ते आहां सूंनी रडवडइं, तस प्रीडं छितुम पासि. २२५७

प्रतः घः जे रणि नासइ अंत्य विण, काहानु अति तास, ते आहां सूनी रडवडइ, तस प्रीउ छइ तुद्धा पासि. २१६७ २१९५. ग. आदि 'इ'कार किर २१९८. ग. स सिरत भर्यो. अवगुण पहुंसी निव सकड़ २१९९. खग. खयर अंगार अ.ख. डह्रवुं २२००. अ. कोऊ; २२०२. आ कडी प्रत 'अ'मां निया. ख. डरह अहड़ तिष्ट पृथक पदानि विरहइत्यथ; घ. उरहें अह इति पृथगू पदानि विरहइत्यथं: २२०३. ख. दर्शने काहुछ; २२०६. अ.ख.ग. गुंथी तुझ गुण माल २२०८. प्रत 'अ', 'ख', 'ग'मां आ कडी अने ते पछीनी कडी उलटकमें छे. ग. मुझ जीव तुझ. २२०९ अ.ख. थाणु २२११. ग हंसत नूं क. चित्त २२१३. प्रत 'अ'मां आ गाथा निथी. अ.ग. थाइ मणोहर तुरिआ ख.ग. दूरि न सज्जन २२१७. ग. मोरनइं मोरडा ख्र ग सुरमलां घ. विसहर नि मोरडां २२१८. ग. पावसे कालि. २२२०. ग. तेह ज घडी. २२२१. ख. कहीइ २२२२. ख.ग. नवा सरावानी परि. २२२५. ख.ग. सच्छाय सूर. २२२६. ख.ग. मान्–सरोवर २२२८ ग. विछ दारिषीओ आघ. भूखिड; ख. भुखिड; अ.ग. पंखी. २२२९ घ. समरइ वंछित २२३०. ग. सूं कारिमूं ग. कीर्घ स्यु होय. २२३१. ग. रत–कांलिह ते होय ग. घणुं किहं स्यु होय २२३२. अहीं प्रत 'अ', 'ख', 'ग' अने 'घ'मां वधारानी कडी नीचे प्रमाणे मळे छे.

प्रत : अ--सज्जन संदेसइ ताहरइ, जू तू साल साल्इ,

जिम जिम तुज गुण सांभरइ, तिम तिम कालि ज कपाय, २२०५

प्रत: ख---सज्जन संदेसइ ताहरइं, जे तूं साल सलाइ,

जिम जिम तुज गुण संभा इ तिम तिम कालि ज कपाय. २२०६

प्रत : ग--सज्जन संदेसइं ताहरहैं. जे तूं सालइं सालाइ,

जिम जिम तुझ गुण संभारई, तिम तिम कालि ज कपाय. २२९७

प्रत: घ--सज्जन संदेसइ ताहा(२)इ, जू तूं साल्ड सलाइ,

जिम तुझ गुण सांभरइ, तिम तिम कालि जं कंपाय. २२९८

ग. नयणें कीओ २२३४. ग. तुहिं कह्या न जाइं २२३५ घ. रयणि अंधारहुं २२३८. ग. गंगाजिल मिस होय २२४०. क विचारिं. २२४१. अ.ख. सज्जन सर छेदिया ['जेहनुं शिर छेघ्या, पछी प्रत ख. अन्य पाठ] अ. जेहनु सिसरह विज्ज ख. पुणरिव सिशिरह विज्ज [जेहनु सिसरह विज्ज ख अन्य पाठ]. २२४२. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. २२४४. ग. मिल्या पंखि न. २२४६. ग वीसारो चित्तडइं. ग. आवज्यो. २२४७. आ कडी प्रत 'अ'मां मळती नथी. ख.ग तीहचर अतिरि ख. 'ख' मिडझ क्खर संठवी, ग. 'ख' मण्झ क्खर संठवी. २२४८ ग, जुहार अह्यारो मांनयो अ.ख.ग. सज्जन थकी क. देहिं [जिहां निव मिलीइ. ख. जिहां निव मिलिइ ग पाठान्तर] २२५२. ख भेजिउ. २२५३. ग. दिनें पोर्टी सिर-मुखी. २२५४. ग. सहुणइं ते कर्युं अ. ऊपहरांइ; २२५५. अ.ग.घ. जोयणि; ख. जोअणि ग. फाटि रे पापी. क परिहार. २२५६. ग. पज्जंतंज्यरेण. २२५८. ग. वयरी—मांण. २२५९. क. माइ २२६० ग. ऊजातां २२६२. अ.ख.ग थिकी ग तेहवो न होय ग. जेहवो आवि दूकडां २२६३. सोनि महावुं पंखि २२६४ क. ज चमकइ ग. जीमकइं प्रीकडो. २२६५. ग. मागइं वधांमणा २२६९ अ.ख.ग. हल्लुष्फल २२७२ ख.ग. सज्जन अ.ग. मुख—प्रसन. २२७४ आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. ख. प्रिय—इंसिण; ग. प्रिय—इंसण. ख.ग. नवो

२२७६. जाइस६ नयणार घ वयरी मिलि २२७८. क. नेहेण. २२७९. अ.ख.ग.घ. सालठवी २२८०. क. विहासई. २२८३. ख. न रे हियां. क अन्नचिते. ग्. अरुविते. २२८४. ग्. मिलतुं जेहस्युं अ.ख.ग. घ. है नयणां २२८५. ग. जेहनी जोतां २२८६. ख. हाथि २२८७. अ.ख.ग. विलगी ग. इसर-गिलं. अ. जिम अहिर २२८८. आ कडी प्रत 'अ'मां नथी. घ. हरखिइ ख.घ. गूजर वाई पानडी २२९०. ख.ग. घणेहि २२९१. अ.ख. सज्जन सिंछ नेहेण २२९२. प्रत 'अ'मां भा कडी नथी. ग. सज्जन क. पुरव-बोध ख.घ. पुरव-बांध. ख.ग. हरिरंगे. खघ. २२९३. ग. मिल्यो, क. दीहि. ख. किहारि. ग. पडिसइ. ग. आथमिस: २२९४. ग. ओरतो. अ. नेह-वेलि. २२९५. नेांध.—आ कडी प्रत 'क'मां नयी अत्रे ते प्रत 'ख'मांथो मुकी छे. प्रत ख.ग.घ.मां आ कडी अने पछीनी कडी ऊलट कमे छे, ख. अठोत्तर; ग. अध्योतर. २२९६. ग. सांझ समइं ख. अथिमड; २२९९ ग. परदेसडइं गयाइं. ग. अेतलां २३०१. अ.ख.ग. जाती जाणि. ख. सुक्खु. २३०२, अ.ख.ग. वेआं. अ.ख;ग.घ. के वेदना. २३०३. २३०३. ग. मींनति करींनइं. ख. देजो सदैव. अ.ख.ग हिव. ख. दाखिसि. २३०४. ग. भाजयो वयरी. ख. वहांण. २३०६. अ. राग धन्यासी, बांभणवाडि मोर कालउ, से देशी; ख. ढाल ४७, राग थन्यासी, बंभण वार्डि मोरकलीउ, अदेशी. ग. ढाल ४७, राग धन्यासी बंभण बार्डि मोर कलीतो से देशी. ध. राग धन्यासी, बांभण वाडि मोरकलीउ, से देशी. २३०७. अ ख.ग. द्रूपद; घ. दू० २३०९. अ. नहुंतर्यो. २३१०. अ. जड्ड ख. जैइ धरि अ. धरणीनि नाथि. २३११. अ. सामहणो; ख. सामणी; ग. सांमहणी. २३१५. ग. बीहतइ सहु भे ख. पडिबजिउं० २३१७. आ ख. अवर न दखतां; २३१८. आ.ख.ग.घ. च्यारे प्रधान आ. राग मेवाडु धन्यासी, सिहिजि सद्धणी रे कोशा कामिनी, अ देशी; ख डाल ४८, राग मेवाडु, सिहिजि सळ्णी रे कोशा कांमिनी, अे देशी; ग. ढाल ४८. राग मेवाडो धन्यासी, सिहजि सळ्णी रे कोशा कांमिनी, अ देशी; घ. राग मेवाडु धन्यासी, सिहजि सल्लिण रे कोशा कामिनी. अ देशी. २३१९. ग. गुणवंत बुद्धि निधांन. अ.स्त्र.ग. दूपद घ. दू० २३२०. अ. दिइ यक्षराय. ग. दीइ . २३२२. ग. मुझ सफ(ल). २३२३. क. मन्नि. २३२५. ख.ग. कहिं. ग. पारर्थ्यु. २३२६. अ.ग. ताहरूं. क. वियोगि. क. योगि. २३२७. ख.ग. पदा करेचि. २३२८. प्रत अ.ख. ग.घ.मां अहीं आ प्रमाणे कडी छे. प्रत अ. राजा मानी वचन प्रधाननूं पुहुता राजसभांह, ते पणि पूठि रे च्यारे मोकलिया, धाती मंजूस मांहि २२९७. प्रत. ख. राजा मानी वचन प्रधाननं. पुहता राजसभांह, ते पणि पूठि रे च्यारे मोकलिया, घाती मंजूस मोहि. २२९७. प्रत ग. राजा मांनी वचन प्रधाननुं, पुहता राजसभांह, ते पणि पूर्ठि च्यारे मोक्रल्या, धाती मंजुस मांहि. २३९४. प्रत. घ. राजा मानी वचन प्रधाननुं पुहुता राजन सांभह, ते पणि पूठि रे च्यारि मोकलिया, धाती मंजूस मांहि. २३०३. २३२९. ग. ओधाडी. अ.घ. अति किराल विरुप: ग. विकीराल विरूप, २३३२. ग. लजावंत. ग. जोक्षेतां. २३**३**३. ग. रायनइ; ख.ग. लांजनां. २३३५. ग. प्रतिबोधि. अ.ग. च्यारे. २३३६. अ. तीणि; ग. तिणिं ग. परवर्या. अ.ख.ग. दमघोष सूरि. ग. भूरि अ. राग भारुणि, माझी रे पावा वीर गोसाइ, ओ देशी; **ख.** ढाल ४९, राग मारुणी, माझी अवाया वीर गोसाइ, अे देशी: ग. ढाल ४९, राग मारुणी, मांजी अपाया गोसोइ, से देशी, घ. राग मारु, माजी रे पाबा बीर गोसाइ; से देशी; २३३७. [अत्रे चारेक कडी प्रत 'अ', 'ख', 'ग', 'घ'सां ऊलट सुलट कमे छे अत्रे ग्रंथपाटने अनुलक्षी

पाठान्तर नेांध्या छे. ग. सहगुरु वांणी. २३३८. ग. प्रांणी चेतां. २३३९. अ.ख.ग. तुह्ने. घ.मां नथी. घ.मां आ पंक्ति नथी. घ. आ पंक्ति नथी. ध. शंबल.

ख. क्षे संसार असारु रे; [वधारानी पंक्ति]

ख. अ संसार असारुंरे; [वधारानी पंक्ति]

ग. अह संसारु असारो रे; [वधारानी पंक्ति]

घ. अह संसार असारो रे: [वधारानी वंक्ति]

अ. दुपद; ख. दूपद; ग. दूपद. घ. दु० २३४०. अ.ख. चुरासी; क. नरक. ख. तुहि न आविड पार; ग. तोहि न आव्यो पार; घ. वेयांइ. क. आव्यु राशि व्यवहारइ रे. २३४१. क.अ.घ. बादर थावर. अ. भमतां भमतां काल अनंतु; ख. भमतां भमतां काल अनंतो; अ. आविड रासि व्यवहारि रे; २३४२. ग. मांहि. ग. च्यारि रे. २३४३. प्रत 'ख'मां अने 'ग'मां आ कडी अने ते पछीनी कडी उलटकमे छे भारि ग. ज्ता. ख. लहिं; २३४४. प्रत 'घ'मां आ कडी नथी. २३४५. ग. पहुतो. २३४८. प्रत 'ख' अने 'ग'मां आ कडी अने ते पछीनी कडी उलटकमे छे. ग. कोय न सगो. २३४९. ग. संमारि कोय. २३५०. अ. परमर्म) मोसा; ख.ग. परम रण न मोसा. २३५१. ख.आ. मोसड ग. अ. वीसारीड ग. परनो द्रव्य न प्रहोइं. २३५२. ग पंचेइंद्रो. ग. कीजी. ग. रागनइं रिस ग. तणो पंथी अ.ख. किमहइ न तिजाइ; अ. करीइय रे; ख. करोय; ग. करीइं.

अ. दुहा; ख. अथ वैराग्यना दूहा; ग. अथ वैराग्यना दूहा; घ. दूहा.

२३५३. अ. सोपान; २३५५. अ.ग. गिरुयड दानि. २३५८. अ.ख. तृणे दानि; ग. तूणे २३६० ग. दानथी. २३६२. ख. कुसुममालि ग. समू. २३६४. ग. मन-चिंता. २३६६. ग. छां हीमइ; २३६८ ग. दुस्तव तवतो. क. निफल. २३७०. ख. भरतेश्वरि केवल लहिडं. अ.ख.ग. मुगति-रमणि. ग. न पडइं. अ. राग धन्यांसी, भमरा सुडांनी, देशी: ख. ढाल ५०, राग धन्यासी, भभरा सूडानी, देशी; गृ. ढाल ५०, राग धन्यासी, भमरा सूडानी, देशी; घ. राग धन्यासी, भमरा स्डानीं देसी. २३७२. क. विनाणी. क. तण. क. तेबु नाणी रे. ख. किह इंबुं नाणी रे; क.घ. भासइ श्री गुरुराय रे. २३७३. ग. गुणि पूरीओ. २३७४. अ.खग. करमकर. ग. प्रतिवैति अपार. अ.ख. सुजसा; ग. सुजशा मायि. २३७६. ग. सुयशाइ तेणि. २३७७ ख.ग. पापयणासि. २३७८. क.अ.ख. नेविज ढोइ. २३८०. खग. नहीं दूखि रे. २३८१. ग. कहेई सुणो. २३८३. ख.ग. पर्व तणी तिथि; घ. पडवजी धर्म. २३८४. अ. जाणी कंतिन. [स्त्री कहइ अ धर्मग्रहीइ रे. ख.ग. पाठान्तर.] २३८६. अ. नयमनइ; ग. नियमन नइ. प्रत. 'घ'मां आ चरण वे नथी. क अधिकुइ, प्रत घ'मां आ चरण चार नथी. २३८७. प्रत 'घ'मां आ पंक्ति नथी. क. वीरा रे बचामणड कोई आपणा से ढाल आ. राग धन्यासी, वीरा रे वधासणी अ देशी. ख. (आज अमीणा धन्य धन्य दीहा, जे सांभरो. नावइरे ए देशी ग. हाल ५१, राग धन्यासी. वीरा रे वधमाणूं तथा आज अमीणा धन्य धन्य दीहा, जे सांभरो नावइ रे; ग. धन्यासी [वीरा रे वधानणुं के देसी.] २३८८. ग. केनलईं. ग. जेओ भवियण. अ.ख.ग. दूपद; घ. दुपद. २३८९. ख.ग. ते चन्यां. २३९॰. ग. ^{इहाभणि}. २३९२. अ. कांत. २३९३. अ.घ. देस शील फल. ग. हवइ आदरो. ग. हुई ते हार. २३९४. क. जंबती. २३९५. ग. अणुसरई. घ. समिति निजी साध समिति.

२३९७. ग. सलील रे; अ. दृहा ख. दृहा. प्रसिस्तिना; ग. अथ प्रसस्त दृह। काहड़ छड़; घ. दुहा. २३९८. क. मुखवर. २३९९. ग. शीलनो. ग. नवनिधि अत्रेथी प्रत 'घ' अपूर्ण छे. प्रतमां कुल पाना ७३, कडी क्रमांक २३६६. २४०१. ग्र. सवी महीमा शीलनो. २४०२. अ. शीलवती चरति; ख. शीलवती चरिति; ग. शीलवती चरित्रइं २४०३. अ. जिणेस सीसवर. अ साधु गुणि: २४०४. ख.ग. श्रो कोटिक गण. ग. श्रीचंद कुलि. २४०५. ग. रतनाकर गच.छ २४०६. अ. तपगछ भयोतकर; ख. श्री तपगच्छ उद्योतकर. २४०९. ग्. सुर-तर् समा. ग. विद्यामंडाण स्रीश्वर्. २४११. अ.स्व. गुणतां. अ. लहु पार. २४१२. अ.स्व.ग. सुहम स्वांमि. २४१४. २५. वण अपार. २४१५. ग. लिखीओ दीसीइं. क. मियमय मिमिसुरूप. २४१८. ग. श्री गुरू घरणी विशेक. प्रत 'अ'मां आ चरण नथी. ख. ते सवि चंदु मृतिलि; ग. ते सवि चंदु मृत लंड ; प्रत 'अ'मां आ चरण नथी २४१९. अ. जयवंत लघु सीस तास; २४२१ आ ख. हु सविहुवी २४२२. ग. गर्णोद्रनो. २४२४. अ. संवत सोल चौदोतरइ; ख. संवत सोल चौदोत्तरइ; १६१४. ग. संवत सो चौदोत्तरइं. अ.ख. आसो श्रुदि बीज; ग. आसो सुदि गुरु बीज. अ.ख.ग. कीधी शृंगारमंजरी. अ. जयवंत पंडित गेहि; ख.ग, जयवंत पंडित हेज. प्रतनो 'अ' अंत :-- प्रत 'आ', कुल कडी २३९१] इति श्रीशीलवतीचरितगर्भिता हुंगारमं जरीनाम्ना, सपाप्त, छ, ग्रंथाग्र २८०० संवत १६३९ वषे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे द्वितीयायां शनिवारे पानसरनगरे श्रीहारीजगच्छे भ० श्रीश्रीश्रीमद्देश्वरमूरिभि; श्रीः ॥श्री:॥छः॥ ॥छ॥ श्रीरस्तु॥१॥७४॥१.

प्रत 'ख'नो अंत [प्रत 'ख', कुल कडी २३९०] इति श्रीशीलवतीचरित्रगर्भिता शुंगारमंजरी-नाम्ना ग्रंथ संपूर्ण ॥ श्रीमध्दी (च्क्री) विनयादिमंडनगुरोश्रक्के विने योज्जसा । शिध्याणुर्जयवंत विडत इति ख्याताः क्षमामंडले ॥ नाम्ना सारतरां कवी (वि)श्वरित्रयां शुंगारतो मंजरीम् । नंदर्नुशशीतिवकार (प्र)मिते चालीलिखद् विक्रमात् ॥१॥ वहून्याकाशमुनिक्षपाकरमिते १७०३ सवत्सरे वैक्रमे मासे फाल्गुनिके शशांकविशदे पक्षे दशम्यां तिथौ । पुष्याके विनयादिसागरगणि विधैज्जनानंदिनीम् शुंगारादिममंजरो समलिखत् स्वश्रेयसे सादरात् ॥१॥

प्रत 'ग'ना अंत--(काठ्यं) श्रीमध्टी(च्छ्री)विनयादिमंडनगुरोश्रके विनेयोञ्जसा। शिध्याणुंर्जयवंतपंडित(पंडित) इति ख्याता क्षमामंडलेनाम्ना सारतरां कवी(वि)श्वरित्रयां श्वगारतो मंजरीं। नन्दर्नुशशीवकार(प्र)मिते चालीलिखद्धिकमात्। (२३) ९४॥ इति श्रीशीलवतीचरित्रगर्मिता श्रंगारमंजरी नाम्ना प्रंथ संपूर्णमिति। मंगलमालिकाबालिकावदालिंग(गी)तु॥ संवत १७४० वर्षे मधुमासे सितेतरपक्षे चतुर्दशी कर्मवाध्यामिति भद्रं भूयात्। श्रमणसंघस्य। सकलवाचकगगनांगणनभोमणि वाचकश्री१९सत्यसौभाग्यगणिशिष्य पंडित प० श्रीअमरसौभाग्यगणिशिष्यविनेयाणुं कांतिसौभाग्येन लिखिता पुस्तिका स्वपरोपकाराय प्रीत्यर्थं वा। ग्रुसुं भवतु॥ कल्याणमस्तुः॥श्रीरस्तुः॥

शब्दकोश

नेांध-—शब्दकोश अमुक अमुक दिख्यों नेांधपात्र लाग्या तेवा शब्द पूरतो मर्यादित राख्यों छे. बधां ज स्थळ नेांधवानुं राख्युं नथी.

[शब्द पछी आपेलो अंक कडीनो कमांक सूचवे छे. अने ते पछीना १, २, ३, ४ अंको कडीना चरणनो निर्देश करे छे. संक्षेप. : संक्षेस्कृत, प्रा. प्राकृत, अप. अप्रभंश, गु. च्युजराती छू. गु. च्यूनी गुजराती, अ अअरदी, फा कारसी, हिं हिन्दी, दे चेरश्य]

अकलाया १९८०/३ अकळाया. (सं. आकुल) अगाज १४८४/४ अग्राह्य अविरेण १५५५/४ तरत (सं. अचिरेण) अजुआली २३७५/१ अजवाळी अटारडुं ११४४/१, २०७७/३ वांकुं, अटकचाळुं अणसंदहितु १२६०/१, २०९३/३ अश्रध्धावान, संदेशो करतो अणवृठि १६६५/३ वरस्या वगर अणिमा ३७/४ सूक्ष्म (सं. अणिमन्) अतयान २१३१/४ समजु, अतिजाण अत्थमण १८५५/१ आधमवुं (सं. अस्तमन) अदंसणि १८८४/१ अदर्शन (सं अदर्शन) अर्द्धासिनि १६४७/४ अडघे-आसने अनीठी १०८४/४ अखूट अमीणा १९२६/२ अमारा अय २२/४ लोडुं (सं. अयस्) अलजइ २१६६/१ झंखनामां अलज्या १६१०/१ झंख्या, तलस्या अलजु १०६०/३ इच्छा, झंखना, अभिलाषा भलवइ २७०/३ सहेजे अलवि ३३३/२ संदर अलीक २३५०/४ मिध्या

अवटाडिड १८५२/२ डकळाव्युं अवघट १९५/४ मुश्केल अवराह १८८२/१ अपराध अविसासी ४१७/४ अविनाशी असन्न ७६९/२ शून्यमनस्क (सं. असंज्ञ, प्रा. असण्णम्) असमाधि १८११/२ अस्वस्थता अहर १९७२/३ होठ (सं. अधर, प्रा. अहर) अहिठाण २३५३/४ अधिष्ठान (सं. अधिष्ठान) अहिनाण ९३/४ ओधाण, संज्ञा (सं. अभिज्ञान प्रा. अहिन्नाण) अद्विनिस १०८६/४ रात अने दिवस अहिघर ३७२/२ राफडो (?) अहिलास ९९४/२ अभिलाप इच्छा अंदोह १२४८/२, १७६२/४, २०१४/२ संदेह, अंदेशो, संशप, शंका अंबार २६२/२ ढगली, भंडार आउलि ६७८/२ आवळ आखडी १७९५/३ बाधा, मानता आगइ २१२/१ पहेला (सं. अब्रे, प्रा, अगे प्रा.गु. आगे) आगलिथु ८००/४ आगळथी आडि १४२१/३ जीद, हट (हे. अइ)

आदक्षण ७४८/४ (१) आफलई २०९२/३ मांसथी (सं. आमिष्) आरतियां १६९६/आतुर (सं. आर्त) आरुत ५७/७ अवाज आलइ ९६६/४ निष्फळ आलाळुंबु १६३१/२ तृष्णा, लालसा आलंबडु १६७५/२ आलंबन आवर्द्धं ११०८/३ दुंभाउं छुं आवसइ ६९२/१ आवशे आहर-जाहर १२१/१ आवजा-जा इख्इ १७१४/३ होरडी पर (सं. इक्षु) इठ ४२५/४ इन्ट इसर १५२३/३ महादेव, शिव (सं. ईश्वर प्रा. ईसरे इसाडरति १०८७/२ इर्षा अने अरति (=अरुचि) उजाडि २१८८/४ टडजड (दे. उज्जड) उतापइ ११३८/३ संतापे छे उद्भूत १५७९/१ अद्भुत (सं. अद्भुत) उदीसई १७३८/४ उर्य थहो, ऊगहो उध्वब्भूय ४३९/४ उंचा हाथ राखीने (सं. ऊर्ध्वमुख प्रा. उद्भवन्भ्य) डध्धीसीया ५७००/३ (ह्वाडां) ऊभा थया उनइओ ९१३/१ आकाशमां झकुबी रहेलो उनमेख २३३१/१ आंखनो पलकारो (सं. उन्मेष) उपनंड ५४०/४ उत्पन्न थयुं उपराजन ६३१/२ उपार्जन उफराहूं १८२५/४, ११३९/३. १५८६/१ आडुं अबळुं उभजिस १७४६/१ उद्वेग करीश उमाह २०८८/४ उत्कंठा उरतु २७/२, ९७१/३ ओरतो, इच्छा उरडइ २९९९/१ ओरडामां डरंगी '७९/२ नागिणी उलिया २३३२/४ ओळख्यां

उलंभउ ६१०/४ ठपको उलंभडा ८१८/३ महेणा उलंभा २५/१, ५८९/१, २०१२/१ ठपकानां वचन उल्लसइ ८९०/१ उल्लास पामे उल्ह्बु १०४७/३ ओलवुं उल्हावइ १४६१।४ ओलवे (प्रा. ओल्हव) उल्हाविउ ९३७/४ ओलब्यो उवडु (उवटु?) १५३/४ अवळो रस्तो उवारु २३३९/३ इगारो, बचाव उवेखइ १५९७/३ उवेखे, उपेक्षा करे (सं. उवरेव) उवेली २१४२/१ उखेळीने उसरइ १४९७/१ अन उपजाव भूमिमां (सं. डबर) उसीकस ८६६/१ ऋणमुक्त उहलाइ ७५८/४ ओलवाय, बुझाय (प्रा. ओल्हव) उंछ १५४०/३ वीणी लीधेली वेरायली वस्तु (सं. उच्छ) इंबर-पाट २२६७/४ इंबरानी पाट क्रचालडा ८३४/१ ६चाळा कजाइ ९८६/४ दोडे कमाहल २२६२/१ चतकंठा, **ऊमाह**ल २२०३/३ े उत्सुक्ता ऊवस ९२३/२ उज्जडा (दे. उव्वस) **ऊलंभठा ८१८/३ महेणा** अष २३२५/२ आ भेतां २३६५/३ भेटलां कइरि ९५१/२ केरडाना बृक्षथी (प्रा. कयर) कड्वार २११६/४ प्रशंशा कडखु (कडकखु?) १५११/२ आंखनो कटाक्ष (सं कटाक्ष प्रा. कडक खं) कडुआवीया ८३१/३ दुभाव्या (दे कडुयाविय) कडूऊ र ९३/१ कडवुं

कणमण्युं ११२०/२ दुःखी थयुं, अंजवी पाम्यु कुरुविंद ४५/४ माणेक, अेक जातनु रत्न. हींगळो कलावी २११६/४ कलापी, मोर कींगाइ १७०२/४ केकारव करे छे कोडि २१५०/२ कोटो, करोड कोड ११०७/३, २१६९/४ (अडायानो) अग्नि खइर १९६२/४ खेर, अंक झाड (सं. खदिर प्रा. खइर) खटकुइ (खटकुइ) १०५४/३ खटके छे खमावीउ २३३५/१ क्षमा मागी खलाया ११८२/३ स्खलित थया खेपसि २४१४/४ नांखीश खेह ११७६/२ धूळ, रज (दे. खेह) खोह १७६२/४ कोतर, खीण खंति २१५४/४ खंत, होंश, उत्साह खंखर ४३९/२ हूं हुं खांडु १५०२/ खइग, तलवार गडिया ७९४/१ बरूतरथी सन्ज थयेला (प्रा. गुड) गयणंगणि ९०१/२ गगनना आंगणामां (स. गगनाङ्गेने, प्रा. गयणगणि) गयवर १६००/१ हाथी (सं. गजवर प्रा. गयवर) गयंद १४७३/२ हाथो (सं. गजेन्द्र, प्रा. गयंद्) गरहणइ १७७७/१ घराणे गरुयडि २३५५/१ मोटाइ गिरुइ ६४/मोटी गिहिंबर १९०५/३ गभह गहिबरी ५३०/३ गभराईने गीय १९४५/१, २२७०/४ गीत गुरुअडि १९०४/१ मोटाइ (सं. गुरुता) गुण-वेद्य १४४७/४ गुणशी वींघायेछुं

गुडु १३९३/२ रहस्य गुद्यक २३२२/१(?) गूजर-वाइ २२८८/३ गतिमान वायरो(?) गोठि ४६४/१ गोष्ठी, वातचीत घट-जुअलि १५४१/१ बेटामां,

घट-युगलमां

घट-पुत्र २०६५/८ अगत्स्य घडनाल १०५०/२ गरनाळा घात ७६८।४ विश्वासवात घनसारि २३१५/३ कपुरथी घोलिर १५८८/२ चकळवकळ चच्चीय ५७०/५ छेपन करी चतुरिमा २०७४/३ चातुर्य चरड ५०/५ चोर छूंटारा (प्रा. चरड) चरण-त्राण ३०९/२ मोजडी चिवियां १६५४/१ कह्यां चंगिमा ६१/४ संदरता चंडु (चंदु ?) १५२२/१ चंद्र चाचरि ५९७/१ चे।कमां (सं. चाचर, प्रा. चच्चर) चिरास ४८२/४ आशार्वत चिहारइं २३१३/१ चारेय चिहुर १५०४/२ केश, वाळ (सं. चिकुर, प्रा. चिहुर) चीखली ११२७/१ चीकणी, कादवयुक्त (दे. चिक्खल्ल) चील्हडां १५५/३ समडी (दे. चिल्ल) चाज ४९/४ विस्मय (प्रा. चाज्ज) चोनाणी २३७२/४ चार प्रकारना ज्ञानवाळाः चोल २२८९/४ मजीठे रंगेलुं चित्र

चोल २२८९/४ मजीठे रंगेलुं चित्र छप्पय २१९७/१ भमरो (सं. १८५८) छयल्ल २८/१, १२९१/२, १४८३/२, १९३५/१ छेल, चतुर, रसिक (दे. छ्डल्ल)

छलीया ६८१/३ छेतराया

छार १४६६/४ राखाडी छांदु राखइ १३२२/१ खुशामतथी राजी राखे छीलरि ७०६/१, ९५२/३, १७२५/३ खाबोचियामां (दे. छिल्लिर) छेह ८८७/२ दगो, विश्वासघात जगीस १०/२ अभिलाषा, इच्छा (सं, जिगीषा) जडित्ति १५७१/४, २०७६/४ झट, झडपथी जन्मंतरि १७३१/४ जन्मांतरमां, बीजा जन्ममां जंबारडु ८७७/३, १४२९/१ जन्म, अवतार जंखर १३५०/२ झांखरा जेवुं जंभा १८३६/१ बगासा (स. जुंम्भा) जाइसर २२७६/२ पूर्वभवनी स्थिति याद करी शकनार (सं. जातिस्मर) जारे १६४७/१ जेने जालक ५६/१ जाळुं, झ्ंड जांमीइ २१०६/३ (हमो) जामे जिब्भेय ९९२/२ आळस खाय छे. (सं. जुंम्भते) जीणंग १४६३/२ जीर्ण अंगवाळुं, कृशांग जीपती ८२/३ जीती छेती जीपवा ७७३/३ जीतवाने जीलतां ७३४/३ जळकीडा करतां (दे. झिछ) जुहारेंडु १९२९/३ जुहार, नमस्कार (दे. जीहार) जीयण २०७९/४ योजन जीतराइ १६७/६ जीहे झंखर १६३२/४ झांखरा जेवुं टोडर ५८१/१ (फूलनी) कलगी (दे. तोइर)

ठाइ १९८३/४ स्थाने (सं. स्थान, प्रा. थाम, अप. ठाम) ठारवण १०९३/४, १९४६/२ आश्वासन ठवी १८१५/१ पहेरीने, स्थापीने डंडडु २९/३ दंड, शिक्षा डंबर ५०५/२, १७०९/४ आइंवर, बाह्य भपको डालि १८२०/३ सूंडली(१) डीबु २१०६/३ हूमो हिंक ५४/७ है क बगलो (दे. हंक) ढूं कडांथा १८९२/३ ढूं कडां थयेलां नजीक थयेला (सं. दौक, प्रा. दुक्क) ढंढण-रिखि १९१/३ ढंढण-मुनि,कृष्णना पुत्र ढंढार २०३४/४, २२०८/४ गंजावर, मोद्रं, पोलुं ढोइ २३७८/३ धरीने (नैवेद्य) तद्रप १८३४/३ तेना जेवु तनु-हाणि ८२९/२ शरीरनी हानि/नुकशान तरसाळ्आं १६९५/१, १७७८/३ तरस्यां, तृषाछ ताडक ६/२ काननुं आभूषण, कुंडल (स. ताटङ्क) ताडु १४४०/४, १६८७/३ ताण, आग्रह ताम-रस ३६५/२ कमल (स . तामरस) ताय २०२२/४ पिता, तात (सं. तात, प्रा. ताय) तालक ५६/६ ताडनुं झाड (सं. तालक) तिल-तुस-मित्त १८८५/३ तलनां फोतरां जेटलुं, स्वल्प तिहुअण ५६२/२, १५१७/२ त्रिभूवन, त्रणे लोक तोमन ७३९/३, १८२७/४ एक प्रवाही भोजन वानगी ओसामण (प्रा. तिम्मण)

तीरइ १५४३/१ शके (प्रा. तीरइ) तुर १९७२/४ (१) तुरिया २२१३/। त्वरित त्हइ ७२१/३ तोय तुह्मची ८६१/३ तमारी तुहीने २९९/१ झाकळ (सं तुहीन) त्रंबासुत ४५०/१ गायनो पुत्र, वृषभ (दे० तंबा) तूठी ६९/७ प्रसन्न थईने (सं. तुष्ट, प्रा. तृट्ट) तेख १७९५/४ रोस तोरडइ १६९८/१ तारे त्राटी १ ४९९/४ कामठानो पडदे।, भींत, दुही (दे. तही) त्रिहुनइ १२८६/२ त्रणेने त्रेह १६०१/३ भीनाश, भेज (जमीतमां उतरेळुं वरसादनुं पाणी) थक १५३७/४ स्थित, आवी रही (प्राथक) थापणिमोसु २३५९/२ थापण ओळवी ते थ।वर २३४३/१ स्थावर थिका १२३१ 'थी' (पांचमी विभक्तिनो दण्पण २९४/३ दर्भण, अरीसा दविण २५७/२ पैसा, धन (सं. द्रविण) दाण १३८७/२ कर (प्रा. दाण) दाडुर ६६९/२, ९६२/१, २११६/३ देडको दावा ११४९/३ दाझया (सं. दग्ध, प्रा. दज्झ) दालिद ५१/१ दरिद्रता, गरीबाई दिणाहिव ९/३ सूर्य (स . दिनाधिप) दिणनाह ५०२/४ सूर्य (स. दिननाथ) दिणयर १९९५/४ सूर्य (सं दिनकर) दिणंद १८७१/४ सूर्य (सं. दिनेन्द्र) दीवड३ १७६८/३ दीवडो, दीव दीहा १२३९/२ दिवसे। (सं. दिवस, प्रा. दियह)

दुअंगम १६७/१ दुर्गम, मुश्केल दुतर १९५८/३ तरवाने मुश्केल (सं. दुस्तर) दुदर १७१६/३ दंडका (सं. दुदर, प्रा. दधुइ) दूजां ११२७/२ बीजो देअंत २१६/२ आपेछं देसडु १७७/२ देश वेसाउरी १२३१/३ देशांतरिक, विदेशी दोहगपणु २३७७/३ दुर्भाग्य दौगंधक ६९५/४ जैनशास प्रमाणेनी क्षेक जाति (दोगुंद्फ) हिंडवेध १४४४/४ हिंटिथी वींधायेलुं धीइं १६९/५ बुद्धिथी घीकई १२२८/३ धगधगे धूअडइ २१६५/३ धुमाडाथी धूणेविण २५/३ धूंणावोने(१) (अप. प्रा.गु धुणेविणुं) धुरि १८६५/१ आरंभे (सं. धुरा) धूहलइ २११४/३ धूंधळो(१) नइतरु १८६२/१ नदी कांठानु झाड नजिम १७८/५ (१) नदठ १९५१/३ अंदर धुसी गये छुं (सं. नष्ट प्रा. नह्र) नफेरी ७९६/३ अक वाद्य नरहिणि १२७०/४ नेरणी, नख कापवानुं ओजार (प्रा. णहरणी) नहुतरी १८१३/१ ने।तरीने नाण ९/३ सान (सं. ज्ञान, प्रा. नाण) नाण दंसण ४७/१ नाभि रुपी धरामां निदानी ६७/२ चौकस निर्देखण २३९५/३ दूषण वगरनु नीगमइ १२४७/३ वीतावे, निरगमे (सं. निगर्भ प्रा णिग्गम) नीजांमा १९८१/१ सुकानि (सं. निर्यामक, प्रा. निज्जामय

२९

नीपाइ २३१८/३ बनावी नीमेडि १७६०/२ (१) नीसत १८५४ नि:सत्त्व नेडरी ११०१/१ झाझर नेटि १७१०/४ नकी नेविज्ज २३७८/३ नेवद्य पडखी १९५१/१ प्रतीक्षा करीने (सं. प्रतीक्षते, प्रा. अप. पडिक्खइ, जु. गु. पडखइं) पडिवजिड २३१५/१ स्वीकार्यु पणासइ २३६७/४ नाश करे छे पतीजह ६७७/३ विश्वास करीओ (प्रा. पत्तिज्ज) पयंड ३८/३ प्रकट परुष्परइं २४५/१ परस्परने पळास २२१६/१ खाखरानुं वृक्ष पसाउलइ ६१८/१ प्रासादथी कृपायी (सं. प्रसाद) पसाय ५७१/६ (सं. प्रसाद, प्रा. पसाय) पसूय ३३४३/१ पशु पहारडइ १४९५/१ प्रहारथी (सं. प्रहार, प्रा. पहर) पहि २१५/१ ना करता पहरू १४५४/३ पोरे पाडवा (१) पंचद्रीपणु २३४३/१ पंचे द्रीपणुं, पांच इद्रियो धराववाना गुण पंजर २०६/३ हाडविजर पाखिल ५९१/३ आसमसं, चे।मेर पाड २१३३/४ उपकार पाडल ५३७/७ पाटल वृक्ष (सं. पाटल, षा. पाइछ) पाडुडं ७१७/३ खराब, अञ्चन पालटी ४२०/३ पलटाबीने पालिकी २६७/२, ८९८/१ पाळी (सं. पालि) पावसि-कालि २२९८/२ चेामासाना समयमां

पाहुणा १ ४४८/१ परोणा (सं. प्राधुणक, प्रा. पाहुणग) पिम्म ९८/२ प्रेम पूर्वभवंतरिई १०६७/१ पूर्वभवमां पेमासव २१४५/१ प्रेमने। अर्क, पेलाडि ९५६/४ पेली जग्याओ, दूर प्रजाल्यां २८८/३ सळगाव्यां (सं. प्रज्बल, प्रा.) प्रजल प्रत्यय ११७/३ प्रतीति, विश्वास, खातरी प्राकारि २३७/1 गढ उपर प्रोखित २०७९/२ पेाषित, पेाषितभर्मका जेने। पति प्रवास गयेला छे तेवी स्त्री फालि ५३ ५/३, १८०२/१ साडी (सं. फालिक, प्रा. फालिक) फेर् ११२/१ शियाळ (सं. फेरव) बद्मीहडा १३५१/३ बदैया बलाहुक २११६/२ मेघ, वादळ बंध्रक ५७/३ बपारियाना छाड बंभ ११७०/१ ब्रह्मा बंभसूया ८५०/१ ब्रह्मानी पुत्री सरस्वती (सं. ब्रह्मसूत्ता) बादर २३४३/१ स्थूल बापीडु २५०७/३ बपैया विपहुर ११२/१ वे पहेार बिशलय ५११/२ क्मळना तंतु (सं. विस+लतो) बीय-चंद ४३४/२ बीजने। चंद्र बीहतइ २३१५/१ व्हीने गभराइने (सं. बभीत) बीहीजीसइ १७५६/३ बीशे भगतडी ३१९/४ भगति, सेवा-भगति (सं. भक्ति) भजबीई १३५५/२ भांगी जाय भवंतरि २०२६/७ अन्य भवमां भवीषण २४०२/३ भव्यजन भंजणहार १९५७/भांगनार (सं. भंजक) भाजस्पइ ५४७/७ भांगसे (सं भज)

मिंभल १८१७ र व्याकुल, (मक्बी) विह्वळ भुयंग ३/२ नाग, साप (सं. भुजंग) भुवि ३५७/१ पृथ्वीमां भुधणी २२५८/१ राजा भूंइ २३८६/३ भूमिमां भूंहडी ९००/३ भूमि, जमीन भूसा (१) ५१७/५ इच्छा भोगिक ३६९/३ भमरे। मरकलडे १४२६/१ मंद्र हास्ये मरकला १८०८/१ स्मित मरूबक ३४४/२ डमरा, मरवा (सं. मरुबक, प्रा. मरुअ) मरालो ९ब/१ हंसी महिर २४१/२ मधुर महिर १९७०/१ महेर, क्रुपा महुरव्यण १८६७/१ मधुरप्रु मण्य-भवि २२३६/१ मनुज भवमां, माणसनां भवमां मंजुसडी २३२९/१ पटारो (सं. मंजूषा) माया २०२२/४ माता (स. माता, प्रा. माया) मित्तडी १८७१/३ मित्रता मियमय २४१५/४ कस्तुरी (सं. मृगमद, प्रा. मियमय) मिसेण ८२१/४ना कारणे मिसि २१३२/१ शाही मीनति ७४०/१, १६५३/३ विनंति (सर. हिं. भीनती) मीयां ३२७०/४ मृगने मुहुडइ ९२६५/१ मोहे मुहुत १६५/२ मुहुत मुहुर १५४७/१ मधुर मुच्छांइ ९८७/४ मुच्छाथी महूरित १९१९/२ मुहूर्त, ज्योतियशास्त्र प्रमाणे शुभ समय मूधि ७९१/२ मुग्धा

मेखी मोख २३१७/२ आंख उचाड-बंघ करवी. (सं. मेधानमेष) मोकलावी १८४४/३ विदाय आपीने मे।सा २३५०/१ असत्य (से. मृवा, प्रा. मोसा) रथा (१ रथ्या) ४४०/१ होरी (सं. रथ्या) रल्भा १८६/१ रखड्या रक्रीआति २१३८/२ आनंदित रसाछि ३३९/४ आंबा परे (सं. रसाछ) रंच्यति (१ रच्चंति) १६६४/४ राचे छे. रंडा ३३९/४ विधवा स्त्री (सं. रण्डा) राइवाबीइ १७८४/३ (राजा) सवारीके (सं. राजपाटिक, प्रा रायवाडी) राव ११६४/१ राव, फरियाद रुयडु २३०८/१ सुंदर (सं. रूप, प्रा. रूम) रुहाडी ६०५/६, १४२०/४, १७८३/२, २१८५/४ रोर २३४९/२ गरीब, रांक (दे. रोर) रोलंब ३६५/२ भमरो (सं. रोलंब) लख वार २२४६/४ लक्षवार, लाख वखत लवणिमा २३६१/३ लावण्य, सौन्दर्य लवंति १५८/४ लवे, बोले (प्रा. लव) लहिवासइ १५७०/४ लेवाशे लंक ४/२, ३७/४ पातळी कमरने। लांक, मराड लंकालि १८१५/९ लांकवाळी लंखण १३६५/३ लांछन लंड ५०/५ लुच्चा लंघी १७२१/१ ओळंगी (सं. लंबन) लाभेइ १६६३/२ लावे लिखेइ ६०३/२ आलेखीने लियावइ २१५२/१ लइ आवे छ(क)डी १६०/१ लेंकिडी लीह ९५९/२ रेखा लीहा १२३९/२ हद, लीटी. (सं. लेखा, प्रा. लीहा) ले। डावइ १८२/६ धूमाबीने, हलावीने

लोह सांगलथी १७७३/१ है। अनी सांकळवी वन्नरवालि २२६८/२ वंदनमाला (सं. वन्दनमालिका) वयस २१३/३ पंखीमां (सं. वयस्) वरांसडु १२८/१, १०३०/३, १८५६/१ भरासा, विश्वास वहाणीअ १६८/६, माजडी, वहाणी (सं. उपानह प्रा. उवाणह, वाणह बहिडइ १७३०/१ विघटित थयां, अलग थयां वंकिम २१/१ वकता वंड ६७६, वंठेल, बगडेल (सं. वंठ) वाजई ११५९/२ वागे छे. (सं. वाधते, प्रा. वज्जई) वारुं १०९/२ सारुं, सुंदर (सं. वरम्) वाछ २१५/३ संगंधी वाळा विडल २३७७/३ विपुल विकख २७२/४ (?) विखास ७६५/४ (१) विगायां २११२/३ हेरान थया विछाहि १६८२/२, वियाग, जुदाई विझ १६३९/४, १६६९/४, २२७६/२ विध्याचळ पर्वत विणज ६८३/१ व्यापार (सं वाणिउय, प्रा. वाणिज्ज) विणसइ २१८४/४ वगडे (सं. विनश्यति, प्रा. विणसइ) वित्रोडीयां १३८/३ ते।डयां विदाद्य १७६१/४ वळतरा विनाण २०९६/४ युक्तित विनाणी १३९१/१ जाणीने (सं. विज्ञान, प्रा. विन्नाण) विष्यिअ ३००/२ ६७०/१, १८५५/१ विप्रिय (स. विप्रिय) विब्भमि १५८८/१ विभ्रमधी विरंग २००४/४ दु:खी विलाति १५७९/४ (१)

विद्धाः ३३९/१, १३०७/१, विद्धाः विवरइं २१०१/१, २१९७/१ खाडामां, छिद्रमां (सं. विवर) विश्राल ४९८/२ नष्ट, विछिन्न थया विस-दमणि १२७६/९ विषतु दमन करनार विसाय १६०४/४ विषाद, खेद (सं. विषाद्) विहडंति १६७१/४ जूटा पडे छे. (वि+धा परथी) वीसासिण १३७१/१ विश्वासमां वीसासीक ६४१/१ विश्वासु बुट्टिया (१ वडिस्या) १५३४/**१** वृद्धि पाम्या वुलिसरी १७३/३ बारसल्ली (सं. बकुलश्री) बुहरति ८९६/१ बहेरित, लइ जबुं वूठी ६९/७ वरसी (सं. वृष्ट, प्रा. बुदू) वेइ १७१६/३ जाणे (सं वेद्) वेगलांथा १८९२/१ दूरथी वेध ३३९/१ मर्म, रस वेसर ७९६/१ खच्चर (सं. वसर) वैनितय [(१) वैनतेय)] ३८०/३ गरुडनुं, अर्णनु व्याइ ११९३/४ प्रस्ताने शबरलो ३४०/३ शबरी, भिलडी शिखी १५४/१ मेार (सां. शिरिवन्) शीखडी १८४७/४ विदाय सइ-हथि ८२५/१ पाताना हाथे सकन्हहर १५४३/ कृष्ण सहित महादेव सकार २०१६/४ (?)सग ५५८/३ दीवानी ज्याेत सचित्रला १५४७/२ चित्रबाळा सणग १४८७ ४ सुरंग, भूमिगृह सत्तवंति १३३९/१ सत्यवती

समापीया ६९८/३ सेांप्या सय-हाथि २७८/२, १२५७/१, पेाताना सय-हाणि १४१७/४ पातानुं नुकशान सरघा ३६७/१ मधमाखी (सं. सरघा) सर्खप १८२६/१ सरसव (सं. सर्षप) सलवाइ २१०९/७ सालवे सवत्ती १५३२/२ सपत्नी, शाक सवाली ६२३/२ (?) सवियारां १५८८/१ सविकारा, विकार युकत संच ६४२/२ प्रांर, युकित करामत संठवी २२४७/३ स्थापीने संवास ३२७/४ सहवास साटिका ५९/४ साडी सानन १७६/१ मुखवा छुं सानधि २५४/१ निकळता (सं. सांनिधि) सामहणी २३११/३ तैयारी सायर-सूत ६३५/२ सागरना पुत्र, चंद्र साल ८९/४ शल्प, आङ्खीली (सं. शल्य, प्रा. सल्ल) साल्र हे ३४/४ देडकाओ (स. सन्द्र कडे) सावडू १५३/२ सव छुं सासु १५९९/४ श्वास सांतीड २४१/३ संताडेलुं सांदीर १७५९/३ गे।धा, आखलो (सं. षण्ड. प्रा. संड) सासहइ ११२२/४ सहन करे सिरावलइ १७१५/२ शकारामां सीजइ २०९६/४ पार पडे (प्रा. सिज्झ) सींगणी १३१/१ धनुष्य (स. शृङ्गिगणी, प्रा. सिंगिणी सुकडि १६७४/२ सुखड

सु**कतइ** १८७०/३ सुकातां सुगंधिका २०७३/१ सुगंध लई जनारी स्त्री सुजवणड ८४७/४ शुद्धि (सं. शोधन) सुमुहुर १९७३/३ सुमधुर . सुहम स्वामि २४०३/२ सुधर्मा-स्वामि, महावीर भगवानना गणधर सुहणइ ९२८/४ स्वप्तमां स्हांलडी ८५८/४ सुंवाळी से।इ २१८/४ सुख, सगवड से।यर १४६५/१ सहोदर, भाई श्रावछ् २१०१/१ शकारु श्रेयोत्र २१५६/२ अहीं श्रेय छे. श्यंदनथी (१ स्पंदनथी) १६७/५ रथथी हट्ट-डिल ४५1७ दुकाननी हार (प्रा. हट्ट+आवर्लि) हत्थेण १५४२/२ हाथथी (सं. हस्तेन, प्रा. हत्थेण) हर-देव ५१५/२ महादेव हयास १०५९/४ हताश हर-हार ८५०/४, १२१८/३, महादेवना हार; नाग हलुइ १२३२/१ हळवेथी हसारथ १४१९/१ हांसी, मझाक हाणि २१३२/२ नुकशान, हानि हीई-सारणि ५१५/१ हैया-शारडी हीचरके १६७७/२ खचरका हुज्ज ११४५/देशय हेज ९८५/४, १७११/१, १९८०/४ ं द्वेत हेव १६९४/४ हवे (सं. एतादशके, प्रा. एवहइ, हेवइ)

परिशिष्ट

' शुंगारमं जरो ' अन्तर्गत उक्तिओ, कहेवतो अने रुढप्रयोगी

- १. मुरख सरसी गाठडी, पगि पगि सालइ साल (९३]३1४)
- २. मंकड के। टिं सिउं करइ, नवलख माती हार (९५1१1२)
- ३. कीधां करम न जूटीइ रे, कुहुनु कीधउ से।स (१२७)३!४)
- ४. आप-हाणि नइ जण हसूं, तु बि-परि निव हेाइ (१२९1३1४)
- ५. गुण विण सींगणि जब हवी, तव निव लगई बाण (१३११३१४)
- ६. अमीअ कि मीढ़ं स्युंटु करइ, जड वासीड विसेण (१४३)३/४)
- ७. सुख दुख केरी बांधणी, सह करमनई हाथि (१८६]३।४)
- करम साथइ कुणइ नावि चलइं, कीजइ किस्यु रे संवाद (१८९ १३ १४)
- ९. सार विण सुकइ वेलडी, उगी सूनइ रानि (२०२१११२)
- १०. से।ना केरी भालड़ी, पाणी मांहि म नाखि (२०३1१ १२)
- ११. घाणी-पीलण सहइ घणुं रे, सेलडी ज गुण मींठ रे (२५०1३1४)
- १२. बाल जो पस्मिल दीइ रे, तु लेदावइ मुखु रे (२५१ १ १४)
- १३. कर कांकणनइ स्युं मकर द रे (२६० २)
- १४. मन-भगां कुद्रोलुंडे, ते किम कहु संधाइ (२६५1३1४)
- १५. अगनि उलाणी फू कतां, मुह भराइ छाहारि (१७१ । ३।४)
- १६. वन दव दाघां रुखडां, पीलवइ मेहेण (२७५१३१४)
- १७. शीतल की उंजल तापवी नीरस हुइ परिणामि (२८२।३।४)
- १८. छाहारि दप्पण मइली, अधिकु उज्ल भाव (२९४|३|४)
- १९. पाहाणि—रेखा प्रोतडी, अशनि सम रीस हे।इ (२९५]३[४)
- २०. छेह लगइ नवि उतरइ, राता कांबलि रंग (३०४)३१४)
- २१. वरि कारेली आप धरि, नहीं पर मंडिप द्राख (३२५1१1२)
- २२. सीता दुधइ सिउं मिली, कुण करसइ वर्खाण (४६७1३1४)
- २३. जस मन बाधु जेहिमिछं, तेहिन तेह सुचंग (४७३ | ३ | ४)
- २४. चंचल गति संसारनी, कुहनु धरीइ शाक (४९१ । ३।४)
- २५. गुण संभारी सहु रडड़, सगपणि न रडइ केाई (४०७।१।२)
- २६. वीज तण् अज्ञूआलहू, न रहइ ते चिस्काल (४९९ १३ १४)
- २७. अस्थिर सिउं मन परहरी, स्थिर स्युं कीजइ नेह (५०५1३१४)
- २८. नयण समाणी प्रीतडी, जिंग विरलानइ होई (६२१।१।२)
- २९. सघलइ गुण वाहाला जि छई, सगून वाहा द्रं केाइ (६९५ १३ १४)
- ३०. सोनइ सामि न हुई किमि, मरुथिल न हुई पंक (७१७।१।२)

- ३१. वाइ वहिड्इ केतल्ं, सजल आसाढा-मेह (७१८/३/४)
- ३२. सेानुं करतां पाहाण-सिउ, अधिकु वावह बान (७१९ १३ १४)
- ३३. तीमन तांखां खट विण, भाजन भन्नं न होइ (७३९ ફ 🕸)
- ३४. पाइ कुसुमि पीडतां, अधिक होइ सुरत (७४७/३/४)
- ३५. पापीडा क्षणि क्षणि दहइ, जिहां जाउं तिहां घाइ (८९.७१३१४)
- ३६. जेहनइ जेसिउं नेहडु, नेह विण तस मिन रांन (९२२]३।४)
- ३७. विरह-दवानल धीकीउ, बाघइ वाइ जडित (९३४ १३ १४)
- ३८. जिम दल लागु वेडिमां, भौंतरि ज्रि मरेइ (९८३।३।४)
- ३९. तिल पीलइं तां लगइ, जां लगइ दीसइ त्रेह (१०४१ 1३ 1४)
- ४०. दुध अगनिं स्तकालइ, नीर बलतूं जोइ (१०४२ १३ १४)
- ४१. जिम पिंग भागु कांटकु, खिणि खिणि सालई साल (१०५३ | ३ | ४)
- ४२. जस हास् मनि उरत्, जउ मन दीजइ मुक्ख, (१०९६/२/४)
- ४३. कुण लह्सिइ रानइं रडिउं, हैडा करि संतीप (१०६९ ।३ ।४)
- ४४. नटु-सल्ल जिम पिंग पांग खटकई, नवु-नेह तेणी परि खटकई (११५१]३[४)
- ४५. कुण जाणइ से दुखड़ा, वाडइ आंबा खद्ध (११६२1३1४)
- ४६. जो सेाविन-कट्टारडी, तु सिउं पेटि मराइ (१५६३/३/४)
- ४७. रानि रडिंड रे जीव, कुण लहिसइ कुण वरसेई (११६४<u>।</u>३।४)
- ४८. जे जाणइ पर-वेदना, ते नर विरला कोइ (११९४]३[४)
- ४९. जलघर देखी गाजतु, रीसिं सर भगरंति (१२६१ दिश)
- ५०. बीज पडु ते दुरियडां, फेाकट वहर वहति (१२६७1३1४)
- ५१. मुरख न लहइ छोय, वारी थाइ अलखामणां (१३०१ |३ |४)
- ५२. जिहारइ जेहनई करि चड्इ, तिहारइ तेहनां थाइ (१३११ ११२)
- ५३. काना पाकइ कुंभि जिम, न मिलई कुहुनू चित्त (१३४२)|३|४)
- ५४. संगति तणड पटतरु, देशरा प्रगट लहंति (१३६१।५।४)
- ५५. उन्छां साथइ बालतां, जण जण दीइ कलंक (१३६३1३1४)
- ५६. जण ह।स् मनि उरतु, निरवाहू आन हुति (११६४ १३ १४)
- ५७. ताली न पड़ अंक हाथि, लेक ऊखाणउ जोई (१४१२/३/४)
- ५८. कुण लहिसइ से दुखडां, जे तूं राइ रानि (१४२३1३1४)
- '९९. वाडी पहुरु पाडता, सुकु करइ विखास (१४५४ 🕄 ४)
- ६०. काज करेवी आपण्ड, कीजइ काडि प्रकार (१४७१]३(४)
- ६१. काज करेवी आपणड, कीजइ केाडि प्रकार (१४७१ डि. ४)
- ६२. भाति पडी पहुलडइ, किमहि न जुई थाइ (१४७८|३४४)
- ६३. डाठ गलावइ दूरिया, जिस चंची फल-पक्क (१५४५)३(४)
- ६४. पाणी मांहइ न नांखीइ, से।ना केरी मल्लि (१५९८ १९ १२)
- ६५. त्राटी न खमइ पीटणी, धसी पडइ समूल (१५९९ ३ ४)
- ६६. गयवर केंद्र, भार भर, खरिंनव हिणड जाइ (१६००।१)२)

- ६७. जिम जल पाखइ माछिली, तलावेली थाइ (१६३२ १३ १४)
- ६८, मेहि जवासु सींचता, सूकी झंखर थाइ (१६३२।३।४)
- ६९ गोरी यौवन तिम गलई जिम कर जलटीषेण (१६४३।३।४)
- ७०. तु धोरि-सिरि भार जिम, अध वचि नवि महेलइ (१६६३ १३ ४)
- ७१. अण बुठि मेह गांजति किम धग्ड चातक रंग (१६६० १३ १४)
- ७२. मणि पइ ठेली काच कुग मुरखि आणइ चित्ति (१६७२)[३]४)
- ७३. गोरी ख्टा कारणि, अब न सफल कपाइ (१६८३।१।२)
- ७४. भर भाद्रवंडइ मेार ज्ञिम, मेह देखी कींगाइ (१७०२.|३.|४)
- ७५. साकर दुघई स्युं मिली, सानु हवुं सुगंध (१३ ३ ॥ ४)
- ७६. आंबा लागाड इखुइ, कहु कुण मूल करंति (१७१४]३]४)
- ७७. घर घारो–सिरि भार जिम, निरवही लीइ जडिती (१७३|३|४)
- ७८. सङ्जन तणु सनेहडु, जिम जेठइं उधाण (१७३८ ३ ४)
- ७९. जण हासुं मन उरतु, बि।रि दहइसि देह (१६१४ | २ | ३)
- ८०. घर बाली कीरति करइ, ते माणसङा अकउज (१७६५/1३/1४)
- ८१. छासि संयागि दृध जिम, दहीं-रस अधिक सधाइ(१७६७।३[४)
- ८२ वाइ उल्हाइ दीवडउ अगनि अधिकेरु थाइ (१७६८ ३ ४)
- ८३. नेहइ-बंधा मांणसा, ते तु दुषण जोवा अंध कि (१७८० 🕄 🕏
- ८४. पंय छडंइ महुरप्यणउं, छासि ज साथि मिलन (१८६७।१।२)
- ८५. छाली संयोगई दुध जिम, दहीं-रस अंक भलंति (१८६८।३।४)
- ८६. रानी कांबयोनी परइ, कीजइ प्रीति सुयंग (१८७५]३]४)
- ८७ लगह-पाणी द्वाइ मिलिया, कीघा जुआं न थाई (१८९९) ११२)
- ८८, घण पहठउ जिम अंबमां, सूकी झीणां हुति (१९००|३।४)
- ८९, जस खे।लइ शिर मूंकीड, ते का छेदी जाइ (१२९२।१।२)
- ९०. अख न हुई आऋडु राइणि नुहइ निंब (१९०४।१।२)
- ९१. भागी ड्राल म वलगीइ नवि कीजई अंदाेह (२०१४]१]२)
- ९२. सगपणि वाहा छं को नथी, वाहा छ स्वार्थि प्राणी रे (२०५४।१।२)
- ९३. वृष्टि हवी विण आभल्ले. इष्ट कहिउ वैधि रे (२७५१]२]२)
- ९४. बिख अनई वली वघारीउ, लींबहे चडी कारेली (२०६४।१।२)
- ९५. मांजर नई पड पय भालविउं, वाटरा वाडी मांहि (२०६५ ११ १२)
- ९६. ते श्रील-सायर सोसवा, घट-पुत्र सरखा घाइ (२०६५/७/८)
- ९७. अध न जां किहि आफलाइ, तां निव आबइ शांन (२०९२ १३ १४)
- ९८. सरोवर जिम आसाढथी, बेहु कंठई पुराइ (२१७१ । ३।४)
- ९९. ओबा-फलनी आसडी, न टलइ अक फलांड (२१७३1३1४)
- १००. किहां सूरय गयणंगणि, किहां जिल पंकज वन्न (२१००|३।४)
- १०१ ंपय कमरातू तव रहइ, जब पामई जल योग (२२७५]३१४)
- १०२. स्वारिथ सह का दीसइ वाहाल, काइ न समू सहाइ रे (२३४८]१।२)
- १०३ वैया विण निव छ्टीइ, कीधां पुरव पाप (२४६६ ४१४)

